

॥ ओ३म् ॥

COMPUTERISED

विजयेश्वर जन्त्री



मी विष्णवे मूर एन्न उरी

Free!

Rs. 40/-
Pocket Jantrie
with
Vijayeshwer
Jantrie

किं पिबन्ति मम पदसं मुनयः सुधां विहाय ज्ञातुमिदं बालो हरिः सापदं मुक्तो निनाय ॥

प्रवर्तक

स्व. ज्यो. आप्ताम शर्मा

संस्थापक

स्व. काशीनाथ ज्योतिषी



सप्तर्षि सं० 5097

विक्रमी सं० 2078



विजेश्वर गणित

सं० 239

सम्पादक

पुनीत ज्योतिषी

काश्मीरी पण्डित निर्वासन सं. 32

ईस्वी सं०

2021-22

प्रकाशक

सुनीत ज्योतिषी

नोट: इस जन्त्री के तिथि, योग, नक्षत्रादि के समाप्ति काल पुनीत ज्योतिषी द्वारा कम्प्यूटर प्रोग्राम से लिए गए हैं।

मूल्य : Rs. 150.00

सनातन धर्म में आस्था और उच्छृंखल जीवन को तिरस्कृत
करने वाले काश्मीरी पण्डित समुदाय को

विजयेश्वर जन्त्री

सादर समर्पित

नाम:- _____

गोत्र:- _____

निवास:- _____

फोन / ई-मेल:- _____

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्,

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम् शस्यशामलां मातरम् । वन्दे मातरम्
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीं-फुल्लकुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीं,

सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीं सुखदां वरदां मातरम् ॥ १ ॥

कोटि-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले, अबला केन मा एत बले ।

बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं रिपुदल-वारिणीं मातरम् ॥ २ ॥ वन्दे मातरम् ।

तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि हृदि, तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः शरीरे बाहुते तुमि मा शक्ति,

हृदये तुमि मा भक्ति, तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे मातरम् ॥ ३ ॥ वन्दे मातरम् ।

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण-धारिणी कमला कमल-दल-विहारिणी वाणी विद्या-दायिनी,

नमामि त्वाम् नमामि कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम् ॥ ४ ॥ वन्दे मातरम् ।

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां धरणीं भरणीं मातरम् ॥ ५ ॥

वन्दे मातरम् ॥ वन्दे मातरम् ॥ वन्दे मातरम् ॥

विजयेश्वर जन्त्री विक्रमी सम्वत् 2078 की विषय सूची

काश्मीरी पण्डितों के गोत्र	6	राहु काल विक्रमी 2078	52	दिवचक्षीर मुहूर्त	141
काश्मीर क्षेत्र की यात्राएँ	12	सप्तर्षि 5096 की जन्त्री	60	कर्ण छेदन मुहूर्त	142
महापुरुषों के दिवस	13	साथ रट्टेन	108	नया वाहन खरीदना	144
व्रतों की सूची	22	यज्ञोपवीत मुहूर्त	110	गृह देवता को प्रसन्न करने	146
काश्मीरी पर्व और त्यौहार	24	विवाह मुहूर्त	112	का मुहूर्त, पन्न व शिशुर	146
पंचक आरम्भ काल	26	राशि अनुसार मेखला मुहूर्त	121	दीपदान मुहूर्त	147
गण्डांत आरम्भ काल	27	राशि अनुसार विवाह मुहूर्त	123	लडकी दूध देने का मुहूर्त	148
गण्डमूल आरम्भ व समाप्त	28	वाग्दान मुहूर्त	128	यात्रा मुहूर्त	149
ग्रह संचार	30	कन् साथ	130	सर्वार्थ सिद्धि योग	155
निषेध समय	32	गृह प्रवेश मुहूर्त	131	बारह राशियों का राशिफल	158
वर्ष के दस अधिकारी	33	लेन्टर साथ	133	नित्य प्रार्थना	176
भविष्यवाणी	34	काहनेथर मुहूर्त	134	गुरुस्तुति	178
ग्रहण विवरण	37	नव वस्त्र धारण मुहूर्त	135	गणेश प्रार्थना	181
साढ़सती	40	विद्यारम्भ मुहूर्त	137	आसय शरण करतम दया	182
ढैय्या	43	अन्न-प्राशन मुहूर्त	138	शारदा वंदना	184
आमदनी खर्च चक्र	46	ज़रकासय मुहूर्त	140	लीलारब्द आरती	186

इन्द्राक्षी	189	अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुति	214	प्रेष्युन	254
अपराधक्षमास्तोत्र	191	जय शिव ॐकारा	217	श्राद्ध संकल्प विधि	257
राज्ञीस्तोत्रम्	193	आधार जगतुक मन्त्र	218	पन्न कथा	260
शारिकास्तोत्रम्	194	गायत्री महामन्त्र	220	वटुक पूजा (शिवरात्रि पूजा)	263
त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्	195	गायत्री चालीसा	222	शिव महिम्नस्तोत्रम्	290
ज्वालास्तोत्रम्	196	देवी प्रार्थना	226	विष्णु पूजन विधि	304
ॐ नमः पराशक्ते	198	हनुमान चालीसा	229	यक्षामावसी पूजा विधि	307
विष्णु स्तुति	200	हनुमान आरती	233	शंकुप्रतिष्ठा पूजा विधि	310
विष्णु प्रार्थना	201	श्री गणेश आरती	234	गृहप्रवेश पूजा विधि	317
शंकर प्रार्थना	203	श्री राम जी की आरती	235	दीपमाला पूजा विधि	323
लिंगाष्टकम्	204	ज्येष्ठा माता आरती	236	बहुरुपगर्भ (हिन्दी व उर्दू में)	327
शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं	206	श्री लक्ष्मी जी की आरती	238	हुमा असले महेश्वर	339
शिव चामर स्तुति	207	श्री गंगा जी की आरती	240	नाम अक्षर व बच्चों के नाम	342
भैरव स्तुति	209	नवग्रहस्तोत्रम्	241	धर्म शास्त्र के विषय	351
रुद्राष्टकम्	211	आरती (ॐ जय जगदीश)	242	कुम्भ तर्पण विधि	354
शिवपंचाक्षर स्तोत्रम्	213	बोड दरबार	244	श्री भीष्म पिता तर्पण विधि	356
शिवषडक्षर स्तोत्रम्	213	जन्मदिन पूजा विधि	246	जातक मिलाप विधि	358

E-matching of Kundlies :- You can avail the facility of Kundli Matching via e-mail. Drop a message at vijayeshwer@yahoo.com or WhatsApp on 9419146712, 9419136991 with following details:- Date of Birth, Time of Birth & Birth Place. And get the detailed matching report on your email.

काश्मीरी पण्डितों के गोत्र (जाति व उपजाति सहित)

हमारे वंशों को चलाने वाले जो ऋषि या मुनि हुये हैं वही ऋषि हमारे गोत्र प्रवर्तक हैं। गोत्र परम्परा हमें अपने मूल से जोड़े रखती है। इसी के आधार पर हमारे संस्कार, यज्ञकर्म, विवाह, पितृक्रिया आदि कर्मकाण्डीय क्रियायें निष्पन्न होती हैं अतः हमें अपने गोत्र के विषय में जानकारी अवश्य रखनी चाहिये तथा इसको कभी भी भूलना नहीं चाहिये। ब्रह्मा जी जब सृष्टि के कार्य में प्रवृत्त हुए तो उनके मानसी संकल्प से नौ ऋषियों का प्रादुर्भाव हुआ -- मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, विश्वामित्र, भारद्वाज, गौतम और जमदग्नि। सृष्टि को आगे बढ़ाने में महर्षि मरीचि का विशेष योगदान रहा। मरीचि के पुत्र कश्यप हुए। कश्यप से ही जगत् की चराचर सृष्टि हुई।

कश्यपात् तु इमाः प्रजाः ।

ऋषि कश्यप काश्मीर के जनक और वहाँ की हिन्दू जाति के संस्थापक भी हैं। तभी तो कश्मीरियों को मुख्य रूप से कश्यप गोत्रीय माना जाता है। जिन्हें अपने गोत्र के विषय में संशय हो वे पुरुष काश्यप गोत्री तथा स्त्री काश्यपी गोत्री उच्चरित करके धार्मिक कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। वैसे काश्मीरी हिन्दुओं के एक सौ नित्यानवे (199) गोत्र प्रवर हैं जिन में से कुछ जातियों के गोत्र यहाँ दिये गए हैं। हो सकता है इस में कुछ जातियों का समावेश न हो पाया हो, उन से विनम्र अनुरोध है कि हम से सम्पर्क करके अपने गोत्र व जाति का विस्तृत परिचय देकर अनुगृहीत करें।

Our Gotras with their Castes & Sub Castes

Note :- Please intimate us if you do not find your Gotra or Caste in the below list through e-mail : vijayeshwer@yahoo.com

Atri Bhargaya : Hapa

Artha Varshaganya Shandalya : Choudhri

Bhava Kapishthala Kaushika : Patar

Bhava Aupamanyava : Variku

Bhuta Was : Peshen, Thakur, Zalpuri

Bhuta Aupamanyava Shalan Kayana : Giru, Ganjoo, Kanzu

Bhuta Aupamanyava Vatsya Laugakshi : Pishen

Bhava Kapishthala : Khoru, Zadu, Sibbu, Vantu, Chandra, Kalla, Khaibri, Lattu, Kaw, Hakim.

Bhava Kapishthal Aupamanyava : Wani, Khan, Kantroo, Bhat

Bhuta Vatsya Aupamanyava : Peshin, Revoo.

Dar Bharadwaja: Bangi, Dar, Jawansher, Misri, Parikala, Qandahari Thalatsur, Tritsha, Tshut, Turki, Uthu, Vichari, Waguzari, Jatoo, Datt, Mawa.

Dar Varshaganya : Bakhshi, Kachru, Safaya, Shali

Dar Bhar Shigan : Kuchroo (Kakroo).

Deva Bharadwaja : Jatu, Khurdi, Sabani, Yachh, Zaru, Kallu, Gadroo.

Deva Kashyap : Chatta

Dathtreya (Koul) : Aima, Babu, Bamtsunt, Bamzai, Buju, Chowdhri, Dandar, Dangar, Drabi, Dout, Hak, Jalali, Jinsi, Jota, Kak, Keni, Kissu, Kothdar, Ladakhi, Mekhzin, Mandal, Moza, Muhtasib, Nagari, Padar, Pahalwan, Ratiz, Sahib Shargha, Shoga, Singhari, Salman, Sultan, Tota, Ugra, Zamindar Sharabi, Dembi, Achkan. Tukra, Chaman.

Dat Was : Khari

Dar Dev Shalan Kapi : Mota

Deva Bharadwaja Kaushika Deva : Dar

Dev Shalana Kaushika : Muttu

Deva Gargya : Bhan

Dar Kapisthala Upamanuva : Mich,

Dar Kapisthala Manuva : Bootnath (Bijbehara)

Deva Gautama : Bhatt, Purbi, Pandit (Tangmarg)

Dar Shandalya : Jogi

Deva Gautama Laugakshi : Hakim

Dipat Saman Aupamanyava : Sapru

Deva Kaushika : Bhatt

Dhaumyayana : Razdan

Deva Kantha Kashyapa : Kar

Deva Varshaganya Shandilya : Safaya

Deva Kucha Atreya : Badgami

Dat Sharman Kantha Kashyapa : Raina, Pandit, Bradoo

Deva Laugakshi : Mantapuri, Pandit

Deva Kashyap Maudgalya Kashyap : Bradi, Pandit

Deva Parashara : Thogan, Tulsi, Yachh, Kak

Deva Patsvamina Koshk : Kalpush

Dat Varshaganya : Sazawul

Deva Swamina Gotam Kaushika Mudgalaya : Pandit, Kukiloo

Deva Shandalya : Bataphalu, Karawani

Dev Wasishta : Shopuri, Hukku, Ukhlu

Dev Svamina Maudgalya : Bradi

Dev Vishamitra Varshaganya : Kem, Vangar, Wangoo

Dev Wasishta : Ukhlu

Dar Kapisthala : Lidi, Bhatt

Dar Wasak Shandilya : Safaya

Deva Vardhatta Shalan Kautsa : Tsrungu (Chrangoo)

Deva Dat Gautma Kaushik Bhardwaja: Gushai & Bumai, (Sopori) Pandit.

Dat Dat Shalan Kautsa : Bhatt, Kasab, Khaumush, Malik, Sathu

Dev Aupamanyava : Kalu, Khashu, Meva, Pandit, Teli (Koul).

Deva Patsvamina Aupamanyava Kaushika: Badgami, Kandhari, Kalpush, Bhan, Misri

Kash Aupamanyava : Bhatt

Karchanda Shandale : Chandru, Kar

Kara Shandalya : Mantu, Pandit, Shishoo

Kantha Dhaumyana Laugakshi Gautama : Bandar, Breth, Hastiwal, Muhtasib, Kav, Razdan, Shah, Shair, Wangani, Wat, Zari.

Kanth Kasahap : Bhatt, Dassu, Razdan, Tangan, Shakdher, Anand.

Kashyapa Kautsa : Bhat (Wachi)

Kapil : Mattas

Kashyapa : Khah (Khanna)

Mitra Atreya : Kaboo (Baramulla)

Mitra Kashyapa : Handu, Bhat

Mitra Shandalya : Bhatt

Mitra Svamina Kaushika Atreya : Said

Nanda Kaushika Bharadwaja : Pandit

Nanda Koshk : Bhatt

Nanda Gotam : Pandit

Paldeva Vasagargya : Pat, Kukru, Khoshu. Kav, Pir, Malla. Bangru, Bakaya, Kadalabuju, Khashu, Kichlu, Kokru, Mala, Mam, Mirakhur, Misri, Munga, Pir, Put, Sopuri-Pandit, Khar, Dullo, Thathoo, Saraf.

Pat Svamina Kaushika : Amhardar, Bira, Braru, Chacha, Chaghat, Durani, Fotedar, Ganju, Jala, Kuchru, Kalu, Khurdi, Kyani, Mam, Mahaldhar, Mattu, Misri, Pandit, Panzu, Salman, Shanglu Sulu, Teng, Tritshal, Unt, Vashnavi, Wufa, Wanchu, Waza, Zithu, Saproo, Gurkhu, Kitroo, Zalpuri, Dhar, Ganhar, Wattal.

Pat Svamina Deva Ratra Parwara : Pandit, Watal

Ratna Kucha : Raina.

Ratra Vishwamitra Ahastya : .Mattu, Bhat.

Rajdat Atreya Shalan Kautsa : Bhat.

Rajbhut Logaskhi Deval : Bhan

Ratra Bhargava: Zitshoo, Chacha

Raja Dathattatreya : Partazi.

Raj Kaushika : Hakachar, Khod

Rashi Kaushika : Kashgari.

Raj Shandalya : Duru.

Rashi Kavigargya : Zaru, Goja.

Ratra Varshanganya: Kotar.

Ratra Vishwamitra Vashishta: Trakari, Matoo.

Raj Vashisht : Shunglu.

Svamina Warshaganya : Chothai; Duda, Hangal, Kathju, Lange, Kasid.

Svamina Atreya : Chaka, Handu, Gadwali, Kala, Shal, Sikh.

Shandalya Bharadwaja : Bhatt.

Sharman Bharadwaja : Bhatt

Sharman Atreya : Gaddu, Tatoo.

Soma Wasisht : Vuitho

Sharman Kautsa : Bhatt, Mogal, Sav, Thela

Sharman Kautsa Atreya : Ragoo, Nand, Datt, Koul

Shalan Kautsa Sharman Gusha Watsya
Aupamanyava : Tilwan Koul, Mukka.

Svamina Gotam Laugakshi : Choku, Chhotu, Turi

Svamina Shandalya : Bhatt, Dass, Bakhshi, Nari, Vass, Pandit, Fata

Svamina Vasishta Bharadwaja: Bhatt, , Handu, Hukhu

Svamina Vasa Gargya : Langer, Sum, Gadwa, Datt, Nand, Halmat

Svamina Gargya : Machama

Svamina Gotam Shandalya : Labru, Razdan

Svamina Koshk Bharadwaj : Bhatt, Kukru

Svamina Gotam Shalan Kucha Atreya: Razdan, Raina, Bhatt, Challu.

Svamina Gotam Gosh Vas Aupamanyava: Chakan

Svamina Vatsya Aupamanyava : Bhatt, Wall, Malla

Svamina Gotam Atreya : Tsul

Svamina Hasya Dvaseya : Khanakatu

Svamina Kaushika : Thakur, Watal

Svamina Kautsa Atreya: Koul

Svamina Kantha Kashyapa : Labru

Svamina Rishi Kanya Gargya : Koul (Kulin)

Shandale : Shayer

Svamina Aupamanyava : Gigu

Svamina Rishi Kanya Vatsya : Tufchi

Svamina Vas Atreya : Ghasi, Bhan, Thusu, Waza

Svamina Bharadvaja : Bazari, Garyali, Jan, Khar, Miskin, Miyan, Munshi, Tikku, Kutsru.

Svamina Bharagava: Bali, Battiv.

Svamina Gautama : Gagar, Tava, Padora, Parimu, Keni, Kak, Razdan, Fehrist, Tarivala, Halli, Khaber. Bazaz, Badam, Charangu, Chillum, Gurut, Kak, Khosa, Kakapuri, Labru Langer, Manwotu, Naqib, Padora, Piala, Qazi, Razdan, Thalatsur, Thapal, Zari. Bhatt

Svamina Gautama Bharadvaja: Kemdal, Karihalu.

Svamina Maudgalya : Bhuni, Chana, Dewani, Galikrapa, Kanth, Khazanchi, Mazari, Muj, Madan, Mushran, Put, Shora Taku, Zahi, Razdan, Zitu, Zotan, Raina, Monga, Lala, Kandar, Reshi.

Vatsya Gusha Aupamanyava : Pandit

Vasishta Svamina Maudgalya : Bhandari

Vasishta Katyani : Makru

Varshayani : Barbuz, Karnel

Wardhatta Shalana Kucha : Muki, Sopori, Pandit.

Wasadeva Palagargya : Bindri

Wasishta : Bhatt, Rangateng

Note :- Please intimate us on phone No. 0191-2555064 if you do not find your Gotra in the above list or e-mail us at : vijayeshwer@yahoo.com.

काश्मीर क्षेत्र में प्राचीन काल से प्रचलित यात्राएँ

उमा भगवती यात्रा, भारि आगन	चैत्र शुक्लपक्ष नवमी	शुपयन (कपालमोचन) यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी
शिवा भगवती, अक्येनीगाम	चैत्र शुक्लपक्ष नवमी	श्री अमरनाथ व थजीवारा यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
श्री भद्रकाली यात्रा वडीपोरा हण्दवारा	चैत्र शुक्लपक्ष नवमी	ध्यानेश्वर व हरनाग हरवन यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
कमला यात्रा, त्राल	वैशाख कृष्णपक्ष पंचमी	नबदल यात्रा, त्राल	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी
डुमटबल यात्रा, कुकरनाग	वैशाख शुक्लपक्ष एकादशी	मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, (मट्टन)	भाद्र शुक्ल पक्ष षष्ठी
कूटी हेर (कुटहार) यात्रा, सागम	वैशाख शुक्लपक्ष तृतीया	हरमुकुट गंगा (गंगबल) यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी
गणपतयार यात्रा, श्रीनगर	वैशाख शुक्लपक्ष चतुर्दशी	गोतमनाग यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी
जीठयार यात्रा, श्रीनगर	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष पंचमी	नारायण नाग व डुमटबल यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी
नन्दकेश्वर यात्रा, सीर तथा सुम्बल	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष अमावसी	विश्ववुत्र यात्रा, वेरीनाग	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी
क्षीर भवानी यात्रा, तुलमुल	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्टमी	अन्नतनाग (नागबल) यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी
खनबिरिनय यात्रा, देवसर (कुलगाम)	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्टमी	पापहरणनाग, कारकूटनाग सेली	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी
मजी गाम यात्रा	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्टमी	विजयेश्वर यात्रा, बिजबिहारा	आश्विन कृष्ण पक्ष अमा०
लकुट पूर यात्रा	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्टमी	सोमयार यात्रा, श्रीनगर	आश्विन कृष्ण पक्ष अमा०
हरिश्चर यात्रा, खुनुमुह	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्टमी	भद्रकाली वडीपोरा हन्दवारा यात्रा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी
जया देवी यात्रा, बिजबिहारा	आषाढ शुक्ल पक्ष नवमी	मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, मार्तण्ड	माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी
लुक भवन यात्रा, लुकभवन	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	चक्रेश्वर यात्रा	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी
कौसर नाग व पांजथ नाग यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	विचार नाग यात्रा, विचार नाग	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी

काश्मीर के महात्माओं की जयन्तियाँ

नोट:- निम्न लिखे गए महात्माओं की जयन्तियों में यदि दिन तिथि आगे पीछे हो तो हमें अवश्य सूचित करें।

महात्मा मोहन लाल ठुसू (कोफूर) जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	13 अप्रैल
महात्मा श्री काशीनाथ जी कौल जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी	17 अप्रैल
उमा भगवती जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	21 अप्रैल
शिवा भगवती, जयन्ती, अकिनगाम	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	21 अप्रैल
स्वामी कुमार जी जयन्ती, उदमपुर गडी	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	24 अप्रैल
स्वामी रूपजी मस्ताना जयन्ती, चिनौर	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	24 अप्रैल
स्वामी बादशाह कलन्दर जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	27 अप्रैल
श्री महादेव काक भान जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	3 मई
श्री जानकीनाथ साहिब दर जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	4 मई
स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती, ईश्वर निशात, महेन्द्र नगर	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	8 मई
महात्मा दीनानाथ भान (डांगरपुर) जयन्ती	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	23 मई
स्वा. किन्न टोठ यच्छकोट निवासी जयन्ती	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वादशी	28 मई
स्वामी गोविंद कौल जलाली जयन्ती, त्रलोकपुरा, गोलगुजराल	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	30 मई
श्री ज्येष्ठा देवी जयन्ती, ज्योठयॉर, राज भवन मार्ग, श्रीनगर	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	30 मई
श्री मान बट मान जयन्ती, फतेपुर	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	11 जून
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री काशीनाथ हण्डू, जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष चतुर्थी	14 जून
श्री रघुनाथ जी कुक्लू जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचम्यां	15 जून

श्री रघुनाथ जी ब्रह्मचारी जयन्ती .	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचम्यां	15 जून
श्री हेमराज जी जयन्ती खव काश्मीर / सुदमहादेव	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	18 जून
श्री सिद्ध बब जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	19 जून
महामहेश्वराचार्य अभिनवगुप्त जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी	21 जून
माता रूपभवानी जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	24 जून
श्री महादेव काक जयन्ती, रत्नी पोरा, पुलवामा	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	24 जून
श्री मोहन लाल जयन्ती उदमपुर	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	27 जून
स्वामी श्यामलाल कौल (ओगरा) जयन्ती	आषाढ कृष्ण पक्ष एकादशी	5 जुलाई
शिवा भगवती जयन्ती	आषाढ शुक्लपक्ष द्वितीया	12 जुलाई
स्वामी स्वयमानन्द जयन्ती	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	16 जुलाई
जगतगुरु श्री गोपीनाथ जी जयन्ती, खरयार श्रीनगर व उदयवाला	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	21 जुलाई
स्वामी विद्याधर जी जयन्ती, श्रीनगर	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	22 जुलाई
स्वामी आप्ताब भास्कर जी जयन्ती	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	19 अगस्त
श्री कृष्ण जू राजदान जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	10 सितम्बर
स्वा. मोतीलाल ब्रह्मचारी जी जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष पंचमी	11 सितम्बर
माता लल्लेश्वरी जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	14 सितम्बर
स्वमी गाश कौल जी जलाली जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	18 सितम्बर
स्वामी हर काक जयन्ती, बमहामा कुपवारा	आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	4 अक्टूबर
आनन्द स्वामी श्री प्राण नाथ जी बट्ट गरीब जयन्ती	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	5 अक्टूबर
स्वामी पृथ्वीनाथ पण्डित जयन्ती	कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी	29 अक्टूबर

श्री महादेव काक भान (तोफ) जयन्ती	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	30 अक्टूबर
महात्मा चूनीलाल राजदान, जयन्ती (हंदवारा), पटोली ब्रह्मना जम्मू	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	3 नवम्बर
महातमा श्री तारा चंद जी, जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावसी	4 नवम्बर
महामहेश्वराचार्य महताबकाक जी जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	8 नवम्बर
स्वामी गोकुलनाथ जी जयन्ती, अम्बिका विहार मुंशी चक, जम्मू	कार्तिक शुक्ल पक्ष सप्तमी	10 नवम्बर
स्वामी पुष्करनाथ जी जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	15 नवम्बर
श्रीमती कमला काचरू जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	15 नवम्बर
चण्डीगाम महात्मा जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	19 नवम्बर
स्वामी पोष बब महाराज जयन्ती (रैथन बडगाम) गंगयाल	मार्ग कृष्ण पक्ष द्वितीया	21 नवम्बर
माता शारिका जी जयन्ती, महेन्द्र नगर, जम्मू	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	5 दिसम्बर
स्वामी श्याम लाल जी हाजीन जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	5 दिसम्बर
स्वामी मस्तबब जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 दिसम्बर
नन्दलाल मस्ताना जयन्ती, (नुनर वाले) लालेदा बाग	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	29 दिसम्बर
महामहेश्वराचार्य श्री राम जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	31 दिसम्बर
श्री मिरज़काक जयन्ती, हांगलगुण्ड	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	3 जनवरी
स्वा. आफताभ जू वाँगनू जयन्ती	माघ शुक्ल पक्ष दशमी	11 फरवरी
स्वामी वामन जी महाराज जयन्ती (वाछलुन शुपीयन)	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	16 फरवरी
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री प्रेमनाथ सोपोरी जयन्ती	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	16 फरवरी
श्री व्यदलाल जयन्ती, गुशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	20 फरवरी
महाशान्ति प्रभू स्वा. जगदानन्द ब्रह्मचारी जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष तृतीया	5 मार्च

स्वामी राम जुंव सफाया (तबरदार) जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	8 मार्च
स्वामी शक्ति महाराज जयन्ती, उदयवाला बोहडी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	10 मार्च
श्री नन्दलाल जी जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	10 मार्च
स्वामी गोविन्द कौल जयन्ती (वनपू)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	16 मार्च
स्वामी धर सर्वानन्द जी सहीपोरा लंगेट जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	21 मार्च
स्वामी ईश्वर दास बक्शी जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	24 मार्च
श्री भट्ट जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	1 अप्रैल

तर्पण करने की विधि

तर्पण करते समय बायां यज्ञोपवीत रखें (अपस्वेन)। यदि माता जी या पिता जी जीवित हैं तो उनका नाम तर्पण में न लें।

तर्पण तांबे या कांस के पात्र से देना चाहिए।

- पित्रों के नाम के साथ गोत्र का नाम लेना ज़रूरी है। यदि गोत्र के विषय में किसी प्रकार का संशय हो तो पुरुष काश्यपगोत्री तथा स्त्री काश्यपी गोत्री उचचरित करके, तर्पण या धार्मिक, कर्मकाण्डीय क्रियायें सम्पन्न कर सकते हैं।
- तर्पण करते समय पहले महीना जैसे चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ आदि मासस्य, पक्ष-कृष्ण / शुक्लपक्षस्य, निश्चित तिथि जैसे प्रतिपदायां, द्वितीयस्यां, तृतीयस्यां आदि तिथियाँ, वार का नाम सोमवासरनितायां या शुक्रवारसरनितायां आदि उसके बाद पित्रों का नाम लें। जैसे तत्सत ब्रह्म, अथ्य तावत् तिथौ अद्य ज्येष्ठ मासस्य, शुक्ल अथवा कृष्णपक्षस्य तिथौ अष्टम्यां या नवम्यां, सोमवासरनितायां या शुक्रवासरनितायां पित्रे (पिता का नाम) रामदराय भारद्वाज्ये, (दादा का नाम) पितामहाये दामूदर भारद्वाज्ये, (पड़दादा का नाम) प्रपितामहाये गणेशदराय भारद्वाज्ये, (माता का नाम) मात्रे कुशल्या देव्यै भारद्वाज्यै, (नानी का नाम) पितामह्यौ अमरावती देव्यै भारद्वाज्यै, (पड़दादी का नाम) प्रपितामह्यौ तुलसी देव्यै भारद्वाज्यै।
- मातृ पक्षास्तु ये केचित चान्ये पितृपक्षजाः, गुरु शुश्वर बन्धूनां ये कुलेषु समुदभवाः ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्ध वर्जिताः अनं जलदानेन ते सर्वे लभन्तां तृप्तिमुत्तमाम समस्त माता पितृभ्यो द्वादशदेवतेभ्यः पितृभ्यः दीपः स्वधा धूपः अन्नं स्वधाः॥
- तर्पण समाप्त करने के बाद यज्ञोपवेत दाई ओर रखें।

काश्मीर के महात्माओं के श्राद्ध/यज्ञ

नोट:- निम्न लिखे गए श्राद्ध में 'दि, प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी हो सकती है, हमें अवश्य सूचित करें।

चण्डीगाम महात्मा यज्ञ	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	19 अप्रैल
स्वामी भोई टोठ जी निर्वाण दिवस	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	22 अप्रैल
स्वामी पृथ्वीनाथ पण्डित यज्ञ	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	30 अप्रैल
श्री ऋषि पीर श्राद्ध	वैशाख कृष्ण पक्ष षष्ठी	2 मई
श्री महादेव काक भान यज्ञ	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	4 मई
श्री नारायण जुव यज्ञ, बुल्लेबुल्लेकर	वैशाख कृष्ण पक्ष दशम्यां	6 मई
स्वामी सूरदास जी निर्वाण दिवस, गणेश स्थल आश्रम सारी जम्मू	वैशाख कृष्ण पक्ष दशम्यां	6 मई
श्री शकर साहिब यज्ञ,	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	12 मई
स्वामी शम्भू नाथ जी दर (गुशी) निर्वाण दिवस	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	15 मई
श्री योगिराज धर्मदत्त जी यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	15 मई
स्वा. मोतीलाल ब्रह्मचारी जी यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष अष्टमी	20 मई
स्वा. सर्वानन्द जी गुसाईगुंड यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	23 मई
श्री काक जी यज्ञ (हॉगलगुण्ड) कुक्करनाग व नगरोटा जम्मू	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	23 मई
विजयेश्वर निवासी ज्योतिषी काशीनाथ शर्मा निर्वाण दिवस	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सप्तमी	1 जून
स्वामी नन्दकेश्वर यज्ञ (सीर) गोलगुजराल / अकलपुर जम्मू	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	10 जून
जगतगुरू श्री गोपीनाथ जी यज्ञ, खरयार श्रीनगर व उदयवाला	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	12 जून
स्वामी वामन जी महाराज, वाछुलुन श्रुपियन यज्ञ	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	27 जून

स्वा. गोविंद कौल जी जलाली यज्ञ, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	आषाढ़ कृष्ण पक्ष सप्तमी	1 जुलाई
स्वा. किन्न टोट यच्छकोट निवासी यज्ञ	आषाढ़ कृष्ण पक्ष सप्तमी	1 जुलाई
स्वामी आनंद जी, यज्ञ विलगाम	आषाढ़ शुक्ल पक्ष सप्तमी	16 जुलाई
स्वामी कण्ठ राम जी यज्ञ, कुलगाम	आषाढ़ शुक्ल पक्ष दशमी	19 जुलाई
स्वामी पुष्कर नाथ यज्ञ	आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी	21 जुलाई
श्री अमरनाथ वैष्णवी निर्वाण दिवस	आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	22 जुलाई
सन्त राधा देवी यज्ञ, सागम कुकरनाग	आषाढ़ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	23 जुलाई
स्वामी लाल जी यज्ञ	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	26 जुलाई
श्री ग्रट बब दिवस (यज्ञ)	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	5 अगस्त
स्वामी रघु नाथ जी ब्रह्मचार्य यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	14 अगस्त
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री प्रेमनाथ सोपोरी, श्राद्ध	श्रावण शुक्ल सप्तमी	15 अगस्त
श्री जानकीनाथ साहिब दर यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष नवमी	16 अगस्त
स्वामी गोविन्द कौल यज्ञ (वनपू)	श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	21 अगस्त
स्वामी गण काक यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	22 अगस्त
स्वा. धर सर्वानन्द जी सहीपोरा लंगेट निवासी यज्ञ	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	6 सितम्बर
स्वामी परमानन्द जी यज्ञ (मार्तण्ड)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	10 सितम्बर
माता उमादेवी यज्ञ (उमानगरी) मुड्डी, जम्मू	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	14 सितम्बर
स्वामी काशीनाथ बब यज्ञ (हुगाम)	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	18 सितम्बर
श्री शकर साहिब यज्ञ, मुंगी चक, जम्मू	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	21 सितम्बर
श्री केशवभट्ट ज्योतिषी (सिख) रैणावारी अन्तर्धान दिवस	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया	22 सितम्बर

स्वामी लक्ष्मण जी यज्ञ, निशात (श्रीनगर) व महेन्द्र नगर (जम्मू)	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	25 सितम्बर
स्वामी काल बब यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	5 अक्टूबर
स्वामी हरि कृष्ण यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया	8 अक्टूबर
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री काशीनाथ हण्डू, निर्वाण दिवस	आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्थी	9 अक्टूबर
श्री नन्द लाल साहिब यज्ञ, लाले दा बाग जम्मू	आश्विन शुक्ल त्रयोदशी	18 अक्टूबर
श्री सिद्ध बब यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	22 अक्टूबर
ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा अन्तर्ध्यान दिवस, विजयेश्वर निवासी	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	24 अक्टूबर
स्वामी गाश कौल जी निर्वाण जग, त्रलोकपुरा, गोलगुजराल	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	27 अक्टूबर
स्वामी व्यदलाल यज्ञ, गुशी	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	27 अक्टूबर
महात्मा मधुसूदन राजदान, यज्ञ, तीर्थ नगर, तालाबतिलौ जम्मू	कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी	8 नवम्बर
श्री महादेव काक यज्ञ (रली पोरा)	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 नवम्बर
स्वामी आत्माराम जी यज्ञ, गुसानी गुण्ड	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	14 नवम्बर
स्वामी पोष बब महाराज यज्ञ (रैथन बडगाम) गंगयाल	मार्ग कृष्ण पक्ष द्वितीया	21 नवम्बर
स्वामी आनन्द जी यज्ञ जमनगरी	मार्ग कृष्ण पक्ष तृतीया	22 नवम्बर
स्वामी काशीनाथ जी यज्ञ, हुगाम	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	24 नवम्बर
स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ, गोतमनाग	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	2 दिसम्बर
स्वामी विद्याधर जी यज्ञ, श्रीनगर	मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया	6 दिसम्बर
स्वा. आफताभ जू वौगनू श्राद्ध	मार्ग शुक्ल पक्ष पंचमी	8 दिसम्बर
विजयेश्वर निवासी डॉ. मनमोहन ज्योतिषी निर्वाण दिवस	पौष कृष्ण पक्ष तृतीया	21 दिसम्बर
महात्मा श्री तारा चंद जी निर्वाण जग, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	पौष कृष्ण पक्ष तृतीया	22 दिसम्बर

महात्मा स्वर्गी चूनीलाल राजदान(हंदवारा), यज्ञ पटोली ब्रह्मना जम्मु	पौष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	1 जनवरी
श्री अशोकानन्द यज्ञ, नागढ़ण्डी	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	2 जनवरी
श्री लक्ष्मण जी पण्डित यज्ञ	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	2 जनवरी
स्वामी शिवराम जी उमानगरी निवासी यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	3 जनवरी
स्वामी दमकाक जी यज्ञ शरिका पीठ, सुभाष नगर	पौष शुक्ल पक्ष अष्टमी	10 जनवरी
श्रीमती कमला काचरू यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष नवमी	11 जनवरी
माता मथुरा देवी यज्ञ, वेरीनाग	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	16 जनवरी
स्वामी आप्ताभ जी भास्कर यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	23 जनवरी
स्वामी काशीनाथ कौल यज्ञ, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	23 जनवरी
श्री जगन्नाथ वल्ली, निरवाण दिवस, वेरीनाग काश्मीर	माघ कृष्ण पक्ष सप्तमी	25 जनवरी
स्वामी श्री सत्यानन्द जी उमानगरी निवासी यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी	25 जनवरी
स्वामी राम जी यज्ञ, त्रिक आश्रम, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	31 जनवरी
श्री नन्द लाल जी यज्ञ (बडगाम)	माघ शुक्ल पक्ष तृतीया	3 फरवरी
महात्मा दीनानाथ भान यज्ञ	माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी	13 फरवरी
माता शारिका जी यज्ञ	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	19 फरवरी
स्वामी श्यामलाल कौल (ओगरा) यज्ञ	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	24 फरवरी
श्री शंकर पण्डित उमानगरी निवासी यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	3 मार्च
स्वामी राम जुँव सफाया (तबरदार) यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	4 मार्च
स्वामी महताब काक जी यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	4 मार्च
श्री मानकाक जी यज्ञ (गोतमनाग)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष दशमी	13 मार्च

श्री काल बब यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	18 मार्च
स्वामी हरकाक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	24 मार्च
श्री किशकाक यज्ञ, वडीपोरा	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	26 मार्च
ब्रह्मचार्य श्री अर्जुनदेव यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	27 मार्च
स्वामी श्यामलाल जी हाजीन यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	31 मार्च
स्वामी गाश काक जी यज्ञ, गोतमनाग	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	1 अप्रैल

सूर्य देव को जल देने की विधि !

अगर आप सूर्य देव की आराधना द्वारा सूर्य देव को प्रसन्न कर लेते हैं तो आपके जीवन से हर बाधा दूर होने लगती है व जीवन में खुशियों का संचार होने लगता है। आइये जानते हैं किन-किन जातकों को सूर्य देव को जल देना चाहिए या उनकी उपासना करनी चाहिए :-

- जिन लोगों की कुंडली में सूर्य देव कमजोर हो, जिन लोगों में आत्मविश्वास की कमी हो उन्हें सूर्य को जल अवश्य देना चाहिए।
- जो व्यक्ति एक निराशावादी जीवन जी रहा है उसे सूर्य देव की उपासना अवश्य करनी चाहिए।
- जो जातक घर-परिवार में और समाज में मान-सम्मान चाहते हैं उन्हें भी सूर्य पूजा करनी चाहिए।

सूर्य उदय के एक घंटे तक ही सूर्य को जल देना चाहिए। सुबह-सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर किसी खुले स्थान में जाए जहाँ से सूर्य आपको स्पष्ट दिखाई देता हो। एक ताम्बे के पात्र में जल भरकर इसमें थोड़े चावल, थोड़ी चीनी, पुष्प डाले व कुमकुम द्वारा जल में छीटे लगाये। अब आप सूर्य देव के सामने खड़े होकर ताम्बे के पात्र द्वारा दोनों हाथों से जल नीचे जमीन पर छोड़ते जाये। ध्यान दे, ताम्बे के पात्र को अपने सीने के सामने रखे और सूर्य देव को जल अर्पित करते हुए पात्र को कंधों से ऊपर तक ले जाने का प्रयास करें। पात्र द्वारा नीचे गिरने वाली जलधारा में सूर्य के प्रतिबिम्ब को देखने का प्रयास करें। सूर्य को जल देते समय निरंतर इस मंत्र के जप करते जाए : " ॐ सूर्याय नमः "। सूर्य को जल देने के उपरान्त नीचे झुककर जल को स्पर्श करे और अंत में खड़े होकर हाथ जोड़ते हुए सूर्य देव को प्रणाम करें।

कुमार षष्ठी व्रत			अष्टमी व्रत			पूर्णिमा व्रत			संकट निवारण चतुर्थी		
चैत्र	18 अप्रैल	रवि	चैत्र	20 अप्रैल	भौम	चैत्र	27 अप्रैल	भौम	वैशाख	30 अप्रैल	चन्द्रोदय 11-09 रात
वैशाख	17 मई	सोम	वैशाख	20 मई	गुरु	वैशाख	26 मई	बुध	ज्येष्ठ	29 मई	10-55 रात
ज्येष्ठ	16 जून	बुध	ज्येष्ठ	18 जून	शुक्र	ज्येष्ठ	24 जून	गुरु	आषाढ़	27 जून	10-21 रात
आषाढ़	15 जुलाई	गुरु	आषाढ़	17 जुलाई	शनि	आषाढ़	24 जुलाई	शनि	श्रावण	27 जुलाई	10-02 रात
श्रावण	13 अगस्त	शुक्र	श्रावण	16 अगस्त	सोम	श्रावण	22 अगस्त	रवि	भाद्र	25 अगस्त	8-59 रात
भाद्र	12 सितम्बर	रवि	भाद्र	14 सितम्बर	भौम	भाद्र	20 सितम्बर	सोम	आश्विन	24 सितम्बर	8-24 रात
आश्विन	11 अक्टूबर	सोम	आश्विन	13 अक्टूबर	बुध	आश्विन	20 अक्टूबर	बुध	कार्तिक	24 अक्टूबर	8-05 सायं
कार्तिक	9 नवम्बर	भौम	कार्तिक	11 नवम्बर	गुरु	कार्तिक	19 नवम्बर	शुक्र	मार्ग	23 नवम्बर	8-24 सायं
मार्ग	9 दिसम्बर	गुरु	मार्ग	11 दिसम्बर	शनि	मार्ग	19 दिसम्बर	रवि	पौष	22 दिसम्बर	8-12 रात
पौष	7 जनवरी	शुक्र	पौष	10 जनवरी	सोम	पौष	17 जनवरी	सोम	माघ	21 जनवरी	9-05 रात
माघ	6 फरवरी	रवि	माघ	9 फरवरी	बुध	माघ	16 फरवरी	बुध	फालगुन	20 फरवरी	10-02 रात
फालगुन	8 मार्च	भौम	फालगुन	10 मार्च	गुरु	फालगुन	18 मार्च	शुक्र	चैत्र	21 मार्च	10-04 रात

अमावसी व्रत

वैशाख	11 मई	भौम
ज्येष्ठ	10 जून	गुरु
आषाढ़	10 जुलाई	शनि
श्रावण	8 अगस्त	रवि
भाद्र	7 सितम्बर	भौम
आश्विन	6 अक्टूबर	बुध
कार्तिक	4 नवम्बर	गुरु
मार्ग	4 दिसम्बर	शनि
पौष	2 जनवरी	रवि
माघ	1 फरवरी	भौम
फालगुन	2 मार्च	बुध
चैत्र	1 अप्रैल	शुक्र

संक्रान्ति व्रत

वैशाख	14 अप्रैल	बुध
ज्येष्ठ	14 मई	शुक्र
आषाढ़	15 जून	भौम
श्रावण	16 जुलाई	शुक्र
भाद्र	17 अगस्त	भौम
आश्विन	17 सितम्बर	शुक्र
कार्तिक	17 अक्टूबर	रवि
मार्ग	16 नवम्बर	भौम
पौष	16 दिसम्बर	गुरु
माघ	14 जनवरी	शुक्र
फालगुन	13 फरवरी	रवि
चैत्र	15 मार्च	भौम

एकादशी व्रत

चैत्र	23 अप्रैल	शुक्र
वैशाख	23 मई	रवि
ज्येष्ठ	21 जून	सोम
आषाढ़	20 जुलाई	भौम
श्रावण	18 अगस्त	बुध
भाद्र	17 सितम्बर	शुक्र
आश्विन	16 अक्टूबर	शनि
कार्तिक	14 नवम्बर	रवि
मार्ग	14 दिसम्बर	भौम
पौष	13 जनवरी	गुरु
माघ	12 फरवरी	शनि
फालगुन	14 मार्च	सोम

हमारी संस्कृति के प्रतीक:-

श्राद्ध तथा जयन्ती देखने की विधि:-

जिस दिन तिथि के साथ 'प्र' लिखा हो उस दिन का श्राद्ध अपने दिन आता है, किन्तु दूसरे दिन की तिथि के साथ 'दि' लिखा हो तो उसदिन का श्राद्ध भी अपने ही दिन आता है, शेष तिथियों पर यदि 'दि' लिखा हो तो उस दिन का श्राद्ध पहले दिन आता है। परन्तु जयन्ती हमेशा अपनी ही तिथि पर मनानी चाहिये। केवल तिथि क्षय होने पर जयन्ती पहले दिन और अधिक तिथि होने पर जयन्ती दूसरी तिथि पर मनानी चाहिये।

सम्पादक

आवश्यक जानकारी:- देवगोण के लिये मुहूर्त, नक्षत्र, तिथि आदि देखने की कोई आवश्यकता नहीं होती। परन्तु देवगोण के दिन यदि भौमवार या शनिवार हो तो देवगोण का आरम्भ सूर्य उदय से पहले ही करें।

काश्मीरी पर्व और त्यौहार विक्रमी सम्वत् 2078 के लिये

नवरेह	13 अप्रैल	गुरु पूर्णिमा	24 जुलाई	अन्नत चोदाह	19 सितम्बर	मोक्षदा काह	14 दिसम्बर
जंगत्रय	15 अप्रैल	कमला काह	4 अगस्त	पितृ पक्ष शरू	21 सितम्बर	मुंजहर तहर	20 दिसम्बर
दुर्गाष्टमी	20 अप्रैल	नाग पंचमी	13 अगस्त	साहिब सतम	27 सितम्बर	चेतना दिवस	27 दिसम्बर
रामनवमी	21 अप्रैल	पवित्र काह	18 अगस्त	दुर्गाष्टमी	13 अक्टूबर	आ.भैरव जयन्ती	27 दिसम्बर
वेताल षष्ठी	2 मई	श्रावण बाह	19 अगस्त	महानवमी	14 अक्टूबर	सफलता काह	30 दिसम्बर
अक्षय तृतीया	14 मई	रक्षा बन्धन	22 अगस्त	विजया दशमी	15 अक्टूबर	क्षयचरि मावस	2 जनवरी
नारद काह	23 मई	चन्दन षष्ठी	27 अगस्त	पापकुशा काह	16 अक्टूबर	शिशर संक्रांति	14 जनवरी
गणेश चोदाह	25 मई	जन्म अष्टमी	30 अगस्त	लवंग पुनिम	20 अक्टूबर	निर्वासन दिवस	19 जनवरी
ज्येष्ठा देवी यज्ञ	30 मई	कुशा मावसी	7 सितम्बर	करवा चौथ	24 अक्टूबर	साहिब सतम	24 जनवरी
ज्येष्ठ अष्टमी	18 जून	विनायक चोरम	10 सितम्बर	दीपमाला	4 नवम्बर	षटतिला काह	28 जनवरी
निर्जला काह	21 जून	वराह पंचम	11 सितम्बर	विश्व कर्मा पूजा	5 नवम्बर	माघ शिव १४	30 जनवरी
हार सतम	16 जुलाई	शारदा अष्टमी	14 सितम्बर	हरिबोधिनी काह	14 नवम्बर	माघ मावस	1 फरवरी
हार अठम	17 जुलाई	बलिदान दिवस	14 सितम्बर	गुरु नानक जयन्ती	19 नवम्बर	गौरी तृतीया	3 फरवरी
हार नवम	18 जुलाई	वामन बाह	18 सितम्बर	भैरव अष्टमी	27 नवम्बर	त्रिपुरा चोरम	4 फरवरी
ज्वाला चोदाह	23 जुलाई	वितस्ता जयन्ती	18 सितम्बर	उतपन्ना काह	30 नवम्बर	भीष्म अठम	8 फरवरी

भीम सेन काह	12 फरवरी
यक्षणी चोदाह	15 फरवरी
काव पुनिम	16 फरवरी
हुँर उकदोह	17 फरवरी
होराष्टमी	24 फरवरी
हेरथ (शिवरात्रि)	28 फरवरी
शिव चतुर्दशी	1 मार्च
महाशिवरात्रि	1 मार्च
वटुक परिमोज़न	3 मार्च
तील अठम	10 मार्च
थाल भरुण	13 मार्च
सोन्य	14 मार्च
होली	18 मार्च
चैत्र चोदाह	31 मार्च
थाल भरुण	1 अप्रैल
नवरात्रा आरम्भ	2 अप्रैल

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.)

बोहडी, जम्मू के नियम।

1. जन्मपत्री के लिए शुद्ध गणित का होना आवश्यक है, यदि आप शुद्ध और सही जन्मपत्री बनवाना चाहते हैं तो सम्वत्, तिथि, समय, जन्मस्थान और गोत्र लिखकर हमें भेजें या e-mail vijayeshwer@yahoo.com द्वारा हमसे सम्पर्क करें। हमारे यहां कम्प्यूटर द्वारा गणित की गई हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने की दक्षिणा 400रु है।
2. यदि जातक मिलाप करवाना हो तो हमारे यहां जन्म पत्रिकाओं (टिकनियों) का मिलान काश्मीरी रीति के अनुसार आधुनिकतम कम्प्यूटर प्रणाली से किया जाता है। अधिक जानकारी के लिए दूरभाष 2555064, 2552625 से सम्पर्क करें।
3. यदि आपने अपनी जन्मपत्री दिखानी हो तो आप विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय, बोहडी पट्टा जम्मू के संचालक ज्योतिषी सुनीत से सम्पर्क करें। आने वाले सज्जन फोन द्वारा पूर्व ही समय निर्धारित कर लें। Mob: 9419136991

रविवार को कार्यालय बन्द रहता है।

प्रबन्धक

पंचक

के आरम्भ तथा समाप्ति काल (सन् 2021-22 ई.)

दिनांक	आरम्भ		दिनांक	समाप्ति
04 मई	8:43 PM	से	09 मई	5:28 PM
31 मई	3:58 AM	से	05 जून	11:27 PM
28 जून	12:59 PM	से	03 जुलाई	6:13 AM
25 जुलाई	10:47 PM	से	30 जुलाई	2:02 PM
22 अगस्त	7:57 AM	से	26 अगस्त	10:29 PM
18 सितम्बर	3:26 PM	से	23 सितम्बर	6:44 AM
15 अक्टूबर	9:16 PM	से	20 अक्टूबर	2:02 PM
11 नवम्बर	2:51 AM	से	16 नवम्बर	8:14 PM
09 दिसम्बर	10:09 AM	से	13 दिसम्बर	2:05 AM
सन 2022 ईस्वी				
05 जनवरी	7:53 PM	से	10 जनवरी	8:49 AM
02 फरवरी	6:45 AM	से	06 फरवरी	5:10 PM
01 मार्च	4:31 PM	से	05 मार्च	2:29 AM
28 मार्च	11:54 PM	से	02 अप्रैल	11:21 AM

पंचक के विषय में

आवश्यक जानकारी:

धनिष्ठ नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त पांच नक्षत्रों (धनिष्ठ शतभिषाक, पू.भा., उ.भा., रेवती) वाली तिथियाँ पंचक कहलाती हैं। पंचक में दक्षिण दिशा की ओर यात्रा पर जाना, तेल, मिट्टी के बरतन, लकड़ी काटनी या घर लानी, दाहसंस्कार, छलुन तथा मस मुच्रंरुन, मेंहन्दी लगाना इत्यादि निषेध है। शेष सभी कार्यों के लिए पंचक शुभ माना जाता है। विवाह, यज्ञोपवीत जैसे शुभ कार्य पंचक में किये जा सकते हैं, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। पंचक में यदि यात्रा पर जाना हो तो मुहूर्त का विचार अवश्य करें।

यदि किसी की मृत्यु पंचक में हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान ब्रह्मण से पंचक शान्ति करवाने का विधान है।

गण्डांत आरम्भ काल		गण्डांत समाप्ति काल		गण्डांत आरम्भ काल		गण्डांत समाप्ति काल	
11 अप्रेल	4-51 रात से	12 अप्रेल	6-11 सायं तक	11 अक्टूबर	7-23 प्रातः से	11 अक्टूबर	6-33 सायं तक
21 अप्रेल	2-11 रात से	22 अप्रेल	2-07 दिन तक	20 अक्टूबर	7-34 प्रातः से	20 अक्टूबर	8-36 रात तक
30 अप्रेल	6-43 प्रातः से	30 अप्रेल	5-40 सायं तक	30 अक्टूबर	6-34 प्रातः से	30 अक्टूबर	6-58 सायं तक
9 मई	10-49 दिन से	9 मई	12-13 रात तक	7 नवम्बर	3-44 दिन से	7 नवम्बर	2-31 रात तक
19 मई	9-35 प्रातः से	19 मई	9-50 सायं तक	16 नवम्बर	1-43 दिन से	16 नवम्बर	2-51 रात तक
27 मई	5-10 सायं से	27 मई	3-52 रात तक	26 नवम्बर	2-09 दिन से	26 नवम्बर	2-53 रात तक
5 जून	4-48 दिन से	6 जून	6-13 प्रातः तक	4 दिसम्बर	2-32 रात से	5 दिसम्बर	1-04 दिन तक
15 जून	3-26 दिन से	15 जून	3-50 रात तक	13 दिसम्बर	7-34 सायं से	14 दिसम्बर	8-44 प्रातः तक
24 जून	3-50 रात से	25 जून	2-33 दिन तक	23 दिसम्बर	8-12 रात से	24 दिसम्बर	9-03 प्रातः तक
2 जुलाई	11-38 रात से	3 जुलाई	12-57 दिन तक	1 जनवरी	1-59 दिन से	1 जनवरी	12-33 रात तक
12 जुलाई	9-01 रात से	13 जुलाई	9-21 प्रातः तक	10 जनवरी	2-24 रात से	11 जनवरी	3-24 दिन तक
21 जुलाई	1-01 दिन से	21 जुलाई	11-59 रात तक	20 जनवरी	1-59 रात से	21 जनवरी	2-44 दिन तक
30 जुलाई	7-32 प्रातः से	30 जुलाई	8-41 रात तक	28 जनवरी	11-39 रात से	29 जनवरी	10-33 दिन तक
8 अगस्त	3-42 रात से	9 अगस्त	3-51 दिन तक	6 फरवरी	10-55 दिन से	6 फरवरी	11-37 रात तक
17 अगस्त	7-57 सायं से	18 अगस्त	7-13 प्रातः तक	16 फरवरी	8-53 प्रातः से	16 फरवरी	9-28 रात तक
26 अगस्त	4-04 दिन से	26 अगस्त	5-03 रात तक	25 फरवरी	6-28 प्रातः से	25 फरवरी	5-43 सायं तक
5 सितम्बर	12-02 दिन से	5 सितम्बर	12-03 रात तक	5 मार्च	8-20 रात से	6 मार्च	8-49 प्रातः तक
14 सितम्बर	1-25 रात से	15 सितम्बर	12-47 दिन तक	15 मार्च	5-12 सायं से	16 मार्च	5-45 प्रातः तक
23 सितम्बर	12-20 रात से	24 सितम्बर	1-16 दिन तक	24 मार्च	11-51 दिन से	24 मार्च	11-09 रात तक
2 अक्टूबर	9-26 रात से	3 अक्टूबर	9-33 प्रातः तक	1 अप्रेल	5-11 रात से	2 अप्रेल	5-40 सायं तक

गण्डमूल नक्षत्र के विषय में जानकारी :
 रेव, अश्वि, अश्ले, मघा, ज्येष्ठ, मूल-ये
 गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं-इन नक्षत्रों में
 उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के
 स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के
 सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में
 उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन
 पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् ब्राह्मण द्वारा
 शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के
 समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक
 के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में
 दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

गण्डमूल आरम्भ व समाप्त काल
विक्रमी 2078 के लिये

दिनांक	आरम्भ काल	दिनांक	समाप्त काल
11 अप्रैल	8:57 AM	13 अप्रैल	2:19 PM
21 अप्रैल	7:58 AM	23 अप्रैल	7:41 AM
29 अप्रैल	2:29 PM	01 मई	10:15 AM
08 मई	2:47 PM	10 मई	8:25 PM
18 मई	2:55 PM	20 मई	3:57 PM
26 मई	1:15 AM	28 मई	8:02 PM
04 जून	8:47 PM	06 जून	2:27 AM
14 जून	8:36 PM	16 जून	10:15 PM
23 जून	11:48 AM	25 जून	6:40 AM
01 जुलाई	3:49 AM	04 जुलाई	9:05 AM
11 जुलाई	2:22 AM	13 जुलाई	3:41 AM
20 जुलाई	8:32 PM	22 जुलाई	4:25 PM
29 जुलाई	12:02 PM	31 जुलाई	4:37 PM
08 अगस्त	9:19 AM	10 अगस्त	9:52 AM

16 अगस्त	3:02 AM	18 अगस्त	12:07 AM
25 अगस्त	8:48 PM	27 अगस्त	12:47 AM
04 सितम्बर	5:45 PM	06 सितम्बर	5:51 PM
13 सितम्बर	8:23 AM	14 सितम्बर	5:55 AM
21 सितम्बर	5:06 AM	24 सितम्बर	8:54 AM
01 अक्टूबर	2:57 AM	03 अक्टूबर	3:26 AM
10 अक्टूबर	2:44 PM	12 अक्टूबर	11:26 AM
19 अक्टूबर	12:12 PM	21 अक्टूबर	4:17 PM
29 अक्टूबर	11:38 AM	31 अक्टूबर	1:16 PM
06 नवम्बर	11:38 PM	08 नवम्बर	6:49 PM
15 नवम्बर	6:09 PM	17 नवम्बर	10:43 PM
25 नवम्बर	6:49 PM	27 नवम्बर	9:43 PM
04 दिसम्बर	10:47 AM	05 दिसम्बर	4:54 AM
12 दिसम्बर	11:59 PM	14 दिसम्बर	4:40 AM
22 दिसम्बर	12:45 AM	24 दिसम्बर	4:09 AM
31 दिसम्बर	10:04 PM	02 जनवरी	4:23 PM
08 जनवरी	7:10 AM	11 जनवरी	11:09 AM
18 जनवरी	6:42 AM	21 जनवरी	9:43 AM

27 जनवरी	7:10 AM	29 जनवरी	2:49 AM
05 फरवरी	4:08 PM	07 फरवरी	6:58 PM
15 फरवरी	1:48 PM	17 फरवरी	4:10 PM
24 फरवरी	1:31 PM	26 फरवरी	10:32 AM
04 मार्च	1:51 AM	06 मार्च	3:51 AM
14 मार्च	10:08 PM	16 मार्च	12:21 AM
23 मार्च	6:52 PM	25 मार्च	4:07 PM
01 अप्रैल	10:40 AM	03 अप्रैल	12:37 PM
11 अप्रैल	6:51 AM	13 अप्रैल	9:36 AM
19 अप्रैल	1:39 AM	21 अप्रैल	9:51 PM
28 अप्रैल	5:40 PM	30 अप्रैल	8:13 PM

कर-पंचक के विषय में जानकारी :- हस्त, चित्र, स्वात, विशाख, अनुराधा यह पांच नक्षत्र वाली तिथियाँ करपंचक कहलाती हैं। यह पांच नक्षत्र प्रायः हर काम के लिए उत्तम माने जाते हैं।

सूचना :- यदि जातक मिलाप करवाना हो तो हमारे यहां जन्म पत्रिकाओं (टिकनियों) का मिलान काश्मीरी रीति के अनुसार आधुनिकतम कम्प्यूटर प्रणाली से किया जाता है। अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय संचालक ज्योतिषी सुनीत से दूरभाष **2555064, 2552625** से सम्पर्क करें।

ईस्वी 2021-22 के लिए

ग्रह संचार**सूर्य का राशि संचार**

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
13 अप्रैल	मेष	2-32 AM
14 मई	वृष	11-24 PM
14 जून	मिथुन	6-01 AM
16 जुलाई	कर्कट	4-53 PM
16 अगस्त	सिंह	1-17 AM
16 सितम्बर	कन्या	1-13 AM
17 अक्टूबर	तुला	1-12 PM
16 नवम्बर	वृश्चिक	1-02 PM
15 दिसम्बर	धनु	3-44 AM
14 जनवरी 2022	मकर	2-29 PM
12 फरवरी	कुम्भ	3-27 AM
14 मार्च	मीन	12-16 AM

भौम का राशि संचार

(विक्रमी 2078 के आरम्भ वृष में भौम)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
13 अप्रैल	मिथुन	1:13 AM
2 जून	कर्क	6:51 AM
20 जुलाई	सिंह	5:55 PM
6 सितम्बर	कन्या	3:58 AM
22 अक्टूबर	तुला	2:01 AM
5 दिसम्बर	वृश्चिक	5:58 AM
16 जनवरी	धनु	4:30 PM
26 फरवरी	मकर	3:49 PM

बुध का राशि संचार

(विक्रमी 2078 के आरम्भ मीन में बुध)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
16 अप्रैल	मेष	8:58 PM
30 अप्रैल	वृष	5:41 AM

26 मई	मिथुन	8:30 AM
29 मई	वक्री	4:01 AM
2 जून	(व) वृष	2:33 AM
22 जून	मार्गी	3-29 AM
7 जुलाई	मिथुन	11:12 AM
25 जुलाई	कर्कट	11:41 AM
7 अगस्त	सिंह	1:32 AM
26 अगस्त	कन्या	11:18 AM
22 सितम्बर	तुला	8:10 AM
27 सितम्बर	वक्री	10:40 AM
1 अक्टूबर	(व) कन्या	3:00 AM
18 अक्टूबर	मार्गी	8:46 PM
2 नवम्बर	तुला	9:54 AM
20 नवम्बर	वृश्चिक	4:50 AM
10 दिसम्बर	धनु	6:05 AM
29 दिसम्बर	मकर	11:30 AM
14 जनवरी	वक्री	5:11 PM
4 फरवरी	मार्गी	9:42 PM
6 मार्च	कुम्भ	11:22 AM

गुरु का राशि संचार

(विक्रमी 2078 के आरम्भ कुम्भ में गुरु)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
20 जून	वक्री	8:35 PM
14 सितम्बर	(व) मकर	2:20 PM
18 अक्टूबर	मार्गी	11:00 AM
20 नवम्बर	कुम्भ	11:30 PM

शुक्र का राशि संचार

(विक्रमी 2078 के आरम्भ मेष में शुक्र)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
4 मई	वृष	1:26 PM
28 मई	मिथुन	12:00 AM
22 जून	कर्क	2:21 PM
17 जुलाई	सिंह	9:26 AM
11 अगस्त	कन्या	11:32 AM

5 सितम्बर	तुला	12:49 AM
2 अक्टूबर	वृश्चिक	9:46 AM
30 अक्टूबर	धनु	4:10 PM
8 दिसम्बर	मकर	1:51 PM
19 दिसम्बर	वक्री	4:04 PM
30 दिसम्बर	(व)मकर	7:59 AM
29 जनवरी	मार्गी	2:17 PM
27 फरवरी	मकर	10:19 AM
31 मार्च	कुम्भ	8:40 AM

शनि का राशि संचार

विक्रमी 2078 के अन्त तक शनि मकर राशि में रहेगा।

23 मई	वक्री	2:42 PM
11 अक्टूबर	मार्गी	7:45 AM

राहु व केतु का राशि संचार

विक्रमी 2078 के आरम्भ से ही--

राहु का संचार वृष राशि में व केतु का संचार वृश्चिक राशि में रहेगा।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :-

‘शुचि’ का क्या
अर्थ है?

धार्मिक दृष्टि से शुचि का अर्थ पवित्रता से है। अपवित्र वस्तु को अशुचि कहते हैं। अन्तः करण की पवित्रता का अर्थ शुचिता से है जब कि बाह्य जगत की वस्तु को स्वच्छता से तुलना करते हैं। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि हमें स्वच्छता के अतिरिक्त अपने घर में शुचि व अशुचि का भी ध्यान रखना चाहिए।



ईस्वी 2021-22
विक्रमी 2078 में हर शुभ कार्य के लिए



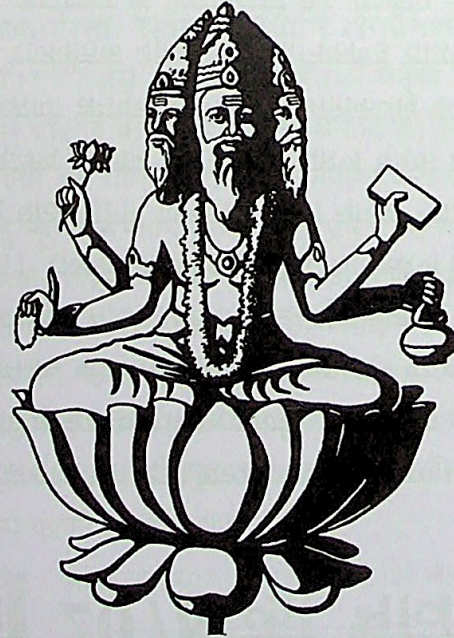
निषेध समय

शुक्र अस्त	8 फरवरी 2021	से	20 अप्रैल 2021
सिंह में सूर्य (स्यंध)	16 अगस्त 2021	से	16 सितम्बर 2021
श्राद्ध पक्ष (पितृ पक्ष)	21 सितम्बर 2021	से	6 अक्टूबर 2021
पौष मास (धनु में सूर्य)	15 दिसम्बर 2021	से	13 जनवरी 2022
शुक्र अस्त	6 जनवरी 2022	से	11 जनवरी 2022
गुरु अस्त	22 फरवरी 2022	से	23 मार्च 2022
चैत्र कृष्ण पक्ष	19 मार्च 2022	से	1 अप्रैल 2022

इस वर्ष भारत के अलग अलग प्रान्तों में दिखाई देने वाले ग्रहणों की तिथियाँ :-

वैशाख शुक्लपक्ष पूर्णिमा 26 मई 2021 बुधवार, खग्रास चन्द्र ग्रहण (Lunar Eclipse 2021 May 26, Wednesday)
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष अमावसी 10 जून 2021 गुरुवार, कंकण सूर्यग्रहण (Annular Solar Eclipse 2021 June 10, Thursday)
कार्तिक शुक्लपक्ष पूर्णिमा 19 नवम्बर 2021 शुक्रवार, खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण (Lunar Eclipse 2021 Nov 19, Friday)

विक्रमी 2078 के दस अधिकारी



रस का स्वामी
सूर्य

धान्य का स्वामी
बुध

धातुओं के स्वामी
शुक्र

**वर्ष का राजा
भौम**

**वर्ष का मन्त्री
भौम**

वर्षा का स्वामी
भौम

फलों का स्वामी
चन्द्र

रक्षा मन्त्री
चन्द्र

वर्ष का वाहन
बैल

वर्ष का नाम
राक्षस

राहिणी का वास
तट

धन का स्वामी
गुरु

आषाढ़ नवमी
18 जुलाई रविवार

विक्रमी 2078 की भविष्यवाणी

विश्व

सजयति सिधुरवदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम्।

वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्॥

क	मे	मि	शु
सिं	वृ	रा	मी
कुं	कुं	जी	श
कुं	कुं	धं	म

नव वर्ष प्रवेश चक्र

वि. 2078 में नववर्ष का प्रवेश 13 अप्रैल भौमवार को रेवती नक्षत्र एवं वृष लग्न पर हो रहा है। वृष लग्न का स्वामी शुक्र द्वादश भाव में व प्रथम भाव में भौम राहु से युक्त होने के फलस्वरूप विश्व के कई देशों में अप्रिय घटनाएँ घटित होंगी। राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध एवं तनावपूर्ण रहेगा। आतंकवादी हिमसक घटनाएँ घटित होंगी, विश्व के किसी वरिष्ठ नेता के आकस्मिक निधन अथवा अपदस्थ होने के संकेत हैं। विश्व के कुछ प्रमुख देशों में आतंकवाद भयंकर एवं उग्ररूप धारण करके विश्व को चिन्ताग्रस्त करदेगा जिस कारण भारत सहित विश्व के प्रमुख विकासशील देश विश्व व्यापी समयुक्त रणनीति से आतंकवाद का सफाया करने में काफी हद तक सफलता प्राप्त करेंगे। मुस्लिम बाहुल्य देशों में उथल पुथल, राजनैतिक अस्थिरता, अग्निकाण्ड तोड़फोड़ एवं प्राकृतिक आपदाओं, भूस्खलन, समुद्री तूफान, भूकम्प तथा असाम्यकि वर्षा से भारी जानमाल के नुकसानहोने की आशंका है। विश्व शान्ति के प्रयासों में भारत की प्रतिष्ठा बढेगी किन्तु अमरीका व ईंगलैण्ड आदि देशों को मुस्लिम विरोधी नीतियों का सामना करना पडसकता है। भारत पाक व चीन के सम्बंधों में विशेष प्रगति होगी परन्तु काश्मीर समस्या को लेकर गतिरोध बना रहेगा।

भारत

विक्रमी सम्वत् 2078 चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा 13 अप्रेल 2021 भौमवार को 'राक्षस' नामक सम्वत्सर का प्रारम्भ होगा, ज्योतिष शास्त्रों में इस का फल इस प्रकार वर्णित है। **स्वस्वकार्यरताः सर्वमध्यसस्यानि रोगार्तिश्च महर्घता।**

प्रजानाशो भयं घोरं राक्षसे गौरि पीडनाम्॥ 'राक्षस' नामक सम्वत्सर में मनुष्य पित्तादि रोगों से पीडित, अत्याधिक वर्षा के कारण नदियों में बाढादि के प्रकोप से जन, धनादि की क्षति होने की सम्भावना रहेगी। वर्ष का राजा भौम तथा मन्त्री भी भौम के होने से राजनीति के क्षेत्र में भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्थिति बहेतर रहेगी, परन्तु मूल्यों में अत्याधिक वृद्धि, भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी लूटपाट, हिंसा आदि के कारण लोगों के मन में असंतोष एवं आक्रोश रहेगा। राजनीतिक दलों में आपसी टकराव, आसाम, बिहार, उत्तरप्रदेश तथा जम्मू व काश्मीर में हिंसा एवं विस्फोटक घटनायें घटित होंगी, प्राकृतिक प्रकोपों से भारी क्षति होने की सम्भावना है। राजनैतिक अस्थिरताओं के बावजूद भारत उद्योग, दूरसंचार, विज्ञान आदि क्षेत्रों उल्लेखनीय प्रगति करेगा। विदेशनीति, व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों में बेहतरी होगी। नववर्ष कुण्डली के अनुसार भारत व पाकिस्तान के बीच सामाजिक व्यापारिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों में बेहतरी होगी किन्तु काश्मीर समस्या को लेकर गतिरोध बना रहेगा। आतंकवादी घुट घाटी में हिंसक व विस्फोटक घटनाएँ करेंगे किन्तु केन्द्र व राज्य सरकार आतंकवाद को नियन्त्रित एवं अंकुश लगाने में काफी हद तक सफल रहेंगे।

चं	कुं	जो	शं	धं	वुं	के
बु	मी	कु	म	तुं	क	सिं
शु	मि	जो	कु	तुं	क	सिं
शु	मि	जो	कु	तुं	क	सिं

जम्मू व काश्मीर

जम्मू काश्मीर की प्रभावी राशि तुला है तथा 72 वीं गणतन्त्र दिवस की कुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार प्रान्तीय सरकार पर्यटन, कृषि, दूरसंचार, विद्युत, पेयजल

रेल, कम्प्यूटर आदिक्क्षेत्रों में विशेष प्रगति एवं प्रयासरत रहेगी। केन्द्रीय सरकार जम्मू काश्मीर में शान्ति का माहौल बनाये रखने में दृढसंकल्प होकर आतंकवाद का सफाया करने में प्रयासरत रहेगी जिसके परिणाम स्वरूप जम्मू काश्मीर में शान्ति का माहौल पुनः देखने को मिलेगा। जम्मूकाश्मीर में राजनैतिक गतिरोधों, प्रशासनिक खामियों, आतंकवाद तथा भ्रष्टाचार की चिनौतियों का डट कर सामना करके काफी हदतक सफलता प्राप्त करेंगे। विकास कार्यों में विशेष प्रगति से राज्य व केन्द्र सरकार की प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। विस्थापन चक्र के अनुसार काश्मीरी पण्डितों की भलाई के लिए कुछ सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे। साम्प्रदायिक सौहार्द को बनाये रखने के लिए तथा शान्ति प्रिय विस्थापित काश्मीरी पण्डितों तथा युवापीडी की समस्याओं को हल करने में केन्द्र की सरकार व राज्य सरकार अहम भूमिका निभाएगी।

अन्त में आईये! नव संवत्सर के प्रथम दिवस पर हम सब काश्मीरी पण्डित राष्ट्र के कल्याण के लिये सम्मिलित स्वर से यजुर्वेद की यह प्रार्थना करें।

ओं यमाम यमसूमथर्वभ्योऽवतोका संवत्सराय पर्यायिणीम्
परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विवर्जरा
संवत्सराय पलिवनीमृभभ्योऽजिनसन्धरं साधेभ्यश्चर्मन्म्॥

अर्थ :- हे राजन। तुम अपने राष्ट्र में अच्छे अनुशासन के लिए न्यायधीशों, वृद्धि व समृद्धि के लिए विद्वानों, सुखपूर्वक निवास के लिए कालानुसार परिवर्तनों तथा वर्ष में उन्नति के लिए अनेक प्रगतिमय योजनाओं का निर्माण करो और देशद्रोही व्यक्तियों को बाहर कर दो।

ग्रहण विवरण सम्वत् विक्रमी 2078

विक्रमी. सं. 2078 (सन् इस्वी 2021-22) में भूमण्डल पर चार ग्रहण घटित होंगे। इन चार ग्रहणों में से केवल तीन ही ग्रहण भारत के केवल कुछ पूर्व-उत्तर प्रान्तों में ही दिखाई देंगे।

1. खग्रास चन्द्र ग्रहण 26 मई 2021 बुधवार ✓
2. कंकण सूर्य ग्रहण 10 जून 2021 गुरुवार ✓
3. खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण 19 नवम्बर 2021 शुक्रवार ✓
4. खग्रास सूर्य ग्रहण 4 दिसम्बर 2021 शनिवार ×

अतः भारत में 4 दिसम्बर 2021 का खग्रास सूर्य ग्रहण के लिये धार्मिक कृत्य, सूतक, स्नान, दान आदि का विचार नहीं होगा। परन्तु शेष तीन ग्रहण भारत के पूर्व-उत्तर प्रान्तों में ही दिखाई देंगे अतः शेष भारत के राज्यों में जहाँ यह ग्रहण दिखाई नहीं देंगे वहाँ धार्मिक कृत्य, सूतक, स्नान, दान आदि का विचार नहीं होगा।

खग्रास चन्द्र ग्रहण (26 मई 2021 बुधवार)

यह ग्रहण वैशाख शुक्लपक्ष पूर्णिमा बुधवार को सायं काल में घटित होगा। भारत में केवल अरुणाचल, समूचे पश्चिम बंगाल, मिज़ोरम, मणिपुर, मेघालय, आसाम, त्रिपुरा व पूर्वी उड़ीसा के कुछ भागों में ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा। भारत के इन पूर्वी प्रदेशों के अतिरिक्त यह ग्रहण आस्ट्रेलिया, बर्मा, बंगलादेश, जापान, इण्डोनेशिया, सिंगापुर, फिलीपेन्ज़ व न्यूज़िलैण्ड आदि देशों में भी दिखाई देगा। इस ग्रहण का सूतक 26 मई 2021 प्रातः 6:15AM से आरम्भ होगा।

जिस राशि में ग्रहण घटित होता है उस राशि व नक्षत्र वाले जातकों को निश्चित रूप से कष्टदायक फल प्राप्ति होती है। यह ग्रहण वृश्चिक राशि में घटित होगा। अतः वृश्चिक राशि के अतिरिक्त यह ग्रहण वृष, मिथुन, कर्कट, तुला, धनु, कुम्भ व मीन राशि वाले जातकों पर अपना कुप्रभाव डालेगा।

इस ग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निम्न प्रकार से भारतीय समयानुसार होगा।

ग्रहण प्रारम्भ	:	03:14:57 दिन
खग्रास प्रारम्भ	:	04:41:25 दिन
ग्रहण मध्य	:	04:50:12 दिन
खग्रास समाप्त	:	04:58:11 दिन
ग्रहण समाप्त	:	06:22:59 सायं

नोट:- यह ग्रहण चन्द्रोदय के पश्चात् ही दिखाई देगा, अतः पूर्वी भारत के जिन प्रान्तों में चन्द्रोदय 6:23 सायं के पश्चात् होगा वहाँ यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

इस ग्रहण के कुछ प्रमुख भारत के पूर्वी नगरों के प्रारम्भ, समाप्ति काल भारतीय समयानुसार निम्न है।

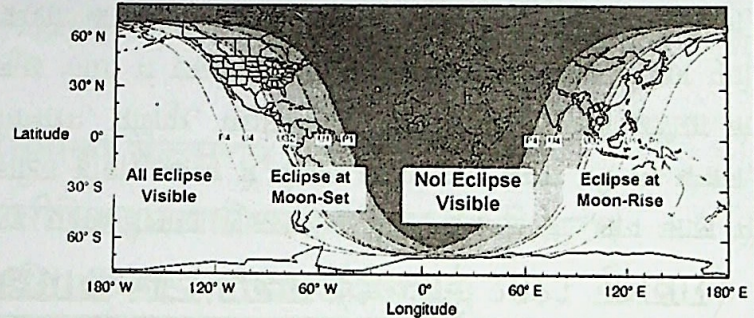
नगर	चन्द्रोदय	ग्रहण काल
कोलकता	6-15 PM	8 Mints
कोहिमा	5-27 PM	26 Mints
अगरतला	6-05 PM	18 Mints
ईटानगर	6-02 PM	21 Mints
इम्फाल	5-56 PM	27 Mints
गोहाटी	6-08 PM	15 Mints

नोट:- यह ग्रहण केवल भारत के पूर्वी प्रान्तों में ही दिखाई देगा, अतः शेष भारत के राज्यों में जहाँ यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा वहाँ धार्मिक कृत्य, सूतक, स्नान, दान आदि का विचार नहीं करें।

इस ग्रहण का सूतक: 26 मई 2021 बुधवार
प्रातः के 6:15AM (I.S.T) से आरम्भ होगा।

Picture of Lunar Eclipse 26 May 2021

खग्रास चन्द्र ग्रहण (26 मई 2021 बुधवार)



P1 - Instant of first exterior tangency of Moon with Penumbra. (Penumbral Eclipse Begins)
U1 - Instant of first exterior tangency of Moon with Umbra. (Partial Umbral Eclipse Begins)
U4 - Instant of last exterior tangency of Moon with Umbra (Partial Umbral Eclipse Ends)
P4 - Instant of last exterior tangency of Moon with Penumbra. (Penumbral Eclipse Ends)

कंकण सूर्य ग्रहण (10 जून 2021 गुरुवार)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी गुरुवार को यह ग्रहण केवल भारत के सुदूर पूर्व-उत्तर के सीमावर्ती क्षेत्रों में ही दिखाई देगा।

अतः अकसाई चिन व अरुणांचल के कुछ प्रान्तों के छोड़ शेष भारत में यह ग्रहण कही नहीं दिखाई देगा व धार्मिक कृत्य, सूतक, स्नान, दान आदि का विचार नहीं करें।

इस ग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निम्न प्रकार से भारतीय समयानुसार होगा।

ग्रहण प्रारम्भ	:	01:41 दिन
कंकण प्रारम्भ	:	03:20 दिन
ग्रहण मध्य	:	04:12 दिन
कंकण समाप्त	:	05:03 दिन
ग्रहण समाप्त	:	06:41 सायं

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण यूरोप, केनेडा, अमरीका, ग्रीनलैण्ड, व अन्टलांटिका महासागर व मंगोलिया आदि देशों में भी दिखाई देगा। अतः इन देशों में धर्मिक कृत्य व सूतक आदि का विचार अवश्य करें। इस ग्रहण का सूतक 31 जनवरी को प्रातः 8:18मि से प्रारम्भ होगा।

खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण (19 नवम्बर 2021 शुक्रवार)

कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा शुक्रवार को यह ग्रहण केवल भारत के सुदूर पूर्व में आसाम व अरुणांचल के सीमावर्ती क्षेत्रों में ही दिखाई देगा। अतः शेष भारत में यह ग्रहण कही नहीं दिखाई देगा व धार्मिक कृत्य, सूतक, स्नान, दान आदि का विचार नहीं करें। इस ग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निम्न प्रकार से भारतीय समयानुसार होगा।

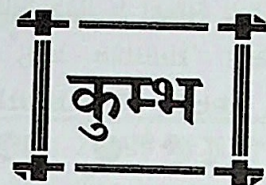
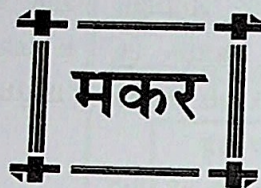
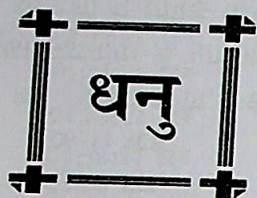
ग्रहण प्रारम्भ	:	12:48 दिन
ग्रहण मध्य	:	02:32 दिन
ग्रहण समाप्त	:	04:18 दिन

भारत के अतिरिक्त यह चन्द्र ग्रहण केनेडा, पूर्वी यूरोप, एशिया, आस्ट्रेलिया, उत्तर-पश्चिमी अमरीका, अफ्रीका आदि देशों में दिखाई देगा, इन देशों में धर्मिक कृत्य, सूतक आदि का विचार अवश्य करें।



खग्रास सूर्य ग्रहण 4 दिसम्बर 2021 शनिवार का यह ग्रहण भारत को छोड़कर अफ्रीका, हिन्द महासागर, अन्टार्टिक, अन्टलांटिका महासागर, आस्ट्रेलिया आदि देशों में दिखाई देगा, इन देशों में धर्मिक कृत्य, सूतक आदि का विचार अवश्य करें।

साढ़-सत्ती



ज्योतिष तत्व प्रकाश के अनुसार- द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः ।

सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुःखैर्युतो भवेत् ॥

जन्म राशि (चन्द्रराशि) से गोचर में जब शनि द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थानों में भ्रमण करता है, तो साढ़े-सात वर्ष के समय को शनि की साढ़-सती कहते हैं। भारतीय ज्योतिष के अनुसार साढ़सत्ती शुभ, अशुभ दोनों फल देने वाली होती है। जब शनि जन्मपत्री (ज्ञातुक) में अच्छी स्थिति में हो यानी तीसरे, छठे, ग्यारहवें भाव में हो तो शनि साढ़ेसात सालों में मालामाल कर देता है। अथवा किसी बड़ी पदवी पर पहुँचाता है परन्तु जब शनि अच्छी स्थिति में न हो यानी 1, 2, 4, 7, 8, 12 वें भाव में हो तो शनि शान्ति का दम नहीं लेने देता तथा विभिन्न प्रकार की अप्रिय घटनायें घटित होती हैं।

धनु

ईस वर्ष आपकी साढसत्ती शुभफलदायक रहेगी, आर्थिक लाभ, स्त्री तथा पुत्र से सुख सम्पत्ति लाभ, व्यवसाय में प्रगति, शारीरिक सुख की प्राप्ति होगी, किन्तु 11 अक्टूबर के बाद वर्ष के अन्त तक पारिवारिक क्लेश, मन अशान्त, शारीरिक कष्ट, निजी सम्बन्धियों से विरोध भारी धन की हानि एवं चोट आदि की सम्भावना रहेगी। धनु राशि वाले जातकों की साढसत्ती 29 अप्रैल 2022 को पूरी तरह समाप्त होगी, इस प्रकार आपकी साढसत्ती इससमय अन्तिम चरण में चल रही है।

मकर

एक साढसत्ती तीन ढैया से मिलाकर बनती है। क्योंकि शनि एक राशि में लगभग ढाई वर्ष तक चलता है। इस तरह प्रायः जीवन में लगभग तीन बार साढसत्ती आती है। मकर राशि वाले जातकों की साढसत्ती 26 जनवरी 2017 से आरम्भ हुई थी। 29 अप्रैल 2022 तक आपकी साढसत्ती अपने द्वितीय चरण अर्थात् लौह पाद व हृदय पर चलेगी। शनि की ग्रह स्थिति का विचार करने से विदित होता है कि विक्रमी 2078 के प्रारम्भ से 23 मई 2021 तक कल्याणकारी रहेगी मानसम्मान में वृद्धि, धन सम्पदा में लाभ, मानसिक शान्ति मंगलिक कार्य हों, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता, नौकरी अथवा व्यवसाय में प्रगति किन्तु 11 अक्टूबर से वर्ष 2022 के अन्त तक शारीरिक कष्ट, रक्तपित्त विकार, स्त्री एवं सन्तान पक्ष से कष्ट, व्यापार में हानि, राजभय आदि के संकेत हैं। उपाय के तौर पर हर शनिवार को पक्षियों को तहर पीले चावल डाला करें। धर के किसी भी सदस्य को वह तहर न खिलाए।

कुम्भ

यह सामान्यतः पाया गया है कि साढ-सती की तीन ढैया में से एक शुभ, एक मध्यम् तथा एक अशुभ फलदायी होती है। इसका निर्णय शनि के अष्टक वर्ग तथा सर्वाष्टक वर्ग में प्राप्त शुभ रेखाओं की संख्या के आधार पर किया जाता है। यदि शनि अष्टक वर्ग में चार रेखायें तथा सर्वाष्टक वर्ग में 28 रेखायें हैं तो शनि मिश्रित फलदायी होता है। इससे कम हों तो अशुभ तथा अधिक होने पर शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि आपके जन्म चक्र में शनि बलवान (उच्च, स्वक्षेत्रीय) आदि या योगकारक हो या चन्द्रराशि का स्वामी हो तो जातक के लिए शनि का दुष्प्रभाव औरों की अपेक्षा बहुत कम होता है। 24 जनवरी 2020 से 29 अप्रैल 2022 तक आपकी साढ-सती प्रथम चरण में चलेगी। शनि प्रथम चरण में मस्तक भाग में रहता है। बुद्धि काम नहीं करती है तथा गलत निर्णय लिये जाते हैं, भईयों तथा व्यापार में साजेदारी में विवाद हो सकता है। किसी निकट सम्बन्धी को मारक कष्ट होने की सम्भावना से इन्कार भी नहीं किया जा सकता है। पारिवारिक तथा व्यवसायिक जीवन भी अस्त-व्यस्त रहेगा। निजीजनविरोध, शत्रु बढेंगे, ग्रहक्लेश, शारीरिक रोगों से मानसिक परेशानी, आय की अपेक्षा व्यय अधिक अथवा फ़ज़ूलखर्ची की सम्भावना है।

शनि का बीज मन्त्र :- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः ।

शनि का वैदिक मन्त्र :- ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शय्योरभिस्रवन्तु नः

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः। ॐ शं शनैश्चराय नमः॥

ढैय्या

मिथुन

तुला

मिथुन:- मिथुन राशि वालें जातकों की ढैया 24 जनवरी 2020 को आरम्भ हुई। आप को सावधान रहना चाहिए क्योंकि शनि विशेषकर आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। शनि देव आप के शरीर के अतिरिक्त, आर्थिक स्थिति तथा घरेलू वातावरण को प्रभावित कर सकता है। यदि शनि अच्छी स्थिति में होतो धनधान्य समृद्धि, स्त्री पुत्र सुख, सम्पति लाभ, कारोबार में प्रगति, शारीरिक सुख आदि के शुभ फल की ओर संकेत हैं।

तुला:- आपकी जन्म राशि तुला है, जब शनि चतुर्थ अर्थात मकर राशि में तथा अष्टम् अर्थात् वृष राशि में भ्रमण करेगा तो तुला राशि वालों की ढैया आरम्भ होगी। 24 जनवरी 2020 को मकर राशि में शनि के प्रवेश से ढैया का प्रभाव तुला राशि वाले जातकों को अनुभव हुआ होगा। यदि शनि अच्छी स्थिति में हो सम्पति लाभ व्यवसाय में प्रगति शारीरिक सुख, स्त्री तथा सन्तान सुख की प्राप्ति होगी। आप को उपाय के रूप में 4 दिसम्बर 2021 शनिवार खग्रास सूर्यग्रहण (जो कि भारत में दिखाई नहीं देगा) के दिन व्रत रखें व ग्रहण काल में आप जिस भी देश में है पूजा पाठ में ही अपने समय का सदुपयोग करें, श्रयेस्कर रहेगा, और शिव महिम्नस्तोत्र या शनि के मन्त्रों का पाठ प्रातः काल में अवश्य करना चाहिए।

साढ-सत्ती तथा ढैया के उपाय

शनि की साढेसत्ती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय करें-

1. मन्त्र (क) महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जप (नित्य 10 माला, 125 दिन) करें-

ॐ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनं, उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय मामृतात्।

(ख) शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जप करें-

ॐ शत्रोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शं शनैश्चराय नमः॥

(ग) पौराणिक शनि मंत्र

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छाया मार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

2. स्तोत्र-शनि के निम्नलिखित स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।
कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः। सौरि शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।
तानि शनि-नामानि जपेदश्वत्थसन्निधौ। शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद् भविष्यति॥

साढ-सत्ती पीडानाशक स्तोत्र, पिप्लाद उवाच-

नमसते कोणसेस्थय पिङ्गलाय नमोस्तते । नमस्ते बभुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते ॥

नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च । नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ॥

नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तुते । प्रसाद कुरु देवेश दीनस्य ग्रणस्य च ॥

3. रत्न / धातु

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव की सतह की कील का बना छल्ला मध्यमा में धारण करें।

4. व्रत

शनिवार का व्रत रखें। व्रत के दिन में दूध, लस्सी तथा फलों के रस ग्रहण करें। हर शनिवार प्रातः काल में पक्षियों को (तहर) पीले चावल डाला करें। घर के किसी भी सदस्य को वह तहर न खिलाए। सायंकाल हनुमान जी का दर्शन करें या किसी मन्दिर जाकर हनुमान जी की आरती करें।

विक्रमी 2078 के लिए आय-व्यय चक्र (आमदनी खर्च चक्र)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्कट	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	2	11	2	11	14	2	11	2	14	8	8	14
व्यय	14	5	5	14	11	5	5	14	2	5	5	2

लाभ और व्यय के अंकों के जोड़ से एक कम करके 8 से भाग दें, भाग देने के पश्चात यदि....

- 1 बाकी बचे तो यह वर्ष हर प्रकार से लाभदायक मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी, धनलाभ में वृद्धि होगी, विद्यार्थी वर्ग को सफलता प्राप्त होगी मनोरंजक कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी।
- 2 बचे तो धनलाभ मध्यम, किसी मंगलकार्य पर धन खर्च होगा, मान आदर में वृद्धि, परिश्रम से सफलता, व्यापार से लाभ प्राप्त होगा।
- 3 बचे तो लाभ बहुत कम, व्यय अधिक रहेगा, संघर्ष एवं भागदौड़ अधिक, पारिवारिक चिन्ता एवं समस्याएँ स्वसंस्थ के विषय में सावधानी बरतें, चोट आदि की सम्भावना।
- 4 बनते कार्यमें विघ्न एवं समस्याएं उत्पन्न होंगी, रोग आदि पर धन का खर्च, आर्थिक एवं घरेलू उलझनों से मानसिक तनाव रहेगा।
- 5 बाकी बचे तो आय कम व व्यय अधिक बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे, परिवार के सदस्यों के साथ मतभेद, स्वभाव में तेज़ी रहेगी।
- 6 बाकी बचे तो वर्ष आपके स्वप्नों एवं भाग्योन्नति में सहायक सिद्ध होगा, मानप्रतिष्ठा एवं आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता प्रदान करने वाला वर्ष होगा, शुभ कार्यों पर धनका खर्च होगा।
- 7 बाकी बचे तो व्यापार व राजदरबार से आर्थिक लाभ, आर्थिक साधनों में वृद्धि, ज़मीन जायदाद आदि कार्यों पर धन का खर्च, मनोवांछित योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। विद्यार्थी वर्ग को सफलता प्राप्त होगी।
- यदि 8 अर्थात् 0 बचे तो मानसिक परेशानियाँ, पारिवारिक परेशानी, राज्यदरबार से अशान्ति एवं स्थान परिवर्तन का योग।

राहु काल के विषय में जानकारी

सूर्य उदय से सूर्य अस्त के मध्य प्रतिदिन लगभग 01 घण्टा 30 मिनट की अवधि राहु काल मानी गयी है। हमारे ऋषि-मुनियों ने राहुकाल में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ करने से मना किया है। राहुकाल में किसी भी शुभ कार्य का प्रारम्भ अशुभ सिद्ध होता है। जैसे सूर्य ग्रहण के दिन राहु सूर्य को ग्रस कर ग्रहण में बदल देता है वैसे ही राहुकाल में प्रारम्भ किये गये शुभ कार्य को ग्रहण लग जाता है, अर्थात् शुभता का परिणाम अशुभ होता है। इन सभी बातों को सार्वजनिक तौर पर सिद्ध कर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि राहुकाल में किसी भी शुभ कार्य का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए, जो कार्य पहले से चल रहा है, वह चलता रहे उसमें कोई कमी नहीं आती। बस शुरुवात नहीं करनी चाहिए। हमारे दक्षिण व पश्चिम भारत के लोग इस राहुकाल का विशेष ध्यान रखकर अपने शुभ कार्यों को प्रारम्भ करते हैं। राहुकाल का समय और अवधि निकालने के लिये हम सबसे पहले सूर्योदय और सूर्यास्त निकालकर दिनमान निकाल लेते हैं और दिनमान को आठ बराबर भागों में बाँट लेते हैं। एक हिस्सा लगभग 1 घण्टा 30 मिनट का होगा। अब रविवार से शनिवार तक (सातों दिन) क्रमशः 8वां, 2रा, 7वां, 5वां, 6ठा, 4था और 3रा भाग राहुकाल होगा। इस प्रकार प्रतिदिन का राहुकाल निकाल कर आप अपने शुभ कार्यों के प्रारम्भ को सुनिश्चित कर सकते हैं। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमने विक्रमी 2078 सम्वत् (ईस्वी 2021-22) का राहु काल जम्मू के रेखंश व अक्षांश पर गणित कर प्रकाशित किया है अतः अपने सुजाव हमें vijayeshwer@yahoo.com पर अवश्य बेजें।

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
13-अप्रैल-21	भौम	3:44 PM से	5:21 PM
14-अप्रैल-21	बुध	12:31 PM से	2:08 PM
15-अप्रैल-21	गुरु	2:08 PM से	3:45 PM
16-अप्रैल-21	शुक्र	10:54 AM से	12:31 PM
17-अप्रैल-21	शनि	9:16 AM से	10:53 AM
18-अप्रैल-21	रवि	5:23 PM से	7:00 PM
19-अप्रैल-21	सोम	7:37 AM से	9:15 AM
20-अप्रैल-21	भौम	3:46 PM से	5:24 PM
21-अप्रैल-21	बुध	12:30 PM से	2:08 PM
22-अप्रैल-21	गुरु	2:08 PM से	3:46 PM
23-अप्रैल-21	शुक्र	10:51 AM से	12:29 PM
24-अप्रैल-21	शनि	9:11 AM से	10:50 AM
25-अप्रैल-21	रवि	5:26 PM से	7:06 PM
26-अप्रैल-21	सोम	7:31 AM से	9:10 AM
27-अप्रैल-21	भौम	3:48 PM से	5:27 PM
28-अप्रैल-21	बुध	12:28 PM से	2:08 PM

**R
A
H
U**

**K
A
A
L**

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
29-अप्रैल-21	गुरु	2:08 PM से	3:48 PM
30-अप्रैल-21	शुक्र	10:48 AM से	12:28 PM
1-मई-21	शनि	9:07 AM से	10:48 AM
2-मई-21	रवि	5:30 PM से	7:11 PM
3-मई-21	सोम	7:25 AM से	9:06 AM
4-मई-21	भौम	3:50 PM से	5:31 PM
5-मई-21	बुध	12:28 PM से	2:09 PM
6-मई-21	गुरु	2:09 PM से	3:51 PM
7-मई-21	शुक्र	10:46 AM से	12:27 PM
8-मई-21	शनि	9:03 AM से	10:45 AM
9-मई-21	रवि	5:34 PM से	7:16 PM
10-मई-21	सोम	7:20 AM से	9:03 AM
11-मई-21	भौम	3:52 PM से	5:35 PM
12-मई-21	बुध	12:27 PM से	2:10 PM
13-मई-21	गुरु	2:10 PM से	3:53 PM
14-मई-21	शुक्र	10:44 AM से	12:27 PM

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
15-मई-21	शनि	9:01 AM से	10:44 AM
16-मई-21	रवि	5:37 PM से	7:21 PM
17-मई-21	सोम	7:16 AM से	9:00 AM
18-मई-21	भौम	3:55 PM से	5:38 PM
19-मई-21	बुध	12:27 PM से	2:11 PM
20-मई-21	गुरु	2:11 PM से	3:55 PM
21-मई-21	शुक्र	10:43 AM से	12:27 PM
22-मई-21	शनि	8:59 AM से	10:43 AM
23-मई-21	रवि	5:41 PM से	7:26 PM
24-मई-21	सोम	7:13 AM से	8:58 AM
25-मई-21	भौम	3:57 PM से	5:42 PM
26-मई-21	बुध	12:28 PM से	2:13 PM
27-मई-21	गुरु	2:13 PM से	3:58 PM
28-मई-21	शुक्र	10:43 AM से	12:28 PM
29-मई-21	शनि	8:57 AM से	10:43 AM
30-मई-21	रवि	5:45 PM से	7:30 PM

RAHU

KAL

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
31-मई-21	सोम	7:11 AM से	8:57 AM
1-जून-21	भौम	4:00 PM से	5:46 PM
2-जून-21	बुध	12:29 PM से	2:14 PM
3-जून-21	गुरु	2:15 PM से	4:01 PM
4-जून-21	शुक्र	10:43 AM से	12:29 PM
5-जून-21	शनि	8:57 AM से	10:43 AM
6-जून-21	रवि	5:48 PM से	7:34 PM
7-जून-21	सोम	7:10 AM से	8:57 AM
8-जून-21	भौम	4:02 PM से	5:49 PM
9-जून-21	बुध	12:30 PM से	2:16 PM
10-जून-21	गुरु	2:16 PM से	4:03 PM
11-जून-21	शुक्र	10:43 AM से	12:30 PM
12-जून-21	शनि	8:57 AM से	10:44 AM
13-जून-21	रवि	5:50 PM से	7:37 PM
14-जून-21	सोम	7:10 AM से	8:57 AM
15-जून-21	भौम	4:04 PM से	5:51 PM

दिनांक	वार	आरम्भ	से	समाप्ति
16-जून-21	बुध	12:31 PM	से	2:18 PM
17-जून-21	गुरु	2:18 PM	से	4:05 PM
18-जून-21	शुक्र	10:45 AM	से	12:31 PM
19-जून-21	शनि	8:58 AM	से	10:45 AM
20-जून-21	रवि	5:53 PM	से	7:39 PM
21-जून-21	सोम	7:11 AM	से	8:58 AM
22-जून-21	भौम	4:06 PM	से	5:53 PM
23-जून-21	बुध	12:33 PM	से	2:19 PM
24-जून-21	गुरु	2:20 PM	से	4:06 PM
25-जून-21	शुक्र	10:46 AM	से	12:33 PM
26-जून-21	शनि	8:59 AM	से	10:46 AM
27-जून-21	रवि	5:54 PM	से	7:41 PM
28-जून-21	सोम	7:13 AM	से	9:00 AM
29-जून-21	भौम	4:07 PM	से	5:54 PM
30-जून-21	बुध	12:34 PM	से	2:21 PM
1-जुलाई-21	गुरु	2:21 PM	से	4:07 PM

**R
A
H
U**

**K
A
A
L**

दिनांक	वार	आरम्भ	से	समाप्ति
2-जुलाई-21	शुक्र	10:48 AM	से	12:34 PM
3-जुलाई-21	शनि	9:01 AM	से	10:48 AM
4-जुलाई-21	रवि	5:54 PM	से	7:41 PM
5-जुलाई-21	सोम	7:16 AM	से	9:02 AM
6-जुलाई-21	भौम	4:08 PM	से	5:54 PM
7-जुलाई-21	बुध	12:35 PM	से	2:21 PM
8-जुलाई-21	गुरु	2:22 PM	से	4:08 PM
9-जुलाई-21	शुक्र	10:49 AM	से	12:35 PM
10-जुलाई-21	शनि	9:04 AM	से	10:50 AM
11-जुलाई-21	रवि	5:53 PM	से	7:39 PM
12-जुलाई-21	सोम	7:18 AM	से	9:04 AM
13-जुलाई-21	भौम	4:07 PM	से	5:53 PM
14-जुलाई-21	बुध	12:36 PM	से	2:22 PM
15-जुलाई-21	गुरु	2:22 PM	से	4:07 PM
16-जुलाई-21	शुक्र	10:51 AM	से	12:36 PM
17-जुलाई-21	शनि	9:06 AM	से	10:51 AM

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
18-जुलाई-21	रवि	5:52 PM से	7:37 PM
19-जुलाई-21	सोम	7:22 AM से	9:07 AM
20-जुलाई-21	भौम	4:06 PM से	5:51 PM
21-जुलाई-21	बुध	12:37 PM से	2:21 PM
22-जुलाई-21	गुरु	2:21 PM से	4:06 PM
23-जुलाई-21	शुक्र	10:52 AM से	12:37 PM
24-जुलाई-21	शनि	9:08 AM से	10:53 AM
25-जुलाई-21	रवि	5:49 PM से	7:33 PM
26-जुलाई-21	सोम	7:25 AM से	9:09 AM
27-जुलाई-21	भौम	4:04 PM से	5:48 PM
28-जुलाई-21	बुध	12:37 PM से	2:20 PM
29-जुलाई-21	गुरु	2:20 PM से	4:04 PM
30-जुलाई-21	शुक्र	10:54 AM से	12:37 PM
31-जुलाई-21	शनि	9:11 AM से	10:54 AM
1-अगस्त-21	रवि	5:45 PM से	7:28 PM
2-अगस्त-21	सोम	7:29 AM से	9:11 AM

**R
A
H
U

K
A
A
L**

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
3-अगस्त-21	भौम	4:01 PM से	5:44 PM
4-अगस्त-21	बुध	12:36 PM से	2:19 PM
5-अगस्त-21	गुरु	2:18 PM से	4:01 PM
6-अगस्त-21	शुक्र	10:54 AM से	12:36 PM
7-अगस्त-21	शनि	9:13 AM से	10:54 AM
8-अगस्त-21	रवि	5:41 PM से	7:22 PM
9-अगस्त-21	सोम	7:32 AM से	9:13 AM
10-अगस्त-21	भौम	3:58 PM से	5:39 PM
11-अगस्त-21	बुध	12:36 PM से	2:16 PM
12-अगस्त-21	गुरु	2:16 PM से	3:57 PM
13-अगस्त-21	शुक्र	10:55 AM से	12:35 PM
14-अगस्त-21	शनि	9:15 AM से	10:55 AM
15-अगस्त-21	रवि	5:35 PM से	7:15 PM
16-अगस्त-21	सोम	7:35 AM से	9:15 AM
17-अगस्त-21	भौम	3:54 PM से	5:33 PM
18-अगस्त-21	बुध	12:34 PM से	2:14 PM

R A H U K A A L

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
19-अगस्त-21	गुरु	2:13 PM से	3:52 PM
20-अगस्त-21	शुक्र	10:55 AM से	12:34 PM
21-अगस्त-21	शनि	9:16 AM से	10:55 AM
22-अगस्त-21	रवि	5:29 PM से	7:07 PM
23-अगस्त-21	सोम	7:38 AM से	9:17 AM
24-अगस्त-21	भौम	3:49 PM से	5:27 PM
25-अगस्त-21	बुध	12:33 PM से	2:10 PM
26-अगस्त-21	गुरु	2:10 PM से	3:47 PM
27-अगस्त-21	शुक्र	10:55 AM से	12:32 PM
28-अगस्त-21	शनि	9:17 AM से	10:55 AM
29-अगस्त-21	रवि	5:22 PM से	6:59 PM
30-अगस्त-21	सोम	7:41 AM से	9:18 AM
31-अगस्त-21	भौम	3:44 PM से	5:20 PM
1-सितम्बर-21	बुध	12:31 PM से	2:07 PM
2-सितम्बर-21	गुरु	2:06 PM से	3:42 PM
3-सितम्बर-21	शुक्र	10:54 AM से	12:30 PM

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
4-सितम्बर-21	शनि	9:19 AM से	10:54 AM
5-सितम्बर-21	रवि	5:15 PM से	6:50 PM
6-सितम्बर-21	सोम	7:44 AM से	9:19 AM
7-सितम्बर-21	भौम	3:38 PM से	5:13 PM
8-सितम्बर-21	बुध	12:28 PM से	2:03 PM
9-सितम्बर-21	गुरु	2:02 PM से	3:36 PM
10-सितम्बर-21	शुक्र	10:54 AM से	12:28 PM
11-सितम्बर-21	शनि	9:20 AM से	10:53 AM
12-सितम्बर-21	रवि	5:07 PM से	6:41 PM
13-सितम्बर-21	सोम	7:47 AM से	9:20 AM
14-सितम्बर-21	भौम	3:32 PM से	5:05 PM
15-सितम्बर-21	बुध	12:26 PM से	1:59 PM
16-सितम्बर-21	गुरु	1:58 PM से	3:30 PM
17-सितम्बर-21	शुक्र	10:53 AM से	12:25 PM
18-सितम्बर-21	शनि	9:21 AM से	10:53 AM
19-सितम्बर-21	रवि	5:00 PM से	6:31 PM

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
20-सितम्बर-21	सोम	7:50 AM से	9:21 AM
21-सितम्बर-21	भौम	3:26 PM से	4:57 PM
22-सितम्बर-21	बुध	12:23 PM से	1:54 PM
23-सितम्बर-21	गुरु	1:54 PM से	3:24 PM
24-सितम्बर-21	शुक्र	10:52 AM से	12:23 PM
25-सितम्बर-21	शनि	9:22 AM से	10:52 AM
26-सितम्बर-21	रवि	4:52 PM से	6:22 PM
27-सितम्बर-21	सोम	7:52 AM से	9:22 AM
28-सितम्बर-21	भौम	3:20 PM से	4:50 PM
29-सितम्बर-21	बुध	12:21 PM से	1:50 PM
30-सितम्बर-21	गुरु	1:50 PM से	3:19 PM
1-अक्टूबर-21	शुक्र	10:52 AM से	12:20 PM
2-अक्टूबर-21	शनि	9:23 AM से	10:51 AM
3-अक्टूबर-21	रवि	4:44 PM से	6:13 PM
4-अक्टूबर-21	सोम	7:55 AM से	9:23 AM
5-अक्टूबर-21	भौम	3:15 PM से	4:42 PM

**R
A
H
U**

**K
A
A
L**

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
6-अक्टूबर-21	बुध	12:19 PM से	1:46 PM
7-अक्टूबर-21	गुरु	1:46 PM से	3:13 PM
8-अक्टूबर-21	शुक्र	10:51 AM से	12:18 PM
9-अक्टूबर-21	शनि	9:24 AM से	10:51 AM
10-अक्टूबर-21	रवि	4:37 PM से	6:04 PM
11-अक्टूबर-21	सोम	7:59 AM से	9:25 AM
12-अक्टूबर-21	भौम	3:09 PM से	4:35 PM
13-अक्टूबर-21	बुध	12:17 PM से	1:43 PM
14-अक्टूबर-21	गुरु	1:42 PM से	3:08 PM
15-अक्टूबर-21	शुक्र	10:51 AM से	12:16 PM
16-अक्टूबर-21	शनि	9:26 AM से	10:51 AM
17-अक्टूबर-21	रवि	4:30 PM से	5:55 PM
18-अक्टूबर-21	सोम	8:02 AM से	9:27 AM
19-अक्टूबर-21	भौम	3:04 PM से	4:28 PM
20-अक्टूबर-21	बुध	12:15 PM से	1:39 PM
21-अक्टूबर-21	गुरु	1:39 PM से	3:03 PM

RAHU

KAL

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
22-अक्टूबर-21	शुक्र	10:51 AM से	12:15 PM
23-अक्टूबर-21	शनि	9:28 AM से	10:51 AM
24-अक्टूबर-21	रवि	4:24 PM से	5:47 PM
25-अक्टूबर-21	सोम	8:06 AM से	9:29 AM
26-अक्टूबर-21	भौम	3:00 PM से	4:22 PM
27-अक्टूबर-21	बुध	12:14 PM से	1:37 PM
28-अक्टूबर-21	गुरु	1:36 PM से	2:59 PM
29-अक्टूबर-21	शुक्र	10:52 AM से	12:14 PM
30-अक्टूबर-21	शनि	9:31 AM से	10:52 AM
31-अक्टूबर-21	रवि	4:19 PM से	5:40 PM
1-नवम्बर-21	सोम	8:10 AM से	9:31 AM
2-नवम्बर-21	भौम	2:56 PM से	4:17 PM
3-नवम्बर-21	बुध	12:14 PM से	1:35 PM
4-नवम्बर-21	गुरु	1:35 PM से	2:55 PM
5-नवम्बर-21	शुक्र	10:54 AM से	12:14 PM
6-नवम्बर-21	शनि	9:34 AM से	10:54 AM

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
7-नवम्बर-21	रवि	4:14 PM से	5:34 PM
8-नवम्बर-21	सोम	8:15 AM से	9:35 AM
9-नवम्बर-21	भौम	2:53 PM से	4:13 PM
10-नवम्बर-21	बुध	12:14 PM से	1:34 PM
11-नवम्बर-21	गुरु	1:34 PM से	2:53 PM
12-नवम्बर-21	शुक्र	10:56 AM से	12:15 PM
13-नवम्बर-21	शनि	9:37 AM से	10:56 AM
14-नवम्बर-21	रवि	4:11 PM से	5:29 PM
15-नवम्बर-21	सोम	8:20 AM से	9:38 AM
16-नवम्बर-21	भौम	2:52 PM से	4:10 PM
17-नवम्बर-21	बुध	12:15 PM से	1:33 PM
18-नवम्बर-21	गुरु	1:33 PM से	2:51 PM
19-नवम्बर-21	शुक्र	10:58 AM से	12:16 PM
20-नवम्बर-21	शनि	9:41 AM से	10:58 AM
21-नवम्बर-21	रवि	4:08 PM से	5:26 PM
22-नवम्बर-21	सोम	8:25 AM से	9:42 AM

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
23-नवम्बर-21	भौम	2:51 PM से	4:08 PM
24-नवम्बर-21	बुध	12:17 PM से	1:34 PM
25-नवम्बर-21	गुरु	1:34 PM से	2:51 PM
26-नवम्बर-21	शुक्र	11:01 AM से	12:18 PM
27-नवम्बर-21	शनि	9:45 AM से	11:01 AM
28-नवम्बर-21	रवि	4:07 PM से	5:23 PM
29-नवम्बर-21	सोम	8:30 AM से	9:46 AM
30-नवम्बर-21	भौम	2:51 PM से	4:07 PM
1-दिसम्बर-21	बुध	12:19 PM से	1:35 PM
2-दिसम्बर-21	गुरु	1:35 PM से	2:51 PM
3-दिसम्बर-21	शुक्र	11:04 AM से	12:20 PM
4-दिसम्बर-21	शनि	9:49 AM से	11:05 AM
5-दिसम्बर-21	रवि	4:07 PM से	5:23 PM
6-दिसम्बर-21	सोम	8:35 AM से	9:50 AM
7-दिसम्बर-21	भौम	2:52 PM से	4:08 PM
8-दिसम्बर-21	बुध	12:22 PM से	1:37 PM

**R
A
H
U**

**K
A
A
L**

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
9-दिसम्बर-21	गुरु	1:38 PM से	2:53 PM
10-दिसम्बर-21	शुक्र	11:08 AM से	12:23 PM
11-दिसम्बर-21	शनि	9:53 AM से	11:08 AM
12-दिसम्बर-21	रवि	4:09 PM से	5:24 PM
13-दिसम्बर-21	सोम	8:40 AM से	9:55 AM
14-दिसम्बर-21	भौम	2:54 PM से	4:09 PM
15-दिसम्बर-21	बुध	12:25 PM से	1:40 PM
16-दिसम्बर-21	गुरु	1:41 PM से	2:55 PM
17-दिसम्बर-21	शुक्र	11:12 AM से	12:26 PM
18-दिसम्बर-21	शनि	9:57 AM से	11:12 AM
19-दिसम्बर-21	रवि	4:11 PM से	5:26 PM
20-दिसम्बर-21	सोम	8:44 AM से	9:59 AM
21-दिसम्बर-21	भौम	2:57 PM से	4:12 PM
22-दिसम्बर-21	बुध	12:29 PM से	1:43 PM
23-दिसम्बर-21	गुरु	1:44 PM से	2:58 PM
24-दिसम्बर-21	शुक्र	11:15 AM से	12:30 PM

RAHU

KAL

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
25-दिसम्बर-21	शनि	10:01 AM से	11:16 AM
26-दिसम्बर-21	रवि	4:15 PM से	5:29 PM
27-दिसम्बर-21	सोम	8:47 AM से	10:02 AM
28-दिसम्बर-21	भौम	3:01 PM से	4:16 PM
29-दिसम्बर-21	बुध	12:32 PM से	1:47 PM
30-दिसम्बर-21	गुरु	1:48 PM से	3:02 PM
31-दिसम्बर-21	शुक्र	11:18 AM से	12:33 PM
1-जनवरी-22	शनि	10:04 AM से	11:19 AM
2-जनवरी-22	रवि	4:19 PM से	5:34 PM
3-जनवरी-22	सोम	8:50 AM से	10:05 AM
4-जनवरी-22	भौम	3:05 PM से	4:20 PM
5-जनवरी-22	बुध	12:36 PM से	1:51 PM
6-जनवरी-22	गुरु	1:51 PM से	3:07 PM
7-जनवरी-22	शुक्र	11:21 AM से	12:36 PM
8-जनवरी-22	शनि	10:06 AM से	11:22 AM
9-जनवरी-22	रवि	4:24 PM से	5:39 PM

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
10-जनवरी-22	सोम	8:51 AM से	10:07 AM
11-जनवरी-22	भौम	3:10 PM से	4:25 PM
12-जनवरी-22	बुध	12:39 PM से	1:54 PM
13-जनवरी-22	गुरु	1:55 PM से	3:11 PM
14-जनवरी-22	शुक्र	11:23 AM से	12:39 PM
15-जनवरी-22	शनि	10:07 AM से	11:23 AM
16-जनवरी-22	रवि	4:29 PM से	5:46 PM
17-जनवरी-22	सोम	8:51 AM से	10:07 AM
18-जनवरी-22	भौम	3:14 PM से	4:31 PM
19-जनवरी-22	बुध	12:41 PM से	1:58 PM
20-जनवरी-22	गुरु	1:58 PM से	3:15 PM
21-जनवरी-22	शुक्र	11:25 AM से	12:42 PM
22-जनवरी-22	शनि	10:07 AM से	11:25 AM
23-जनवरी-22	रवि	4:35 PM से	5:52 PM
24-जनवरी-22	सोम	8:50 AM से	10:07 AM
25-जनवरी-22	भौम	3:18 PM से	4:36 PM

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
26-जनवरी-22	बुध	12:43 PM	से 2:01 PM
27-जनवरी-22	गुरु	2:01 PM	से 3:20 PM
28-जनवरी-22	शुक्र	11:25 AM	से 12:43 PM
29-जनवरी-22	शनि	10:07 AM	से 11:25 AM
30-जनवरी-22	रवि	4:40 PM	से 5:59 PM
31-जनवरी-22	सोम	8:47 AM	से 10:06 AM
1-फरवरी-22	भौम	3:22 PM	से 4:42 PM
2-फरवरी-22	बुध	12:44 PM	से 2:04 PM
3-फरवरी-22	गुरु	2:04 PM	से 3:23 PM
4-फरवरी-22	शुक्र	11:25 AM	से 12:45 PM
5-फरवरी-22	शनि	10:05 AM	से 11:25 AM
6-फरवरी-22	रवि	4:45 PM	से 6:05 PM
7-फरवरी-22	सोम	8:44 AM	से 10:04 AM
8-फरवरी-22	भौम	3:26 PM	से 4:47 PM
9-फरवरी-22	बुध	12:45 PM	से 2:06 PM
10-फरवरी-22	गुरु	2:06 PM	से 3:27 PM

RAHU

KAL

दिनांक	वार	आरम्भ	समाप्ति
11-फरवरी-22	शुक्र	11:24 AM	से 12:45 PM
12-फरवरी-22	शनि	10:02 AM	से 11:24 AM
13-फरवरी-22	रवि	4:50 PM	से 6:12 PM
14-फरवरी-22	सोम	8:39 AM	से 10:01 AM
15-फरवरी-22	भौम	3:29 PM	से 4:51 PM
16-फरवरी-22	बुध	12:45 PM	से 2:07 PM
17-फरवरी-22	गुरु	2:07 PM	से 3:30 PM
18-फरवरी-22	शुक्र	11:22 AM	से 12:45 PM
19-फरवरी-22	शनि	9:59 AM	से 11:22 AM
20-फरवरी-22	रवि	4:55 PM	से 6:18 PM
21-फरवरी-22	सोम	8:34 AM	से 9:57 AM
22-फरवरी-22	भौम	3:32 PM	से 4:56 PM
23-फरवरी-22	बुध	12:44 PM	से 2:08 PM
24-फरवरी-22	गुरु	2:08 PM	से 3:33 PM
25-फरवरी-22	शुक्र	11:19 AM	से 12:44 PM
26-फरवरी-22	शनि	9:54 AM	से 11:19 AM

R
A
H
UK
A
A
L

दिनांक	वार	आरम्भ	से	समाप्ति
27-फरवरी-22	रवि	4:59 PM	से	6:24 PM
28-फरवरी-22	सोम	8:28 AM	से	9:53 AM
1-मार्च-22	भौम	3:34 PM	से	5:00 PM
2-मार्च-22	बुध	12:43 PM	से	2:09 PM
3-मार्च-22	गुरु	2:09 PM	से	3:35 PM
4-मार्च-22	शुक्र	11:17 AM	से	12:43 PM
5-मार्च-22	शनि	9:50 AM	से	11:16 AM
6-मार्च-22	रवि	5:03 PM	से	6:29 PM
7-मार्च-22	सोम	8:21 AM	से	9:48 AM
8-मार्च-22	भौम	3:36 PM	से	5:04 PM
9-मार्च-22	बुध	12:42 PM	से	2:09 PM
10-मार्च-22	गुरु	2:09 PM	से	3:37 PM
11-मार्च-22	शुक्र	11:13 AM	से	12:41 PM
12-मार्च-22	शनि	9:44 AM	से	11:13 AM
13-मार्च-22	रवि	5:06 PM	से	6:35 PM
14-मार्च-22	सोम	8:14 AM	से	9:43 AM

दिनांक	वार	आरम्भ	से	समाप्ति
15-मार्च-22	भौम	3:38 PM	से	5:07 PM
16-मार्च-22	बुध	12:40 PM	से	2:09 PM
17-मार्च-22	गुरु	2:09 PM	से	3:39 PM
18-मार्च-22	शुक्र	11:09 AM	से	12:39 PM
19-मार्च-22	शनि	9:39 AM	से	11:09 AM
20-मार्च-22	रवि	5:09 PM	से	6:40 PM
21-मार्च-22	सोम	8:07 AM	से	9:37 AM
22-मार्च-22	भौम	3:40 PM	से	5:10 PM
23-मार्च-22	बुध	12:38 PM	से	2:09 PM
24-मार्च-22	गुरु	2:09 PM	से	3:40 PM
25-मार्च-22	शुक्र	11:06 AM	से	12:37 PM
26-मार्च-22	शनि	9:33 AM	से	11:05 AM
27-मार्च-22	रवि	5:13 PM	से	6:45 PM
28-मार्च-22	सोम	7:59 AM	से	9:32 AM
29-मार्च-22	भौम	3:41 PM	से	5:14 PM
30-मार्च-22	बुध	12:36 PM	से	2:08 PM

दिनांक	वार	आरम्भ	से	समाप्ति
31-मार्च-22	गुरु	2:08 PM	से	3:41 PM
1-अप्रैल-22	शुक्र	11:02 AM	से	12:35 PM
2-अप्रैल-22	शनि	9:28 AM	से	11:01 AM
3-अप्रैल-22	रवि	5:16 PM	से	6:50 PM
4-अप्रैल-22	सोम	7:52 AM	से	9:26 AM
5-अप्रैल-22	भौम	3:42 PM	से	5:17 PM
6-अप्रैल-22	बुध	12:34 PM	से	2:08 PM
7-अप्रैल-22	गुरु	2:08 PM	से	3:43 PM
8-अप्रैल-22	शुक्र	10:58 AM	से	12:33 PM
9-अप्रैल-22	शनि	9:22 AM	से	10:57 AM
10-अप्रैल-22	रवि	5:19 PM	से	6:55 PM
11-अप्रैल-22	सोम	7:45 AM	से	9:21 AM
12-अप्रैल-22	भौम	3:44 PM	से	5:20 PM
13-अप्रैल-22	बुध	12:32 PM	से	2:08 PM
14-अप्रैल-22	गुरु	2:08 PM	से	3:44 PM
15-अप्रैल-22	शुक्र	10:54 AM	से	12:31 PM

**R
A
H
U**

**K
A
A
L**

दिनांक	वार	आरम्भ	से	समाप्ति
16-अप्रैल-22	शनि	9:17 AM	से	10:54 AM
17-अप्रैल-22	रवि	5:22 PM	से	7:00 PM
18-अप्रैल-22	सोम	7:38 AM	से	9:15 AM
19-अप्रैल-22	भौम	3:46 PM	से	5:23 PM
20-अप्रैल-22	बुध	12:30 PM	से	2:08 PM
21-अप्रैल-22	गुरु	2:08 PM	से	3:46 PM
22-अप्रैल-22	शुक्र	10:51 AM	से	12:30 PM
23-अप्रैल-22	शनि	9:12 AM	से	10:51 AM
24-अप्रैल-22	रवि	5:26 PM	से	7:05 PM
25-अप्रैल-22	सोम	7:32 AM	से	9:11 AM
26-अप्रैल-22	भौम	3:47 PM	से	5:27 PM
27-अप्रैल-22	बुध	12:29 PM	से	2:08 PM
28-अप्रैल-22	गुरु	2:08 PM	से	3:48 PM
29-अप्रैल-22	शुक्र	10:48 AM	से	12:28 PM
30-अप्रैल-22	शनि	9:08 AM	से	10:48 AM

(((●)))

चैत्र शुक्ल पक्ष

13 अप्रेल 2021 की ग्रह स्थिति :- मीन में सूर्य, बुध; मेष में शुक्र; वृष में भौम, राहु;
वृश्चिक में केतु; मकर में शनि, कुम्भ में गुरु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	वैशा	अप्रे	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसंत ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
32 00	1	13	भौम	प्रति दि	10:17AM	अश्विदि	02:19PM	अमृतम्, विक्रमी 2078 नवरात्रारम्भ, नवरेह, चन्द्रदर्शन, वैशाखी 2:32 रात मेष में सूर्य, 1:13 रात मिथुन में भौम।	06:05	06:57
06	2	14	बुध	द्विती दि	12:48PM	भरण दि	05:22PM	काण्डः, संक्रान्ति व्रत, 12:10 रात वृष में चन्द्र।	06:03	06:58
08	3	15	गुरु	तृती दि	03:27PM	कृति प्र	08:32PM	अलापकम्, जंगम्रय, यज्ञ शिव मन्दिर पुरुखू, हारी पर्वत देवी आगन पलौडा।	06:02	06:59
13	4	16	शुक्र	चतु दि	06:06PM	रोहि प्र	11:40PM	मैत्रम्, 8:58 रात मेष में बुध।	06:01	06:59
18	5	17	शनि	पंच प्र	08:33PM	मृग प्र	02:33AM	वज्रम्, 1:09 दिन मिथुन में चन्द्र।	06:00	07:00
23	6	18	रवि	षष्ठी प्र	10:35PM	आर्द्रा प्र	05:01AM	ध्वाक्षः, कुमार षष्ठी व्रत।	05:59	07:01
27	7	19	सोम	सप्त प्र	12:02AM	पुन	Day Night	धौम्यः, 12:29 रात कर्कट में चन्द्र।	05:57	07:01
33	8	20	भौम	अष्ट प्र	12:44AM	पुन दि	06:52AM	स्थिरः, दुर्गाष्टमी, महा यज्ञ दुर्गानाग यज्ञ, मेला बाहूफोर्ट, 5:40 प्रातः शुक्र पूर्व में उदय।	05:56	07:02

जंगम्रय
15 अप्रेल

दुर्गाष्टमी
20 अप्रेल

38	9	21	बुध	नव	प्र	12:35AM	तिष्या दि	07:58AM	मातंगः, रामनवमी उमा, शैलपुत्री व शिवा भगवती जयन्ती, अकिनगाम, चक्रीश्वर, मंगला भगवती वची यात्रा, नवरात्र A	05:55	07:03
41	10	22	गुरु	दश	प्र	11:36PM	अश्ले दि	08:15AM	अमृतम्, 8:15 प्रातः सिंह में चन्द्र।	05:54	07:04
43	11	23	शुक्र	एका	प्र	09:48PM	मघा दि	07:41AM	काण्डः, कामदा एकादशी व्रत।	05:53	07:04
51	12	24	शनि	द्वाद	प्र	07:18PM	पू.फा.दि	06:22AM	अलापकम्, स्वामी कुमार जी जयन्ती (गडी अधमपोर), स्वामी रूपजी मस्ताना जयन्ती चिनौर, 11:56 दिन कन्या में चन्द्र, (उ.फा प्र 4:23AM)।	05:52	07:05
56	13	25	रवि	त्रयो	दि	04:13PM	हस्त प्र	01:54AM	मानसम्।	05:51	07:06
58	14	26	सोम	चर्तु	दि	12:44PM	चित्र प्र	11:06PM	मुद्गरम्, श्री हनुमान जयन्ती, 12:32 दिन तुला में चन्द्र।	05:50	07:07
33 00	15	27	भौम	पूर्णि	दि	09:01AM	स्वात प्र	08:08PM	ध्वजः, यज्ञ पोखरीबल हारी पर्वत काश्मीर व बन्तलाब, बादशह कलन्दर जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, त्र्यहः (प्रति प्र 5:15 AM)।	05:49	07:07

A समाप्त, महा यज्ञ नागडंडी, माता भद्रकाली यात्रा वडीपोरा हण्डवारा काश्मीर, फलाई मण्डाल जम्मू।

श्राद्धः प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी व पूर्णिमा पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से चतुर्दशी तक अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- रुद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति को क्या सावधानियां रखनी चाहिए :- रुद्राक्ष को साक्षात् भगवान शिव का ही रुद्र रूप माना जाता है अतः इसे धारण करने वाले व्यक्ति को सदैव पवित्र रहना चाहिए। मांस-मदिरा से बिलकुल दूर रहें।

रुद्राक्ष Rudraksha पहनकर किसी भी शवयात्रा या शमशान में न जाये। घर पर कभी सूतक (होन्छ/अशौच) के दिनों, शवयात्रा या शमशान में जाये तो इसे निकालकर पूजा स्थल पर रख दे और बाद में गंगाजल से पवित्र करने के पश्चात् ही धारण करें।

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रेल 2021 की ग्रहस्थिति :- मेष में सूर्य; बुध, शुक्र; वृष में राहु; मिथुन में भौम; वृश्चिक में केतु; मकर में शनि; कुम्भ में गुरु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाकः 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	वैश	अप्रे	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
33 08	16	28	बुध	द्विती प्र	01:34AM	विशा दि	05:12PM	प्रजापत्यः, 11:56 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	05:48	07:08
13	17	29	गुरु	तृती प्र	10:10PM	अनु दि	02:29PM	आनन्दः।	05:47	07:09
16	18	30	शुक्र	चतु प्र	07:10PM	ज्येष्ठ दि	12:07PM	चरः, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 11:09 रात), 12:07 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, 5:41 रात वृष में बुध।	05:46	07:09
21	19	मई	शनि	पंच दि	04:42PM	मूल दि	10:15AM	मुसुलं, श्री पंचमी, ऋषिपीर श्राद्ध, श्री मंगलेश्वर भैरव यज्ञ, भैरव बाग मन्दिर व कमला यात्रा।	05:45	07:10
26	20	2	रवि	षष्ठी दि	02:50PM	पू.षा. दि	08:59AM	शूलम्, वैताल पष्ठी, 2:46 दिन मकर में चन्द्र।	05:44	07:11
28	21	3	सोम	सप्त दि	01:40PM	उ.षा. दि	08:22AM	मृत्युः, स्वा. महादेव काक भान जयन्ती।	05:43	07:12
33	22	4	भौम	अष्ट दि	01:11PM	श्रवण दि	08:26AM	अलापकम्, स्वा. महादेव काक भान यज्ञ, 8:43 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, 1:26 दिन वृष में शुक्र।	05:42	07:12
38	23	5	बुध	नव दि	01:22PM	धनि दि	09:10AM	मैत्रम्।	05:41	07:13

43	24	6	गुरु	दश दि	02:11PM	शत दि	10:32AM	वज्रम्, श्री लक्ष्मी नारायण यज्ञ, बुलबुलंकर श्रीनगर।	05:40	07:14
46	25	7	शुक्र	एका दि	03:32PM	पू.भा.दि	12:26PM	ध्वांक्षः, वरूथिनी एकादशी, 5:55 प्रातः मीन में चन्द्र।	05:39	07:15
51	26	8	शनि	द्वाद दि	05:21PM	उ.भा.दि	02:47PM	द्यौम्यः, शैवाचार्य स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती।	05:38	07:15
55	27	9	रवि	त्रयो प्र	07:31PM	रेव दि	05:28PM	प्रवर्धः, 5:28 सायं मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	श्री ऋषिपीर श्राद्ध 1 मई	05:37 07:16
58	28	10	सोम	चर्तु प्र	09:56PM	अश्विप्र	08:25PM	क्षयः।		05:37 07:17
34 00	29	11	भौम	अमा प्र	12:30AM	भरण प्र	11:31PM	गजः।	वैताल षष्ठी 2 मई	05:36 07:17

श्राद्धः प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से पंचमी अपने दिन, षष्ठी से द्वादशी पहले दिन, त्रयोदशी से अमावसी तक अपने दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से अमावसी तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- रुद्राक्ष धारण करने का महत्व :- धार्मिक महत्व :- रुद्राक्ष भगवान शिव को बहुत प्रिय होते हैं अतः इन्हें धारण करने वाले मनुष्य पर हमेशा भगवान शिव की विशेष कृपा बनी रहती है। रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार की नकारात्मक उर्जा दूर रहती है। भय आदि से मुक्ति मिलती है। रुद्राक्ष के मुख के आधार पर इसके धार्मिक महत्व को और स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

दिन मान	वैश	मई	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त / ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ	
34 06	30	12	बुध	प्रति प्र	03:06AM	कृति प्र	02:40AM	सिद्धः, 6:18 प्रातः वृष में चन्द्र।	कुम्भ पर्व स्नान (हरिद्वार), 14 मई	05:35	07:18
10	31	13	गुरु	द्विती	Day N ight	रोहि	Day N ight	उन्मूलम्, चन्द्रदर्शन, मासान्त।		05:34	07:19
13	ज्ये	14	शुक्र	द्विती दि	05:39AM	रोहि दि	05:45AM	मैत्रम्, अक्षय तृतीया, महाकुम्भ स्नान पर्व (हरिद्वार), श्री परशुराम जयन्ती, संक्रान्ति व्रत, स्वामी कुमार जी जयन्ती गीतासत्संग A	05:34	07:20	
16	2	15	शनि	तृती दि	08:00AM	मृग दि	08:39AM	वज्रम्।	अक्षय तृतीया 14 मई	05:33	07:20
20	3	16	रवि	चतु दि	10:01AM	आर्द्रा दि	11:14AM	ध्वाक्षः।		05:32	07:21
23	4	17	सोम	पंच दि	11:35AM	पुन दि	01:22PM	धौम्यः, कुमार षष्ठी व्रत, आद्य गुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती, 6:53 प्रातः कर्कट में चन्द्र।	05:32	07:22	
26	5	18	भौम	षष्ठी दि	12:33PM	तिष्या दि	02:55PM	प्रवर्धः।	05:31	07:22	
30	6	19	बुध	सप्त दि	12:50PM	अश्ले दि	03:48PM	क्षयः, श्री गंगा जयन्ती, 3:48 दिन सिंह में चन्द्र।	05:30	07:23	



ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई 2021 की ग्रह स्थिति :- वृष में सूर्य, शुक्र, राहु; मिथुन में भौम, बुध; वृश्चिक में केतु; मकर में शनि वक्री; कुम्भ में गुरु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाकः 1943, ईस्वी 2021

दिन मान	ज्ये	मई	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
34 52	14	27	गुरु	प्रति दि	01:03PM	ज्येष्ठ प्र	10:29 PM	कालदण्डः, श्री काकजी यज्ञ हांगलगुण्ड काश्मीर व नगरोटा, जम्मू, 10:29 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	05:26	07:28
56	15	28	शुक्र	द्विती दि	09:36AM	मूल प्र	08:02 PM	स्थिरः, नारद जी जयन्ती, 12:00 रात मिथुन में शुक्र।	05:26	07:29
35 00	16	29	शनि	तृती दि	06:34AM	पू.षा. दि	06:03 PM	मातंगः, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:55 रात), 11:39 रात मकर में चन्द्र, त्र्यहः (चर्तु प्र 4:04 AM), 4:01 रात बुध वक्री।	05:26	07:30
02	17	30	रवि	पंच प्र	02:13AM	उ.षा. दि	04:41 PM	अमृतम्, ज्येष्ठा देवी महायज्ञ जयीठयार यात्रा श्रीनगर, स्वा.गोविन्द कौल जलाली जयन्ती त्रिलोकपुरा गोलगुजराल।	05:25	07:30
03	18	31	सोम	षष्ठी प्र	01:06AM	श्रवण दि	04:01 PM	सिद्धः, 3:58 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	05:25	07:31
07	19	जून	भौम	सप्त प्र	12:46AM	धनि दि	04:07 PM	उन्मूलम्, विजयेश्वर निवासी ज्योतिषी काशीनाथ शर्मा निर्वाण दिवस।	05:25	07:31
10	20	2	बुध	अष्ट प्र	01:13AM	शत दि	04:59 PM	मानसम्, 6:51 प्रातः कर्कट में भौम, 2:33 रात मिथुन में वक्री बुध।	05:24	07:32
10	21	3	गुरु	नव प्र	02:23AM	पू.षा. दि	06:34 PM	प्रजापत्यः, 12:07 दिन मीन में चन्द्र।	05:24	07:32

15	22	4	शुक्र	दश प्र	04:08AM	उ.भा. प्र	08:47 PM	ध्वजः।	05:24 07:
17	23	5	शनि	एका	Day N ight	रेव प्र	11:27 PM	प्रजापत्यः, 11:27 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	05:24 07:
17	24	6	रवि	एका दि	06:20AM	अश्विप्र	02:27AM	आनन्दः, रथ एकादशी व्रत, भद्रकाली जयन्ती, अपरा एकादशी।	05:24 07:
17	25	7	सोम	द्वाद दि	08:49AM	भरण	Day N ight	चरः।	05:24 07:
17	26	8	भौम	त्रयो दि	11:25AM	भरण दि	05:36AM	गजः, 12:23 दिन वृष में चन्द्र।	05:23 07:
20	27	9	बुध	चर्तु दि	01:58PM	कृति दि	08:44AM	सिद्धः, वट सावित्री व्रत।	05:23 07:
20	28	10	गुरु	अमा दि	04:22PM	रोहि दि	11:44AM	उन्मूलम्, हरिश्चर यात्रा खुनुमुह, श्री नन्दकेश्वर यज्ञ / सुम्बल व सीर जगीर यात्रा, 1:09 रात मिथुन में चन्द्र।	05:23 07:

श्री नन्दकेश्वर यज्ञ
10 जून

श्राद्धः प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से अमावसी तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से चतुर्थी पहले दिन, पंचमी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी व त्रयोदशी पहले दिन, चतुर्दशी व अमावसी अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- संक्रान्ति सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना संक्रान्ति कहलाता है। सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है उसी राशि के नाम पर संक्रान्ति का नाम होता है। जैसे- जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है तो इसको मकर संक्रान्ति कहते हैं। संक्रान्ति को कार्यों का करना वर्जित माना जाता है, मगर इसी दिन को स्नान, दान, पुण्य कर्म, पिण्ड दान, तर्पण, तीर्थ स्नान आदि कार्यों के लिए बहुत शुभ माना जाता है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

68

11 जून 2021 की ग्रह स्थिति:- वृष में सूर्य, बुध वक्री, राहु; मिथुन शुक्र; कर्कट में भौम; वृश्चिक में केतु; मकर में शनि वक्री; कुम्भ में गुरु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	ज्ये	जून	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, उतरायण / दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
35 22	29	11	शुक्र	प्रति दि	06:31PM	मृग दि	02:30 PM	मानसम्, चन्द्रदर्शन।	05:23	07:36
22	30	12	शनि	द्विती प्र	08:18PM	आर्द्रा दि	04:57 PM	मुद्गरम्, भगवान् श्री गोपीनाथ जी यज्ञ।	05:23	07:37
25	31	13	रवि	तृती प्र	09:41PM	पुन दि	07:00 PM	ध्वजः, 12:32 दिन कर्कट में चन्द्र।	05:23	07:37
25	32	14	सोम	चतु प्र	10:35PM	तिष्या प्र	08:36 PM	प्रजापत्यः, कर्मकाण्ड शिरोमणि काशीनाथ हण्डू जयन्ती, मासान्त।	05:23	07:37
25	आष	15	भौम	पंच प्र	10:57PM	अश्ले प्र	09:42 PM	आनन्दः, ब्रह्मचारी श्री गोपीनाथ जी (गोरीपुरा) जयन्ती, स्वा. रघुनाथजी कुक्लू जयन्ती, 6:01 प्रातः मिथुन में सूर्य, संक्रान्ति A	05:23	07:38
25	2	16	बुध	षष्ठी प्र	10:46PM	मघा प्र	10:15 PM	चरः, कुमार षष्ठी व्रत।	05:23	07:38
25	3	17	गुरु	सप्त प्र	10:00PM	पू.फा.प्र	10:13 PM	मुसुलं, 4:07 रात कन्या में चन्द्र।	05:24	07:38
25	4	18	शुक्र	अष्ट प्र	08:40PM	उ.फा.प्र	09:37 PM	शूलम्, ज्येष्ठ अष्टमी, क्षीर भवानी(तुलमुल) भवानी नगर, लकटीपुरा, मंजगाम, खनबरन व टिक्कर यात्रा।	05:24	07:39
25	5	19	शनि	नव दि	06:46PM	हस्त प्र	08:28 PM	मृत्युः।	05:24	07:39

25	6	20	रवि	दश दि	04:22PM	चित्र दि	06:49 PM	काम्यः, 7:42 प्रातः तुला में चन्द्र, 8:30 रात गुरु वक्री।	05:24	07:39
27	7	21	सोम	एका दि	01:32PM	स्वात दि	04:45 PM	छत्रम्, निर्जला एकादशी, महामहेश्वराचार्य श्री अभिनवगुप्त जयन्ती, श्री नीलकण्ठ शर्मा जयन्ती (श्रीनगर), हवन स्वा. सूरदास जी B	05:24	07:39
26	8	22	भौम	द्वाद दि	10:22AM	विशा दि	02:22 PM	श्रीवत्सः, 8:59 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र, 2:21 दिन कर्कट में शुक्र, 3:29 रात बुध मार्गी।	05:24	07:40
25	9	23	बुध	त्रयो दि	07:00AM	अनु दि	11:48AM	सौम्यः, स्वामी गोपालनन्द गिरि यज्ञ लाले दा बाग, त्रयहः(चतु प्र 3:33AM)।	05:25	07:40
25	10	24	गुरु	पूर्णि प्र	12:10AM	ज्येष्ठ दि	09:11AM	कालदण्डः, माता रूपभवानी जयन्ती, कबीर जयन्ती, स्वामी महादेव काक जी (रतनीपोरा) जयन्ती, वटसावित्री व्रत, 9:11 प्रातः धनु C	05:25	07:40

A व्रत, 9:42 रात सिंह में चन्द्र। **B** आश्रम सारी जम्मू, सूर्य दक्षिणायन प्रारम्भ। **C** में चन्द्र, व मूल आरम्भ।

श्राद्धः प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से नवमी अपने दिन, दशमी से चतुर्दशी पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से एकादशी अपने दिन, द्वादशी से चतुर्दशी पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :-

श्राद्धः- हमारे हिन्दूधर्म के अनुसार, प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारम्भ में माता-पिता, पूर्वजों को नमस्कार प्रणाम करना हमारा कर्तव्य है, हमारे पूर्वजों की वंश परम्परा के कारण ही हम आज यह जीवन देख रहे हैं, इस जीवन का आनंद प्राप्त कर रहे हैं।
श्राद्ध हमारे पूर्वजों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता प्रकट करने का एक सनातन वैदिक संस्कार है। वे हमारे पूर्वज पूजनीय हैं, उन्हें हम श्राद्ध पक्ष में स्मरण कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। वास्तव में, वे प्रतिदिन स्मरणीय हैं। श्राद्ध पक्ष विशेषतः उनके स्मरण हेतु निर्धारित किया गया है। हमारे धर्म में, ऋषियों ने वर्ष में एक पक्ष को पितृपक्ष (श्राद्ध पक्ष) का नाम दिया, जिस पक्ष में हम अपने पितरेश्वरों का श्राद्ध, तर्पण, मुक्ति हेतु विशेष क्रिया संपन्न कर उन्हें अर्घ्य समर्पित करना हमारा कर्तव्य है।

आषाढ कृष्ण पक्ष

25 जून 2021 की ग्रह स्थिति:- मिथुन में सूर्य; कर्कट में शुक्र, भौम;
वृश्चिक में केतु; मकर शनि वक्री; कुम्भ में गुरु वक्री; वृष में बुध, राहु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाकः 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	आष	जून	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
35 25	11	25	शुक्र	प्रति प्र	08:59PM	मूल दि	06:40AM	स्थिरः, श्री गुरु हर गोविंद सिंह जयन्ती, (पू.षा. प्र 4:25AM)।	05:25	07:40
23	12	26	शनि	द्विती दि	06:11PM	उ.षा. प्र	02:36AM	क्षयः, 9:55 दिन मकर में चन्द्र।	05:26	07:40
22	13	27	रवि	तृती दि	03:54PM	श्रवण प्र	01:21AM	मुसुलं, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:21 रात), स्वामी सत्यानन्द जी महाराज जयन्ती।	05:26	07:40
22	14	28	सोम	चतु दि	02:16PM	धनि प्र	12:48AM	शूलम्, 12:59 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	05:26	07:40
21	15	29	भौम	पंच दि	01:23PM	शत प्र	01:02AM	मृत्युः।	05:27	07:40
18	16	30	बुध	षष्ठी दि	01:19PM	पू.भा. प्र	02:03AM	काम्यः, स्वा. गोविन्द कौल जलाली यज्ञ, 7:43 सायं मीन में चन्द्र।	05:27	07:40
17	17	जुल	गुरु	सप्त दि	02:02PM	उ.भा. प्र	03:49AM	छत्रम्।	05:27	07:40
17	18	2	शुक्र	अष्ट दि	03:29PM	रेव	Day Night	श्रीवत्सः।	05:28	07:40
17	19	3	शनि	नव दि	05:31PM	रेव दि	06:13AM	प्रजापत्यः, श्री भगवान् गोपीनाथ जी महोत्सव (3 जुलाई), 6:13 प्रातः मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	05:28	07:40

17	20	4	रवि	दश	प्र	07:56PM	अश्वि दि	09:05AM	आनन्दः।	05:29	07:40
15	21	5	सोम	एका	प्र	10:31PM	भरण दि	12:12 PM	चरः, योगिनी एकादशी, श्री श्यामलाल ओगरा जयन्ती, 6:59 सायं वृष में चन्द्र।	05:29	07:40
13	22	6	भौम	द्वाद	प्र	01:03AM	कृति दि	03:20 PM	मुसुलं।	05:30	07:40
12	23	7	बुध	त्रयो	प्र	03:21AM	रोहि दि	06:19 PM	मातंगः, 11:12 दिन मिथुन में बुध।	05:30	07:40
11	24	8	गुरु	चर्तु	प्र	05:17AM	मृग प्र	08:58 PM	मृत्युः, 7:41 प्रातः मिथुन में चन्द्र।	05:31	07:39
06	25	9	शुक्र	अमा		Day Night	आर्द्रा प्र	11:14 PM	काम्यः।	05:31	07:39
05	26	10	शनि	अमा	दि	06:46AM	पुन प्र	01:02AM	छत्रम्, अमावसी व्रत, कंकण सूर्य ग्रहण, 6:37सायं कर्कट में चन्द्र।	05:32	07:39

श्राद्धः- प्रतिपदा व द्वितीया अपने दिन, तृतीया से नवमी तक पहले दिन, दशमी से अमावसी अपने दिन।

मध्याह्नः- प्रतिपदा से अमावसी तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- (वास्तु विज्ञान) प्रत्येक घर में तुलसी का पौधा, सीता अशोक, आंवला, हरश्रृंगार, अमलतास, निर्गुण्डी इत्यादि में से कम से कम 2 पौधे अवश्य होने चाहिए। ये अमन एवं समृद्धिवर्द्धक हैं। कैक्टस (Cactus) का घर में होना अशांति देता है।

आषाढ शुक्ल पक्ष

11 जुलाई 2021 की ग्रह स्थिति :- मिथुन में सूर्य, बुध; कर्कट में भौम, शुक्र; वृश्चिक में केतु; मकर में शनि वक्रा; कुम्भ में गुरु वक्रा; वृष में राहु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाकः 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	आषाढ	जुल	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म / वर्षा ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
35 03	27	11	रवि	प्रति दि	07:47AM	तिष्या प्र	02:22 AM	श्रीवत्सः, चन्द्रदर्शन।	05:32	07:39
34 58	28	12	सोम	द्विती दि	08:20AM	अश्ले प्र	03:14 AM	सौम्यः, शिवा भगवती जयन्ती, 3:14 रात सिंह में चन्द्र।	05:33	07:38
57	29	13	भौम	तृती दि	08:24AM	मघा प्र	03:41 AM	कालदण्डः।	05:33	07:38
53	30	14	बुध	चतु दि	08:03AM	पू.फा.प्र	03:42 AM	स्थिरः।	05:34	07:38
51	31	15	गुरु	पंच दि	07:16AM	उ.फा.प्र	03:21 AM	मातंगः, गुफबल बारामुला पांजला यात्रा, कुमार षष्ठी व्रत, स्वामी स्वयानन्द जी जयन्ती, मुट्टी, 9:39 प्रातः कन्या में चन्द्र, मासान्त।	05:34	07:37
50	श्राव	16	शुक्र	षष्ठी दि	06:06AM	हस्त प्र	02:37 AM	अमृतम्, त्र्यहः, हार सतम्, त्र्यहः(सप्त प्र 4:43AM), 4:53 दिन कर्कट में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, वर्षा ऋतु, वहरात।	05:35	07:37
46	2	17	शनि	अष्ट प्र	02:41AM	चित्र प्र	01:32 AM	काण्डः, हार अष्टमी, 2:07 दिन तुला में चन्द्र, 9:26 प्रातः सिंह में शुक्र।	05:36	07:36

जया देवी
जयन्ती
(बिजबिहारा)
18 जुलाई

45	3	18	रवि	नव	प्र	12:29AM	स्वात	प्र	12:08 AM	अलापकम्, हार नवमी, शारिका जयन्ती, जया देवी जयन्ती बिजबिहारा, हारी पर्वत यात्रा।	05:36	07:36
41	4	19	सोम	दश	प्र	10:00PM	विशा	प्र	10:27 PM	मैत्रम्, 4:54 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	05:37	07:35
36	5	20	भौम	एका	दि	07:18PM	अनु	प्र	08:32 PM	वज्रम्, देवशयनी एकादशी व्रत, हरिस्वाप, 5:55 सायं सिंह में भौम।	05:37	07:35
36	6	21	बुध	द्वाद	दि	04:27PM	ज्येष्ठ	दि	06:30 PM	ध्वाक्षः, हारबाह, लुकभवन यात्रा, श्री भगवान् गोपीनाथ जी जयन्ती, 6:30 सायं धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	05:38	07:34
35	7	22	गुरु	त्रयो	दि	01:33PM	मूल	दि	04:25 PM	धौम्यः।	05:39	07:34
31	8	23	शुक्र	चर्तु	दि	10:44AM	पू.षा.	दि	02:26 PM	प्रवर्धः, श्री ज्वाला चतुर्दशी, खव यात्रा, सन्त राधा देवी यज्ञ (सागम), 7:58 सायं मकर में चन्द्र।	05:39	07:33
28	9	24	शनि	पूर्णि	दि	08:07AM	उ.षा.	दि	12:40 PM	क्षयः, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, गुरु पूर्णिमा, छडी का पहला स्नान, व्यास पूजा।	05:40	07:33

श्राद्धः प्रतिपदा से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी व पूर्णिमा का पहले दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- (वास्तु विज्ञान):- वास्तुशास्त्र के अनुसार घर में कैसा भी वास्तु दोष हो अगर आप घर के मुख्य द्वार पर नरीवन बांध कर वहाँ स्वास्थिक का चिन्ह बनाले, तो ऐसा करने से वास्तु दोष दूर हो जाते हैं। मान्यता है कि स्वास्थिक का घर में सौभाग्य लेकर आता है। साथ ही वास्तु दोषों को दूर करने के लिए मुख्य (भर) द्वार की दहलीज हमेशा लकड़ की ही बनवाएं।

श्रावण कृष्ण पक्ष

25 जुलाई 2021 की ग्रह स्थिति :- कर्कट में सूर्य; सिंह में भौम, शुक्र; वृश्चिक में केतु; मकर में शनि वक्री; कुम्भ में गुरु वक्री; वृष में राहु; मिथुन में बुध।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	श्राव	जुल	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा ऋतु, दिक्षणायन।	सू उ	सू अ
34 25	10	25	रवि	प्रति दि	05:51AM	श्रवण दि	11:17AM	मुसुलं, महामहेश्वराचार्य वासुगुप्त जयन्ती, त्र्यहः (द्विती प्र 4:04 AM), 10:47 रात कुम्भ में चन्द्रव पंचक आरम्भ, 11:41 A	05:41	07:32
21	11	26	सोम	तृती प्र	02:55AM	धनि दि	10:26AM	शूलम्, परम् गुरु लालाजी यज्ञ (टिक्कर), श्रावण सोमवार १ व्रत।	05:41	07:31
18	12	27	भौम	चतु प्र	02:29AM	शत दि	10:14AM	मृत्युः, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:02 रात), 4:33 रात मीन में चन्द्र।	05:42	07:31
15	13	28	बुध	पंच प्र	02:49AM	पू.भा.दि	10:45AM	काम्यः। A दिन कर्कट में बुध।	05:43	07:30
11	14	29	गुरु	षष्ठी प्र	03:55AM	उ.भा.दि	12:02 PM	छत्रम्।	05:43	07:29
06	15	30	शुक्र	सप्त प्र	05:41AM	रेव दि	02:02 PM	श्रीवत्सः, शीतला सप्तमी, 2:02 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	05:44	07:28
05	16	31	शनि	अष्ट	Day Night	अश्विदि	04:37 PM	सौम्यः।	05:45	07:28
34 01	17	अग	रवि	अष्ट दि	07:57AM	भरण प्र	07:36 PM	कालदण्डः, 2:23 रात वृष में चन्द्र।	05:45	07:27

33 56	18	2	सोम	नव दि	10:28AM	कृति प्र	10:43 PM	स्थिरः, श्रावण सोमवार २ व्रत।	05:46	07:26
52	19	3	भौम	दश दि	01:00PM	रोहि प्र	01:44AM	मातंगः।	05:47	07:25
48	20	4	बुध	एका दि	03:18PM	मृग प्र	04:25AM	अमृतम्, कमला एकादशी, कमलानाग यात्रा त्राल, 3:07 दिन मिथुन में चन्द्र।	05:47	07:24
46	21	5	गुरु	द्वाद दि	05:10PM	आर्द्रा	Day N ight	काण्डः।	05:48	07:23
42	22	6	शुक्र	त्रयो दि	06:29PM	आर्द्रा दि	06:37AM	काम्यः, 1:54 रात कर्कट में चन्द्र।	05:49	07:22
38	23	7	शनि	चर्तु दि	07:12PM	पुन दि	08:15AM	छत्रम्, मास्टर ज़िन्दा कौल जयन्ती।	05:49	07:22
33	24	8	रवि	अमा दि	07:20PM	तिष्या दि	09:19AM	श्रीवत्सः, अमावसी व्रत, 1:32 रात सिंह में बुध।	05:50	07:21

श्राद्धः प्रतिपदा द्वितीया पहले दिन, तृती से अष्टमी तक अपने दिन, नवम से अमावस तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रति व द्वितीया पहले दिन, तृती से अष्टमी तक अपने दिन, नवम का पहले दिन, दशम से अमावस तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- राहु, केतु व शनि से मुक्ति हेतु कुछ उपाय:- कुंडली में शनि के दोष हों या शनि की साढ़ेसाती या ढय्या चल रहा हो तो प्रत्येक शनिवार को बहते जल की नदी में काले तिल प्रवाहित करना चाहिए। इस उपाय से शनि के दोषों की शांति होती है। आप काले तिल का भी दान कर सकते हैं। इससे राहु केतु और शनि के बुरे प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। इसके अलावा कालसर्प योग, साढ़ेसाती, ढय्या, पितृदोष आदि में भी यह उपाय कारगर है।

श्रावण शुक्ल पक्ष

9 अगस्त 2021 की ग्रह स्थिति :- कर्कट में सूर्य; सिंह में भौम, बुध, शुक्र;
वृश्चिक में केतु; मकर में शनि वक्री; कुम्भ में गुरु वक्री; वृष में राहु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	श्राव	अग	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
33 28	25	9	सोम	प्रति दि	06:57 PM	अश्ले दि	09:50 AM	सौम्यः, 9:50 दिन सिंह में चन्द्र, श्रावण सोमवार ३ व्रत।	05:51	07:20
25	26	10	भौम	द्विती दि	06:06 PM	मघा दि	09:52 AM	कालदण्डः, चन्द्रदर्शन।	05:51	07:19
21	27	11	बुध	तृती दि	04:54 PM	पू.फा.दि	09:32 AM	स्थिरः, 3:23 दिन कन्या में चन्द्र, 11:32 दिन कन्या में शुक्र, स्वामी मधुसूदन जी पण्डित (सोपोर) जयन्ती।	05:52	07:18
16	28	12	गुरु	चतु दि	03:25 PM	उ.फा.दि	08:52 AM	मातंगः।	05:53	07:17
12	29	13	शुक्र	पंच दि	01:43 PM	हस्त दि	07:59 AM	अमृतम्, नागपंचमी, कौसरनाग यात्रा (क्रमसरनाग), नागडंडी महायज्ञ (अछबल), कुमार षष्ठी व्रत, 7:29 सायं तुला में चन्द्र।	05:53	07:16
08	30	14	शनि	षष्ठी दि	11:51 AM	चित्र दि	06:56 AM	काण्डः, ज्यो. आफताभ शर्मा (विजयेश्वर निवासी) जयन्ती, (स्वात प्र 5:44 AM)।	05:54	07:15
03	31	15	रवि	सप्त दि	09:52 AM	विशा प्र	04:26 AM	उन्मूलम्, 75वाँ स्वतन्त्रता दिवस, 10:46 रात वृश्चिक में चन्द्र, मासान्त।	05:55	07:14

कौसरनाग यात्रा
13 अगस्त

33 00	भाद्र	16	सोम	अष्ट दि	07:46 AM	अनु प्र	03:02 AM	मानसम्, अष्टमी व्रत, त्रयहः (नव प्र 5:35AM), 1:17 रात सिंह में सूर्य, श्रावण सोमवार ४ व्रत, स्थाय आरम्भ	05:55
32 53	2	17	भौम	दश प्र	03:21 AM	ज्येष्ठ प्र	01:35 AM	मुद्गरम्, संक्रान्ति व्रत, 1:35 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	05:56
48	3	18	बुध	एका प्र	01:06 AM	मूल प्र	12:07 AM	ध्वजः, पवित्र काह।	05:57
45	4	19	गुरु	द्वाद प्र	10:54 PM	पू.षा. प्र	10:42 PM	प्रजापत्यः, शुपियन यात्रा, श्री कृष्ण पण्डित यज्ञ, श्रावण द्वादशी, ज्यो. कण्ठ शर्मा निर्वाण दिवस, कपालमोचन शुपियन यात्रा A	05:58
41	5	20	शुक्र	त्रयो प्र	08:50 PM	उ.षा. प्र	09:24 PM	आनन्दः।	05:58
36	6	21	शनि	चर्तु दि	07:01 PM	श्रावण प्र	08:21 PM	स्थिरः।	05:59
32	7	22	रवि	पूर्णि दि	05:32 PM	धनि प्र	07:39 PM	मातंगः, रक्षा बन्धन , अमरनाथ, थजवारा, ध्यानेश्वर (बाड़ीपुरा), वमू (वेरीनाग), हरनाग (हरवन)व खयार यात्रा, पूर्णिमा व्रत B	05:59

अमरेश्वर यात्रा

22 अगस्त

A 4:22 रात मकर में चन्द्र।**B** 7:57 प्रातः कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ,

श्राद्धः प्रतिपदा से नवम तक पहले दिन, दशमी से चतुर्दशी तक अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से नवमी तक पहले दिन, दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- शंख को घर के पूजा स्थल में रखने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। वेद पुराणों की मानें तो शंख समुद्रमंथन के दौरान उत्पन्न हुआ है। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि जहां शंख होता है वहां महालक्ष्मी का वास होता है। शंख की आवाज से वातावरण में शुद्धता आती है। पूजा की शुरुआत और पूजा में आरती के बाद शंख को बजाया करे।



भाद्र कृष्ण पक्ष

23 अगस्त 2021 की ग्रहस्थिति :- सिंह में सूर्य, भौम, बुध; कन्या में शुक्र; मकर में शनि वक्री; कुम्भ में गुरु वक्री; वृष में राहु; वृश्चिक में केतु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021

दिन मान	भाद्र	अग	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा ऋतु, दिक्षणायन।	सू उ	सू अ
32 28	8	23	सोम	प्रति दि	04:31PM	शत प्र	07:26 PM	अमृतम्।	06:00	07:04
21	9	24	भौम	द्विती दि	04:05PM	पू.भा.प्र	07:47 PM	काण्डः, ज्यो. प्रेमनाथ शास्त्री (विजयेश्वर निवासी) अन्तर्ध्यान दिवस, 1:38 दिन मीन में चन्द्र।	06:01	07:03
17	10	25	बुध	तृती दि	04:19PM	उ.भा.प्र	08:48 PM	अलापकम्, कुमार तृतीया, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:59रात)।	06:01	07:02
13	11	26	गुरु	चतु दि	05:14PM	रेव प्र	10:29 PM	मैत्रम्, नवदल यात्रा त्राल, 10:29 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त, 11:18 दिन कन्या में बुध।	06:02	07:01
08	12	27	शुक्र	पंच दि	06:49PM	अश्विप्र	12:47AM	वज्रम्, चन्दन षष्ठी व्रत (चन्द्रोदय 9:57रात)।	06:03	07:00
02	13	28	शनि	षष्ठी प्र	08:57PM	भरण प्र	03:35AM	ध्वाक्षः।	06:03	06:58
31 58	14	29	रवि	सप्त प्र	11:26PM	कृति	Day N ight	धौम्यः, 10:20 दिन वृष में चन्द्र।	06:04	06:57

चन्दन षष्ठी
27 अगस्त

जन्म अष्टमी
30 अगस्त

55	15	30	सोम	अष्ट प्र	02:00AM	कृति दि	06:39AM	स्थिरः, जन्म अष्टमी (चन्द्रोदय 11:29रात)।	06:05	06:56
51	16	31	भौम	नव प्र	04:24AM	रोहि दि	09:44AM	मातंगः, 11:12 रात मिथुन में चन्द्र।	06:05	06:55
43	17		सित	बुध दश	Day Night	मृग दि	12:34 PM	मृत्युः।	06:06	06:53
40	18	2	गुरु	दश दि	06:22AM	आर्द्रा दि	02:57 PM	काण्डः।	06:07	06:52
36	19	3	शुक्र	एका दि	07:44AM	पुन दि	04:42 PM	अलापकम्, अज्ञा एकादशी, 10:19 दिन कर्कट में चन्द्र।	06:07	06:51
31	20	4	शनि	द्वाद दि	08:25AM	तिष्या दि	05:45 PM	मैत्रम्, गोवत्स पूजा, श्री अपर्णा जी जयन्ती (श्री स्वयानन्द आश्रम), स्वामी श्रीधर-जू पण्डित जयन्ती (दगमुल कुपवारा)।	06:08	06:50
25	21	5	रवि	त्रयो दि	08:22AM	अश्ले दि	06:07 PM	वज्रम्, 6:07 सायं सिंह में चन्द्र, 3:58 रात कन्या में भौम, 12:49 रात तुला में शुक्र।	06:09	06:48
21	22	6	सोम	चर्तु दि	07:39AM	मघा दि	05:51 PM	ध्वांक्षः। A रात कन्या में चन्द्र।	06:09	06:47
16	23	7	भौम	अमा दि	06:22AM	पू.फा.दि	05:05 PM	धौम्यः, दर्भ मावस, मघा मावसी, ज्योतिषी प्रकाशजुव निर्वाण दिवस, पवन् सन्ध्या यात्रा, त्र्यहः(प्रति प्र 4:37 AM), 10:49 A	06:10	06:46

श्राद्धः प्रतिपदा से पंचम तक पहले दिन, षष्ठी से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से अमावस तक पहले दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से अमावस तक पहले दिन।

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः। नास्ति मातृसमं त्राणं, नास्ति मातृसमा प्रपा॥ (Skanda Puran)
There is no shade like mother, no resort like a mother, no other ever-giving fountain of life (जीवनदाता)!

भाद्र शुक्ल पक्ष

8 सितम्बर, 2021 की ग्रह स्थिति :- सिंह में सूर्य; कन्या में बुध, भौम; तुला में शुक; वृश्चिक में केतु; मकर में शनि वक्री; कुम्भ में गुरु वक्री; वृष में राहु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	भाद्र	सित	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा - शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
31 10	24	8	बुध	द्विती प्र	02:34 AM	उ.फा.दि	03:55 PM	प्रवर्धः, पन्न मुहूर्त।	06:10	06:44
06	25	9	गुरु	तृती प्र	12:19 AM	हस्त दि	02:31 PM	क्षयः, चन्द्रदर्शन, हरितालिका तृतीया , चन्द्रमा दर्शन आज अवश्य करें, (चन्द्रोदय 9:28 प्रातः), 1:45 रात तुला में चन्द्र, पन्न मुहूर्त।	06:11	06:43
31 01	26	10	शुक	चतु प्र	09:58 PM	चित्र दि	12:58 PM	गजः, विनायक चतुर्थी , चन्द्रमा का दर्शन आज नहीं करें, स्वा. कृष्णजुव राजदान जयन्ती, पन्न मुहूर्त।	06:12	06:42
30 55	27	11	शनि	पंच प्र	07:37 PM	स्वात दि	11:22 AM	सिद्धः, वराह पंचमी , स्वा. मोतीलाल ब्रह्मचारी जी जयन्ती, 4:13 रात वृश्चिक में चन्द्र।	06:12	06:40
51	28	12	रवि	षष्ठी दि	05:21 PM	विशा दि	09:50 AM	उन्मूलम्, कुमार षष्ठी, सूर्य षष्ठी , मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, पन्न मुहूर्त।	काश्मीरी पण्डित बलिदान दिवस 14 सितम्बर	
47	29	13	सोम	सप्त दि	03:11 PM	अनु दि	08:23 AM	मानसम्, पन्न मुहूर्त।		
41	30	14	भौम	अष्ट दि	01:10 PM	ज्येष्ठ दि	07:04 AM	मुद्गरम्, अष्टमी व्रत, उमादेवी (उमानगरी) यज्ञ, गंगाष्टमी, ललेश्वरी जयन्ती, शारदाष्टमी गुशी कुपवारा, साधुमाल्युन व गंगबल A	06:14	06:36

36	31	15	बुध	नव दि	11:18 AM	पू.षा. प्र	04:56AM	श्रीवत्सः, मासान्त।	06:15	06:35
32	असू	16	गुरु	दश दि	09:37 AM	उ.षा. प्र	04:08AM	सौम्यः, शरद ऋतु, हरुद, 1:13 रात कन्या में सूर्य, 10:43 दिन मकर में चन्द्र।	06:16	06:34
26	2	17	शुक्र	एका दि	08:08 AM	श्रवण प्र	03:36AM	धौम्यः, नारायणी एकादशी, गोतमनाग, नारायण नाग व डुमटबल यात्रा, संक्रान्ति व्रत, पन्न मुहूर्त।	06:16	06:32
21	3	18	शनि	द्वाद दि	06:55 AM	धनि प्र	03:21AM	प्रवर्धः, वामन बाह, विथवोतुर यात्रा, वितस्ता त्रयोदशी, त्र्यहः (त्रयो प्र 6:00AM), 3:26 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	06:17	06:31
15	4	19	रवि	चर्तु प्र	05:29 AM	शत प्र	03:28AM	क्षयः, अनन्त चतुर्दशी, अनन्तनाग यात्रा, पापहरण नाग (सैली कारकूटनाग) यात्रा, स्वा. श्री कण्ठ यज्ञ मलिकआगना।	06:18	06:29
11	5	20	सोम	पूर्णि प्र	05:25 AM	पू.भा. प्र	04:02AM	गजः, पूर्णिमा व्रत, 9:51 रात मीन में चन्द्र।	06:18	06:28

A यात्रा, बलिदान दिवस(श्री टिकलाल टपलू), (मूल प्र 5:55AM), 7:04 प्रातः धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, 2:20 दिन कुम्भ में वक्री गुरु।

श्राद्धः प्रतिपदा का पहले दिन, द्विती से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से त्रयोदशी तक पहले दिन, चतुर्दश व पूर्णिमा अपने दिन।
मध्याह्नः प्रति का पहले दिन, द्विती से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी से त्रयोदशी तक पहले दिन, चतुर्दशी व पूर्णिमा का अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- विनायक चतुर्थी व्रत:- इस दिन घर की साफ-सफाई करें। इसके बाद गंगाजल युक्त जल से स्नान ध्यान से निवृत्त होकर सर्वप्रथम व्रत संकल्प लें। इसके लिए जल से आमचन करें। इसके बाद पूजा गृह को गंगा जल से शुद्ध करें और फिर गणेश जी की पूजा फल, फूल, धूप-दीप, कपूर, अक्षत और दुर्वा से करें। धार्मिक ग्रंथों के मुताबिक, भाद्रपद में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को भगवान श्री गणेश जी का जन्म हुआ है। अतः इस दिन गणेश जयंती मनाई जाती है। हम काश्मीरी पण्डित इस पक्ष में पन्न दान कर श्री गणेश जी आराधना करते हैं।

आश्विन कृष्णपक्ष

21 सितम्बर 2021 की ग्रह स्थिति :- कन्या में सूर्य, भौम, बुध; तुला में शुक्र; वृश्चिक में केतु; मकर में शनि वक्री, गुरु वक्री; वृष में राहु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	असू	सित	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
30 06	6	21	भौम	प्रति प्र	05:52AM	उ.भा. प्र	05:06AM	सिद्धः, पितृपक्ष आरम्भ। ● प्रतिपदा का श्राद्ध।	06:19	06:27
30 00	7	22	बुध	द्विती	Day Nigt	रेव	Day Nigt	उन्मूलम्, 8:10 प्रातः तुला में बुध। ● द्वितीया का श्राद्ध।	06:19	06:25
29 56	8	23	गुरु	द्विती दि	06:54AM	रेव दि	06:44AM	मैत्रम्, 6:44 प्रातः मेष में चन्द्र व पंचक समाप्ता। ● तृतीया का श्राद्ध।	06:20	06:24
54	9	24	शुक्र	तृती दि	08:30AM	अश्विदि	08:54AM	वज्रम्, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:24रात)। ● चतुर्थी का श्राद्ध।	06:21	06:23
52	10	25	शनि	चतु दि	10:36AM	भरण दि	11:33AM	ध्वाक्षः, 6:16 सायं वृष में चन्द्र। ● पंचमी का श्राद्ध।	06:21	06:21
46	11	26	रवि	पंच दि	01:05PM	कृति दि	02:33 PM	धौम्यः। ● षष्ठी का श्राद्ध।	06:22	06:20
41	12	27	सोम	षष्ठी दि	03:43PM	रोहि दि	05:41 PM	प्रवर्धः, साहिब सप्तमी, 10:36 दिन बुध वक्री। ● सप्तमी का श्राद्ध।	06:23	06:19
37	13	28	भौम	सप्त दि	06:17PM	मृग प्र	08:44 PM	क्षयः, 7:14 प्रातः मिथुन में चन्द्र।	06:23	06:17

26	14	29	बुध	अष्ट प्र	08:30PM	आर्द्रा प्र	11:25 PM	गजः, महालक्ष्मी अष्टमी।	● अष्टमी का श्राद्ध।	06:24	06:16
22	15	30	गुरु	नव प्र	10:09PM	पुन प्र	01:33AM	सिद्धः, 7:05 सायं कर्कट में चन्द्र।	● नवमी का श्राद्ध।	06:25	06:15
16	16	अक	शुक्र	दश प्र	11:04PM	तिष्या प्र	02:57AM	उन्मूलम्, 3:00 रात तुला में वक्री बुध।	● दशमी का श्राद्ध।	06:25	06:13
11	17	2	शनि	एका प्र	11:11PM	अश्ले प्र	03:35AM	मानसम्, इन्द्र एकादशी, सन्यासियों का श्राद्ध, 3:35 रात सिंह में चन्द्र, 9:46 प्रातः वृश्चिक में शुक्र।	● एकादशी का श्राद्ध।	06:26	06:12
07	18	3	रवि	द्वाद प्र	10:30PM	मघा प्र	03:26AM	मुद्गरम्।	● द्वादशी का श्राद्ध।	06:27	06:11
29 00	19	4	सोम	त्रयो प्र	09:06PM	पू.फा.प्र	02:35AM	ध्वजः।	● त्रयोदशी का श्राद्ध।	06:28	06:09
28 56	20	5	भौम	चर्तु प्र	07:04PM	उ.फा.प्र	01:10AM	प्रजापत्यः, स्वामी प्राणनाथ भट्ट गरीब (भाईजी) जयन्ती, 8:17 प्रातः कन्या में चन्द्र।	● चतुर्दशी का श्राद्ध।	06:28	06:08
51	21	6	बुध	अमा दि	04:35PM	हस्त प्र	11:19 PM	आनन्दः, सोमयार व विजयेश्वर यात्रा, पित्रमावसी, सर्वपितृ श्राद्ध, अज्ञात मृत्यु वाले तिथि श्राद्ध।		06:29	06:07

श्राद्धः प्रतिपदा व द्विती अपने दिन, तृती से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से अमावस तक अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा व द्विती अपने दिन, तृती व चतुर्थी पहले दिन, पंचम से अमावस तक अपने दिन।

● अमावसी व पूर्णिमा का श्राद्ध 6 अक्टूबर

आवश्यक जानकारी:- जिनकी मृत्यु तिथि पूर्णिमा हो, उनका पितृपक्ष श्राद्ध पूर्णिमा को करना चाहिए, यह शास्त्रीय मत्त है, परन्तु जम्मू काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाण आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्यु तिथि वालों का पितृपक्ष श्राद्ध सर्वपितृ अमावसी को करने की लोकपरम्परा है। यही कारण है कि हमारे पूर्वज भी सदियों से इसी परंपरा को निभाते आये हैं।

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर 2021 की ग्रह स्थिति :- कन्या में सूर्य, भौम, बुध; वृश्चिक में शुक, केतु; मकर में शनि वक्री, गुरु वक्री; वृष में राहु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	असू	अक	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
28 49	22	7	गुरु	प्रति दि	01:47PM	चित्र प्र	09:13 PM	चरः, नवरात्र (शरद) आरम्भ, घटस्थापन, 10:17 दिन तुला में चन्द्र, चन्द्रदर्शना।	06:30	06:06
47	23	8	शुक्र	द्विती दि	10:49AM	स्वात प्र	06:59 PM	मुसुला।	06:30	06:04
41	24	9	शनि	तृती दि	07:49AM	विशा दि	04:47 PM	शूलम्, कर्मकाण्ड शिरोमणि काशीनाथ हण्डू निर्वाण दिवस, त्रयहः (चतु प्र 4:56AM), 11:19 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	06:31	06:03
36	25	10	रवि	पंच प्र	02:15AM	अनु दि	02:44 PM	मृत्युः, यज्ञ दुर्गा मन्दिर नगरोटा जम्मू।	06:32	06:02
32	26	11	सोम	षष्ठी प्र	11:51PM	ज्येष्ठ दि	12:55 PM	काम्यः, कुमार षष्ठी व्रत, 12:55 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, 7:45 प्रातः शनि मार्गी।	06:32	06:01
28	27	12	भौम	सप्त प्र	09:48PM	मूल दि	11:26AM	छत्रम्।	06:33	05:59
20	28	13	बुध	अष्ट प्र	08:08PM	पू.षा. दि	10:19AM	श्रीवत्सः, अष्टमी व्रत, श्री दुर्गाष्टमी, 4:06 दिन मकर में चन्द्र।	06:34	05:58
08	29	14	गुरु	नव प्र	06:53PM	उ.षा. दि	09:35AM	सौम्यः, महानवमी, नवरात्र समाप्त, माता भद्रकाली अस्थापन वडीपोरा हंदवारा कश्मीर यात्रा / फलवाल मंडाल जम्मू।	06:35	05:57

08	30	15	शुक्र	दश प्र	06:02PM	श्रवण दि	09:16AM	धौम्यः, विजया दशमी , दशहरा, भद्रकाली यज्ञ, वडीपोरा हन्दवारा यात्रा, मंगला भगवती यज्ञ वची पुलवामा, 9:16 रात पंचक A	06:35	05:56
03	31	16	शनि	एका दि	05:38PM	धनि दि	09:22AM	प्रवर्धः, पापकुशा काह, मासान्त। A आरम्भ व कुम्भ में चन्द्र।	06:36	05:55
27 56	कत	17	रवि	द्वाद दि	05:39PM	शत दि	09:52AM	क्षयः, 1:12 दिन तुला में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, 4:33 रात मीन में चन्द्र।	06:37	05:53
52	2	18	सोम	त्रयो प्र	06:08PM	पू.भा.दि	10:49AM	गजः, 8:43 रात बुध मार्गी, 10:55 दिन गुरु मार्गी।	06:38	05:52
48	3	19	भौम	चर्तु प्र	07:03PM	उ.भा.दि	12:12 PM	सिद्धः।	06:39	05:51
43	4	20	बुध	पूर्णि प्र	08:26PM	रेव दि	02:02 PM	उन्मूलम्, पूर्णिमा व्रत, लवंग पुनिम , 2:02 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	06:39	05:50

दुर्गाष्टमी

13 अक्टूबर

विजया दशमी

15 अक्टूबर

श्राद्धः प्रतिपदा से चतुर्थी पहले दिन, पंचमी से एकादशी अपने दिन, द्वादशी का पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा का अपने दिन, द्विती से चतुर्थ पहले दिन, पंचम से पूर्णिमा तक अपने दिन।

- प्रस्तुत है मां दुर्गा को प्रिय 3 सरल मंत्र 1. 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै' का जाप अवश्य करें।
2. सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते॥
3. ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥

कार्तिक कृष्ण पक्ष


21 अक्टूबर 2021 की ग्रह स्थिति :- तुला में सूर्य; वृश्चिक में शुक्र, केतु; मकर में शनि, गुरु; वृष में राहु; कन्या में भौम, बुध।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	कत	अक	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
27 38	5	21	गुरु	प्रति प्र	10:16PM	अश्विदि	04:17 PM	मानसम्, 2:01 रात तुला में भौम।	06:40	05:49
33	6	22	शुक्र	द्विती प्र	12:30AM	भरण प्र	06:56 PM	मुद्गरम्, 1:38 रात वृष में चन्द्र।	06:41	05:48
30	7	23	शनि	तृती प्र	03:02AM	कृति प्र	09:53 PM	ध्वजः।	06:42	05:47
26	8	24	रवि	चतु प्र	05:44AM	रोहि प्र	01:01AM	प्रजापत्यः, करवा चौथ, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:05 सायं)।	06:42	05:46
21	9	25	सोम	पंच	Day Night	मृग प्र	04:10AM	आनन्दः, 2:37 दिन मिथुन में चन्द्र।	06:43	05:45
16	10	26	भौम	पंच दि	08:24AM	आर्द्रा	Day Night	चरः।	06:44	05:44
11	11	27	बुध	षष्ठी दि	10:51AM	आर्द्रा दि	07:08AM	गजः, 3:06 रात कर्कट में चन्द्र।	06:45	05:43
06	12	28	गुरु	सप्त दि	12:49PM	पुन दि	09:41AM	सिद्धः।	06:46	05:42

पण्डित कृपाराम दत्त
आनन्दपुर साहिब
प्रयाण दिवस
26 अक्टूबर

विजयेश्वर जन्त्री
के प्रवर्तक
ज्यो.आफताब शर्मा
अन्तर्ध्यान दिवस
24 अक्टूबर

27 02	13	29	शुक्र	अष्ट दि	02:10PM	तिथ्या दि	11:38AM	उन्मूलम्।	<div><h2>दीपावली</h2><p>4 नवम्बर</p></div>	06:47	05:41
26 58	14	30	शनि	नव दि	02:44PM	अश्ले दि	12:51 PM	मानसम्, 12:51 दिन सिंह में चन्द्र, 4.10 दिन धनु में शुक्र।		06:47	05:40
53	15	31	रवि	दश दि	02:27PM	मघा दि	01:16 PM	मुद्गरम्।		06:48	05:39
48	16	नव	सोम	एका दि	01:22PM	पू.फा.दि	12:52 PM	ध्वजः, रमा एकादशी, 6:39 सायं कन्या में चन्द्र।		06:49	05:38
43	17	2	भौम	द्वाद दि	11:31AM	उ.फा.दि	11:44AM	प्रजापत्यः, गोवत्सा पूजा, 9:54 प्रातः तुला में बुध।		06:50	05:37
38	18	3	बुध	त्रयो दि	09:02AM	हस्त दि	09:58AM	आनन्दः, धन्वन्तरी जयन्ती, श्री हनुमान जयन्ती, स्वामी चूनीलाल जी राजदान जयन्ती, त्र्यहः(चतु प्र 6:04AM), 8:53रात तुला में चन्द्र।	06:51	05:36	
33	19	4	गुरु	अमा प्र	02:44AM	चित्र दि	07:42AM	चरः, दीपमाला, महा लक्ष्मी पूजन, स्वा. ताराचन्द जी जयन्ती त्रिक त्रिलोकपुरा, गोलगुजराल, जम्मू, (स्वात प्र 5:07AM)।	06:52	05:35	

श्राद्धः प्रतिपदा से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से चतुर्दशी तक पहले दिन, अमावस का अपने दिन।
 मध्याह्नः प्रति से पंच अपने दिन, षष्ठी पहले दिन, सप्त से एका अपने दिन, द्वादशी से चतुर्दशी पहले दिन, अमावस अपने दिन।


कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्। सदा बसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥
 मंत्र का अर्थ:- जो कर्पूर जैसे गौर वर्ण वाले हैं, करुणा के अवतार हैं, संसार के सार हैं और भुजगों का हार धारण करते हैं, वे भगवान शिव माता भवानी सहित मेरे हृदय में सदैव निवास करें और उन्हें मेरा नमन है।

कार्तिक शुक्लपक्ष

5 नवम्बर 2021 की ग्रह स्थिति :- तुला में सूर्य, भौम, बुध; वृश्चिक में केतु; धनु में शुक्र; मकर में शनि, गुरु; वृष में राहु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	कत	नव	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद / हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
26 30	20	5	शुक्र	प्रति प्र	11:15PM	विशा प्र	02:22AM	मातंगः, अन्नकूट, गोवर्द्धन पूजा, विश्व कर्मा पूजा, 9:04 रात वृश्चिक में चन्द्र।	06:53	05:34
28	21	6	शनि	द्विती प्र	07:44PM	अनु प्र	11:38 PM	अमृतम्, भातू दूज/भाई दूज, चन्द्रदर्शन।	06:54	05:34
23	22	7	रवि	तृती दि	04:22PM	ज्येष्ठ प्र	09:04 PM	काण्डः, 9:04 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	06:54	05:33
18	23	8	सोम	चतु दि	01:17PM	मूल प्र	06:49 PM	अलापकम्।	06:55	05:32
13	24	9	भौम	पंच दि	10:36AM	पू.षा. दि	04:59 PM	मैत्रम्, कुमार षष्ठी व्रत, 10:37 रात मकर में चन्द्र।	06:56	05:31
11	25	10	बुध	षष्ठी दि	08:25AM	उ.षा. दि	03:41 PM	वज्रम्, स्वामी श्री गोकुल नाथ जी जयन्ती, अम्बिका विहार, गोल गुजराल जम्मू, त्रयहः(सप्त प्र 6:50AM)।	06:57	05:31
06	26	11	गुरु	अष्ट प्र	05:52AM	श्रवण दि	02:59 PM	ध्वजः, गोपाल अष्टमी, अष्टमी व्रत, 2:51 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	06:58	05:30
26 01	27	12	शुक्र	नव प्र	05:31AM	धनि दि	02:53 PM	प्रजापत्यः।	06:59	05:29

25 58	28	13	शनि	दश प्र	05:48AM	शत दि	03:25 PM	आनन्दः।	 दीपदान मुहूर्त 19 नवम्बर	07.00	05.29
55	29	14	रवि	एका प्र	06:40AM	पू.भा.दि	04:31 PM	चरः, हरिबोधिनी ११, शिव स्वाप, 10:11दिन मीन में चन्द्र।		07.01	05.28
51	30	15	सोम	द्वाद	Day N ight	उ.भा. प्र	06:09 PM	मुसुलं, मासान्त।		07.02	05.28
48	मगर	16	भौम	द्वाद दि	08:02AM	रेव प्र	08:14 PM	शूलम्, 8:14 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त, 1:02 दिन वृश्चिक में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, हेमन्त ऋतु।		07.03	05.27
43	2	17	बुध	त्रयो दि	09:50AM	अश्वि प्र	10:43 PM	मृत्युः।		07.03	05.27
41	3	18	गुरु	चर्तु दि	12:01PM	भरण प्र	01:29AM	काम्यः।		07.04	05.26
36	4	19	शुक्र	पूर्णि दि	02:27PM	कृति प्र	04:29AM	छत्रम्, श्री गुरु नानक जयन्ती, कार्तिक पूर्णिमा व्रत, दीपदान मुहूर्त, हवन स्वामी सूरदास आश्रम सारी जम्मू, 8:13 प्रातः वृष में चन्द्र।		07.05	05.26

श्राद्धः प्रति से तृती अपने दिन, चतुर्थी से सप्तमी पहले दिन, अष्टमी से द्वादशी अपने दिन, त्रयोदशी, से पूर्णिमा पहले दिन।
 मध्याह्नः प्रति से चतुर्थी अपने दिन, पंच से सप्त पहले दिन, अष्ट से द्वाद अपने दिन, त्रयो पहले दिन, चतुर्दशी, पूर्णिमा अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- दीपदान (तीलद्वयुन) षडमोस या मासवार पर देने का प्रचलन जो कुछ समय से आरम्भ हुआ है, गलत है। काश्मीर के किसी भी पौराणिक ग्रन्थ में इस का कही भी वर्णन नहीं है जो इस की आज्ञा देता हो कि षडमोस या मासवार पर दीपदान देना चाहिये, केवल कार्तिक पूर्णिमा व तील अष्टमी दीपदान के स्वयं सिद्ध मुहूर्त हैं। इन दिनों के विना आप कृपया दीपदान देने के लिए दीपदान मुहूर्त से ही शुद्ध तिथि का ही चयन करें।

मार्ग कृष्णपक्ष

20 नवम्बर 2021 की ग्रह स्थिति :- वृश्चिक में सूर्य, केतु; धनु में शुक्र; मकर में शनि, गुरु; वृष में राहु; तुला में भौम, बुध।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	मार्ग	नव	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
25 33	5	20	शनि	प्रति दि	05:05PM	रोहि	Day N ight	श्रीवत्सः, 4:50 रात वृश्चिक में बुध, 11:30 रात कुम्भ में गुरु।	07:06	05:25
31	6	21	रवि	द्विती प्र	07:48PM	रोहि दि	07:36AM	प्रजापत्यः, 9:10 रात मिथुन में चन्द्र।	07:07	05:25
26	7	22	सोम	तृती प्र	10:27PM	मृग दि	10:43AM	आनन्दः।	07:08	05:24
23	8	23	भौम	चतु प्र	12:56AM	आर्द्रा दि	01:44 PM	चरः, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:24 सायं)।	07:09	05:24
22	9	24	बुध	पंच प्र	03:04AM	पुन दि	04:29 PM	मुसुलं, श्री काशीबब हुगाम यज्ञ, 9:50 दिन कर्कट में चन्द्र।	07:10	05:24
18	10	25	गुरु	षष्ठी प्र	04:42AM	तिष्या प्र	06:49 PM	शूलम्।	07:11	05:23
16	11	26	शुक्र	सप्त प्र	05:43AM	अश्ले प्र	08:36 PM	मृत्युः, 8:36 रात सिंह में चन्द्र।	07:12	05:23
13	12	27	शनि	अष्ट प्र	06:00AM	मघा प्र	09:43 PM	काम्यः, महाकाल भैरव अष्टमी।	07:12	05:23
11	13	28	रवि	नव प्र	05:31AM	पू.फा.प्र	10:05 PM	छत्रम्, 4:04 रात कन्या में चन्द्र।	07:13	05:23

05	14	29	सोम	दश प्र	04:14AM	उ.फा.प्र	09:42 PM	श्रीवत्सः।	07:14	05:23
03	15	30	भौम	एका प्र	02:14AM	हस्त प्र	08:34 PM	सौम्यः, उत्पन्ना एकादशी।	07:15	05:22
02	16	दिस	बुध	द्वाद प्र	11:36PM	चित्र प्र	06:47 PM	कालदण्डः, 7:45 प्रातः तुला में चन्द्र।	07:16	05:22
01	17	2	गुरु	त्रयो प्र	08:27PM	स्वात दि	04:27 PM	स्थिरः, स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ गोतमनाग।	07:17	05:22
24 58	18	3	शुक्र	चर्तु दि	04:56PM	विशा दि	01:44 PM	मातंगः, मेला पुरमण्डल, देविका स्नान(उदमपुर), 8:27 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र।	07:18	05:22
56	19	4	शनि	अमा दि	01:13PM	अनु दि	10:47AM	अमृतम्, 5:58 रात वृश्चिक में भौम।	07:18	05:22

श्राद्धः प्रतिपदा का पहले दिन, द्विती से चतुर्दशी तक अपने दिन, अमावस का पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से अमावस तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- रुद्राक्ष धारण करने का महत्व :- धार्मिक महत्व :- रुद्राक्ष भगवान शिव को बहुत प्रिय होते हैं अतः इन्हें धारण करने वाले मनुष्य पर हमेशा भगवान शिव की विशेष कृपा बनी रहती है। रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार की नकारात्मक उर्जा दूर रहती है। भय आदि से मुक्ति मिलती है। रुद्राक्ष के मुख के आधार पर इसके धार्मिक महत्व को और स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।
वैज्ञानिक महत्व :- रुद्राक्ष को शरीर पर धारण करने के धार्मिक महत्व के साथ-साथ इसके वैज्ञानिक कारण भी हैं। रुद्राक्ष के रोम छिद्रों से एक अलग प्रकार का स्पंदन होता है जो मानव हृदय पर सकारात्मक प्रभाव दिखाता है। रुद्राक्ष के धारण करने से हृदय रक्त चाप सामान्य रहता है। इसके अतिरिक्त मानव मस्तिष्क पर भी रुद्राक्ष से निकलने वाली विशेष तरंगें सकारात्मक प्रभाव दिखाती हैं। रुद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति तनाव, चिंता और अवसाद आदि से मुक्त रहता है।

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर 2021 की ग्रह स्थिति:- वृश्चिक में सूर्य, भौम, बुध, केतु; धनु में शुक्र; मकर में शनि; कुम्भ में गुरु; वृष में राहु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021



दिन मान	मार्ग	दिस	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
24 53	20	5	रवि	प्रति दि	09:28AM	ज्येष्ठ दि	07:47AM	काण्डः, श्री शारिका जी जयन्ती, त्रयहः (द्विती प्र 5:51AM), (मूल प्र 4:54AM), 7:47 प्रातः धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, चन्द्रदर्शन।	07:19	05:22
51	21	6	सोम	तृती प्र	02:32AM	पू.षा. प्र	02:19AM	उन्मूलम्।	07:20	05:22
50	22	7	भौम	चतु प्र	11:41PM	उ.षा. प्र	12:11AM	मानसम्, 7:44 प्रातः मकर में चन्द्र।	07:21	05:22
48	23	8	बुध	पंच प्र	09:26PM	श्रवण प्र	10:40 PM	छत्रम्, गुरु तेगबहादुर जी शहीदी दिवस, 1:51 दिन मकर में शुक्र।	07:22	05:23
47	24	9	गुरु	षष्ठी प्र	07:54PM	धनि प्र	09:51 PM	श्रीवत्सः, कुमार षष्ठी, 10:09 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	07:22	05:23
46	25	10	शुक्र	सप्त प्र	07:10PM	शत प्र	09:48 PM	सौम्यः, 6:05 प्रातः धनु में बुध।	07:23	05:23
43	26	11	शनि	अष्ट प्र	07:13PM	पू.भा. प्र	10:32 PM	कालदण्डः, 4:16 दिन मीन में चन्द्र।	07:24	05:23
43	27	12	रवि	नव प्र	08:03PM	उ.भा. प्र	11:59 PM	स्थिरः।	07:24	05:23
41	28	13	सोम	दश प्र	09:33PM	रेव प्र	02:05AM	मातंगः, 2:05 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	07:25	05:24

42	29	14	भौम	एका प्र	11:36PM	अश्वि प्र	04:40AM	अमृतम्, मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती (कुमार जी आश्रम मुठ्ठी), मासान्त।	07:26	05:24
41	पौष	15	बुध	द्वाद प्र	02:02AM	भरण	Day Night	काण्डः, 3:44 रात धनु में सूर्य।	07:26	05:24
40	2	16	गुरु	त्रयो प्र	04:41AM	भरण दि	07:35AM	काम्यः, संक्रान्ति व्रत, 2:20 दिन वृष में चन्द्र।	07:27	05:25
40	3	17	शुक्र	चर्तु प्र	07:25AM	कृति दि	10:40AM	छत्रम्, स्वामी मधुसूदन जी पण्डित (सोपोर) यज्ञ।	07:28	05:25
40	4	18	शनि	पूर्ण	Day Night	रोहि दि	01:48 PM	श्रीवत्सः, श्री दत्तेत्रय जयन्ती, 3:21 रात मिथुन में चन्द्र।	07:28	05:25
36	5	19	रवि	पूर्ण दि	10:05AM	मृग दि	04:52 PM	सौम्यः, पूर्णिमा व्रत, श्री अन्नपूर्ण जी जयन्ती, 4:04 दिन शुक्र वक्री।	07:29	05:26

श्राद्धः प्रतिपदा व द्वितीया का पहले दिन, तृतीया से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा व द्वितीया का पहले दिन, तृतीया से पूर्णिमा तक अपने दिन।

आवश्यक संदेश : मार्ग शुक्लपक्ष पंचमी (8 दिसम्बर 2021) काश्मीरी पण्डितों के धर्मरक्षक अमर बलिदानी श्री गुरुतेगबहादुर महाराज का शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन गुरुद्वारा शीशगंज, चान्दनी चौक दिल्ली में दीवान आयोजित होता है। दिल्ली वासी काश्मीरी पण्डित इस दिन इस महान तीर्थस्थल पर उनके उस महान बलिदान को याद व अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। हम शेष काश्मीरी पण्डित समाज को भी इस दिन अपने निकटतम गुरुद्वारों में आयोजित दीवानों में सम्मिलित होने की प्रार्थना करते हैं।

तिलक जन्मू (जनेउ) राखा प्रभु ताका, कीनौ बड़ो कलू में साका। धर्म हेत साका जिन किया, सीस दिया पर सिरर न दिया।।
तेग बहादुर के चलत, भयो जगत को सोक,
है है है सब जग भयो, जै जै सुर लोक।।

पौष कृष्ण पक्ष

20 दिसम्बर 2021 की ग्रह स्थिति :- धनु में सूर्य, बुध; मकर में शुक्र वक्री, शनि; कुम्भी में गुरु; वृष में राहु; वृश्चिक में भौम, केतु।

सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2021 / 2022



दिन मान	पौष	दिस	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन / उत्तरायण।	सू उ	सू अ
24 38	6	20	सोम	प्रति दि	12:37PM	आर्द्रा प्र	07:46 PM	कालदण्डः, मुंजहर तहर, मातृका पूजा।	07:29	05:26
35	7	21	भौम	द्विती दि	02:54PM	पुन प्र	10:25 PM	स्थिरः, डॉ. मनमोहन ज्योतिषी अन्तर्ध्यान दिवस, 3:47 दिन कर्कट में चन्द्र, सायन उत्तरायण आरम्भ।	07:30	05:27
38	8	22	बुध	तृती दि	04:53PM	तिष्या प्र	12:45AM	मातंगः, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:12रात),	07:30	05:27
38	9	23	गुरु	चतु प्र	06:28PM	अश्ले प्र	02:41AM	अमृतम्, 2:41 रात सिंह में चन्द्र।	07:31	05:28
40	10	24	शुक्र	पंच प्र	07:35PM	मघा प्र	04:09AM	काण्डः।	07:31	05:28
40	11	25	शनि	षष्ठी प्र	08:10PM	पू.फा.प्र	05:05AM	अलापकम्।	07:32	05:29
40	12	26	रवि	सप्त प्र	08:09PM	उ.फा.प्र	05:25AM	मैत्रम्, श्री शारदा देवी जयन्ती, 11:14 दिन कन्या में चन्द्र।	07:32	05:29
41	13	27	सोम	अष्ट प्र	07:29PM	हस्त प्र	05:07AM	वज्रम्, भद्रकाली / महाकाली जयन्ती, स्वर्गी श्री प्रेम नाथ भट्ट बलिदान दिवस, चेतना दिवस, भंडारा माता भद्रकाली A	07:32	05:30

पण्डित कृपाराम दत्त
बलिदान दिवस
21 दिसम्बर

41	14	28	भौम	नव प्र	06:10PM	चित्र प्र	04:11AM	ध्वाक्षः, स्वा. रघुनाथ जी कुकिलू यज्ञ, 4:44 दिन तुला में चन्द्र।	07:33	05:31
41	15	29	बुध	दश दि	04:12PM	स्वात प्र	02:38AM	धौम्यः, श्री आनन्देश्वर भैरव जयन्ती, स्वामी नन्द बब साहिब जयन्ती, लालेदाबाग, 11:30 दिन मकर में बुध।	07:33	05:31
45	16	30	गुरु	एका दि	01:41PM	विशा प्र	12:34AM	प्रवर्धः, सफलता एकादशी, 7:08 सायं वृश्चिक में चन्द्र, 7:59 प्रातः मकर में वक्री शुक्र।	07:33	05:32
46	17	31	शुक्र	द्वाद दि	10:40AM	अनु प्र	10:04 PM	क्षयः, महामहेश्वराचार्य श्री राम जी जयन्ती, त्रक आश्रम, गोलगुजराल, त्र्यहः (त्रयो प्र 7:17AM)।	07:34	05:33
46	18	जन	शनि	चर्तु प्र	03:42AM	ज्येष्ठ प्र	07:17 M	गजः, स्वामी चूनीलाल राजदान अन्तर्ध्यान दिवस, 7:17 सायं धनु में चन्द्र मूल शर।	07:34	05:33
47	19	2	रवि	अमा प्र	12:03AM	मूल दि	04:23 PM	सिद्धः, क्षयचरिमावस।	07:34	05:34

चेतना दिवस
27 दिसम्बर

A अस्थापन फलवाल मंडाल जम्म् ।

श्राद्धः प्रतिपदा से तृती पहले दिन, चतुर्थी से दशमी अपने दिन, एकादशी व त्रयोदशी पहले दिन, चतुर्दशी व अमावसया अपने दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से एकादशी तक अपने दिन, द्वादश व त्रयोदश का पहले दिन ए चतुर्दश व अमावस का अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- मकान बनवाने के बाद हम हवन, गृह प्रवेश पूजा पाठ आदि क्यों करवाते हैं?
गृह प्रवेश के समय यज्ञ, रामायण पाठ या गृह प्रवेश पूजा कराने से अनावश्यक गृह दोष का निवारण हो जाता है और घर में लक्ष्मी का आगमन होता है। समस्त कुप्रभावों को नष्ट करने के लिए ही हम गृह प्रवेश पूजा कराते हैं

पौष शुक्ल पक्ष

3 जनवरी 2022 की ग्रह स्थिति :- धनु में सूर्य, शुक्र वक्री; मकर में शनि, बुध; कुम्भ में गुरु; वृष में राहु; वृश्चिक में भौम, केतु।

सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाकः 1943, ईस्वी 2022



दिन मान	पौष	जन	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त / शिशिर ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
24 51	20	3	सोम	प्रति प्र	08:32PM	पू.षा. दि	01:33 PM	उन्मूलम्, श्री मिरजाकाक जयन्ती, 6:52 सायं मकर में चन्द्र।	07:34	05:35
51	21	4	भौम	द्विती दि	05:19PM	उ.षा. दि	10:57AM	मानसम्, चन्द्रदर्शन।	07:34	05:36
51	22	5	बुध	तृती दि	02:35PM	श्रवण दि	08:46AM	छत्रम्, (धनि प्र 7:11AM), 7:53 सायं कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	07:35	05:37
52	23	6	गुरु	चतु दि	12:30PM	शत प्र	06:20AM	वज्रम्, 3:36 रात शुक्र पश्चिम में अस्त।	07:35	05:37
55	24	7	शुक्र	पंच दि	11:11AM	पू.भा. प्र	06:19AM	ध्वाक्षः, कुमार षष्ठी व्रत, 12:15 रात मीन में चन्द्र।	07:35	05:38
57	25	8	शनि	षष्ठी दि	10:43AM	उ.भा. प्र	07:10AM	धौम्यः, स्वामी श्रीधर-जू निर्वाण दिवस।	07:35	05:39
57	26	9	रवि	सप्त दि	11:09AM	रेव	Day Night	प्रवर्धः।	07:35	05:40
25 00	27	10	सोम	अष्ट दि	12:25PM	रेव दि	08:49AM	मातंगः, अष्टमी व्रत, 8:49 प्रातः मेष में चन्द्र व पंचक समाप्ता।	07:35	05:41

शुक्र अस्त
5 जनवरी

शुक्र उदय
11 जनवरी

04	28	11	भौम	नव दि	02:22PM	अश्विदि	11:09AM	अमृतम्, 1:57 दिन शुक्र पूर्व में उदय।	07:35	05:42
07	29	12	बुध	दश दि	04:49PM	भरण दि	02:00 PM	काण्डः, श्री पृथ्वी नाथ भट्ट नूरपुरा ताल जयन्ती, 8:45 रात वृष में चन्द्र।	07:35	05:42
10	30	13	गुरु	एका प्र	07:33PM	कृति दि	05:07 PM	अलापकम्, पुत्रदा एकादशी व्रत, मासान्त।	07:34	05:43
11	माघ	14	शुक्र	द्वाद प्र	10:19PM	रोहि प्र	08:17 PM	मैत्रम्, 2:29 दिन मकर में सूर्य, शिशिर संक्रान्ति व्रत, शिशिर ऋतु, 5:07 सायं बुध वक्री।	07:34	05:44
15	2	15	शनि	त्रयो प्र	12:57AM	मृग प्र	11:21 PM	वज्रम्, 9:51 प्रातः मिथुन में चन्द्र।	07:34	05:45
18	3	16	रवि	चर्तु प्र	03:19AM	आर्द्रा प्र	02:09AM	ध्वाक्षः, श्रीमती मथुरादेवी यज्ञ, 4:30 दिन धनु में भौम।	07:34	05:46
21	4	17	सोम	पूर्णि प्र	05:18AM	पुन प्र	04:37AM	धौम्यः, पूर्णिमा व्रत, 10:02 रात कर्कट में चन्द्र।	07:34	05:47

मकर संक्रान्ति
14 जनवरी

श्राद्धः प्रतिपदा व द्वितीया अपने दिन, तृतीया से दशमी तक पहले दिन, एकादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- सौरमंडल के नवग्रहों में शुक्र का महत्व अधिक है। आकाश में सबसे तेज चमकदार तारा शुक्र ही है। आकाश में शुक्र ग्रह को आसानी से देखा जा सकता है। इसे संध्या और भोर का तारा भी कहते हैं, क्योंकि इस ग्रह का उदय आकाश में या तो सूर्योदय के पूर्व या संध्या को सूर्यास्त के पश्चात होता है। शुक्र के अस्त दिनों में भी शुभ कार्य वर्जित माने गए हैं। इसका कारण यह कि उक्त वक्त पृथ्वी का पर्यावरण शुक्र प्रभा से दूषित माना गया है। ज्योतिष और वैज्ञानिकों का मानना है कि शुक्र की किरणों का हमारे शरीर और जीवन पर अकाट्य प्रभाव पड़ता है।

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी 2022 की ग्रह स्थिति :- मकर में सूर्य, बुध, शनि; कुम्भ में गुरु; वृष में राहु; वृश्चिक में केतु; धनु में भौम, वक्री शुक्र।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2022



दिन मान	माघ	जन	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशार ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
25 25	5	18	भौम	प्रति प्र	06:54AM	तिष्या प्र	06:42AM	प्रवर्धः।	काश्मीरी पण्डित निष्कासन दिवस 19 जनवरी	07:33 05:48
25	6	19	बुध	द्विती	Day N ight	अश्ले	Day N ight	क्षयः, निष्कासन दिवस।		07:33 05:49
28	7	20	गुरु	द्विती दि	08:05AM	अश्ले दि	08:24AM	अमृतम्, 8:24 प्रातः सिंह में चन्द्र।		07:33 05:50
32	8	21	शुक्र	तृती दि	08:52AM	मघा दि	09:43AM	काण्डः, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9:05रात)।	साहिब सप्तमी 24 जनवरी	07:32 05:51
34	9	22	शनि	चतु दि	09:15AM	पू.फा.दि	10:38AM	अलापकम्, 4:48 दिन कन्या में चन्द्र।		07:32 05:52
37	10	23	रवि	पंच दि	09:12AM	उ.फा.दि	11:09AM	मैत्रम्।		07:32 05:53
42	11	24	सोम	षष्ठी दि	08:44AM	हस्त दि	11:15AM	वज्रम्, साहिब सप्तमी, 11:08 रात तुला में चन्द्र।		07:31 05:53
45	12	25	भौम	सप्त दि	07:49AM	चित्र दि	10:54AM	ध्वाक्षः, त्रयहः(अष्ट प्र 6:26AM),।		07:31 05:54
50	13	26	बुध	नव प्र	04:34AM	स्वात दि	10:06AM	धौम्यः, 3:12 रात वृश्चिक में चन्द्र।		07:30 05:55

54	14	27	गुरु	दश प्र	02:17AM	विशा दि	08:51AM	प्रवर्धः, (अनु प्र 7:10AM)।	07:30	05:56
56	15	28	शुक्र	एका प्र	11:36PM	ज्येष्ठ प्र	05:07AM	चरः, षष्ठितिला एकादशी, 5:07 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	07:29	05:57
26 02	16	29	शनि	द्वाद प्र	08:38PM	मूल प्र	02:49AM	मुसुलं, 2:17 दिन शुक्र मार्गी।	07:28	05:58
06	17	30	रवि	त्रयो दि	05:29PM	पू.षा. प्र	12:22AM	शूलम्, शिवचतुर्दशी, 5:46 रात मकर में चन्द्र।	07:28	05:59
09	18	31	सोम	चर्तु दि	02:18PM	उ.षा. प्र	09:57 PM	मृत्युः, स्वामी राम जी शैवाचार्य निर्वाण दिवस।	07:27	06:00
12	19	फर	भौम	अमा दि	11:16AM	श्रवण प्र	07:44 PM	अलापकम्।	07:27	06:01

शिवचतुर्दशी व्रत

29, 30, 31 जनवरी

श्राद्धः प्रतिपदा व द्विती का अपने दिन, तृती से अष्टमी पहले दिन, नवम से त्रयोदशी अपने दिन, चतुर्दशी से अमावस पहले दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से द्विती तक अपने दिन, तृती से अष्टमी तक पहले दिन, नवम से चतुर्दश अपने दिन, अमावस पहले दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- यज्ञोपवीत' शब्द का क्या अर्थ है? यज्ञ + उपवीत = यज्ञोपवीत,

अर्थात् जिसे यज्ञ करने का पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त हो जाये। यज्ञोपवीत धारण किये बिना किसी को गायत्री जप अथवा वेद पाठ का अधिकार प्राप्त नहीं होता। इसके पहनने से व्यक्ति ब्रह्म (जिसे ईश्वर, परमरत्मा आदि अनेकों नाम से सम्बोधित करते हैं) के प्रति समर्पित हो जाता है अर्थात् ब्रह्म सूत्र धारण करने के उपरान्त उस व्यक्ति को विशेष नियम आचारणों का पालन करना अनिवार्य हो जाता है। जनेऊ दो प्रकार के होते हैं- तीन धागे वाले अथवा छः धागे वाले। ब्रह्मचारी के लिए तीन धागे वाले जनेऊ का विधान है, विवाहित पुरुष को छः धागे वाला जनेऊ धारण करते हैं। धार्मिक व्याख्या के अतिरिक्त यज्ञोपवीत के तीन सूत्रों में प्रथम सूत्र संयमित जीवन, दूसरा सूत्र माता के प्रति कर्तव्य की भावना और तीसरा सूत्र पिता के प्रति कर्तव्य की भावना का बोधक है। छः सूत्रों वाले यज्ञोपवीत में चौथे, पाचवें व छठे सूत्र का पत्नी, सासू व श्वसुर के प्रति कर्तव्य पालन का स्मरण करता है।

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी 2022 की ग्रह स्थिति:- मकर में सूर्य, बुध वक्री, शनि; कुम्भ में गुरु; वृष में राहु; वृश्चिक में केतु; धनु में भौम व शुक्र।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2022



दिन मान	माघ	फर	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशार ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
26 16	20	2	बुध	प्रति दि	08:31AM	धनि दि	05:53 PM	मैत्रम्, श्री कशकाक मनिगाम जयन्ती, 6:45 प्रातः कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, चन्द्रदर्शन।	07:26	06:02
20	21	3	गुरु	तृती प्र	04:39AM	शत दि	04:34 PM	वज्रम्, गोरी तृतीया।	07:25	06:03
23	22	4	शुक्र	चतु प्र	03:47AM	पू.भा.दि	03:57 PM	ध्वाक्षः, त्रपुरा चतुर्थी व्रत, 10:02 दिन मीन में चन्द्र, 9:40 दिन बुध मार्गी।	07:24	06:04
26	23	5	शनि	पंच प्र	03:47AM	उ.भा.दि	04:08 PM	धौम्यः, वसन्त पंचमी।	07:24	06:05
30	24	6	रवि	षष्ठी प्र	04:38AM	रेव दि	05:10 PM	प्रवर्धः, कुमार षष्ठी व्रत, 5:10 सायं मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	07:23	06:06
35	25	7	सोम	सप्त प्र	06:16AM	अश्वि प्र	06:58 PM	क्षयः, सूर्य सप्तमी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा।	07:22	06:07
39	26	8	भौम	अष्ट	Day Night	भरण प्र	09:27 PM	गजः, भीष्म अष्टमी, 4:09 रात वृष में चन्द्र।	07:21	06:08
45	27	9	बुध	अष्ट दि	08:31AM	कृति प्र	12:23AM	सिद्धः, अष्टमी व्रत, श्री निरंजन नाथ कौल, (बडगाम) जयन्ती।	07:20	06:08
49	28	10	गुरु	नव दि	11:08AM	रोहि प्र	03:32AM	उन्मूलम्।	07:20	06:09

55	29	11	शुक्र	दश दि	01:52PM	मृग प्र	06:37AM	मानसम्, 5:06 सायं मिथुन में चन्द्र, मासान्त।	07:19	06:10
27 00	फाग	12	शनि	एका दि	04:28PM	आर्द्रा	Day Night	मुद्गरम्, भीमसेन काह, जया एकादशी, 3:27 रात कुम्भ में सूर्य।	07:18	06:11
06	2	13	रवि	द्वाद प्र	06:42PM	आर्द्रा दि	09:27AM	ध्वाक्षः, भीष्म द्वादशी, स्वा. वामन जी यज्ञ, संक्रान्ति व्रत, 5:19 रात कर्कट में चन्द्र।	07:17	06:12
11	3	14	सोम	त्रयो प्र	08:29PM	पुन दि	11:52AM	धौम्यः।	07:16	06:13
16	4	15	भौम	चर्तु प्र	09:43PM	तिष्या दि	01:48 PM	प्रवर्धः, यक्षिणी चुदाह।	07:15	06:14
21	5	16	बुध	पूर्णि प्र	10:26PM	अश्ले दि	03:14 PM	क्षयः, पूर्णिमा व्रत, काव पुनिम, गुरु रविदास जयन्ती, स्वामी कुमार जी आश्रम यज्ञ मुद्ठी, 3:14 दिन सिंह में चन्द्र।	07:14	06:15

श्राद्धः प्रतिपदा व द्विती का पहले दिन, तृती से अष्टमी अपने दिन, नवम से एकादशी पहले दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा व द्विती पहले दिन, तृती से अष्टमी तक अपने दिन, नवम का पहले दिन, दशम से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- भीष्म पितामह के लिये तर्पण विधि (तिथि:- माघ शुक्लपक्ष अष्टमी)
हाथ में काला तिल लेकर बाया यज्ञोपवीत रखकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके इस निम्न लिखित मन्त्र से तर्पण करें...

वैयाघ्रपद गोत्राय सांकृत्य प्रवराय च, गंगा पुत्राय भीष्माय सर्वदा ब्रह्मचारिणे ।

भीष्मःशान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः, आभिरद्भिर्भरवाप्नोतु पुत्र पौत्रोचितां क्रियाम्॥

अब दाया यज्ञोपवीत रखकर भीष्म पितामह को अर्घ्य दें।


नोट:- 8 फरवरी को अधिक तिथि के कारण भीष्म अष्टमी (पितृ क्रिया) 8 फरवरी व अष्टमी व्रत 9 फरवरी को रखें।



फालगुन कृष्ण पक्ष

17 फरवरी 2022 की ग्रह स्थिति :- कुम्भ में सूर्य, गुरु; वृष में राहु; वृश्चिक में केतु; धनु में भौम, शुक्र; मकर में बुध, शनि।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाकः 1943, ईस्वी 2022

दिन मान	फा	फर	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशार ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
27 23	6	17	गुरु	प्रति प्र	10:41PM	मघा दि	04:10 PM	गजः, हुर्र उकदोह ।	07:13	06:16
28	7	18	शुक्र	द्विती प्र	10:30PM	पू.फा.दि	04:42 PM	सिद्धः, 10:46 रात कन्या में चन्द्र।	07:12	06:16
33	8	19	शनि	तृती प्र	09:57PM	उ.फा.दि	04:51 PM	उन्मूलम्।	07:11	06:17
38	9	20	रवि	चतु प्र	09:06PM	हस्त दि	04:42 PM	मानसम्, संकट निवारण चतुर्थी A ,	07:10	06:18
43	10	21	सोम	पंच प्र	07:58PM	चित्र दि	04:16 PM	मुद्गरम्।	07:09	06:19
48	11	22	भौम	षष्ठी प्र	06:35PM	स्वात दि	03:36 PM	ध्वजः, 3:47 दिन गुरु पश्चिम में अस्ता।	07:08	06:20
53	12	23	बुध	सप्त दि	04:57PM	विशा दि	02:40 PM	प्रजापत्यः, कृष्णानन्द सरस्वती यज्ञ, 8:56 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र।	07:07	06:21
57	13	24	गुरु	अष्ट दि	03:04PM	अनु दि	01:31 PM	आनन्दः, हुर्र अठम , चक्रीश्वर अमृतकुण्ड पुखरीबल यात्रा।	07:05	06:22


वटुक नाथ पूजा
(हेरथ)
28 फरवरी

28 03	14	25	शुक्र	नव	दि	12:58PM	ज्येष्ठ दि	12:07 PM	चरः, श्री दामोधर भट्ट (फतेपुर) जयन्ती, 12:07 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	07:04	06:22
08	15	26	शनि	दश	दि	10:40AM	मूल दि	10:32AM	मुसुल, दयार दहम्, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, 3:49 दिन मकर में भौम।	07:03	06:23
13	16	27	रवि	एका	दि	08:13AM	पू.षा. दि	08:48AM	शूलम्, विजया एकादशी, वागुर्ग बाह, त्र्यहः, (द्वाद प्र 5:43AM) 2:22 दिन मकर में चन्द्र, 10:19 दिन मकर में शुक्र।	07:02	06:24
22	17	28	सोम	त्रयो	प्र	03:16AM	उ.षा. दि	07:02AM	मृत्युः, हेरैय, हर रात्रि (वटुक पूजन), (श्रवण प्र 5:19AM)।	07:01	06:25
27	18	मार्च	भौम	चर्तु	प्र	01:01AM	धनि प्र	03:48AM	उन्मूलम्, शिव चतुर्दशी, महाशिवरात्रि (समस्त भारत), 4:31 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	07:00	06:26
33	19	2	बुध	अमा	प्र	11:05PM	शत प्र	02:37AM	मानसम्, अमावसी व्रत।	06:58	06:26

A (चन्द्रोदय 10:02रात), 4:31 रात तुला में चन्द्र। **नोट:-** हेरैय (वटुक पूजन) त्रयोदशी के होने से वटुक परिमोजुन 3 मार्च 2022 को ही करें।

श्राद्धः प्रतिपदा से सप्तम्यां तक अपने दिन, अष्टमी से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयोदशी से अमावस तक अपने दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से नवमी तक अपने दिन, दशमी से द्वादशी पहले दिन, त्रयोदशी से अमावस तक अपने दिन।

गण्डमूल नक्षत्र के विषय में जानकारी :- रेव, अश्वि, अश्ले, मघा, ज्येष्ठ, मूल-ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं-इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

फालगुन शुक्ल पक्ष

3 मार्च 2022 की ग्रह स्थिति :- कुम्भ में सूर्य, गुरु; वृष में राहु; वृश्चिक में केतु; मकर में भौम, बुध, शुक्र, शनि।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2022



दिन मान	फागु	मार्च	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशार / वसंत ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
28 38	20	3	गुरु	प्रति प्र	09:37PM	पू.भा. प्र	01:56AM	मुद्गरम्, वटुक परिमोजुन (अपनी रीति के अनुसार), 8:03 रात मीन में चन्द्र।	06:57	06:27
43	21	4	शुक्र	द्विती प्र	08:45PM	उ.भा. प्र	01:51AM	ध्वजः, चन्द्रदर्शन।	06:56	06:28
46	22	5	शनि	तृती प्र	08:36PM	रेव प्र	02:29AM	प्रजापत्यः, 2:29 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	06:55	06:29
52	23	6	रवि	चतु प्र	09:12PM	अश्वि प्र	03:51AM	आनन्दः, 11:22 दिन कुम्भ में बुध।	06:54	06:30
58	24	7	सोम	पंच प्र	10:33PM	भरण प्र	05:54AM	चरः।	06:52	06:30
29 03	25	8	भौम	षष्ठी प्र	12:31AM	कृति	Day Night	मुसुलं, कुमार षष्ठी व्रत, 12:30 दिन वृष में चन्द्र।	06:51	06:31
06	26	9	बुध	सप्त प्र	02:57AM	कृति दि	08:31AM	सिद्धः।	06:50	06:32
12	27	10	गुरु	अष्ट प्र	05:35AM	रोहि दि	11:30AM	उन्मूलम्, तील अष्टमी, स्वा. नन्दलाल कौल जयन्ती (टिक्कर), 1:03 रात मिथुन में चन्द्र, अष्टमी व्रत।	06:49	06:33

18	28	11	शुक्र	नव	Day Night	मृग दि	02:35 PM	मानसम्।	06:47	06:33
23	29	12	शनि	नव दि	08:08AM	आर्द्रा दि	05:32 PM	मुद्गरम्।	06:46	06:34
27	30	13	रवि	दश दि	10:22AM	पुन प्र	08:06 PM	ध्वजः, मासान्त, सोम्य थाल भरुण, स्वर्गी श्री दीनानाथ नादिम जयन्ती, 1:30 दिन कर्कट में चन्द्र।	06:45	06:35
29	चैत्र	14	सोम	एका दि	12:06PM	तिष्या प्र	10:08 PM	प्रजापत्यः, सोम्य, अमला एकादशी, वसंत ऋतु, 12:16 रात मीन में सूर्य।	06:44	06:36
33	2	15	भौम	द्वाद दि	01:12PM	अश्ले प्र	11:33 PM	आनन्दः, संक्रान्ति व्रत, 11:33 रात सिंह में चन्द्र।	06:42	06:36
38	3	16	बुध	त्रयो दि	01:40PM	मघा प्र	12:21 AM	चरः।	06:41	06:37
44	4	17	गुरु	चर्तु दि	01:30PM	पू.फा.प्र	12:34 AM	मुसुलं, होलिका दहन, 6:32 रात कन्या में चन्द्र।	06:40	06:38
48	5	18	शुक्र	पूर्णि दि	12:47PM	उ.फा.प्र	12:17 AM	शूलम्, पूर्णिमा व्रत, होली।	06:38	06:39

श्राद्धः प्रतिपदा से नवम तक अपने दिन, दशम से पूर्णिमा तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से नवम तक अपने दिन, दशम का पहले दिन, एकादश से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- बेल पत्र में तीन दल (पते) होने का क्या अर्थ है? बेल पत्र के तीन पते (दल) तीन प्रमुख देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का द्योतक है। तीन दल तीन लोकों को बतलाता है। बेल पत्र के तीन दल से तीन महादेवियों (महालक्ष्मी, महासरस्वती व महाकाली) का ज्ञान होता है। देश की तीन पवित्र नदियाँ गंगा, यमुना व सरस्वती भी हैं। महादेव शंकर जी के त्रिशूल में तीन फल होते हैं जिसमें तीनों लोकों का संहार करने की शक्ति निहित है। इसी लिये हेरथ (शिवरात्रि) की सामग्री लेते समय हम बेल पत्र को भी प्राथमिकता देते हैं।

चैत्र कृष्ण पक्ष

19 मार्च 2022 की ग्रह स्थिति :- मीन में सूर्य; वृष में राहु; वृश्चिक में केतु;
मकर में भौम, शुक्र, शनि; कुम्भी में बुध, गुरु।
सप्तर्षि 5097, विक्रमी 2078, शाक: 1943, ईस्वी 2022



दिन मान	चैत्र	मार्च	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसंत ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
29 53	6	19	शनि	प्रति दि	11:38AM	हस्त प्र	11:38 PM	मृत्युः।	06:37	06:39
58	7	20	रवि	द्विती दि	10:07AM	चित्र प्र	10:40 PM	काम्यः, 11:11 दिन तुला में चन्द्र।	06:36	06:40
30 02	8	21	सोम	तृती दि	08:21AM	स्वात प्र	09:31 PM	छत्रम्, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:04रात), स्वामी गोपालकाक जी यज्ञ, वडीपुरा हन्दवारा, त्र्यहः(चतु प्र 6:24AM)।	06:34	06:41
10	9	22	भौम	पंच प्र	04:22AM	विशा प्र	08:13 PM	श्रीवत्सः, 2:33 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	06:33	06:41
15	10	23	बुध	षष्ठी प्र	02:17AM	अनु प्र	06:52 PM	सौम्यः, 1:26 दिन गुरु पूर्व में उदय।	06:32	06:42
20	11	24	गुरु	सप्त प्र	12:10AM	ज्येष्ठ दि	05:30 PM	कालदण्डः, 5:30 सायं धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	06:30	06:43
25	12	25	शुक्र	अष्ट प्र	10:05PM	मूल दि	04:07 PM	स्थिरः।	06:29	06:44
30	13	26	शनि	नव प्र	08:02PM	पू.षा. दि	02:47 PM	मातंगः, श्री किशकाक वडीपुरा हन्दवारा यज्ञ, 8:28 रात मकर में चन्द्र।	06:28	06:44

35	14	27	रवि	दश दि	06:04PM	उ.षा. दि	01:32 PM	अमृतम्।	06:27	06:45
35	15	28	सोम	एका दि	04:15PM	श्रवण दि	12:24 PM	सिद्धः, पापमोचिनी एकादशी, 11:54 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	06:25	06:46
41	16	29	भौम	द्वाद दि	02:39PM	धनि दि	11:28AM	उन्मूलम्।	06:24	06:46
45	17	30	बुध	त्रयो दि	01:19PM	शत दि	10:48AM	मानसम्, 4:32 रात मीन में चन्द्र।	06:23	06:47
50	18	31	गुरु	चर्तु दि	12:23PM	पू.भा.दि	10:30AM	मुद्गरम्, स्वामी गाशकाक यज्ञ गोतमनाग, चित्र चुदाह, 8:40 प्रातः कुम्भ में शुक्र।	06:21	06:48
57	19	अग्रे	शुक्र	अमा दि	11:54AM	उ.भा.दि	10:40AM	ध्वजः, थाल भरुण, श्री भट्ट जयन्ती, विचार नाग यात्रा, ज़नपोरा शुपियन यात्रा (वरनाग)।	06:20	06:48

श्राद्धः प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचम से दशम तक अपने दिन, एकादश से अमावस तक पहले दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचम से चतुर्दश तक अपने दिन, अमावस का पहले दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- प्रातः काल हाथ (कर) का दर्शन क्यों करें? शास्त्रों में कहा गया है

“कराग्रे वसति लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती। करमूले तु गोविन्दः, प्रभाते कर दर्शनम्॥”

हाथ के अग्र (आगे) भाग में लक्ष्मी निवास करती है, हाथ के मध्य में सरस्वती और मूल में गोविन्द का निवास होता है, इसलिए प्रातः काल हाथ का दर्शन करना चाहिए और जीवन में धन, ज्ञान एवं ईश्वर को प्राप्त करना मानव के हाथ में है। अतः प्रातः काल हाथ का दर्शन करना चाहिए। प्रातः काल देखने योग्य और न देखने योग्य वस्तुओं का विचार मनोविज्ञान पर निर्भर होता है जिसका दिन भर मन मस्तिष्क पर भी प्रभाव बना रहता है।



卐 विक्रमी सम्वत् 2078 के 卐

साथ रटुन मुहूर्त



यह मुहूर्त भारतीय समय अनुसार 2021-22 ईस्वी के लिए दिये गये हैं। इस में आप लिवुन, मेहन्दी लगाना, मस मुचरून, यज्ञोपवीत विवाह आदि के लिए नये वस्त्र, मसाला, अग्निवत्र, आभूषण आदि लाने के लिए अपनी सुविधा और आवश्यकता अनुसार मुहूर्त चयन करके लाभान्वित हो सकते हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष

- 25 अप्रैल त्रयादशी रविवार
4-13 दिन तक
26 अप्रैल चतुर्दशी सोमवार
12-44 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

- 28 अप्रैल द्वितीया बुधवार
5-12 सायं से
29 अप्रैल तृतीया गुरुवार

- 2 मई षष्ठी रविवार
8-59 प्रातः से
3 मई सप्तमी सोमवार
9 मई त्रयोदशी रविवार
5-28 सायं से

वैशाख शुक्ल पक्ष

- 16 मई चतुर्थी रविवार
11-14 दिन से
17 मई पंचमी सोमवार

- 21 मई नवमी शुक्रवार
3-22 दिन से
24 मई त्रयोदशी सोमवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

- 27 मई प्रतिपदा गुरुवार
30 मई पंचमी रविवार
31 मई षष्ठी सोमवार
6 जून एकादशी रविवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

- 11 जून प्रतिपदा शुक्रवार
2-30 दिन तक
13 जून तृतीया रविवार
9-41 रात तक
17 जून सप्तमी गुरुवार
10-13 रात से
18 जून अष्टमी शुक्रवार
20 जून दशमी रविवार
21 जून एकादशी सोमवार
23 जून त्रयोदशी बुधवार
7-00 प्रातः तक
24 जून पूर्णिमा गुरुवार
आषाढ़ कृष्ण पक्ष
27 जून तृतीया रविवार
3-54 दिन तक
4 जुलाई दशमी रविवार
9-05 प्रातः तक

7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
आषाढ़ शुक्ल पक्ष

19 जुलाई दशमी सोमवार
21 जुलाई द्वादशी बुधवार
6-30 सायं तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
2-02 दिन से
2 अगस्त नवमी सोमवार
10-43 रात से
4 अगस्त एकादशी बुधवार
6 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार
6-29 सायं तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया बुधवार
9-32 दिन से

4-54 दिन तक

12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
3-25 दिन से

13 अगस्त पंचमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
10 अक्टूबर पंचमी रविवार
11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
12-55 दिन तक
13 अक्टूबर अष्टमी गुधवार
10-19 दिन से
8-08 रात तक

15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
4-17 दिन तक

25 अक्टूबर पंचमी सोमवार
27 अक्टूबर षष्ठी बुधवार
28 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार
29 अक्टूबर अष्टमी शुक्रवार
11-38 दिन तक

1 नवम्बर एकादशी सोमवार
12-52 दिन से

3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

5 नवम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
7 नवम्बर तृतीया रविवार
4-22 दिन तक

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार
11 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
9-50 दिन तक

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर द्वितीया रविवार
22 नवम्बर तृतीया सोमवार
10-43 रात तक

24 नवम्बर पंचमी बुधवार
25 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
6-49 सायं तक

29 नवम्बर दशमी सोमवार
1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरु.
8-27 रात तक

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

8 दिसम्बर पंचमी बुधवार
9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

23 जनवरी पंचमी रविवार
24 जनवरी षष्ठी सोमवार
27 जनवरी दशमी गुरुवार

28 जनवरी एकादशी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी षष्ठी रविवार

5-10 सायं से

7 फरवरी सप्तमी सोमवार

6-58 सायं तक

10 फरवरी नवमी गुरुवार

11-08 दिन से

14 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

8-29 रात तक

आवश्यक सूचना:-

22 फरवरी 2022 से

23 मार्च 2022 तक गुरु अस्त

व 19 मार्च 2022 से 1 अप्रैल

2022 तक चैत्र कृष्ण पक्ष के

रहने से मेखला, विवाह व अन्य

मुहूर्त त्याज्य रहेंगे।



॥ विक्रमी सम्वत् 2078 के ॥

यज्ञोपवीत मुहूर्त



यह मुहूर्त भारतीय समय अनुसार 2021-22 ईस्वी के लिए दिये गये हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 अप्रैल त्रयोदशी रविवार

11-02 दिन से

1-26 दिन तक (क)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया गुरुवार

10-46 दिन से

1-10 दिन तक (क)

वैशाख शुक्ल पक्ष

24 मई त्रयोदशी सोमवार

9-08 प्रातः से

11-31 दिन तक (क)

11-31 दिन से

1-53 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

30 मई पंचमी रविवार

8-44 प्रातः से

11-08 दिन तक (क)

11-08 दिन से

1-30 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया रविवार

7-59 प्रातः से

10-13 दिन तक (क)

10-13 दिन से

12-34 दिन तक (सिं)

20 जून दशमी रविवार

7-22 प्रातः से

9-45 प्रातः तक (क)

<p>9-45 प्रातः से 12-07 दिन तक (सिं)</p> <p>21 जून एकादशी सोमवार 7-18 प्रातः से 9-41 प्रातः तक (क) 9-41 प्रातः से 12-03 दिन तक (सिं)</p> <p>आषाढ़ कृष्ण पक्ष</p>	<p>7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार 9-42 प्रातः से 12-03 दिन तक (वृं) 12-03 दिन से 2-05 दिन तक (धं)</p> <p>8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार 9-38 प्रातः से 11-59 दिन तक (वृं) 11-59 दिन से 2-01 दिन तक (धं)</p>	<p>11-20 दिन से 1-22 दिन तक (धं)</p> <p>कार्तिक कृष्ण पक्ष</p> <p>21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार 8-47 प्रातः से 11-08 दिन तक (वृं) 11-08 दिन से 1-10 दिन तक (धं)</p>	<p>मार्ग कृष्ण पक्ष</p> <p>21 नवम्बर द्वितीया रविवार 9-06 प्रातः से 11-08 दिन तक (धं)</p> <p>22 नवम्बर तृतीया सोमवार 9-02 प्रातः से 10-43 दिन तक (धं)</p> <p>24 नवम्बर पंचमी बुधवार 8-54 प्रातः से 10-57 दिन तक (धं)</p>
<p>27 जून तृतीया रविवार 9-18 प्रातः से 11-39 दिन तक (सिं)</p> <p>आषाढ़ शुक्ल पक्ष</p> <p>11 जुलाई प्रतिपदा रविवार 8-23 प्रातः से 10-44 दिन तक (सिं)</p> <p>आश्विन शुक्ल पक्ष</p>	<p>10 अक्टूबर पंचमी रविवार 11-51 दिन से 1-54 दिन तक (धं)</p> <p>11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार 11-47 दिन से 12-55 दिन तक (धं)</p> <p>18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.</p>	<p>कार्तिक शुक्ल पक्ष</p> <p>10 नवम्बर षष्ठी बुधवार 9-49 दिन से 11-52 दिन तक (धं)</p> <p>17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार 7-03 प्रातः से 9-22 प्रातः तक (वृं) 9-22 प्रातः से 11-24 दिन तक (धं)</p>	<p>मार्ग शुक्ल पक्ष</p> <p>9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार 10-27 दिन से 11-36 दिन तक (म)</p> <p>10 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार 7-51 प्रातः से 9-54 प्रातः तक (धं)</p>

विक्रमी 2078 (ई. 2021-22) के

विवाह मुहूर्त

यह मुहूर्त भारतीय समय अनुसार 2021-22 ईस्वी के लिए दिये गये हैं।

11-32 दिन से

12-58 दिन तक (कुँ)

13 दिसम्बर दशमी सोमवार

7-39 प्रातः से

9-42 दिन तक (धं)

11-21 दिन से

12-46 दिन तक (कुँ)

माघ कृष्ण पक्ष

23 जनवरी पंचमी रविवार

8-39 प्रातः से

9-12 प्रातः तक (कुँ)

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार

9-25 प्रातः से

10-45 दिन तक (मी)

10-45 दिन से

12-16 दिन तक (मे)

6 फरवरी षष्ठी रविवार

7-44 प्रातः से

9-10 प्रातः तक (कुँ)

10-09 प्रातः से

12-00 दिन तक (मे)

7 फरवरी सप्तमी सोमवार

9-06 प्रातः से

10-25 प्रातः तक (मी)

10-25 प्रातः से

11-56 दिन तक (मे)

10 फरवरी नवमी गुरुवार

11-08 दिन से

11-45 दिन तक (मे)

14 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

8-38 प्रातः से

9-58 प्रातः तक (मी)

9-58 प्रातः से

11-29 दिन तक (मे)

चैत्र शुक्ल पक्ष

24 अप्रेल द्वादशी शनिवार

1-29 दिन से

3-51 दिन तक (सिं)

2-37 रात से

4-02 रात तक (कुँ)

25 अप्रेल त्रयोदशी रविवार

1-26 दिन से

3-47 दिन तक (सिं)

2-33 रात से

3-58 रात तक (कुँ)

26 अप्रेल चतुर्दशी सोमवार

1-22 दिन से

3-43 दिन तक (सिं)

2-29 रात से

3-54 रात तक (कुँ)

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रेल द्वितीया बुधवार

2-21 रात से

3-47 रात तक (कुँ)

29 अप्रेल तृतीया गुरुवार 1-14 दिन से 2-29 दिन तक (सिं)	3-27 रात तक (कुँ) 7 मई एकादशी शुक्रवार 12-38 दिन से 3-00 दिन तक (सिं) 1-46 रात से 3-11 रात तक (कुँ)	12-27 दिन से 2-48 दिन तक (सिं) वैशाख शुक्ल पक्ष 19 मई सप्तमी बुधवार 12-59 रात से 2-24 रात तक (कुँ)	24 मई त्रयोदशी सोमवार 11-31 दिन से 1-53 दिन तक (सिं) 12-39 रात से 2-04 रात तक (कुँ) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
30 अप्रेल चतुर्थी शुक्रवार 1-06 दिन से 3-28 दिन तक (सिं) 2-14 रात से 3-39 रात तक (कुँ)	8 मई द्वादशी शनिवार 12-34 दिन से 2-56 दिन तक (सिं) 1-42 रात से 3-07 रात तक (कुँ)	20 मई अष्टमी गुरुवार 2-09 दिन से 3-57 दिन तक (कं) 21 मई नवमी शुक्रवार 12-51 रात से 2-16 रात तक (कुँ)	27 मई प्रतिपदा गुरुवार 12-27 रात से 1-53 रात तक (कुँ) 28 मई द्वितीया शुक्रवार 11-16 दिन से 1-37 दिन तक (सिं) 1-37 दिन से 3-58 दिन तक (कं)
2 मई षष्ठी रविवार 12-58 दिन से 3-20 दिन तक (सिं) 2-06 रात से 3-31 रात तक (कुँ)	9 मई त्रयोदशी रविवार 12-30 दिन से 2-52 दिन तक (सिं) 1-38 रात से 3-03 रात तक (कुँ)	22 मई दशमी शनिवार 11-39 दिन से 2-01 दिन तक (सिं) 12-47 रात से 2-12 रात तक (कुँ)	30 मई पंचमी रविवार 11-08 दिन से 1-30 दिन तक (सिं)
3 मई सप्तमी सोमवार 12-54 दिन से 3-16 दिन तक (सिं) 2-02 रात से	10 मई चतुर्दशी सोमवार		

1-30 दिन से 3-50 दिन तक (कं)	11-56 रात से 1-21 रात तक (कुँ)	9-53 दिन से 12-15 दिन तक (सिं)	9-41 दिन से 12-03 दिन तक (सिं)
31 मई षष्ठी सोमवार 12-12 रात से 1-37 रात तक (कुँ)	9 जून चतुर्दशी बुधवार 10-29 दिन से 12-50 दिन तक (सिं)	19 जून नवमी शनिवार 9-49 दिन से 12-11 दिन तक (सिं)	12-03 दिन से 2-24 दिन तक (कं)
3 जून नवमी गुरुवार 8-19 रात से 10-21 रात तक (धं)	12-50 दिन से 3-11 दिन तक (कं)	10-57 रात से 12-22 रात तक (कुँ)	23 जून त्रयोदशी बुधवार 9-33 दिन से 11-48 दिन तक (सिं)
12-00 रात से 1-25 रात तक (कुँ)	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	12-22 रात से 1-42 रात तक (मी)	24 जून पूर्णिमा गुरुवार 9-30 दिन से 11-51 दिन तक (सिं)
4 जून दशमी शुक्रवार 10-48 दिन से 1-10 दिन तक (सिं)	16 जून षष्ठी बुधवार 12-23 दिन से 2-43 दिन तक (कं)	20 जून दशमी रविवार 9-45 दिन से 12-07 दिन तक (सिं)	11-51 दिन से 2-12 दिन तक (कं)
1-10 दिन से 3-30 दिन तक (कं)	17 जून सप्तमी गुरुवार 11-05 रात से 12-30 रात तक (कुँ)	12-07 दिन से 2-27 दिन तक (कं)	10-37 रात से 12-02 रात तक (कुँ)
8-15 रात से 10-17 रात तक (धं)	12-30 रात से 1-49 रात तक (मी)	10-53 रात से 12-18 रात तक (कुँ)	आषाढ कृष्ण पक्ष
	18 जून अष्टमी शुक्रवार	21 जून एकादशी सोमवार	26 जून द्वितीया शनिवार 9-22 प्रातः से

11-43 दिन तक (सिं)	9-02 प्रातः से	12-46 रात तक (मी)	10-32 रात से
11-43 दिन से	11-24 दिन तक (सिं)	7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार	11-51 रात तक (मी)
2-04 दिन तक (कं)	11-24 दिन से	11-00 दिन से	11-51 रात से
10-29 रात से	1-44 दिन तक (कं)	1-21 दिन तक (कं)	1-23 रात तक (मे)
11-55 रात तक (कुं)	10-10 रात से	9-46 रात से	18 जुलाई नवमी रविवार
11-55 रात से	11-25 रात तक (कुं)	11-11 रात तक (कुं)	10-17 दिन से
1-14 रात तक (मी)	2 जुलाई अष्टमी शुक्रवार	11-11 रात से	12-37 दिन तक (कं)
27 जून तृतीया रविवार	8-58 प्रातः से	12-31 रात तक (मी)	9-03 रात से
9-18 प्रातः से	10-51 दिन तक (सिं)	8 जुलाई चतुर्दशी गुरुवार	10-28 रात तक (कुं)
11-39 दिन तक (सिं)	3 जुलाई नवमी शनिवार	10-56 दिन से	10-28 रात से
11-39 दिन से	8-54 प्रातः से	1-17 दिन तक (कं)	11-47 रात तक (मी)
2-00 दिन तक (कं)	11-16 दिन तक (सिं)	आषाढ़ शुक्ल पक्ष	19 जुलाई दशमी सोमवार
10-25 रात से	11-16 दिन से	17 जुलाई अष्टमी शनिवार	10-27 रात से
11-51 रात तक (कुं)	1-36 दिन तक (कं)	12-41 दिन से	11-44 रात तक (मी)
11-51 रात से	10-02 रात से	3-05 दिन तक (तुं)	11-44 रात से
1-10 रात तक (मी)	11-27 रात तक (कुं)	9-07 रात से	1-15 रात तक (मे)
1 जुलाई सप्तमी गुरुवार	11-27 रात से	10-32 रात तक (कुं)	21 जुलाई द्वादशी बुधवार

10-16 रात से	12-14 दिन से	12-36 रात तक (मे)	11-03 दिन से
11-36 रात तक (मी)	2-37 दिन तक (तुँ)	30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार	1-26 दिन तक (तुँ)
11-36 रात से	श्रावण कृष्ण पक्ष	9-30 प्रातः से	8-54 रात से
1-07 रात तक (मे)	26 जुलाई तृतीया सोमवार	11-50 दिन तक (कं)	10-30 रात तक (मी)
22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार	9-45 प्रातः से	11-50 दिन से	10-30 रात से
10-01 दिन से	10-26 दिन तक (कं)	2-14 दिन तक (तुँ)	11-44 रात तक (मे)
12-22 दिन तक (कं)	28 जुलाई पंचमी बुधवार	9-41 रात से	12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
12-22 दिन से	11-58 दिन से	11-00 रात तक (मी)	10-59 दिन से
2-45 दिन तक (तुँ)	2-21 दिन तक (तुँ)	2 अगस्त नवमी सोमवार	1-22 दिन तक (तुँ)
23 जुलाई चतुर्दशी शुक्रवार	11-08 रात से	10-43 रात से	10-09 रात से
10-08 रात से	12-39 रात तक (मे)	10-48 रात तक (मी)	11-40 रात तक (मे)
11-28 रात तक (मी)	29 जुलाई षष्ठी गुरुवार	10-48 रात से	13 अगस्त पंचमी शुक्रवार
11-28 रात से	9-34 प्रातः से	12-20 रात तक (मे)	10-55 दिन से
12-59 रात तक (मे)	11-54 दिन तक (कं)	श्रावण शुक्ल पक्ष	1-18 दिन तक (तुँ)
24 जुलाई पूर्णिमा शनिवार	11-54 दिन से	11 अगस्त तृतीया बुधवार	8-46 रात से
9-53 दिन से	2-17 दिन तक (तुँ)	9-32 प्रातः से	10-05 रात तक (मी)
12-14 दिन तक (कं)	11-04 रात से	11-03 दिन तक (कं)	10-05 रात से

11-37 रात तक (मे)
 14 अगस्त षष्ठी शनिवार
 8-31 प्रातः से
 10-51 दिन तक (कं)
 8-42 रात से
 10-01 रात तक (मी)
 10-01 रात से
 11-33 रात तक (मे)
आश्विन शुक्ल पक्ष
 7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
 12-03 दिन से
 2-05 दिन तक (धं)
 9-54 रात से
 12-04 रात तक (मि)
 8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
 11-59 दिन से
 2-01 दिन तक (धं)

10 अक्टूबर पंचमी रविवार
 11-51 दिन से
 1-54 दिन तक (धं)
 11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
 3-28 दिन से
 4-53 दिन तक (कुं)
 9-33 रात से
 11-53 रात तक (मि)
 13 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
 10-19 रात से
 11-45 रात तक (मि)
 2-09 रात से
 4-31 रात तक (सिं)
 18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.
 11-20 दिन से
 1-22 दिन तक (धं)
 9-10 रात से

11-26 रात तक (मि)
 20 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार
 11-12 दिन से
 1-14 दिन तक (धं)
 9-02 रात से
 11-18 रात तक (मि)
कार्तिक कृष्ण पक्ष
 21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
 11-08 दिन से
 1-10 दिन तक (धं)
 23 अक्टूबर तृतीया शनिवार
 1-30 रात से
 3-51 रात तक (सिं)
 24 अक्टूबर चतुर्थी रविवार
 10-56 दिन से
 12-58 दिन तक (धं)
 2-37 दिन से

4-03 दिन तक (कुं)
 8-47 रात से
 11-02 रात तक (मि)
 30 अक्टूबर नवमी शनिवार
 2-14 दिन से
 3-39 दिन तक (कुं)
 8-23 रात से
 10-38 रात तक (मि)
 31 अक्टूबर दशमी रविवार
 10-29 दिन से
 12-31 दिन तक (धं)
 1 नवम्बर एकादशी सोम.
 2-06 दिन से
 3-31 दिन तक (कुं)
 8-15 रात से
 10-31 रात तक (मि)
 12-54 रात से

3-16 रात तक (सिं)
 3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
 10-17 दिन से
 12-19 दिन तक (धं)
 1-58 दिन से
 3-23 दिन तक (कुं)
 8-07 रात से
 10-23 रात तक (मि)
 12-46 रात से
 3-08 रात तक (सिं)
कार्तिक शुक्ल पक्ष
 6 नवम्बर द्वितीया शनिवार
 10-05 प्रातः से
 12-07 दिन तक (धं)
 1-46 दिन से
 3-11 दिन तक (कुं)
 7-56 सायं से

10-11 रात तक (मि)
 7 नवम्बर तृतीया रविवार
 12-31 रात से
 2-52 रात तक (सिं)
 8 नवम्बर चतुर्थी सोमवार
 1-38 दिन से
 3-04 दिन तक (कुं)
 10 नवम्बर षष्ठी बुधवार
 9-57 प्रातः से
 11-52 दिन तक (धं)
 1-30 दिन से
 2-56 दिन तक (कुं)
 11 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
 9-45 प्रातः से
 11-48 दिन तक (धं)
 1-27 दिन से
 2-52 दिन तक (कुं)

7-36 सायं से
 9-51 रात तक (मि)
 12-15 रात से
 2-37 रात तक (सिं)
 12 नवम्बर नवमी शुक्रवार
 9-41 प्रातः से
 11-44 दिन तक (धं)
 2-48 दिन से
 2-53 दिन तक (मी)
 14 नवम्बर एकादशी रविवार
 7-24 सायं से
 9-39 रात तक (मि)
 12-03 रात से
 2-25 रात तक (सिं)
 17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
 9-22 दिन से
 11-24 दिन तक (धं)

1-03 दिन से
 2-28 दिन तक (कुं)
 7-12 सायं से
 9-28 रात तक (मि)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
 21 नवम्बर द्वितीया रविवार
 12-47 दिन से
 2-12 दिन तक (कुं)
 11-36 रात से
 1-57 रात तक (सिं)
 22 नवम्बर तृतीया सोमवार
 9-02 प्रातः से
 10-43 प्रातः तक (धं)
 26 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
 1-38 रात से
 3-58 रात तक (कं)
 27 नवम्बर अष्टमी शनिवार

12-24 दिन से
 1-49 दिन तक (कुँ)
 6-33 सायं से
 8-48 रात तक (मि)
 28 नवम्बर नवमी रविवार
 1-30 रात से
 3-50 रात तक (कं)
 29 नवम्बर दशमी सोमवार
 12-16 दिन से
 1-41 दिन तक (कुँ)
 1-41 दिन से
 3-00 दिन तक (मी)
 11-04 रात से
 1-26 रात तक (सिं)
 1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
 12-08 दिन से
 1-33 दिन तक (कुँ)

1-33 दिन से
 2-53 दिन तक (मी)
 10-56 रात से
 1-18 रात तक (सिं)
 2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार
 12-04 दिन से
 1-29 दिन तक (कुँ)
 1-29 दिन से
 2-49 दिन तक (मी)
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष
 9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
 1-29 दिन से
 2-49 दिन तक (मी)
 7-00 सायं से
 8-29 रात तक (मि)
 11 दिसम्बर अष्टमी शनिवार
 10-32 रात से

12-39 रात तक (सिं)
 12-39 रात से
 2-59 रात तक (कं)
 12 दिसम्बर नवमी रविवार
 11-25 दिन से
 12-50 दिन तक (कुँ)
 2-09 दिन से
 3-41 दिन तक (मे)
 10-13 रात से
 11-59 रात तक (सिं)
 13 दिसम्बर दशमी सोमवार
 11-21 दिन से
 12-46 दिन तक (कुँ)
 2-05 दिन से
 3-37 दिन तक (मे)
 10-09 रात से
 12-31 रात तक (सिं)

12-31 रात से
 2-51 रात तक (कं)
माघ कृष्ण पक्ष
 20 जनवरी द्वितीया गुरुवार
 10-16 दिन से
 11-36 दिन तक (मी)
 11-36 दिन से
 1-07 दिन तक (मे)
 10-01 रात से
 12-02 रात तक (कं)
 12-02 रात से
 2-45 रात तक (तुँ)
 21 जनवरी तृतीया शुक्रवार
 8-51 प्रातः से
 9-43 प्रातः तक (कुँ)
 22 जनवरी चतुर्थी शनिवार
 10-38 प्रातः से

11-28 दिन तक (मी)	11-20 दिन से	10-45 दिन से	8-54 रात से
11-28 दिन से	12-51 दिन तक (मे)	12-16 दिन तक (मे)	11-15 रात तक (कं)
12-59 दिन तक (मे)	7-24 सायं से	4 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार	11-15 रात से
7-32 सायं से	9-46 रात तक (सिं)	9-02 रात से	1-38 रात तक (तुं)
9-53 रात तक (सिं)	27 जनवरी दशमी गुरुवार	11-23 रात तक (कं)	7 फरवरी सप्तमी सोमवार
23 जनवरी पंचमी रविवार	9-49 प्रातः से	11-23 रात से	9-06 प्रातः से
10-05 दिन से	11-08 दिन तक (मी)	1-46 रात तक (तुं)	10-25 दिन तक (मी)
11-24 दिन तक (मी)	11-08 दिन से	5 फरवरी पंचमी शनिवार	9 फरवरी अष्टमी बुधवार
11-24 दिन से	12-40 दिन तक (मे)	10-33 दिन से	12-23 रात से
12-55 दिन तक (मे)	9-34 रात से	12-04 दिन तक (मे)	1-27 रात तक (तुं)
7-28 सायं से	11-54 रात तक (कं)	8-58 रात से	10 फरवरी नवमी गुरुवार
9-49 रात तक (सिं)	11-54 रात से	11-19 रात तक (कं)	10-13 दिन से
12-10 रात से	2-18 रात तक (तुं)	11-19 रात से	11-45 दिन तक (मे)
2-33 रात तक (तुं)	माघ शुक्ल पक्ष	1-42 रात तक (तुं)	16 फरवरी पूर्णिमा बुधवार
24 जनवरी षष्ठी सोमवार	2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार	6 फरवरी षष्ठी रविवार	8-23 रात से
10-01 दिन से	9-25 प्रातः से	10-09 दिन से	10-36 रात तक (कं)
11-20 दिन तक (मी)	10-45 दिन तक (मी)	12-00 दिन तक (मे)	卐 卐 卐 卐 卐

राशि अनुसार मुहूर्तों के विषय में आवश्यक जानकारी

राशि अनुसार शुद्ध मुहूर्त देखते समय लड़के अथवा लड़की दोनों की राशि से शुद्ध मुहूर्त मिलना आवश्यक नहीं है, एक की राशि से मुहूर्त मिले तो उस को ही शुद्ध मुहूर्त मानिये। यदि आपने घर में कई बच्चों का यज्ञोपवीत एक साथ करना हो तो एक लड़के की राशि से मुहूर्त मिलना चाहिये। राशि अनुसार यज्ञोपवीत, विवाह मुहूर्तों में शुद्ध मुहूर्त देखने के लिए सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति चौथे, आठवें और बारहवें भाव में नहीं होना चाहिए, इन तीनों ग्रहों का विचार करके ही ऊपरलिखित मुहूर्त रखे गये हैं जहाँ चन्द्रमा, सूर्य बृहस्पति इन तीन में से केवल एक ग्रह अनुकूल न हो उस मुहूर्त के साथ उस ग्रह की पूजा लिखी गई है। सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति के नाम सू, चं तथा गु से अंकित किये गये हैं।

सम्पादक

राशि के अनुसार विक्रमी 2078 (ई. 2021-22) के

यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष सिंह धनु

25 अप्रैल त्रयोदशी रविवार

29 अप्रैल तृतीया गुरुवार

24 मई त्रयोदशी सोमवार

30 मई पंचमी रविवार

13 जून तृतीया रविवार

20 जून दशमी रविवार

21 जून एकादशी सोमवार

27 जून तृतीया रविवार

11 जुलाई प्रतिपदा रविवार

7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

10 अक्टूबर पंचमी रविवार

11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार

चं

चं

चं

18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.

21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार

17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार सू

21 नवम्बर द्वितीया रविवार सू

22 नवम्बर तृतीया सोमवार सू

24 नवम्बर पंचमी बुधवार सू

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार सू

13 दिसम्बर दशमी सोमवार

23 जनवरी पंचमी रविवार

2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार

6 फरवरी षष्ठी रविवार चं

7 फरवरी सप्तमी सोमवार

10 फरवरी नवमी गुरुवार

卐卐卐卐卐

वृष कन्या मकर

25 अप्रेल त्रयोदशी रविवार	सू
29 अप्रेल तृतीया गुरुवार	सू
24 मई त्रयोदशी सोमवार	
30 मई पंचमी रविवार	
13 जून तृतीया रविवार	
20 जून दशमी रविवार	
21 जून एकादशी सोमवार	
27 जून तृतीया रविवार	
11 जुलाई प्रतिपदा रविवार	
7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार	
8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार	
10 अक्टूबर पंचमी रविवार	
11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार	चं
18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.	
21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार	चं
10 नवम्बर षष्ठी बुधवार	
17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार	चं
21 नवम्बर द्वितीया रविवार	
22 नवम्बर तृतीया सोमवार	

24 नवम्बर पंचमी बुधवार	
9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार	
10 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार	
13 दिसम्बर दशमी सोमवार	
23 जनवरी पंचमी रविवार	
2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार	
6 फरवरी षष्ठी रविवार	
7 फरवरी सप्तमी सोमवार	चं
10 फरवरी नवमी गुरुवार	

卐卐卐卐卐

मिथुन तुला कुम्भ

25 अप्रेल त्रयोदशी रविवार	चं
29 अप्रेल तृतीया गुरुवार	
24 मई त्रयोदशी सोमवार	
13 जून तृतीया रविवार	सू
20 जून दशमी रविवार	
21 जून एकादशी सोमवार	
27 जून तृतीया रविवार	चं
11 जुलाई प्रतिपदा रविवार	

18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.	गु
21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार	गु
17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार	गु
21 नवम्बर द्वितीया रविवार	चं
22 नवम्बर तृतीया सोमवार	
24 नवम्बर पंचमी बुधवार	
9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार	
10 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार	
13 दिसम्बर दशमी सोमवार	
2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार	सू
6 फरवरी षष्ठी रविवार	सू
7 फरवरी सप्तमी सोमवार	सू

卐卐卐卐卐

कर्क वृश्चिक मीन

25 अप्रेल त्रयोदशी रविवार	गु
29 अप्रेल तृतीया गुरुवार	गु
30 मई पंचमी रविवार	गु
13 जून तृतीया रविवार	गु
7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार	चं
8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार	चं

10 अक्टूबर पंचमी रविवार	
11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार	
18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.	सू
21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार	सू
10 नवम्बर षष्ठी बुधवार	सू
17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार	
21 नवम्बर द्वितीया रविवार	गु
24 नवम्बर पंचमी बुधवार	गु
13 दिसम्बर दशमी सोमवार	गु
23 जनवरी पंचमी रविवार	गु
6 फरवरी षष्ठी रविवार	गु
7 फरवरी सप्तमी सोमवार	गु
10 फरवरी नवमी गुरुवार	गु

卐卐卐卐卐

आवश्यक सूचना:-

22 फरवरी 2022 से

23 मार्च 2022 तक गुरु अस्त व 19 मार्च 2022 से 1 अप्रेल 2022 तक चैत्र कृष्ण पक्ष के रहने से मेखला, विवाह व अन्य मुहूर्त त्याज्य रहेंगे।

राशि के अनुसार विक्रमी 2078 (ई. 2021-22) के

विवाह मुहूर्त

मेष सिंह धनु

- 24 अप्रेल द्वादशी शनिवार
25 अप्रेल त्रयोदशी रविवार
26 अप्रेल चतुर्दशी सोमवार
28 अप्रेल द्वितीया बुधवार
29 अप्रेल तृतीया गुरुवार
30 अप्रेल चतुर्थी शुक्रवार
2 मई षष्ठी रविवार
3 मई सप्तमी सोमवार
7 मई एकादशी शुक्रवार
8 मई द्वादशी शनिवार
9 मई त्रयोदशी रविवार
10 मई चतुर्दशी सोमवार

चं
चं

चं
चं
चं

- 19 मई सप्तमी बुधवार
20 मई अष्टमी गुरुवार
21 मई नवमी शुक्रवार
22 मई दशमी शनिवार
24 मई त्रयोदशी सोमवार
27 मई प्रतिपदा गुरुवार
28 मई द्वितीया शुक्रवार
30 मई पंचमी रविवार
31 मई षष्ठी सोमवार
3 जून नवमी गुरुवार
4 जून दशमी शुक्रवार
9 जून चतुर्दशी बुधवार
16 जून षष्ठी बुधवार
17 जून सप्तमी गुरुवार
18 जून अष्टमी शुक्रवार

चं

चं

चं

चं

- 19 जून नवमी शनिवार
20 जून दशमी रविवार
21 जून एकादशी सोमवार
23 जून त्रयोदशी बुधवार
24 जून पूर्णिमा गुरुवार
26 जून द्वितीया शनिवार
27 जून तृतीया रविवार
1 जुलाई सप्तमी गुरुवार
2 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
3 जुलाई नवमी शनिवार
7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
8 जुलाई चतुर्दशी गुरुवार
17 जुलाई अष्टमी शनिवार
18 जुलाई नवमी रविवार
19 जुलाई दशमी सोमवार
22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार
23 जुलाई चतुर्दशी शुक्रवार
24 जुलाई पूर्णिमा शनिवार
26 जुलाई तृतीया सोमवार
2 अगस्त नवमी सोमवार
11 अगस्त तृतीया बुधवार
12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार

चं

चं

चं

सू

सू

सू

सू

सू

सू

सू

सू

सू

सू

- 13 अगस्त पंचमी शुक्रवार
14 अगस्त षष्ठी शनिवार
7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
10 अक्टूबर पंचमी रविवार
11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
13 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.
20 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार
21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
23 अक्टूबर तृतीया शनिवार
24 अक्टूबर चतुर्थी रविवार
30 अक्टूबर नवमी शनिवार
31 अक्टूबर दशमी रविवार
1 नवम्बर एकादशी सोमवार
3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
6 नवम्बर द्वितीया शनिवार
7 नवम्बर तृतीया रविवार
8 नवम्बर चतुर्थी सोमवार
10 नवम्बर षष्ठी बुधवार
11 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
12 नवम्बर नवमी शुक्रवार

सू

सू

चं

चं

चं

चं

- 14 नवम्बर एकादशी रविवार चं
 17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार सू
 21 नवम्बर द्वितीया रविवार सू
 22 नवम्बर तृतीया सोमवार सू
 27 नवम्बर अष्टमी शनिवार सू
 28 नवम्बर नवमी रविवार सू
 29 नवम्बर दशमी सोमवार सू
 1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार सू
 2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार सू
 9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार सू
 11 दिसम्बर अष्टमी शनिवार सू
 20 जनवरी द्वितीया गुरुवार चं
 21 जनवरी तृतीया शुक्रवार
 22 जनवरी चतुर्थी शनिवार
 23 जनवरी पंचमी रविवार
 24 जनवरी षष्ठी सोमवार
 27 जनवरी दशमी गुरुवार चं
 2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार
 4 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
 5 फरवरी पंचमी शनिवार
 6 फरवरी षष्ठी रविवार चं
 7 फरवरी सप्तमी सोमवार

- 9 फरवरी अष्टमी बुधवार
 10 फरवरी नवमी गुरुवार
 16 फरवरी पूर्णिमा बुधवार चं
 卐 卐 卐 卐 卐

वृष कन्या मकर

- 25 अप्रेल त्रयोदशी रविवार सू
 26 अप्रेल चतुर्दशी सोमवार सू
 28 अप्रेल द्वितीया बुधवार सू
 29 अप्रेल तृतीया गुरुवार सू
 3 मई सप्तमी सोमवार सू
 7 मई एकादशी शुक्रवार सू
 8 मई द्वादशी शनिवार सू
 9 मई त्रयोदशी रविवार सू
 19 मई सप्तमी बुधवार
 20 मई अष्टमी गुरुवार चं
 21 मई नवमी शुक्रवार चं
 22 मई दशमी शनिवार
 24 मई त्रयोदशी सोमवार
 27 मई प्रतिपदा गुरुवार
 28 मई द्वितीया शुक्रवार चं

- 30 मई पंचमी रविवार
 31 मई षष्ठी सोमवार
 3 जून नवमी गुरुवार
 4 जून दशमी शुक्रवार
 9 जून चतुर्दशी बुधवार
 16 जून षष्ठी बुधवार चं
 17 जून सप्तमी गुरुवार चं
 18 जून अष्टमी शुक्रवार
 19 जून नवमी शनिवार
 20 जून दशमी रविवार
 21 जून एकादशी सोमवार
 23 जून त्रयोदशी बुधवार
 24 जून पूर्णिमा गुरुवार
 26 जून द्वितीया शनिवार
 27 जून तृतीया रविवार
 1 जुलाई सप्तमी गुरुवार
 2 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
 3 जुलाई नवमी शनिवार चं
 7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
 8 जुलाई चतुर्दशी गुरुवार
 17 जुलाई अष्टमी शनिवार
 18 जुलाई नवमी रविवार

- 19 जुलाई दशमी सोमवार
 21 जुलाई द्वादशी बुधवार
 22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार चं
 23 जुलाई चतुर्दशी शुक्रवार चं
 24 जुलाई पूर्णिमा शनिवार
 26 जुलाई तृतीया सोमवार
 28 जुलाई पंचमी बुधवार
 29 जुलाई षष्ठी गुरुवार
 30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
 2 अगस्त नवमी सोमवार
 11 अगस्त तृतीया बुधवार चं
 12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
 13 अगस्त पंचमी शुक्रवार
 14 अगस्त षष्ठी शनिवार
 7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
 8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
 10 अक्टूबर पंचमी रविवार
 11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार चं
 13 अक्टूबर अष्टमी बुधवार चं
 18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.
 20 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार
 21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार चं

- 23 अक्टूबर तृतीया शनिवार
 24 अक्टूबर चतुर्थी रविवार
 30 अक्टूबर नवमी शनिवार
 31 अक्टूबर दशमी रविवार चं
 1 नवम्बर एकादशी सोमवार चं
 3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
 6 नवम्बर द्वितीया शनिवार
 7 नवम्बर तृतीया रविवार
 8 नवम्बर चतुर्थी सोमवार चं
 10 नवम्बर षष्ठी बुधवार
 11 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
 12 नवम्बर नवमी शुक्रवार
 14 नवम्बर एकादशी रविवार
 17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार चं
 21 नवम्बर द्वितीया रविवार
 22 नवम्बर तृतीया सोमवार
 26 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
 27 नवम्बर अष्टमी शनिवार चं
 28 नवम्बर नवमी रविवार चं
 29 नवम्बर दशमी सोमवार
 1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
 2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार

- 9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
 11 दिसम्बर अष्टमी शनिवार
 12 दिसम्बर नवमी रविवार
 13 दिसम्बर दशमी सोमवार
 20 जनवरी द्वितीया गुरुवार
 21 जनवरी तृतीया शुक्रवार चं
 22 जनवरी चतुर्थी शनिवार चं
 23 जनवरी पंचमी रविवार
 24 जनवरी षष्ठी सोमवार
 27 जनवरी दशमी गुरुवार
 2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार
 4 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
 5 फरवरी पंचमी शनिवार
 6 फरवरी षष्ठी रविवार
 7 फरवरी सप्तमी सोमवार चं
 9 फरवरी अष्टमी बुधवार
 10 फरवरी नवमी गुरुवार
 16 फरवरी पूर्णिमा बुधवार



मिथुन तुला कुम्भ

- 24 अप्रेल द्वादशी शनिवार
 25 अप्रेल त्रयोदशी रविवार चं
 26 अप्रेल चतुर्दशी सोमवार
 28 अप्रेल द्वितीया बुधवार
 29 अप्रेल तृतीया गुरुवार
 30 अप्रेल चतुर्थी शुक्रवार
 2 मई षष्ठी रविवार
 3 मई सप्तमी सोमवार चं
 7 मई एकादशी शुक्रवार
 8 मई द्वादशी शनिवार
 9 मई त्रयोदशी रविवार
 10 मई चतुर्दशी सोमवार
 19 मई सप्तमी बुधवार सू
 20 मई अष्टमी गुरुवार सू
 21 मई नवमी शुक्रवार सू
 22 मई दशमी शनिवार सू
 24 मई त्रयोदशी सोमवार सू
 27 मई प्रतिपदा गुरुवार सू
 28 मई द्वितीया शुक्रवार सू

- 3 जून नवमी गुरुवार सू
 4 जून दशमी शुक्रवार सू
 16 जून षष्ठी बुधवार
 17 जून सप्तमी गुरुवार
 18 जून अष्टमी शुक्रवार चं
 19 जून नवमी शनिवार चं
 20 जून दशमी रविवार
 21 जून एकादशी सोमवार
 23 जून त्रयोदशी बुधवार
 24 जून पूर्णिमा गुरुवार
 26 जून द्वितीया शनिवार चं
 27 जून तृतीया रविवार चं
 1 जुलाई सप्तमी गुरुवार
 2 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
 3 जुलाई नवमी शनिवार
 7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार चं
 8 जुलाई चतुर्दशी गुरुवार
 17 जुलाई अष्टमी शनिवार चं
 18 जुलाई नवमी रविवार
 19 जुलाई दशमी सोमवार
 21 जुलाई द्वादशी बुधवार
 22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार

23 जुलाई चतुर्दशी शुक्रवार	
24 जुलाई पूर्णिमा शनिवार	चं
26 जुलाई तृतीया सोमवार	
28 जुलाई पंचमी बुधवार	
29 जुलाई षष्ठी गुरुवार	
30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार	
2 अगस्त नवमी सोमवार	चं
11 अगस्त तृतीया बुधवार	
12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार	चं
13 अगस्त पंचमी शुक्रवार	चं
14 अगस्त षष्ठी शनिवार	
18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.	गु
20 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार	गु
21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार	गु
30 अक्टूबर नवमी शनिवार	गु
31 अक्टूबर दशमी रविवार	गु
1 नवम्बर एकादशी सोमवार	गु
6 नवम्बर द्वितीया शनिवार	गु
7 नवम्बर तृतीया रविवार	गु
8 नवम्बर चतुर्थी सोमवार	गु
12 नवम्बर नवमी शुक्रवार	गु
14 नवम्बर एकादशी रविवार	गु

17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार	गु
21 नवम्बर द्वितीया रविवार	
22 नवम्बर तृतीया सोमवार	
26 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार	
27 नवम्बर अष्टमी शनिवार	
28 नवम्बर नवमी रविवार	
29 नवम्बर दशमी सोमवार	चं
1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार	
2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार	
9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार	
11 दिसम्बर अष्टमी शनिवार	
12 दिसम्बर नवमी रविवार	
13 दिसम्बर दशमी सोमवार	
20 जनवरी द्वितीया गुरुवार	सू
21 जनवरी तृतीया शुक्रवार	सू
22 जनवरी चतुर्थी शनिवार	सू
24 जनवरी षष्ठी सोमवार	सू
27 जनवरी दशमी गुरुवार	सू
2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार	सू
4 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार	सू
5 फरवरी पंचमी शनिवार	सू
6 फरवरी षष्ठी रविवार	सू

7 फरवरी सप्तमी सोमवार सू
16 फरवरी पूर्णिमा बुधवार



कर्क वृश्चिक मीन

24 अप्रैल द्वादशी शनिवार	गु
25 अप्रैल त्रयोदशी रविवार	गु
28 अप्रैल द्वितीया बुधवार	गु
29 अप्रैल तृतीया गुरुवार	गु
30 अप्रैल चतुर्थी शुक्रवार	गु
2 मई षष्ठी रविवार	गु
3 मई सप्तमी सोमवार	गु
7 मई एकादशी शुक्रवार	गु
8 मई द्वादशी शनिवार	गु
9 मई त्रयोदशी रविवार	गु
10 मई चतुर्दशी सोमवार	गु
19 मई सप्तमी बुधवार	गु
20 मई अष्टमी गुरुवार	गु
21 मई नवमी शुक्रवार	गु
22 मई दशमी शनिवार	गु
24 मई त्रयोदशी सोमवार	गु

27 मई प्रतिपदा गुरुवार	गु
28 मई द्वितीया शुक्रवार	गु
30 मई पंचमी रविवार	गु
31 मई षष्ठी सोमवार	गु
3 जून नवमी गुरुवार	गु
4 जून दशमी शुक्रवार	गु
9 जून चतुर्दशी बुधवार	गु
17 जुलाई अष्टमी शनिवार	गु
21 जुलाई द्वादशी बुधवार	गु
22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार	गु
23 जुलाई चतुर्दशी शुक्रवार	गु
24 जुलाई पूर्णिमा शनिवार	गु
28 जुलाई पंचमी बुधवार	गु
29 जुलाई षष्ठी गुरुवार	गु
30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार	गु
2 अगस्त नवमी सोमवार	गु
11 अगस्त तृतीया बुधवार	गु
12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार	गु
13 अगस्त पंचमी शुक्रवार	गु
7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार	चं
8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार	चं
10 अक्टूबर पंचमी रविवार	

11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार	
13 अक्टूबर अष्टमी बुधवार	
18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.	सू
20 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार	सू
21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार	सू
23 अक्टूबर तृतीया शनिवार	सू
24 अक्टूबर चतुर्थी रविवार	सू
30 अक्टूबर नवमी शनिवार	सू
31 अक्टूबर दशमी रविवार	सू
1 नवम्बर एकादशी सोमवार	सू
3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार	सू
6 नवम्बर द्वितीया शनिवार	सू
7 नवम्बर तृतीया रविवार	सू
8 नवम्बर चतुर्थी सोमवार	सू
10 नवम्बर षष्ठी बुधवार	सू
11 नवम्बर अष्टमी गुरुवार	सू
17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार	
21 नवम्बर द्वितीया रविवार	गु
26 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार	गु
27 नवम्बर अष्टमी शनिवार	गु
28 नवम्बर नवमी रविवार	गु
29 नवम्बर दशमी सोमवार	गु

12 दिसम्बर नवमी रविवार	गु
13 दिसम्बर दशमी सोमवार	गु
20 जनवरी द्वितीया गुरुवार	गु
21 जनवरी तृतीया शुक्रवार	गु
22 जनवरी चतुर्थी शनिवार	गु

23 जनवरी पंचमी रविवार	गु
24 जनवरी षष्ठी सोमवार	गु
27 जनवरी दशमी गुरुवार	गु
5 फरवरी पंचमी शनिवार	गु
6 फरवरी षष्ठी रविवार	गु

7 फरवरी सप्तमी सोमवार	गु
9 फरवरी अष्टमी बुधवार	गु
10 फरवरी नवमी गुरुवार	गु



सूर्य देव को जल देने की विधि !

अगर आप सूर्य देव की आराधना द्वारा सूर्य देव को प्रसन्न कर लेते हैं तो आपके जीवन से हर बाधा दूर होने लगती है व जीवन में खुशियों का संचार होने लगता है। आइये जानते हैं किन-किन जातकों को सूर्य देव को जल देना चाहिए या उनकी उपासना करनी चाहिए : - जिन लोगों की कुंडली सूर्य देव कमजोर हो, आत्मविश्वास की कमी हो उन्हें सूर्य को जल अवश्य देना चाहिए। जो व्यक्ति एक निराशावादी जीवन जी रहा है उसे सूर्य देव की उपासना अवश्य करनी चाहिए। जो जातक घर-परिवार में और समाज में मान-सम्मान चाहते हैं उन्हें भी सूर्य पूजा करनी चाहिए।

सूर्य उदय के एक घंटे तक ही सूर्य को जल देना चाहिए। सुबह-सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर किसी खुले स्थान में जाए जहाँ से सूर्य आपको स्पष्ट दिखाई देता हो। एक ताम्बे के पात्र में जल भरकर इसमें थोड़े चावल, थोड़ी चीनी, पुष्प डाले व कुमकुम द्वारा जल में छीटे लगाये। अब आप सूर्य देव के सामने खड़े होकर ताम्बे के पात्र द्वारा दोनों हाथों से जल नीचे जमीन पर छोड़ते जाये। ध्यान दे, ताम्बे के पात्र को अपने सीने के सामने रखे और सूर्य देव को जल अर्पित करते हुए पात्र को कंधों से ऊपर तक ले जाने का प्रयास करें। पात्र द्वारा नीचे गिरने वाली जलधारा में सूर्य के प्रतिबिम्ब को देखने का प्रयास करें। सूर्य को जल देते समय निरंतर इस मंत्र के जप करते जाए : " ॐ सूर्याय नमः "। सूर्य को जल देने के उपरान्त नीचे झुककर जल को स्पर्श करे और अंत में खड़े होकर हाथ जोड़ते हुए सूर्य देव को प्रणाम करें।

विक्रमी 2078 के (गण्डन साथ)

वाग्दान मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 अप्रैल त्रयोदशी रविवार
4-13 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रैल द्वितीया बुधवार
5-12 सायं से
29 अप्रैल तृतीया गुरुवार
2-29 दिन तक

2 मई षष्ठी रविवार
3 मई सप्तमी सोमवार
6 मई दशमी गुरुवार
10-32 दिन से

7 मई एकादशी शुक्रवार
9 मई त्रयोदशी रविवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

21 मई नवमी शुक्रवार
11-11 दिन से
24 मई त्रयोदशी सोमवार
9-49 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

30 मई पंचमी रविवार
31 मई षष्ठी सोमवार
4 जून दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

11 जून प्रतिपदा शुक्रवार
2-30 दिन तक
16 जून षष्ठी बुधवार
17 जून सप्तमी गुरुवार
21 जून एकादशी सोमवार
4-45 दिन तक
24 जून पूर्णिमा गुरुवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

25 जून प्रतिपदा शुक्रवार
27 जून तृतीया रविवार
3-54 दिन तक
30 जून षष्ठी बुधवार
1 जुलाई सप्तमी गुरुवार
2-02 दिन तक
7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

14 जुलाई चतुर्थी बुधवार
22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार
1-33 दिन तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

26 जुलाई तृतीया सोमवार
10-26 दिन तक
28 जुलाई पंचमी बुधवार
29 जुलाई षष्ठी गुरुवार
30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
2-02 दिन तक

4 अगस्त एकादशी बुधवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

9 अगस्त प्रतिपदा सोमवार
9-50 प्रातः से
11 अगस्त तृतीया बुधवार

4-54 दिन तक
12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
3-25 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
10 अक्टूबर पंचमी रविवार
2-44 दिन तक
11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
12-55 दिन से
15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.

कार्तिक कृष्ण पक्ष

25 अक्टूबर पंचमी सोमवार
31 अक्टूबर दशमी रविवार
1 नवम्बर एकादशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

8 नवम्बर चतुर्थी सोमवार
1-17 दिन से

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार
14 नवम्बर एकादशी रविवार

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर द्वितीया रविवार
22 नवम्बर तृतीया सोमवार
10-43 दिन तक
29 नवम्बर दशमी सोमवार
2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार
4-27 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

6 दिसम्बर तृतीया सोमवार
8 दिसम्बर पंचमी बुधवार
9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
13 दिसम्बर दशमी सोमवार

माघ कृष्ण पक्ष

20 जनवरी द्वितीया गुरुवार
23 जनवरी पंचमी रविवार
24 जनवरी षष्ठी सोमवार
24 जनवरी षष्ठी सोमवार
11-15 दिन तक

27 जनवरी दशमी गुरुवार
30 जनवरी त्रयोदशी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार
5-53 सायं तक

3 फरवरी तृतीया गुरुवार
4-34 दिन से

6 फरवरी षष्ठी रविवार
5-10 सायं तक

10 फरवरी नवमी गुरुवार
11-08 दिन से

16 फरवरी पूर्णिमा बुधवार
3-14 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

17 फरवरी प्रतिपदा गुरुवार
4-10 दिन तक

हमारी संस्कृति के प्रतीक:-

श्री कृष्ण का मानव जीवन जीने का उपदेश:

चिन्तया जायते दुःखं नान्यथेहेति निश्चयी।

तया हीनः सुखी शान्तः सर्वत्र गलितस्पृहः॥

भावार्थ : चिन्ता से ही दुःख उत्पन्न होते हैं किसी अन्य कारण से नहीं, ऐसा निश्चित रूप से जानने वाला,

विक्रमी 2078 (ईस्वी 2021-22) के

कन् साथ

(शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रेल तृतीया गुरुवार
6-37 प्रातः से
8-31 प्रातः तक (वृ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

24 मई त्रयोदशी सोमवार
11-31 दिन से
1-53 दिन तक (सिं)

श्रावण कृष्ण पक्ष

26 जुलाई तृतीया सोमवार

9-45 प्रातः से
10-26 दिन तक (कं)

28 जुलाई पंचमी बुधवार
10-45 दिन से
11-58 दिन तक (कं)

29 जुलाई षष्ठी गुरुवार
9-34 प्रातः से
11-54 दिन तक (कं)

30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
9-30 प्रातः से
11-50 दिन तक (कं)

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया बुधवार
9-32 प्रातः से
11-03 दिन तक (कं)

14 अगस्त षष्ठी शनिवार
8-31 प्रातः से
10-51 दिन तक (कं)

भाद्र कृष्ण पक्ष

25 अगस्त तृतीया बुधवार
7-47 प्रातः से
10-08 दिन तक (कं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.
11-20 दिन से
1-22 दिन तक (धं)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

28 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार
10-40 दिन से
12-43 दिन तक (धं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर द्वितीया शनिवार
10-05 प्रातः से
12-07 दिन तक (धं)

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार
9-57 प्रातः से
11-52 दिन तक (धं)

17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
9-22 दिन से
11-24 दिन तक (धं)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

22 नवम्बर तृतीया सोमवार
9-02 प्रातः से
10-43 प्रातः तक (धं)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

1-29 दिन से

2-49 दिन तक (मी)

13 दिसम्बर दशमी सोमवार

11-21 दिन से

12-46 दिन तक (कुँ)

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी शनिवार

10-38 प्रातः से

11-28 दिन तक (मी)

24 जनवरी षष्ठी सोमवार

10-01 दिन से

11-20 दिन तक (मी)

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार

9-25 प्रातः से

10-45 दिन तक (मी)

5 फरवरी पंचमी शनिवार

7-48 प्रातः से

9-13 प्रातः तक (कुँ)



हमारी संस्कृति के प्रतीक:- मकान बनवाने के बाद हम हवन, गृह प्रवेश पूजा पाठ आदि क्यों करवाते हैं? गृह प्रवेश के समय यज्ञ, रामायण पाठ या गृह प्रवेश पूजा कराने से अनावश्यक गृह दोष का निवारण हो जाता है, घर में लक्ष्मी का आगमन होता है। समस्त कुप्रभावों को नष्ट करने के लिए हम गृह प्रवेश पूजा कराते हैं जिससे घर में सदैव सुख शान्ति व खुशहाली रहती है। और शान्त मन तथा प्रसन्न चित होने से उस समय घर में प्रवेश करो तो सदैव प्रसन्नता कायम रहती है।

विक्रमी 2078 (ईस्वी 2021-22) के

गृह प्रवेश मुहूर्त

(नये मकान या फ्लैट में प्रवेश के मुहूर्त)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया गुरुवार

1-14 दिन से

2-29 दिन तक (सिं)

वैशाख शुक्ल पक्ष

21 मई नवमी शुक्रवार

3-22 दिन से

4-25 दिन तक (कं)

22 मई दशमी शनिवार

11-39 दिन से

2-01 दिन तक (सिं)

24 मई त्रयोदशी सोमवार

11-31 दिन से

1-53 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

21 जून एकादशी सोमवार

9-41 दिन से

12-03 दिन तक (सिं)

12-03 दिन से

2-24 दिन तक (कं)

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

26 जून द्वितीया शनिवार
 9-22 प्रातः से
 11-43 दिन तक (सिं)
 11-43 दिन से
 2-04 दिन तक (कं)
आश्विन शुक्ल पक्ष
 7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
 12-03 दिन से
 2-05 दिन तक (धं)
 8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
 11-59 दिन से
 2-01 दिन तक (धं)
 18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.
 11-20 दिन से
 1-22 दिन तक (धं)
कार्तिक शुक्ल पक्ष
 6 नवम्बर द्वितीया शनिवार

10-05 प्रातः से
 12-07 दिन तक (धं)
 1-46 दिन से
 3-11 दिन तक (कुं)
 10 नवम्बर षष्ठी बुधवार
 9-57 प्रातः से
 11-52 दिन तक (धं)
 1-30 दिन से
 2-56 दिन तक (कुं)
 13 नवम्बर दशमी शनिवार
 9-37 प्रातः से
 11-40 दिन तक (धं)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
 22 नवम्बर तृतीया सोमवार
 9-02 प्रातः से
 10-43 प्रातः तक (धं)
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
 1-29 दिन से
 2-49 दिन तक (मी)
 10 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार
 7-51 प्रातः से
 9-54 प्रातः तक (धं)
 12-58 दिन से
 2-17 दिन तक (मी)
 13 दिसम्बर दशमी सोमवार
 7-39 प्रातः से
 9-42 प्रातः तक (धं)
 12-46 दिन से
 2-05 दिन तक (मी)
माघ कृष्ण पक्ष
 22 जनवरी चतुर्थी शनिवार
 10-38 प्रातः से
 11-28 दिन तक (मी)

माघ शुक्ल पक्ष
 2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार
 9-25 प्रातः से
 10-45 दिन तक (मी)
 5 फरवरी पंचमी शनिवार
 1-58 दिन से
 4-13 दिन तक (मि)
 14 फरवरी त्रयोदशी सोम.
 8-38 प्रातः से
 9-58 प्रातः तक (मी)

आवश्यक सूचना:-

22 फरवरी 2022 से
 23 मार्च 2022 तक गुरु अस्त
 व 19 मार्च 2022 से 1 अप्रैल
 2022 तक चैत्र कृष्ण पक्ष के
 रहने से मेखला, विवाह व अन्य
 मुहूर्त त्याज्य रहेंगे।

विक्रमी 2078 के

लेन्टर (छत) डालने के मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 अप्रेल त्रयोदशी रविवार
4-13 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रेल तृतीया गुरुवार
2-29 दिन तक

3 मई सप्तमी सोमवार
1-40 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

16 मई चतुर्थी रविवार
10-01 दिन से
17 मई पंचमी सोमवार

21 मई नवमी शुक्रवार
3-22 दिन से

24 मई त्रयोदशी सोमवार
9-49 प्रातः से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

30 मई पंचमी रविवार
31 मई षष्ठी सोमवार
4-01 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया रविवार
21 जून एकादशी सोमवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया रविवार
3-54 दिन तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

11 जुलाई प्रतिपदा रविवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

4 अगस्त एकादशी बुधवार
5 अगस्त द्वादशी गुरुवार
6 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया बुधवार
9-32 प्रातः से
12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
3-25 दिन से

13 अगस्त पंचमी शुक्रवार
7-59 प्रातः तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
10 अक्टूबर पंचमी रविवार
2-44 दिन तक

15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
9-16 प्रातः तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

25 अक्टूबर पंचमी सोमवार
27 अक्टूबर षष्ठी बुधवार
28 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार
12-49 दिन तक

1 नवम्बर एकादशी सोमवार
12-52 दिन से
3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
9-02 प्रातः तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

- 21 नवम्बर द्वितीया रविवार
- 22 नवम्बर तृतीया सोमवार
- 24 नवम्बर पंचमी बुधवार
- 25 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
- 29 नवम्बर दशमी सोमवार
- 2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

- 8 दिसम्बर पंचमी बुधवार

माघ कृष्ण पक्ष

- 23 जनवरी पंचमी रविवार
- 24 जनवरी षष्ठी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

- 14 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

काहनेथर साथ

ज्ञातकर्म मुहूर्त / नामकरण मुहूर्त

(विक्रमी 2078 के लिए)

वैशाख कृष्ण पक्ष

- 29 अप्रैल तृतीया गुरुवार
- 2-29 दिन तक
- 3 मई सप्तमी सोमवार
- 1-40 दिन तक
- 5 मई नवमी बुधवार
- 1-22 दिन से
- 6 मई दशमी गुरुवार
- 10-32 दिन तक
- 7 मई एकादशी शुक्रवार
- 12-26 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

- 17 मई पंचमी सोमवार
 - 21 मई नवमी शुक्रवार
 - 3-22 दिन से
 - 24 मई त्रयोदशी सोमवार
- ## ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
- 31 मई षष्ठी सोमवार
- ## ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
- 4 जून दशमी शुक्रवार
 - 21 जून एकादशी सोमवार
 - 23 जून त्रयोदशी बुधवार

11-38 दिन तक

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

- 28 जून चतुर्थी सोमवार
- 2-16 दिन से
- 1 जुलाई सप्तमी गुरुवार
- 2-02 दिन तक
- 7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

- 22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

- 26 जुलाई तृतीया सोमवार
- 28 जुलाई पंचमी बुधवार
- 10-45 दिन से
- 29 जुलाई षष्ठी गुरुवार
- 30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
- 4 अगस्त एकादशी बुधवार

6 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया बुधवार

9-32 प्रातः से

4-54 दिन तक

13 अगस्त पंचमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.

10-49 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

25 अक्टूबर पंचमी सोमवार

27 अक्टूबर षष्ठी बुधवार

7-08 प्रातः से

28 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार

12-49 दिन तक

1 नवम्बर एकादशी सोमवार

12-52 दिन से

3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-02 प्रातः तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार

17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-50 प्रातः तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

22 नवम्बर तृतीया सोमवार

10-43 दिन तक

24 नवम्बर पंचमी बुधवार

25 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

29 नवम्बर दशमी सोमवार

1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

8 दिसम्बर पंचमी बुधवार

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

10 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार

13 दिसम्बर दशमी सोमवार

माघ कृष्ण पक्ष

24 जनवरी षष्ठी सोमवार

27 जनवरी दशमी गुरुवार

8-51 प्रातः से

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार

8-31 प्रातः से

3 फरवरी तृतीया गुरुवार

4-34 दिन तक

7 फरवरी सप्तमी सोमवार

14 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

विक्रमी 2078 के

नव वस्त्र

धारण मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 अप्रैल त्रयोदशी रविवार

4-13 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रैल द्वितीया बुधवार

5-12 सायं से

29 अप्रैल तृतीया गुरुवार

2-29 दिन तक

9 मई त्रयोदशी रविवार

5-58 सायं से

वैशाख शुक्ल पक्ष

21 मई नवमी शुक्रवार

3-22 दिन से

24 मई त्रयोदशी सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

30 मई पंचमी रविवार

31 मई षष्ठी सोमवार

4-01 दिन से

6 जून एकादशी रविवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

18 जून अष्टमी शुक्रवार

20 जून दशमी रविवार

21 जून एकादशी सोमवार

23 जून त्रयोदशी बुधवार

11-38 दिन तक

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

4 जुलाई दशमी रविवार

9-05 प्रातः तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

19 जुलाई दशमी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

2-02 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया बुधवार

9-32 प्रातः से

4-54 दिन तक

12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार

3-25 दिन से

13 अगस्त पंचमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

10 अक्टूबर पंचमी रविवार

2-44 दिन तक

15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

9-16 प्रातः से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

1 नवम्बर एकादशी सोमवार

12-52 दिन से

3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-02 प्रातः तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

5 नवम्बर प्रतिपदा शुक्रवार

11 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

2-59 दिन से

17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-50 प्रातः तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

29 नवम्बर दशमी सोमवार

1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

10-27 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

23 जनवरी पंचमी रविवार

24 जनवरी षष्ठी सोमवार

26 जनवरी नवमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

7 फरवरी सप्तमी सोमवार



विक्रमी 2078 के

विद्यारम्भ मुहूर्त

What is the purpose of Vidhyarambh ceremony?

The word *vidya* means *knowledge* and *arambh* denotes *beginning*. Education of the child is a very important aspect of life and deserves all the importance it can be given. In the *Jyotiribandh* it is said

विद्यया लुप्यते पापं विद्ययाऽयुः प्रवर्धते।

विद्यया सर्वसिद्धिः स्याद्विद्ययामृमश्नुते ॥

With the study of Vedas all sins are eliminated. One lives longer. One succeeds in every thing. The nectar of learning comes just like normal food and water.

The religious text explains the one who is not knowledgeable is deprived of wonderful fruit like morality.

चैत्र शुक्ल पक्ष

23 अप्रेल एकादशी शुक्रवार
7-41 प्रातः से

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रेल द्वितीया बुधवार
5-12 सायं से

29 अप्रेल तृतीया गुरुवार
2-29 दिन तक

2 मई षष्ठी रविवार
5 मई नवमी बुधवार
1-22 दिन से

6 मई दशमी गुरुवार
7 मई एकादशी शुक्रवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

16 मई चतुर्थी रविवार
10-01 दिन से

21 मई नवमी शुक्रवार
11-11 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

28 मई द्वितीया शुक्रवार
30 मई पंचमी रविवार
4 जून दशमी शुक्रवार

6 जून एकादशी रविवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

11 जून प्रतिपदा शुक्रवार
6-31 सायं से

13 जून तृतीया रविवार
20 जून दशमी रविवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया रविवार
30 जून षष्ठी बुधवार
4 जुलाई दशमी रविवार
9-05 प्रातः तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

11 जुलाई प्रतिपदा रविवार
7-47 प्रातः से

14 जुलाई चतुर्थी बुधवार
8-03 प्रातः से

श्रावन कृष्ण पक्ष

28 जुलाई पंचमी बुधवार
29 जुलाई षष्ठी गुरुवार
4 अगस्त एकादशी बुधवार
5 अगस्त द्वादशी गुरुवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया बुधवार

12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
3-25 दिन से

13 अगस्त पंचमी शुक्रवार
आश्विन शुक्ल पक्ष

8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
10 अक्टूबर पंचमी रविवार
2-44 दिन तक

15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
कार्तिक कृष्ण पक्ष

27 अक्टूबर षष्ठी बुधवार
10-51 दिन तक

31 अक्टूबर दशमी रविवार
1-16 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार
8-25 प्रातः तक

14 नवम्बर एकादशी रविवार
मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर द्वितीया रविवार
24 नवम्बर पंचमी बुधवार
25 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
मार्ग शुक्ल पक्ष

8 दिसम्बर पंचमी बुधवार
9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

19 जनवरी द्वितीया बुधवार
20 जनवरी द्वितीया गुरुवार

8-24 प्रातः तक

23 जनवरी पंचमी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार

8-31 प्रातः से

3 फरवरी तृतीया गुरुवार

6 फरवरी षष्ठी रविवार

5-10 सायं से

10 फरवरी नवमी गुरुवार

11-08 दिन से

(विक्रमी 2078 के लिए)

अन्न प्राशन मुहूर्त

अथा अन्नप्राशनं कुर्यात्,

षष्ठे मासि विधानतः॥

बालक का अन्न-प्राशन संस्कार
छठे मास में ही करना चाहिये।

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया गुरुवार

2-29 दिन तक

3 मई सप्तमी सोमवार

1-40 दिन तक

5 मई नवमी बुधवार

1-22 दिन से

6 मई दशमी गुरुवार

10-32 दिन तक

7 मई एकादशी शुक्रवार

12-26 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी सोमवार

21 मई नवमी शुक्रवार

3-22 दिन से

24 मई त्रयोदशी सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

31 मई षष्ठी सोमवार

4 जून दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

21 जून एकादशी सोमवार

23 जून त्रयोदशी बुधवार

11-38 दिन तक

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

28 जून चतुर्थी सोमवार

2-16 दिन से

1 जुलाई सप्तमी गुरुवार

2-02 दिन तक

7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

28 जुलाई पंचमी बुधवार

10-45 दिन से

29 जुलाई षष्ठी गुरुवार

30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

4 अगस्त एकादशी बुधवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया बुधवार

9-32 प्रातः से

4-54 दिन तक

13 अगस्त पंचमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.

10-49 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

25 अक्टूबर पंचमी सोमवार

27 अक्टूबर षष्ठी बुधवार

7-08 प्रातः से

28 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार

12-49 दिन तक

1 नवम्बर एकादशी सोमवार

12-52 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार

17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-50 प्रातः तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

22 नवम्बर तृतीया सोमवार

10-43 दिन तक

24 नवम्बर पंचमी बुधवार

25 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

29 नवम्बर दशमी सोमवार

1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

8 दिसम्बर पंचमी बुधवार

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

10 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार

13 दिसम्बर दशमी सोमवार

माघ कृष्ण पक्ष

24 जनवरी षष्ठी सोमवार

27 जनवरी दशमी गुरुवार

8-51 प्रातः से

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार

8-31 प्रातः से

3 फरवरी तृतीया गुरुवार

4-34 दिन तक

7 फरवरी सप्तमी सोमवार

14 फरवरी त्रयोदशी सोम.



जर-कासय साथ

चूढाकर्म मुहूर्त (विक्रमी 2078 के लिए)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रेल तृतीया गुरुवार
10-46 दिन से
1-10 दिन तक (क)

वैशाख शुक्ल पक्ष

24 मई त्रयोदशी सोमवार
9-08 प्रातः से
11-31 दिन तक (क)
11-31 दिन से
1-53 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

21 जून एकादशी सोमवार
7-18 प्रातः से
9-41 प्रातः तक (क)
9-41 प्रातः से
12-03 दिन तक (सिं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.
11-20 दिन से
1-22 दिन तक (धं)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

8-47 प्रातः से
11-08 दिन तक (वृं)
11-08 दिन से
1-10 दिन तक (धं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
7-03 प्रातः से
9-22 प्रातः तक (वृं)
9-22 प्रातः से
11-24 दिन तक (धं)

मार्ग कृष्ण पक्ष

22 नवम्बर तृतीया सोमवार
9-02 प्रातः से
10-43 दिन तक (धं)

24 नवम्बर पंचमी बुधवार
8-54 प्रातः से
10-57 दिन तक (धं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
10-27 दिन से
11-36 दिन तक (म)

10 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार
7-51 प्रातः से
9-54 प्रातः तक (धं)
11-32 दिन से
12-58 दिन तक (कुं)

13 दिसम्बर दशमी सोमवार
7-39 प्रातः से
9-42 दिन तक (धं)
11-21 दिन से
12-46 दिन तक (कुं)

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार
9-25 प्रातः से

- 10-45 दिन तक (मी)
 10-45 दिन से
 12-16 दिन तक (मे)
 7 फरवरी सप्तमी सोमवार
 9-06 प्रातः से
 10-25 प्रातः तक (मी)
 10-25 प्रातः से
 11-56 दिन तक (मे)
 10 फरवरी नवमी गुरुवार
 11-08 दिन से
 11-45 दिन तक (मे)
 14 फरवरी त्रयोदशी सोमवार
 8-38 प्रातः से
 9-58 प्रातः तक (मी)
 9-58 प्रातः से
 11-29 दिन तक (मे)

विक्रमी 2078 के दिवच क्षीर मुहूर्त

- चैत्र शुक्ल पक्ष
 25 अप्रेल त्रयोदशी रविवार
 4-13 दिन तक
 वैशाख कृष्ण पक्ष
 28 अप्रेल द्वितीया गुधवार
 29 अप्रेल तृतीया गुरुवार
 2-29 दिन तक
 2 मई षष्ठी रविवार
 8-59 प्रातः से
 3 मई सप्तमी सोमवार

- वैशाख शुक्ल पक्ष
 16 मई चतुर्थी रविवार
 10-01 दिन से
 17 मई पंचमी सोमवार
 24 मई त्रयोदशी सोमवार
 ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
 30 मई पंचमी रविवार
 31 मई षष्ठी सोमवार
 6 जून एकादशी रविवार
 ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
 11 जून प्रतिपदा शुक्रवार
 2-30 दिन से
 13 जून तृतीया रविवार
 18 जून अष्टमी शुक्रवार
 20 जून दशमी रविवार
 21 जून एकादशी सोमवार

- 23 जून त्रयोदशी बुधवार
 आषाढ़ कृष्ण पक्ष
 27 जून तृतीया रविवार
 3-24 दिन तक
 4 जुलाई दशमी रविवार
 9-05 प्रातः तक
 आषाढ़ शुक्ल पक्ष
 11 जुलाई प्रतिपदा रविवार
 19 जुलाई दशमी सोमवार
 श्रावण कृष्ण पक्ष
 5 अगस्त द्वादशी गुरुवार
 6 अगस्त त्रयोदशी शुक्र.
 श्रावण शुक्ल पक्ष
 12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
 3-25 दिन से
 13 अगस्त पंचमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

- 7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
10 अक्टूबर पंचमी रविवार
2-44 दिन तक
13 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

- 21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
4-17 दिन तक
27 अक्टूबर षष्ठी बुधवार
28 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार
29 अक्टूबर अष्टमी शुक्रवार
11-38 दिन तक
1 नवम्बर एकादशी सोमवार
12-52 दिन से
3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-02 प्रातः तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

- 5 नवम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
10 नवम्बर षष्ठी बुधवार
11 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
9-50 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

- 22 नवम्बर तृतीया सोमवार
10-43 दिन से
24 नवम्बर पंचमी बुधवार
25 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
29 नवम्बर दशमी सोमवार
1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार
मार्ग शुक्ल पक्ष

8 दिसम्बर पंचमी बुधवार

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

9-30 प्रातः तक

माघ कृष्ण पक्ष

- 23 जनवरी पंचमी रविवार
24 जनवरी षष्ठी सोमवार
27 जनवरी दशमी गुरुवार

माघ शुक्ल पक्ष

- 7 फरवरी सप्तमी सोमवार
14 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

आवश्यक सूचना:-

- 22 फरवरी 2022 से
23 मार्च 2022 तक गुरु अस्त व
19 मार्च 2022 से 1 अप्रैल
2022 तक चैत्र कृष्ण पक्ष के
रहने से मेखला, विवाह व अन्य
मुहूर्त त्याज्य रहेंगे।

विक्रमी 2078 के

कन्न चम्बनुक

साथ

(कर्ण छेदन मुहूर्त)

वैशाख कृष्ण पक्ष

- 29 अप्रैल तृतीया गुरुवार
2-29 दिन तक
3 मई सप्तमी सोमवार
1-40 दिन तक
5 मई नवमी बुधवार
1-22 दिन से
6 मई दशमी गुरुवार
10-32 दिन तक

7 मई एकादशी शुक्रवार
12-26 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी सोमवार
21 मई नवमी शुक्रवार
3-22 दिन से

24 मई त्रयोदशी सोमवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

31 मई षष्ठी सोमवार
4 जून दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

21 जून एकादशी सोमवार
23 जून त्रयोदशी बुधवार
11-38 दिन तक

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

28 जून चतुर्थी सोमवार

2-16 दिन से

1 जुलाई सप्तमी गुरुवार
2-02 दिन तक

7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

26 जुलाई तृतीया सोमवार

28 जुलाई पंचमी बुधवार
10-45 दिन से

29 जुलाई षष्ठी गुरुवार

30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

4 अगस्त एकादशी बुधवार

6 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया बुधवार

9-32 प्रातः से

4-54 दिन तक

13 अगस्त पंचमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

18 अक्टूबर त्रयोदशी सोम.

10-49 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

25 अक्टूबर पंचमी सोमवार

27 अक्टूबर षष्ठी बुधवार

7-08 प्रातः से

28 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार

12-49 दिन तक

1 नवम्बर एकादशी सोमवार

12-52 दिन से

3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-02 प्रातः तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार

17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-50 प्रातः तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

22 नवम्बर तृतीया सोमवार

10-43 दिन तक

24 नवम्बर पंचमी बुधवार

25 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

29 नवम्बर दशमी सोमवार

1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरु.

मार्ग शुक्ल पक्ष

8 दिसम्बर पंचमी बुधवार

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

10 दिसम्बर सप्तमी शुक्रवार
13 दिसम्बर दशमी सोमवार

माघ कृष्ण पक्ष

24 जनवरी षष्ठी सोमवार
27 जनवरी दशमी गुरुवार
8-51 प्रातः से

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदा बुधवार
8-31 प्रातः से
3 फरवरी तृतीया गुरुवार
4-34 दिन तक
7 फरवरी सप्तमी सोमवार
14 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

नया वाहन खरीदने के मुहूर्त

विक्रमी 2078 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 अप्रेल चतुर्दशी सोमवार
12-44 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रेल द्वितीया बुधवार
5-12 सायं से
29 अप्रेल तृतीया गुरुवार
3 मई सप्तमी सोमवार

9 मई त्रयोदशी रविवार
5-28 सायं से

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी सोमवार
21 मई नवमी शुक्रवार
3-22 दिन से
24 मई त्रयोदशी सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदा गुरुवार
31 मई षष्ठी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

11 जून प्रतिपदा शुक्रवार
2-30 दिन तक
17 जून सप्तमी गुरुवार
10-13 रात से
18 जून अष्टमी शुक्रवार

21 जून एकादशी सोमवार
23 जून त्रयोदशी बुधवार
7-00 प्रातः तक

24 जून पूर्णिमा गुरुवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

7 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

19 जुलाई दशमी सोमवार
21 जुलाई द्वादशी बुधवार
6-30 सायं तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

30 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
2-02 दिन से
2 अगस्त नवमी सोमवार
10-43 रात से
4 अगस्त एकादशी बुधवार

6 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

6-29 सायं तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया बुधवार

9-32 दिन से

4-54 दिन तक

12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार

3-25 दिन से

13 अगस्त पंचमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

8 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

11 अक्टूबर षष्ठी सोमवार

12-55 दिन तक

13 अक्टूबर अष्टमी गुधवार

10-19 दिन से

8-08 रात तक

15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

21 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

4-17 दिन तक

25 अक्टूबर पंचमी सोमवार

27 अक्टूबर षष्ठी बुधवार

28 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार

29 अक्टूबर अष्टमी शुक्रवार

11-38 दिन तक

1 नवम्बर एकादशी सोमवार

12-52 दिन से

3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

5 नवम्बर प्रतिपदा शुक्रवार

10 नवम्बर षष्ठी बुधवार

11 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

17 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-50 दिन तक

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

22 नवम्बर तृतीया सोमवार

10-43 रात तक

24 नवम्बर पंचमी बुधवार

25 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

6-49 सायं तक

29 नवम्बर दशमी सोमवार

1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरु.

8-27 रात तक

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

8 दिसम्बर पंचमी बुधवार

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

24 जनवरी षष्ठी सोमवार

27 जनवरी दशमी गुरुवार

28 जनवरी एकादशी शुक्र.

माघ शुक्ल पक्ष

7 फरवरी सप्तमी सोमवार

6-58 सायं तक

10 फरवरी नवमी गुरुवार

11-08 दिन से

15 फरवरी त्रयोदशी सोम.

8-29 रात तक



आवश्यक जानकारी:-

देवगोण के लिये मुहूर्त, नक्षत्र, तिथि आदि देखने की कोई

आवश्यकता नहीं होती।

यदि देवगोण के दिन भौमवार

या शनिवार हो तो देवगोण का

आरम्भ सूर्य उदय से

पहले ही करें।

गृहदेवता (घर दिवताह)

को प्रसन्न करने के मुहूर्त



(विक्रमी 2078 के लिए)

पन्न साथ

नोट:- पन्न मुहूर्त के लिए भौमवार, शनिवार, पंचक त्रयहः मासान्त, संक्रान्ति आदि निषेध माना जाता है परन्तु स्यंघ पन्न दान के लिए निषेध नहीं है। विनायक चतुर्थी पन्न मुहूर्त के लिए स्वयं सिद्ध मुहूर्त है अतः वारदोष, पंचक, त्रयहः आदि का विचार विनायक चतुर्थी में नहीं किया जाता है। स्यंघ भी पन्न दान के लिए निषेध नहीं है।

शिशुर लागनुक साथ

नोट: पौष मास शिशुर मुहूर्त

पौष कृष्ण पक्ष

- 21 दिसम्बर द्वितीया भौमवार
- 25 दिसम्बर षष्ठी शनिवार
- 28 दिसम्बर नवमी भौमवार
- 1 जनवरी चर्तुदशी शनिवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

- 8 सितम्बर द्वितीया बुधवार
- 3-55 दिन से
- 9 सितम्बर तृतीया गुरुवार
- 10 सितम्बर चतुर्थी शुक्रवार
- 12 सितम्बर षष्ठी रविवार
- 13 सितम्बर सप्तमी सोमवार
- 17 सितम्बर एकादशी शुक्र.

नोट: विनायक
चतुर्थी पन्न मुहूर्त
के लिए स्वयं
सिद्ध मुहूर्त है।

मार्ग कृष्ण पक्ष

- 21 नवम्बर द्वितीया रविवार
- 7-36 प्रातः तक
- 24 नवम्बर पंचमी बुधवार
- 29 नवम्बर दशमी सोमवार
- 1 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
- 2 दिसम्बर त्रयोदशी गुरु.
- मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर षष्ठी गुरुवार
13 दिसम्बर दशमी सोमवार

पौष कृष्ण पक्ष

22 दिसम्बर तृतीया बुधवार
26 दिसम्बर सप्तमी रविवार
27 दिसम्बर अष्टमी सोमवार
29 दिसम्बर दशमी बुधवार
30 दिसम्बर एकादशी गुरुवार
31 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवार

आवश्यक सूचना:-

22 फरवरी 2022 से
23 मार्च 2022 तक गुरु अस्त व
19 मार्च 2022 से 1 अप्रैल
2022 तक चैत्र कृष्ण पक्ष के
रहने से मेखला, विवाह व अन्य
मुहूर्त त्याज्य रहेंगे।



दीपदान मुहूर्त



(प्रेतदीपदान विक्रमी 2078 के लिये)

नोट:- लोकाचार की दृष्टि से 'काश्मीर दैशिकज्योतिः संग्रह' (स्व. केशव भट्ट ज्योतिषी) तथा मृतत्व
ग्रन्थ के आधार से दीपदान के सभी मुहूर्तों का चयन किया गया है।

(प्रेतदीपदान)

कार्तिक्यां माघमासे वा फाल्गुने मास एवहि ।

दीपदानं हितं कृष्णषष्ठ्यां फाल्गुनमाघयोः॥

जीवाऽर्कजे नैव कुजाऽर्कवारे रिक्ते तिथौ चन्द्रबले विहीने।

अक्षाणि वर्ज्यानि त्रिपुष्कराणि शेषेषु दीपा न्यरिकल्पयन्ति ॥

(काश्मीर दैशिकज्योतिः संग्रह)

आश्विन शुक्ल पक्ष

15 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

4-16 प्रातः तक

20 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार

9-02 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

25 अक्टूबर पंचमी सोमवार

3 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

9-02 प्रातः तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

8 नवम्बर चतुर्थी सोमवार

1-17 दिन से

19 नवम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

24 जनवरी षष्ठी सोमवार

8-44 प्रातः से

28 जनवरी एकादशी शुक्र.

माघा शुक्ल पक्ष

7 फरवरी सप्तमी सोमवार

14 फरवरी त्रयोदशी सोम.




11-52 दिन से

लडकी को दूध देने का मुहूर्त (दुध साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष
25 अप्रैल त्रयोदशी रविवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
29 अप्रैल तृतीया गुरुवार
2-29 दिन तक
वैशाख शुक्ल पक्ष
18 मई षष्ठी भौमवार
2-55 दिन तक
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
30 मई पंचमी रविवार

4-41 दिन से
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
13 जून तृतीया रविवार
20 जून दशमी रविवार
22 जून द्वादशी भौमवार
2-22 दिन से
24 जून पूर्णिमा गुरुवार
9-11 प्रातः से
आषाढ़ कृष्ण पक्ष
27 जून तृतीया रविवार
3-54 दिन तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष
11 जुलाई प्रतिपदा रविवार
20 जुलाई एकादशी भौमवार
22 जुलाई त्रयोदशी गुरुवार
1-33 दिन तक
श्रावण शुक्ल पक्ष
12 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
3-25 दिन से
आश्विन शुक्ल पक्ष
10 अक्टूबर पंचमी रविवार
2-44 दिन तक
12 अक्टूबर सप्तमी भौमवार
11-26 दिन तक
कार्तिक कृष्ण पक्ष
28 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार
12-49 दिन तक

2 नवम्बर द्वादशी भौमवार
11-44 दिन से
मार्ग कृष्ण पक्ष
21 नवम्बर द्वितीया रविवार
7-36 प्रातः से
30 नवम्बर एकादशी भौमवार
माघ कृष्ण पक्ष
18 जनवरी प्रतिपदा भौमवार
  
आवश्यक सूचना:-
22 फरवरी 2022 से
23 मार्च 2022 तक गुरु अस्त व
19 मार्च 2022 से 1 अप्रैल
2022 तक चैत्र कृष्ण पक्ष के
रहने से मेखला, विवाह व अन्य
मुहूर्त त्याज्य रहेंगे।

यात्रा मुहूर्त

यात्रा के लिए शुभ नक्षत्र	अश्विन, पुनर्वसु, अनुराध, तिष्य, मृग, रेवती, हस्त, धनिष्ठा।
यात्रा के लिए अशुभ नक्षत्र	भरण, कृति, आर्द्रा, अश्लेष, मघा, चित्र, स्वात, विशाख।
यात्रा के लिए शुभ योग	आनन्दः, ध्वजः, श्रीवत्सः, छत्रम्, मैत्रम्, सिद्धः, अमृतम्, गजः।
यात्रा के लिए मध्यम नक्षत्र	रोहिणी, उषा, उभा, पुषा, पूषा, ज्येष्ठ, मूल, शतभिषा।
यात्रा के लिए अशुभ योग	कालदण्डः, धौम्यः, ध्वाक्षः, उन्मूलं, मुसुलम्, मुद्गारम्, काण्डः, क्षयः, शूलम्।

वार दोष निवारण के लिए :- रविवार को पान खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, भौमवार को आँवला अथवा कांजी खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, गुरुवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को तहर या पीले चावल खकर यात्रा पर जायें।

चैत्र शुक्ल पक्ष

- 16 अप्रेल पश्चिम विना
17 अप्रेल पूर्व विना
19 अप्रेल पूर्व विना
20 अप्रेल पूर्व दक्षिण
21 अप्रेल उत्तर विना
7-58 प्रातः तक

- 23 अप्रेल पश्चिम विना
7-41 प्रातः से
24 अप्रेल पूर्व विना
25 अप्रेल पूर्व उत्तर

वैशाख कृष्ण पक्ष

- 28 अप्रेल उत्तर विना
5-12 सायं से
29 अप्रेल पूर्व पश्चिम
30 अप्रेल पश्चिम विना
1 मई पूर्व विना

- 2 मई पूर्व उत्तर
3 मई पूर्व विना
4 मई पूर्व दक्षिण
5 मई पूर्व पश्चिम
6 मई पूर्व पश्चिम
7 मई पूर्व उत्तर
8 मई पश्चिम उत्तर
9 मई पूर्व उत्तर
10 मई पूर्व विना
9-56 रात तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

- 15 मई पूर्व विना
8-39 प्रातः तक
16 मई पूर्व उत्तर
11-14 दिन तक
17 मई पूर्व विना
18 मई पूर्व दक्षिण

2-55 दिन तक

20 मई पूर्व पश्चिम

3-57 दिन से

21 मई पश्चिम विना

22 मई पूर्व विना

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई पूर्व पश्चिम

28 मई पश्चिम विना

30 मई पूर्व उत्तर

31 मई पूर्व विना

1 जून पूर्व यात्रा

2 जून पूर्व पश्चिम

3 जून पूर्व पश्चिम

4 जून पूर्व उत्तर

6 जून पूर्व उत्तर

9 जून उत्तर विना

8-44 प्रातः से

1-58 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

11 जून पश्चिम विना

2-30 दिन तक

12 जून पूर्व विना

4-57 दिन से

13 जून पूर्व उत्तर

17 जून पूर्व पश्चिम

18 जून पश्चिम विना

19 जून पूर्व विना

8-28 रात तक

22 जून पूर्व दक्षिण

2-22 दिन से

23 जून उत्तर विना

24 जून पूर्व पश्चिम

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

25 जून पश्चिम विना

26 जून पूर्व विना

27 जून पूर्व उत्तर

28 जून पश्चिम उत्तर

29 जून पूर्व यात्रा

30 जून पूर्व पश्चिम

1 जुलाई पूर्व पश्चिम

2 जुलाई पूर्व उत्तर

3 जुलाई पूर्व विना

4 जुलाई पूर्व उत्तर

9-05 प्रातः तक

6 जुलाई पूर्व दक्षिण

3-20 दिन से

7 जुलाई पूर्व पश्चिम

8 जुलाई पूर्व पश्चिम

8-58 रात तक

10 जुलाई पूर्व विना

6-46 प्रातः से

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

11 जुलाई पूर्व उत्तर

14 जुलाई उत्तर विना

20 जुलाई पूर्व दक्षिण

21 जुलाई उत्तर विना

22 जुलाई पूर्व पश्चिम

23 जुलाई पश्चिम विना

24 जुलाई पूर्व विना

श्रावण कृष्ण पक्ष

26 जुलाई पूर्व पश्चिम उत्तर

27 जुलाई पूर्व यात्रा

28 जुलाई पूर्व पश्चिम

29 जुलाई पूर्व पश्चिम

30 जुलाई पूर्व उत्तर

2-02 दिन तक

3 अगस्त पूर्व दक्षिण

4 अगस्त उत्तर विना

6 अगस्त पश्चिम विना

6-37 प्रातः से

7 अगस्त पूर्व विना

7-12 सायं तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

10 अगस्त पूर्व दक्षिण

9-52 दिन तक

11 अगस्त उत्तर विना

12 अगस्त पूर्व पश्चिम

13 अगस्त पश्चिम विना

7-59 प्रातः तक

18 अगस्त उत्तर विना

19 अगस्त पूर्व पश्चिम

20 अगस्त पश्चिम विना

21 अगस्त पूर्व विना

22 अगस्त पूर्व उत्तर

भाद्र कृष्ण पक्ष

23 अगस्त पश्चिम उत्तर

24 अगस्त पूर्व यात्रा

25 अगस्त पूर्व पश्चिम

26 अगस्त पूर्व पश्चिम

27 अगस्त पश्चिम विना

30 अगस्त पूर्व विना

6-39 प्रातः से

31 अगस्त पूर्व दक्षिण

1 सितम्बर उत्तर विना

12-34 दिन तक

2 सितम्बर पूर्व पश्चिम

3 सितम्बर पश्चिम विना

4 सितम्बर पूर्व विना

5-45 सायं तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

8 सितम्बर उत्तर विना

9 सितम्बर पूर्व पश्चिम

2-31 दिन तक

12 सितम्बर पूर्व उत्तर

9-50 प्रातः से

13 सितम्बर पूर्व विना

14 सितम्बर पूर्व दक्षिण

19 सितम्बर पूर्व उत्तर

20 सितम्बर पश्चिम उत्तर

आश्विन कृष्ण पक्ष

21 सितम्बर पूर्व यात्रा

22 सितम्बर पूर्व पश्चिम

23 सितम्बर पूर्व पश्चिम

24 सितम्बर पश्चिम विना

8-54 प्रातः तक

26 सितम्बर पूर्व उत्तर

2-33 दिन से

27 सितम्बर पूर्व विना

28 सितम्बर पूर्व दक्षिण

30 सितम्बर पूर्व पश्चिम

1 अक्टूबर पश्चिम विना

4 अक्टूबर पूर्व विना

5 अक्टूबर पूर्व दक्षिण

7-04 सायं तक

6 अक्टूबर उत्तर विना

4-35 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

10 अक्टूबर पूर्व उत्तर

11 अक्टूबर पूर्व विना

12 अक्टूबर पूर्व दक्षिण

13 अक्टूबर उत्तर विना

14 अक्टूबर पूर्व पश्चिम

15 अक्टूबर पश्चिम विना

18 अक्टूबर पश्चिम उत्तर

19 अक्टूबर पूर्व यात्रा

20 अक्टूबर पूर्व पश्चिम

कार्तिक कृष्ण पक्ष

21 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
4-17 दिन तक

24 अक्टूबर पूर्व उत्तर

25 अक्टूबर पूर्व विना

27 अक्टूबर उत्तर विना
7-08 प्रातः से

28 अक्टूबर पूर्व पश्चिम

29 अक्टूबर पश्चिम विना
11-38 दिन तक

31 अक्टूबर पूर्व उत्तर
1-16 दिन से

1 नवम्बर पूर्व विना

2 नवम्बर पूर्व दक्षिण

3 नवम्बर उत्तर विना

9-58 प्रातः तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर पूर्व विना

7 नवम्बर पूर्व उत्तर

8 नवम्बर पूर्व विना

9 नवम्बर पूर्व दक्षिण

10 नवम्बर उत्तर विना

11 नवम्बर पूर्व पश्चिम

12 नवम्बर पूर्व उत्तर

13 नवम्बर पश्चिम उत्तर

14 नवम्बर पूर्व उत्तर

17 नवम्बर उत्तर विना

मार्ग कृष्ण पक्ष

20 नवम्बर पूर्व विना

21 नवम्बर पूर्व उत्तर

22 नवम्बर पूर्व विना

10-43 दिन तक

23 नवम्बर पूर्व दक्षिण

1-44 दिन से

24 नवम्बर उत्तर विना

25 नवम्बर पूर्व पश्चिम

28 नवम्बर पूर्व उत्तर

29 नवम्बर पूर्व विना

30 नवम्बर पूर्व दक्षिण

3 दिसम्बर पश्चिम विना

1-44 दिन से

4-56 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

6 दिसम्बर पूर्व विना

7 दिसम्बर पूर्व दक्षिण

8 दिसम्बर उत्तर विना

9 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

10 दिसम्बर पूर्व उत्तर

11 दिसम्बर पश्चिम उत्तर

12 दिसम्बर पूर्व उत्तर

13 दिसम्बर पश्चिम उत्तर

17 दिसम्बर पश्चिम विना

10-40 दिन से

19 दिसम्बर पूर्व उत्तर

4-52 दिन तक

पौष कृष्ण पक्ष

20 दिसम्बर पूर्व विना

7-46 सायं से

21 दिसम्बर पूर्व दक्षिण

22 दिसम्बर उत्तर विना

25 दिसम्बर पूर्व विना

26 दिसम्बर पूर्व उत्तर

27 दिसम्बर पूर्व विना

31 दिसम्बर पश्चिम विना

1 जनवरी पूर्व विना

पौष शुक्ल पक्ष

3 जनवरी पूर्व विना

4 जनवरी पूर्व दक्षिण

5 जनवरी पूर्व पश्चिम

6 जनवरी पूर्व पश्चिम

7 जनवरी पूर्व उत्तर

8 जनवरी पश्चिम उत्तर

9 जनवरी पूर्व उत्तर

10 जनवरी पूर्व विना

8-49 प्रातः से

11 जनवरी पूर्व दक्षिण

11-07 दिन तक

15 जनवरी पूर्व विना

17 जनवरी पूर्व विना

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी पूर्व दक्षिण

21 जनवरी पश्चिम विना

9-43 प्रातः से

22 जनवरी पूर्व विना

23 जनवरी पूर्व उत्तर

24 जनवरी पूर्व विना

11-15 दिन तक

27 जनवरी पूर्व पश्चिम

8-51 प्रातः से

28 जनवरी पश्चिम विना

29 जनवरी पूर्व विना

30 जनवरी पूर्व उत्तर

31 जनवरी पूर्व विना

2-18 दिन तक

1 फरवरी पूर्व दक्षिण

11-16 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी पूर्व पश्चिम

3 फरवरी पूर्व पश्चिम

4 फरवरी पूर्व उत्तर

5 फरवरी पश्चिम उत्तर

6 फरवरी पूर्व उत्तर

5-10 सायं तक

7 फरवरी पूर्व विना

6-58 सायं तक

10 फरवरी पूर्व पश्चिम

14 फरवरी पूर्व विना

15 फरवरी पूर्व दक्षिण

1-48 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

17 फरवरी पूर्व पश्चिम

4-10 दिन से

18 फरवरी पश्चिम विना

19 फरवरी पूर्व विना

20 फरवरी पूर्व उत्तर

4-42 दिन तक

23 फरवरी उत्तर विना

2-40 दिन से

24 फरवरी पूर्व पश्चिम

25 फरवरी पश्चिम विना

26 फरवरी पूर्व विना

28 फरवरी पूर्व विना

1 मार्च पूर्व यात्रा

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

3 मार्च पूर्व पश्चिम

4 मार्च पूर्व उत्तर

5 मार्च पश्चिम उत्तर

6 मार्च पूर्व उत्तर

9 मार्च उत्तर विना

8-31 प्रातः से

10 मार्च पूर्व पश्चिम

11 मार्च पश्चिम विना

2-35 दिन से

12 मार्च पूर्व विना

5-32 सायं से

17 मार्च पूर्व पश्चिम

18 मार्च पश्चिम विना

चैत्र कृष्ण पक्ष

19 मार्च पूर्व विना

22 मार्च पूर्व दक्षिण

8-13 रात से

23 मार्च उत्तर विना

24 मार्च पूर्व पश्चिम

25 मार्च पश्चिम विना

26 मार्च पूर्व उत्तर

27 मार्च पूर्व उत्तर

28 मार्च पूर्व विना

29 मार्च पूर्व यात्रा

30 मार्च पूर्व पश्चिम

31 मार्च पूर्व पश्चिम

12-23 दिन तक

1 अप्रैल पूर्व उत्तर

11-54 दिन से

हमारी संस्कृति के प्रतीक:-

सूर्य को अर्घ्य (जल) देने का वैज्ञानिक कारण।
धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सूर्य को जल दिये बिना अन्न (भोजन) ग्रहण करना पाप है। अलंकारिक भाषा में वेद कहते हैं कि प्रातः व सन्ध्या के समय सूर्य को दिये गये अर्घ्य के जलकण वज्र बनकर असुरों का नाश करते हैं। मनुष्य को प्रताड़ित करने वाले ये असुर कौन हैं? ये असुर हैं - टायफाईड, निमो-निया राजयक्ष्मा आदि रोग जिनको नष्ट करने की दिव्य शक्ति सूर्य की किरणों में होती है। एन्थ्रेक्स के वायरस जो कई वर्षों के शुष्कीकरण से नहीं मरते वे सूर्य की किरणों से एक डेढ़ घंटे में मर जाते हैं। हैज़ा, निमोनिया, चेचक आदि के कीटानु पानी में डालकर उबालने पर भी नहीं मरते किन्तु सूर्य की प्रभात कालीन किरणों से शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। सूर्य को अर्घ्य देते समय साधक के ऊपर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। शास्त्र अनुसार प्रातः काल पूर्व की ओर मुख करके तथा संध्या के समय पश्चिम की ओर मुख करके जल देना चाहिए। जल के पात्र (लोटे) को छाती के बराबर ऊँचाई पे रखकर जल गिराये और लोटे के उभरे भाग को तब तक देखते रहें जब तक जल न समाप्त हो जाये। ऐसा करने से आँखों में मोतियाबिन्द नहीं होता।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त :-

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा, वसन्त पंचमी, अक्षया तृतीया, विजयादशमी, दीपावली तिथियां स्वयं सिद्ध मुहूर्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थिति में यदि कोई मुहूर्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्तों में से किसी एक का चयन करके शुभ कार्य कर सकते हैं। Emergency पड़ने पर अथवा आवश्यक परिस्थिति या शीघ्रता पड़ने पर निर्धारित मुहूर्त के न मिलने पर किसी अभीष्ट कार्य में सफलता प्राप्ति के लिये जन्त्री में प्रकाशित सर्वार्थ सिद्धि मुहूर्तों का चयन भी कर सकते हैं। परन्तु सर्वार्थ सिद्धि योग में विवाह, यज्ञोपवीत, ग्रह प्रवेश, शंकु प्रतिष्ठा, विद्यारम्भ आदि शुभ कार्य न करें। ऐसे शुभ कार्यों की तिथि का चयन सम्बन्धित मुहूर्त प्रकरण से ही करें।

विक्रमी 2078 के सर्वार्थ सिद्धि योग

नोट:- सर्वार्थ सिद्धि योग में विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेश, शंकु प्रतिष्ठा, विद्यारम्भ आदि शुभ कार्य न करें। ऐसे शुभ कार्यों की तिथि का चयन सम्बन्धित मुहूर्त प्रकरण से ही करें।

‘सर्वार्थसिद्धि योग’ में आभूषण लाना, आफिसर से मिलना, चार्ज लेना, भूमि आदि का क्रय, किसी से समझौता करना, परीक्षा देना, फार्म भरना किसी काम्पेटिशन के लिए आवेदन भेजना, यात्रा या मुकद्दमा करना, वाहन व वस्त्र का क्रय करना इत्यादि आवश्यक परिस्थितिवश किये जा सकते हैं। परन्तु विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेश, शंकु प्रतिष्ठा, विद्यारम्भ आदि शुभ कार्यों के लिये सम्बन्धित मुहूर्त प्रकरण से ही मुहूर्तों का चयन करें।

सर्वार्थ सिद्धि योग		सर्वार्थ सिद्धि योग	
आरम्भ काल		समाप्ति काल	
13-अप्रैल	सूर्य उदय	13-अप्रैल	2:19 PM
14-अप्रैल	5:22 PM	15-अप्रैल	सूर्य उदय
28-अप्रैल	5:12 PM	29-अप्रैल	2:29 PM
02-मई	8:59 AM	03-मई	सूर्य उदय
03-मई	8:22 AM	04-मई	5:42 AM
09-मई	5:28 PM	10-मई	सूर्य उदय
12-मई	सूर्य उदय	13-मई	सूर्य उदय
17-मई	1:22 PM	18-मई	सूर्य उदय
18-मई	2:55 PM	19-मई	सूर्य उदय
23-मई	सूर्य उदय	23-मई	12:12 PM
26-मई	सूर्य उदय	26-मई	1:15 AM
30-मई	सूर्य उदय	30-मई	4:41 PM
31-मई	सूर्य उदय	31-मई	4:01 PM
06-जून	सूर्य उदय	06-जून	2:27 AM
08-जून	सूर्य उदय	09-जून	8:44 AM
14-जून	सूर्य उदय	14-जून	8:36 PM

सर्वार्थ सिद्धि योग आरम्भ काल		सर्वार्थ सिद्धि योग समाप्ति काल		सर्वार्थ सिद्धि योग आरम्भ काल		सर्वार्थ सिद्धि योग समाप्ति काल	
15-जून	सूर्य उदय	15-जून	9:42 PM	30-अगस्त	सूर्य उदय	31-अगस्त	6:06 AM
23-जून	सूर्य उदय	23-जून	11:48 AM	01-सितम्बर	सूर्य उदय	01-सितम्बर	12:34 PM
02-जुलाई	सूर्य उदय	03-जुलाई	सूर्य उदय	02-सितम्बर	2:57 PM	03-सितम्बर	4:42 PM
04-जुलाई	सूर्य उदय	04-जुलाई	9:05 AM	08-सितम्बर	3:55 PM	09-सितम्बर	सूर्य उदय
06-जुलाई	सूर्य उदय	06-जुलाई	3:20 PM	11-सितम्बर	सूर्य उदय	11-सितम्बर	11:22 AM
07-जुलाई	सूर्य उदय	07-जुलाई	6:19 PM	13-सितम्बर	सूर्य उदय	13-सितम्बर	8:23 AM
11-जुलाई	सूर्य उदय	11-जुलाई	2:22 AM	17-सितम्बर	सूर्य उदय	17-सितम्बर	3:36 AM
24-जुलाई	12:40 PM	25-जुलाई	सूर्य उदय	24-सितम्बर	सूर्य उदय	24-सितम्बर	8:54 AM
29-जुलाई	12:02 PM	30-जुलाई	2:02 PM	27-सितम्बर	सूर्य उदय	27-सितम्बर	5:41 PM
04-अगस्त	सूर्य उदय	04-अगस्त	4:25 AM	30-सितम्बर	सूर्य उदय	30-सितम्बर	1:33 AM
06-अगस्त	6:37 AM	07-अगस्त	सूर्य उदय	06-अक्टूबर	सूर्य उदय	06-अक्टूबर	11:19 PM
08-अगस्त	सूर्य उदय	08-अगस्त	9:19 AM	15-अक्टूबर	सूर्य उदय	15-अक्टूबर	9:16 AM
14-अगस्त	सूर्य उदय	15-अगस्त	सूर्य उदय	19-अक्टूबर	सूर्य उदय	19-अक्टूबर	12:12 PM
16-अगस्त	सूर्य उदय	16-अगस्त	3:02 AM	21-अक्टूबर	सूर्य उदय	21-अक्टूबर	4:17 PM
21-अगस्त	सूर्य उदय	21-अगस्त	8:21 PM	25-अक्टूबर	सूर्य उदय	25-अक्टूबर	4:10 AM
26-अगस्त	सूर्य उदय	26-अगस्त	10:29 PM	28-अक्टूबर	सूर्य उदय	28-अक्टूबर	9:41 AM
27-अगस्त	6:03 AM	27-अगस्त	12:47 AM	03-नवम्बर	सूर्य उदय	03-नवम्बर	9:58 AM

सर्वार्थ सिद्धि योग		सर्वार्थ सिद्धि योग	
आरम्भ काल		समाप्ति काल	
14-नवम्बर	4:31 PM	15-नवम्बर	सूर्य उदय
20-नवम्बर	सूर्य उदय	19-नवम्बर	सूर्य उदय
22-नवम्बर	सूर्य उदय	22-नवम्बर	10:43 AM
25-नवम्बर	सूर्य उदय	25-नवम्बर	6:49 PM
03-दिसम्बर	1:44 PM	04-दिसम्बर	सूर्य उदय
05-दिसम्बर	सूर्य उदय	05-दिसम्बर	4:54 AM
12-दिसम्बर	सूर्य उदय	12-दिसम्बर	11:59 PM
14-दिसम्बर	सूर्य उदय	14-दिसम्बर	4:40 AM
18-दिसम्बर	सूर्य उदय	18-दिसम्बर	1:48 PM
26-दिसम्बर	सूर्य उदय	27-दिसम्बर	5:25 AM
31-दिसम्बर	सूर्य उदय	31-दिसम्बर	10:04 PM
02-जनवरी	सूर्य उदय	02-जनवरी	4:23 PM
11-जनवरी	7:35 AM	11-जनवरी	11:09 AM
12-जनवरी	2:00 PM	13-जनवरी	सूर्य उदय
18-जनवरी	सूर्य उदय	18-जनवरी	7:34 AM
23-जनवरी	सूर्य उदय	23-जनवरी	11:09 AM
27-जनवरी	8:51 AM	28-जनवरी	सूर्य उदय

सर्वार्थ सिद्धि योग		सर्वार्थ सिद्धि योग	
आरम्भ काल		समाप्ति काल	
09-फरवरी	सूर्य उदय	09-फरवरी	12:23 AM
14-फरवरी	11:52 AM	15-फरवरी	सूर्य उदय
15-फरवरी	1:48 PM	16-फरवरी	सूर्य उदय
20-फरवरी	सूर्य उदय	20-फरवरी	4:42 PM
24-फरवरी	सूर्य उदय	24-फरवरी	1:31 PM
27-फरवरी	8:48 AM	28-फरवरी	सूर्य उदय
06-मार्च	सूर्य उदय	06-मार्च	3:51 AM
14-मार्च	सूर्य उदय	14-मार्च	10:08 PM
23-मार्च	सूर्य उदय	23-मार्च	6:52 PM
27-मार्च	सूर्य उदय	27-मार्च	1:32 PM

e-matching of Horoscopes

You can avail the facility of Kundli Matching via e-mail. Drop a message at vijayeshwer@yahoo.com or **WhatsApp** on **9419146712, 9419136991** with following details:- Date of Birth, Time of Birth & Birth Place of both Boy and Girl, And get the Matching Report on your email.

मेष राशि का मासिक फल

अप्रैल:- यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा होने पर अफसरों तथा सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से मेल जोल का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी होने पर आप इस मास में डटके काम में लगें रहिये, आशा से अधिक लाभ मिलेगा।

मई:- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुज़रेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। यदि आप व्यापार करते हैं तो हर काम में सफलता होगी।

जून:- गोचर चक्र के अनुसार इस मास में घर में हर प्रकार से शान्त वातावरण बना रहेगा। कारोबार, आमदनी आदि की दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम रहेगा। परन्तु विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास परेशानी का रहेगा।

जुलाई:- इस मास में आप अपने शरीर के विषय में आप को विशेष ध्यान रखें। विद्यार्थियों के लिए यह मास भी परेशानी तथा दौड़धूप का ही रहेगा।

अगस्त:- अगर आप नौकरी अथवा व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो

इस मास में कोई ऐसी उलझन आ घरेगी जो आप की मानप्रतिष्ठा के लिए ठीक नहीं होगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में ज़रा सी दौड़धूप करने से सफलता आप के पक्ष में होगी।

सितम्बर:- यह मास आप के लिए हर प्रकार से शुभ फलदायक होगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, इस मास के सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होंगे, घर में प्रायः खाने पीने, खिलाने के प्रग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धुओं मित्रों, रिश्तेदारों के आने में वृद्धि होगी।

अक्टूबर:- इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिए, यदि आप गाड़ी आदि खुद चलाते हैं तो मंगलवार को दक्षिण दिशा की ओर लम्बी यात्रा पर न जायें, अक्समात् चोट लगने का अन्देश है।

नवम्बर:- फलित गोचर के आधार से मालूम पड़ता है कि यह मास संघर्ष, दौड़धूप तथा मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। परन्तु धन लाभ अर्थात् आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

दिसम्बर:- इस मास में आप की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ तथा हर प्रकार की रुकावटों को दूर करने में गुरु व शुक्र ग्रह सहायक रहेंगे। इस मास में हर आरम्भ किये काम का परिणाम लाभदायक

होगा। शुभ कामों पर खर्च करने की योजना बनेगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थ पक्ष से हर प्रकार से शान्ति रहेगी।

जनवरी :- यह मास सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आदर व मान में वृद्धि होगी, प्रायः हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी। किसी झगड़ें अथवा उलझन में आप के फंसे रहने की सम्भावना है, परन्तु इस मास के अन्त तक हर झगड़े तथा हर उलझन का समाधान शान्त वातावरण में ही होगा।

फरवरी:- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति आप के पक्ष में नहीं है। अतः आप को हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है। भौम व शनि की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से वह आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। मास के अन्त में यदि यात्रा का योग बने तो वह आप के लिए लाभदायक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास कड़े संघर्ष का होगा।

मार्च:- यद्यपि इस मास के ग्रहों की स्थिति अच्छी है फिर भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। मानसिक अशान्ति के साथ साथ परिवार में झगडा, प्रायः हर कार्य में असफलता मिलेगी। यदि आप नौकरी वर्ग से है तो दफ्तर का माहौल आप के प्रतिकूल ही होगा।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रैल:- इस मास में आरम्भ किया हुआ तामीरी काम बहुत देर तक लटकता रहेगा। यदि आप किसी लडके अथवा लडकी का विवाह सम्बन्ध निश्चित करने का प्रयत्न कर रहें हैं तो इस मास में न करें, यदि यात्रा का योग बने तो वह यात्रा आप के लिए लाभदायक रहेगी।

मई:- इस मास का अधिक भाग रिश्तेदारों, भाई बन्धुओं तथा मित्रों के मेल मिलाप में ही व्यतीत होगा। मास के अन्त में यदि यात्रा का योग बने तो वह आप के लिए लाभदायक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास कड़े संघर्ष का होगा।

जून:- यह मास सामान्यतया आप के लिए शुभ ही रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत बनेगी। परन्तु शत्रुओं का ज़ोर तथा उनमें वृद्धि, कोई भी रोग लगने का भय रहने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।

जुलाई:- यह मास आप के लिए हर प्रकार से लाभदायक तथा सफलता देने वाला रहेगा। शरीर सुख भी उत्तम रहेगा, इस मास के

लगभग सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होंगे।

अगस्त:- यदि आप व्यापार करते हैं तो आप के लिए ग्रह अनुकूल हैं। आप को इस मास में आशा से अधिक आर्थिक सफलता मिलेगी। धार्मिक कार्यों में धन खर्च होने का भी योग है।

सितम्बर:- यह मास वृष राशि वाले जातकों के लिए कोई शुभ फलदायक नहीं है। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

अक्टूबर:- इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति अच्छी है। अचानक चोट लगने का खतरा है, यदि आप का शरीर स्वस्थ रहेगा फिर भी स्त्रीपक्ष से आप परेशान रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा।

नवम्बर:- यह मास संघर्ष के वातावरण में ही गुजरेगा। किन्तु शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा। विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता निश्चित है।

दिसम्बर:- इस मास के आरम्भ में बुध, शुक्र ग्रह आप के हित में हैं। शेष सभी गहों का अशुभ होना अशान्ति का सूचक है। इस कारण यह मास गत मास की तरह संघर्ष के वातावरण में ही

गुजरेगा।

जनवरी :- इस मास के शुभ और अशुभ ग्रहों को देखते हुए विदित होता है कि यह महीना कुछ-कुछ शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा, आपकी आमदनी में वृद्धि न होने पर भी आप कुछ शान्ति अनुभव करोगे। फ़ज़ूल खरची में बहुत अन्तर आएगा।

फरवरी :- इस मास के अन्तिम दो सप्ताह आप के लिए लाभदायक रहेंगे। इस मास के ग्रहों से लाभ उठाएं आप जो भी काम करते हैं उसमें जुट जाएं, सफलता अवश्य मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सन्तोष जनक नहीं है। पढ़ाई की ओर अल्प प्रवृत्ति रहेगी।

मार्च:- इस मास में आपके खर्च का योग बलवान है। परन्तु खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा, भाई बन्धुओं व रिश्तेदारों से मिलने जुलने का सुअवसर मिलेगा, व्यापारी वर्ग भी लाभ में रहेगा अथवा उन के काम को लाभ के साथ साथ कारोबार को भी बढावा मिलेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में यह समस्या हल होगी।

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रैल:- इस मास वैष्णव रहें, गृहस्थी होने पर ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करें, यदि आप स्वयं वाहन चलाते हैं तो भौवार को सावधानी से ही सफर करें। इस मास में आप पर शुत्रओं का अधिक दबाव रहेगा।

मई:- इस मास में तर्की या तबदीली का योग है। घरेलू वातावरण भी शान्त रहने की सम्भावना है। इस मास में यात्रा का योग बनेगा जो आप के लिए लाभदायक रहेगा।

जून:- इस मास में कोई महोत्सव रचाने का परोग्राम बनेगा जिस में आप का विशेष योगदान होगा। विद्यार्थी वर्ग को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी। मित्रों के साथ मेलमिलाप में वृद्धि तथा धार्मिक कार्यों में भी रुचि बढ़ने की सम्भावना है।

जुलाई:- यदि आप का जाईदाद सम्बन्धित कोई झगडा चल रहा है तो इस मास में उसके सुलझने की सम्भावना है। यदि आप कोई महोत्सव रचाने का विचार रखते हैं तो इसी मास में सम्पन्न करें, वह महोत्सव आप की शान व मान को बढ़ाने का कारण बनेगा।

अगस्त:- इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं

है। अचानक चोट लगने का खतरा है, यदि आप का शरीर स्वस्थ रहेगा फिर भी स्त्रीपक्ष से आप परेशान रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा।

सितम्बर:- यह मास संघर्ष के वातावरण में ही गुजरेगा। किन्तु शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा। विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता निश्चित है।

अक्टूबर:- इस मास के आरम्भ में बुध, शुक्र ग्रह आप के हित में हैं। शेष सभी ग्रहों का अशुभ होना अशान्ति का सूचक है। इस कारण यह मास गत मास की तरह संघर्ष के वातावरण में ही गुजरेगा।

नवम्बर:- इस मास के शुभ और अशुभ ग्रहों को देखते हुए विदित होता है कि यह महीना कुछ-कुछ शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा, आपकी आमदनी में वृद्धि न होने पर भी आप कुछ शान्ति अनुभव करोगे। फजूल खरची में बहुत अन्तर आएगा।

दिसम्बर :- इस मास के अन्तिम दो सप्ताह आप के लिए लाभदायक रहेंगे। इस मास के ग्रहों से लाभ उठाएं आप जो भी काम करते हैं उसमें जुट जाएं, सफलता अवश्य मिलेगी। विद्यार्थी

वर्ग के लिए यह मास सन्तोष जनक नहीं है। पढ़ाई की ओर अल्प प्रवृत्ति रहेगी।

जनवरी:- यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा होने पर अफसरों तथा सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से मेल जोल का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी होने पर आप इस मास में डटके काम में लगे रहिये, आशा से अधिक लाभ मिलेगा।

फरवरी:- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुज़रेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। यदि आप व्यापार करते हैं तो हर काम में सफलता होगी।

मार्च:- गोचर चक्र के अनुसार इस मास में घर में हर प्रकार से शान्त वातावरण बना रहेगा। कारोबार, आमदनी आदि की दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम रहेगा। परन्तु विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास परेशानी का रहेगा।

कर्कट राशि का मासिक फल

अप्रैल:- मिलेजुले योग के अनुसार यह मास शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, आर्थिक दृष्टि से भी यह मास उत्तम रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सफलता का ही है परन्तु दौड़दूप के साथ साथ कुछ मानसिक अशान्ति भी बनी रहेगी।

मई:- यह मास भी सामूहिक रूप से आप के लिए लाभदायक रहेगा। यदि आप किसी परेशानी या मुकदमा आदि में फंसे हैं तो ऐसी समस्याओं का हल स्वयं निकल आयेगा, लाभ की दृष्टि से यह मास बहुत ही उत्तम है, यदि आप कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो इन की खरीद इस मास में लाभदायक रहेगी परन्तु जाईदाद आदि बेचना हानिकारक होगा।

जून:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अचानक किसी आर्थिक संकट की संभावना है। इस मास आप अपनी पूंजी की रक्षा के विषय में सावधान रहिये, शरीर सुख मध्यम रहेगा।

जुलाई:- यदि आप किसी लड़की या लड़के की शादी के प्रयत्नशील हैं तो ऐसे कामों में सफलता अवश्य मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास ठीक नहीं है, विद्या सम्बन्धित कार्यों में असफलता की सम्भावना है परन्तु आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम ही रहेगा।

अगस्त:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार आर्थिक संकट के साथ साथ मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। शत्रु पक्ष के प्रभावी होने की भी सम्भावना है। अगर आप व्यापार करते हैं तो इस मास किसी भी कार्य में निवेश न करें या कोई भी नया कार्य आरम्भ न करें।

सितम्बर:- इस मास में हर प्रकार से सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आरम्भ किये हुये प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से शुभ सन्देश मिलेगा अथवा घर में लडके का जन्म होगा।

अक्टूबर:- यदि आप व्यापार करते हैं और अपने व्यापार को बढाना चाहते हैं तो यह मास आप के लिए लाभदायक रहेगा। विद्यार्थी होने पर इन्टरविव हो या कालेज का प्रवेश आदि हो तो किसी परिणाम की प्रतीक्षा हो, हर क्षेत्र में सफलता होगी।

नवम्बर:- इस मास में मानसिक शान्ति के साथ साथ गृहस्थ में भी सुख और शान्ति का वातावरण बना रहेगा। अगर आप विद्यार्थी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो विद्या के क्षेत्र में इस मास में बहुत सी बाधाएँ आएँगी अतः कड़े परिश्रम के पश्चात ही सफलता की आशा रखें।

दिसम्बर:- यदि आप ने अपने घर में कोई शुभ काम आरम्भ करना हो तो जहां तक हो सके इस मास में आरम्भ कीजिए चन्द्रमा की अच्छी स्थिति होने से आप को हर काम में सफलता

होगी।

जनवरी :- गोचर से लग्न में सूर्य तथा बुध की अच्छी स्थिति में न होने से इस मास में आपका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहेगा। आर्थिक दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम ही है। विद्यार्थियों के लिए भी यह मास कड़े संघर्ष का होगा। इस मास में कर्कट राशि वाले जातकों को उपाय के रूप में भौमवार को पीलेचावल (तहर) बना कर पक्षियों को डालना चाहिए।

फरवरी:- यदि आप व्यापार करते हैं तो इस मास में आपके व्यापार में कुछ कठिनाईयों तथा कठोर परिश्रम के पश्चात ही सफलता प्राप्त होगी। कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो इस मास में ऐसे कामों का श्रीगणेश अवश्य शुभ मुहूर्त देखकर करें। इस मास में आप अधिक अतिथि सेवा में लगे रहेंगे। रिश्तेदारों और मित्रों का आना जाना अधिक रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को कड़े परिश्रम के पश्चात भी इच्छा अनुसार सफलता मिलेगी।

मार्च:- इस मास में आप शत्रुओं से सावधान ही रहिये। आप के शत्रु आप पर विजय प्राप्त करने की जी तोड़ कोशिशें करेंगे। अगर आप व्यापार करते हैं तो इस मास में किसी भी नये कार्य के लिए निवेश न करें। अगर यात्रा का योग बने तो उस में बहुत कष्ट होगा। बहुत खर्च करने पर ही यात्रा सफल होगी।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रैल:- इस मास में आप को आराम कम परन्तु संघर्ष अधिक रहेगा। सहयोगी भाग्य वर्धक साबित होंगे, रिश्तेदारों एवं मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा।

मई:- इस मास में शरीर स्वस्थ रहेगा। नौकरी पेशा होने पर अफसरों के साथ यह मास शान्त वातावरण में व्यतीत होगा। इस मास में विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार तथा शनिवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

जून:- मास के आरम्भ पर प्रथम भाव में सूर्य व बुध के एक साथ होने से इस मास में आप ग्रहस्थी जीवन सुख व शान्ति से व्यतीत करेंगे। शरीर भी स्वस्थ रहेगा। नौकरी पेशा होने पर अफसरों के साथ यह मास शान्त वातावरण में व्यतीत होगा।

जुलाई:- इस मास में सूर्य, गुरु तथा बुध की अच्छी स्थिति में होना आप की आर्थिक स्थिति मज़बूत होने का सूचक है। परन्तु केतु व भौम का शुभ घर में होना आप के शरीर के लिए ठीक नहीं है। शरीर सम्बन्धित चिन्ता अचानक आ घरेगी वह परेशानी घर के किसी सदस्य को भी हो सकती है। इस मास में अचानक धन लाभ से भी इन्कार भी नहीं किया जा सकता।

अगस्त:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अफसरों तथा प्रतिष्ठित लोगों से मिलने जुलने के अवसर मिलेंगे। घर में मंगल कार्य तथा धार्मिक उत्सव रचाने के प्रोग्राम बनेंगे या घर में बच्चों का जन्म होगा, ज़मीन दार होने पर भूमि से लाभ मिलगा।

सितम्बर:- इस मास की ग्रह स्थिति को अध्यन करने से विदित होता है कि यह मास मानसिक अशान्ति तथा परेशानी के वातावरण में ही गुज़रना होगा। इस मास में आपकी आमदनी से अधिक खर्चा होने की सम्भावना है। शुभ कामों पर धन का आशा से अधिक खर्च, सिनेमा, कल्लों तथा मनोरंजनक स्थलों में भी अधिक धन खर्च होगा।

अक्टूबर :- इस मास में ग्रहों की स्थिति प्रायः हानिकारक है। शरीर सुख मध्यम रहेगा। इस मास में शरीर कष्ट की भी सम्भावना है, यदि आप गृहस्थी है तो स्त्री की परेशानी रहेगी, घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा, आमदनी की दृष्टि से यह मास अच्छा रहेगा, खर्च का योग भी बलवान् है। खाने पिलाने और पार्टियों में सम्मिलित होने का व्यर्थ खर्च बरदाश्त करना होगा।

नवम्बर:- गोचर फलित शास्त्रों के अनुसार यह मास धन के लिए हानिकारक है अर्थात् धन प्राप्ति में रुकावट पडने की सम्भावना इस मास में हो सकती है। भौम की स्थिति के कारण शत्रुओं में वृद्धि होगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थ में अशान्ति रहती है।

दिसम्बर:- मास के आरम्भ की ग्रहस्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास सिंह राशि वाले जातकों के लिए शुभ फल का सूचक है। शरीर सुख उत्तम रहेगा। यदि ग्रहस्थी है तो गृहस्थ पक्ष से मानसिक शान्ति रहेगी।

जनवरी:- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति को दृष्टि को ध्यान में रखते हुये ज्योतिष गोचर में यहीं मालूम होता है कि यह मास भी आपका शान्त वातावरण में ही गुजरेगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा। यदि गृहस्थी है तो गृहस्थ पक्ष से शान्ति का योग है और सन्तान पक्ष से भी मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

फरवरी:- इस मास में श्रेष्ठ पुरुषों से मेलमिलाप होगा, यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते हैं या कोई ज़मीन जाएदाद खरीदना चाहते हैं तो यह मास ऐसे कामों के लिए उत्तम है। नौकरी पेशा होने पर लाभ अथवा तरक्की की आशा सुदृढ़ होगी। व्यापारी होने पर व्यापार से भी अक्समात् लाभ रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता अवश्य मिलेगी।

मार्च:- यह मास संघर्ष तथा दौडधूप में ही व्यतीत होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति भी बनी रहेगी।

विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी यदि इस मास में विद्या सम्बन्धित कोई भी यात्रा बने वह यात्रा भी आप के लिए लाभदायक रहेगी।

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रैल:- इस मास धन की परेशानी आप को घेरे रखेगी, शरीर के बारे में सावधान रहिए, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर का विशेष ध्यान रखिये। नौकरी पेशा होने पर लाभ की अथवा तरक्की की आशा न रखें बल्कि यह मास भी दौडधूप में ही गुजरेगा।

मई:- ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखकर यह मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा। प्रायः हर काम में सफलता होगी। यदि इस मास में यात्रा का योग बने तो आप अवश्य यात्रा पर जायें।

जून:- ग्रह चाल के अनुसार इस मास में अचानक लाभ मिलेगा। व्यापारी होने पर इस मास में खरीद आधिक करें, वह खरीद आगे आने वाले मासों में लाभदायक रहेगी। व्यापारी, नौकरी पेशा वर्ग तथा विद्यार्थी वर्ग को इस मास वैष्णव रहना चाहिए।

जुलाई:- यह मास संघर्ष तथा अशान्ति के वातावरण में ही आप

को गुज़ारना पड़ेगा। आपका शरीर भी प्रायः अस्वस्थ रहेगा। भौम तथा बृहस्पति की अच्छी स्थिति न होने की वजह से जाइदाद सम्बन्धित परेशानी की भी सम्भावना है।

अगस्त:- इस मास के आरम्भ पर सुख और आनन्द की प्राप्ति होगी। शरीर भी स्वस्थ रहेगा। आरम्भ किये हुए हर काम में सफलता होने का योग भी प्रबल है। मास के अन्तिम दो सप्ताहों में अत्याधिक खर्च होने की संभावना है।

सितम्बर:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार यह मास सामूहिक रूप से दौड़धूप के वातावरण में ही गुज़ारना होगा। आपका शरीर प्रायः अस्वस्थ रहेगा। शनि की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से जाइदाद सम्बन्धित परेशानी की भी सम्भावना है।

अक्टूबर:- इस मास में यदि आप कोई तामीरी काम आरम्भ करना चाहते हो तो अवश्य किसी शुभ मुहूर्त को देख कर करें। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में पढाई सम्बन्धित हर काम में उलझने तथा रुकावटों के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

नवम्बर:- फलित शास्त्रों के अनुसार बृहस्पति की अच्छी स्थिति से इस मास में हर आरम्भ किये हुए काम में सफलता मिलेगी। यदि आप विद्यार्थी वर्ग से है तो यह मास आपके लिए वर्ष का

सर्वोत्तम मास है।

दिसम्बर:- आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। जिस काम को आप हाथ में लेंगे चाहे वह कितना भी कठिन हो सफलता अवश्य होगी। शरीर सुख उत्तम रहेगा। घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा किसी घनिष्ठ सम्बन्धी के शुभ उत्सव में सम्मिलित होने का अवसर मिलेगा।

जनवरी:- यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते हैं तो इस मास में उस तामीर सम्बन्धित कुछ सामान खरीदकर रखें वह आपके लिए शुभ रहेगा। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। धार्मिक अथवा सामाजिक कामों में भी आपकी दिलचस्पी बनी रहेगी। विद्यार्थियों के लिए यह मास विशेष सफलता का नहीं है।

फरवरी:- आमदनी की दृष्टि से यह मास भी उत्तम रहेगा। यदि आप कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो यह मास आपके लिए शुभ रहेगा।

मार्च:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अफसरों तथा प्रतिष्ठित लोगों से मिलने जुलने के अवसर मिलेंगे। घर में मंगल कार्य तथा धार्मिक उत्सव रचाने के प्रोग्राम बनेंगे।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रैल:- इस मास की ग्रहों की स्थिति आप के आर्थिक संकट को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। कुछ शुभ और अशुभ योगों से इस मास में अकस्मात् लाभ, मानसिक शान्ति, प्रत्येक आरम्भ किये कार्य में सफलता, मित्रों तथा रिश्तेदारों से मेल मिलाप की सम्भावना है।

मई:- हर आरम्भ किये कार्य में सफलता होने का योग है। इस मास में यात्रा भी होगी जो आप के लिए लाभ दायक रहेगी। आमदनी भी इच्छा अनुसार ही बनी रहेगी।

जून:- इस मास में शत्रुओं से आप को सावधान ही रहना चाहिए। यदि आप विद्यार्थी वर्ग से है तो आपको एक एक क्षण का लाभ उठाना चाहिए।

जुलाई:- यह मास तुला राशि वाले जातकों के लिए अशुभ फलदायक ही सिद्ध होगा। मानसिक अशान्ति के साथ साथ आर्थिक संकट तथा धनहानि होने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।

अगस्त:- इस मास में आप का शरीर स्वास्थ्य रहेगा। गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण भी शान्त रहेगा। यदि आप को मातृपक्ष से कोई परेशानी है तो उपाय के रूप में इस मास हर भौमवार को

तहर बनाकर पक्षियों को डालें परन्तु उस तहर (पीले चावल) में नमक के बदले गुड या चीनी डालें।

सितम्बर:- सामूहिक रूप से अगर देखा जाये तो आप के लिए यह मास शुभ फलदायक ही रहेगा, अगर माता पिता या स्त्री आदि की शीर सम्बन्धित कोई परेशानी है तो ग्रहों के प्रभाव से ऐसी समस्याओं का स्वयं समाधान होगा।

अक्टूबर:- यदि इस मास में आप कोई तामीरी काम या वाहन, भूमि आदि खरीदने का प्रोग्राम है तो ऐसे मास में ऐसे कार्यों को स्थगित करके नवम्बर मास में कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।

नवम्बर:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार आप का मन हर समय अशान्त बना रहेगा। यदि इस मास कोई यात्रा का योग व्यापार, विद्या या नौकरी सम्बन्धित बने तो उस यात्रा पर अवश्य जाएँ। जाते समय भगवान् शंकर का ध्यान अवश्य करें।

दिसम्बर:- दिसम्बर का यह मास यद्यपि संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुजरेगा परन्तु मान प्रतिष्ठा की रक्षा में बृहस्पति रक्षक रहेगा। यदि आप नौकरी करते हैं तो बुध के प्रभाव से नौकरी में अकस्मात् तर्की का योग बनेगा।

जनवरी :- गोचर फल से विदित होता है कि यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा। आय की दृष्टि से यदि इस वर्ष कोई काम नये सिरे से आरम्भ करना हो अथवा कारोबार का

बढावा देने का विचार हो तो इस मास को ऐसे कार्य के लिए आप अवश्य चुने।

फरवरी:- इस मास के ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं परन्तु आय की दृष्टि से इस वर्ष का यह मास एक समरणीय मास होगा। आप काम में जुट जाये, हर काम में आप को सफलता मिलेगी, विशेषतया यदि आप खाद्य पदार्थों दवाई इत्यादि का व्यापार करते है तो आप शान व मान से सफल होंगे।

मार्च:- इस मास के अन्त तक आर्थिक संकट बना रहेगा। अगर आप को जाईदाद सम्बन्धित अथवा माता की ओर से कोई चिन्ता है तो यह चिन्ता मिट जायेगी। यदि आप किसी झगड़े में उलझे हैं तो उस का समाधान इस मास में होगा। धार्मिक कामों की और अधिक प्रवृत्ति बनी रहेगी। शुभ कामों पर भी धन खर्च होता रेगा।

वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रैल:- यद्यपि इस मास की ग्रहचाल गोचर फलित के आधार से अनुकूल है परन्तु शरीर की दृष्टि से यह मास शान्तिप्रद नहीं होगा। यदि दैव योग से आप शरीर की परेशानी से बचे रहेंगे तो भी घर के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता आपको अवश्य घेरे रखेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए इस मास के ग्रह अनुकूल हैं। यदि

आपने कोई परीक्षा देनी हो अथवा इन्टरविव आदि में सम्मिलित होना हो तो ऐसे कामों के लिए यह मास सफलता का है।

मई:- इस मास की ग्रह स्थिति भी आप के लिए ठीक नहीं है। शरीर सुख आप का मध्यम रहेगा, इस लिए शरीर के विषय में आप को सावधान ही रहना चाहिए। अचानक चोट लगने की भी सम्भावना है।

जून:- इस मास में आपके आर्थिक संकट के साथ साथ घरेलू समस्याएँ दूर होने का उत्तम योग है। यह मास प्रायः शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा। इस मास में अच्छे पुरुषों से मेल मिलाप होगा। धार्मिक कामों में भी दिलचस्पी बनी रहेगी।

जुलाई:- शरीर सुख मध्यम रहेगा, यदि आप गृहस्थी है तो शरीर कष्ट अथवा स्त्री की ओर किसी प्रकार की मानसिक अशान्ति रहेगी, शरीर के विषय में अगर आप उपाय करना चाहें तो तहर पक्षियों को अवश्य शनिवार को डाला करें।

अगस्त:- यह मास यद्यपि संघर्ष तथा दौड़धूप में ही व्यतीत होगा फिर भी यह मास हर काम में सफलता देने वाला होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो यह मास शान्त वातावरण में ही

व्यतीत होगा।

सितम्बर:- इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिये, यदि आप विवाहित हैं तो कोई न कोई घरेलू परेशानी घरे रखेगी। इस मास में धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए विद्या सम्बन्धित हर एक काम के लिए लाभदायक रहेगा।

अक्टूबर:- इस मास में भी आप की ग्रहचाल में कोई सुधार नहीं हुआ है। धन की परेशानी आप को घरे रखेगी, शरीर के बारे में सावधान रहिये, गृहस्थी होने पर स्त्री, बच्चों के शरीर का विशेष ध्यान रखिये।

नवम्बर:- यह मास भी सामूहिक रूप से आप के लिए लाभदायक रहेगा। यदि आप किसी परेशानी या मुकदमे आदि में फंसे हैं तो ऐसी समस्याओं का हल स्वयं निकल आयेगा, लाभ की दृष्टि से यह मास बहुत ही उत्तम है।

दिसम्बर:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अचानक आर्थिक संकट की संभावना हो सकती है। इस मास आप अपनी पूंजी की रक्षा के विषय में सावधान रहिये, शरीर सुख मध्यम रहेगा।

जनवरी:- गोचर चक्र के अनुसार सूर्य तथा बुध की अच्छी

स्थिति में न होने से इस मास में आपका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहेगा। गृहस्थ पक्ष से मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आर्थिक दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम ही है। यदि आप व्यापार करते हैं तो आपके व्यापार में कुछ कठिनाईयों तथा कठोर परिश्रम के पश्चात ही सफलता प्राप्त होगी।

फरवरी:- यदि आप सीमेन्ट अथवा किसी मिशीनरी से सम्बन्धित व्यापार करते हैं तो इस मास से आप के कारोबार का सुनहरी समय आरम्भ होगा और आप का शरीर स्वस्थ तथा मानसिक शान्ति बनी रहेगी। इस मास में आप शत्रुओं से सावधान ही रहिये। आप के शत्रु आप पर विजय प्राप्त करने की जी तोड़ कोशिशें करेंगे। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास कुछ डावाँडोल ही रहेगा। कड़े परिश्रम के पश्चात भी सफलता नहीं मिलेगी।

मार्च:- फलित शास्त्रों के अनुसार इस मास में शरीर अस्वस्थ, मानसिक अशान्ति, भाई बन्धुओं से अनबन, घरेलू अशान्ति, स्त्री की और से परेशानी व्यापार में हानि आदि का सूचक है। यह मास वृश्चिक राशि वाले जातकों के लिए इस साल का सब से मनहूस महीना मानना चाहिए।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रैल:- मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति से मालूम होता है कि इस मास में आप की सभी इच्छायें पूर्ण होने का योग है। इस मास में आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। मित्रों से मेलजोल बढ़ने का भी योग है। नौकरी पेशा के लिए यह मास सफलता का ही है।

मई:- ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है कि यह मास भी हर प्रकार से शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। इस मास में शुक्र, सूर्य तथा बुध अपनी राशि बदलेंगे जिस से अधिक धन की प्राप्ति का योग बनेगा।

जून:- फलित शास्त्रों के अनुसार यह मास सामूहिक रूप से अशान्ति तथा दौड़धूप के वातावरण में ही गुज़रेगा। आप का शरीर प्रायः अस्वस्थ रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को इस मास पढाई सम्बन्धित हर काम में उलझनें तथा रुकावटों के कारण सानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

जुलाई:- इस मास में आरम्भ किये हुए हर काम में सफलता मिलने का योग प्रबल है। 16 जुलाई 2021 को सूर्य के कर्कट राशि में प्रवेश करने से मास के अन्तिम दो सप्ताहों में अत्याधिक

खर्च होने की संभावना है।

अगस्त:- आप के लिए इस मास में यात्रा करना कष्टदायक होगी। यदि आप नौकरी करते हैं तो वेतन में वृद्धि या किसी और दिशा से अकस्मात् धन मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सफलता का है।

सितम्बर:- इस मास में हर आरम्भ किये हुये काम में संघर्ष के बाद ही सफलता होगी। यदि आप विद्यार्थी है, तो पढने लिखने से सम्बन्धित हर काम में रुकावट के बाद ही सफलता प्राप्त होगी, इस लिए इस मास में आप को कठोर परिश्रम करना चाहिए।

अक्टूबर:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार नौकरी पेशा वर्ग तथा व्यापारी वर्ग किसी तर्की या लाभ की आशा न रखें अपितु अपने काम के विषय में सावधान रहिये, अकस्मात् हानि की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। यदि आप कोई वाहन या भूमि खरीदना चाहते हैं तो विजयेश्वर जन्त्री के मुहूर्त प्रकरण में दिये गए मुहूर्तों पर ही ऐसे कार्य करने का निश्चय करें।

नवम्बर:- फलित शास्त्रों के आधार पर इस मास में सूर्य तथा शुक्र की स्थिति शुभ मानी गई है। जिस से अकस्मात् कोई तामिरी काम या जाईर्दाद बनाने के प्रोग्राम को असली रूप दिये जाने का

योग है। गृहस्थी होने पर किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग इस मास में विद्या सम्बन्धित कार्यों में कम दिलचस्पी लेंगे।

दिसम्बर:- इस मास वैष्णव रहें, गृहस्थी होने पर ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करें, यदि आप स्वयं वाहन चलाते हैं तो सावधानी से ही सफर करें। इस मास में आप पर शुत्रों का अधिक दबाव रहेगा।

जनवरी:- इस मास में तर्की या तबदीली का योग है। घरेलू वातावरण भी शान्त रहने की सम्भावना है। इस मास में यात्रा का योग बनेगा जो आप के लिए लाभदायक रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को सावधान रहना चाहिए।

फरवरी:- इस मास में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिस में आप का विशेष योगदान होगा। विद्यार्थी वर्ग को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी। मित्रों के साथ मेलमिलाप में वृद्धि तथा धार्मिक कार्यों में भी रुचि बढ़ने की सम्भावना है।

मार्च:- यदि आप का जाईदाद सम्बन्धित कोई झगडा चल रहा है तो इस मास में उसके सुलझने की सम्भावना है। यदि आप कोई महोत्सव रचाने का विचार रखते हैं तो इसी मास में सम्पन्न करें, वह महोत्सव आप की शान व मान को बढ़ाने का कारण बनेगा।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रैल:- गोचर चक्र के अनुसार इस मास में घर में हर प्रकार से शान्त वातावरण बना रहेगा। कारोबार, आमदनी आदि की दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास परेशानी का रहेगा।

मई:- इस मास में आप अपने शरीर के विषय में आप को विशेष ध्यान रखें। विद्यार्थियों के लिए यह मास भी परेशानी तथा दौड़धूप का ही रहेगा। आपने यदि कोई इन्टरव्यू या परीक्षा देनी हो अथवा कोई परिणाम निकलनेवाला हो तो उसमें अवश्य सफलता मिलेगी।

जून:- ग्रहों की दृष्टि तथा उनकी स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा होने पर अफसरों तथा सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से मेल जोल का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी होने पर आप इस मास में डट के काम में लगे रहिये, आशा से अधिक लाभ मिलेगा।

जुलाई:- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से 18 जुलाई तक यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुजरेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए भी आरम्भ के लगभग 18 दिन दौड़धूप में ही

गुजरेंगे परन्तु मास के दूसरे भाग में विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

अगस्त :- यह मास आप के लिए हर प्रकार से शुभ फलदायक होगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, इस मास के सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होंगे, घर में प्रायः खाने पीने, खिलाने के प्रग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धुओं मित्रों, रिश्तेदारों के आने में वृद्धि होगी।

सितम्बर :- अगर आप नौकरी अथवा व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो इस मास में कोई ऐसी उलझन आ घरेगी जो आप की मानप्रतिष्ठा के लिए ठीक नहीं होगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है।

अक्टूबर :- इस मास की ग्रह स्थिति को विचार कर यह ज्ञात होता है कि इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिए, यदि आप गाड़ी आदि खुद चलाते हैं तो मंगलवार को दक्षिण दिशा की ओर लम्बी यात्रा पर न जायें, अक्समात् चोट लगने का अन्देश है।

नवम्बर :- फलित गोचर के आधार से मालूम पड़ता है कि यह मास संघर्ष, दौड़धूप तथा परन्तु मानसिक शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। धन लाभ अर्थात् आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। व्यापारी वर्ग तथा नौकरी पेशा वर्ग के लिए यह मास उत्तम रहेगा। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

दिसम्बर :- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति आप के पक्ष में नहीं है। अतः आप को हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है। भौम की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से वह आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। मास के अन्त में यदि यात्रा का योग बने तो वह आप के लिए लाभदायक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास कड़े संघर्ष का होगा।

जनवरी :- इस मास में आप की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ तथा हर प्रकार की रुकावटों को दूर करने में शुक्र ग्रह सहायक रहेगा। इस मास में हर आरम्भ किये काम का परिणाम लाभदायक होगा। शुभ कामों पर खर्च करने की योजना बनेगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थ पक्ष से हर प्रकार से शान्ति रहेगी।

फरवरी :- यह मास सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आदर व मान में वृद्धि होगी, प्रायः हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी।

मार्च :- यद्यपि इस मास के ग्रहों की स्थिति अच्छी है फिर भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। चन्द्रमा की अच्छी स्थिति में न होने से मानसिक अशान्ति के साथ साथ परिवार में झगडा, प्रायः हर कार्य में असफलता आदि का सूचक है। यदि आप नौकरी वर्ग से हैं तो दफ्तर का माहौल आप के प्रतिकूल ही होगा।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रैल :- इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिये, यदि आप विवाहित हैं तो कोई न कोई घरेलू परेशानी घरे रखेगी। यदि आप व्यापार से सम्बन्धित हैं तो अकस्मात् हानि की सम्भावना है, नौकरी पेशा होने पर आफीसरों से अनबन होने के कारण उन्नति में अड़चन पड़ सकती है। विद्यार्थी वर्ग के लिए विद्या सम्बन्धित हर एक काम के लिए लाभदायक रहेगा।

मई:- इस मास में भी आप की ग्रहचाल में कोई सुधार नहीं हुआ है। धन की परेशानी आप को घरे रखेगी, शरीर के बारे में सावधान रहिये, गृहस्थी होने पर स्त्री या पति के शरीर का विशेष ध्यान रखिये, ससुराल की तरफ से भी परेशान होने की संभावना है, नौकरी पेशा होने पर लाभ की अथवा तरक्की की आशा न रखें।

जून:- इस मास के अन्तिम सप्ताह आप के लिये लाभदायक रहेंगे। राज्य अर्थात् राजकीय वर्ग से लाभ, सरकारी कार्यों को सम्पन्न करने में सफलता समाज में ऊचे वर्ग के लोगों से परिचय तथा घनिष्ठता व विवाद में विजय तथा शत्रुओं को पराजित करने में सफलता मिलेगी।

जुलाई:- इस मास में शुक्र का प्राभाव आप पर अधिक रहेगा। यदि आप नौकरी करते हैं, तो तबदीली का योग बनेगा जो इच्छानुसार नहीं होगी। ऐसे ही भौम की स्थिति भी आप को शान्ति का दम लेने

नहीं देगी। कोई भी काम विना रुकावट के हल नहीं होगा। यदि यात्रा का योग बने तो यात्रा में अवश्य लाभ होगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई की ओर दिलचस्पी कम रहेगी, ईश्वर का कृपा पात्र बन जाने के लिए शनिवार को किसी अपाहिज की सहायता करें।

अगस्त:- यह मास आप के भविष्य की सुख शान्ति की तरफ इशारा करता है। आप जो काम हाथ में लेंगे सफलता निश्चित है, परिवार तथा धन की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, शुभ कामों पर धन सार्थक खर्च होगा। मान व प्रतिष्ठा से भी यह मास मध्यम है। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता मिलेगी।

सितम्बर:- इस मास में ग्रहों की दृष्टि को ध्यान में रखते हुये ज्योतिष गोचर में यही मालूम होता है कि आपका यह मास शान्त वातावरण में ही गुजरेगा। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता होगी, यदि आप को ट्रेनिंग आदि करने की योजना है तो इस मास में डट कर परिश्रम कीजिए।

अक्टूबर:- इस मास में धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी। यह मास यद्यपि दौडधूप तथा संघर्ष में ही गुजरेगा परन्तु हर काम में सफलता होगी, खाने खिलाने तथा धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा, रिश्तेदारों तथा मित्रों से मेलमिलाप में वृद्धि होगी, व्यवसाय में मनोनुकूल लाभ मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह मास विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता देने वाला होगा।

नवम्बर:- फलित गोचर के आधार से मालूम पड़ता है कि यह मास संघर्ष, दौड़धूप तथा मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है।

दिसम्बर:- इस मास में आप के रुके काम बिना किसी उलझन के सुलझ जायेंगे, घर में किसी शुभ काम के रचाने का प्रोग्राम बनेगा। इस मास में आपकी सामाजिक कामों में रुचि बढ़ेगी, पूजापाठ में भी अच्छा मन लगेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए चेतावनी है कि वह परिश्रम करें अन्यथा परिणाम उनके विपरीत होंगे।

जनवरी :- यह मास सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा। यदि आप विवाहित हैं तो स्त्री की ओर से परेशानी बनी रहेगी। परिवार का वातावरण भी अशान्त ही रहेगा।

फरवरी:- इस मास की ग्रहों की स्थिति आप के आर्थिक संकट को दूर करने में सहायक सिद्ध हो गी। कुछ शुभ तथा शुभ योगों से इस मास में अकस्मात् लाभ, मानसिक शान्ति, प्रत्येक आरम्भ किये कार्य में सफलता, मित्रों तथा रिश्तेदारों से मेल मिलाप की सम्भावना है। परन्तु शत्रुओं से आप को सावधान ही रहना चाहिए।

मार्च:- नौकरी तथा व्यापारी वर्ग को इस मास में शत्रुओं से परेशानी ही होगी। यदि आप का कोई तरक्की आदि का केस विचाराधीन है तो वह भी ज्यूं का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप विवाहित है तो स्त्री

के स्वास्थ्य का ख्याल अवश्य रखें। विद्यार्थियों के लिए यह मास सफलता का नहीं होगा, परिणाम आप के विपरीत भी हो सकते हैं।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रैल:- इस मास में आप अपने शरीर के विषय में आप को विशेष ध्यान रखें। विद्यार्थियों के लिए यह मास भी परेशानी तथा दौड़धूप का ही रहेगा। आपने यदि कोई इन्टरव्यू या परीक्षा देनी हो अथवा कोई परिणाम निकलनेवाला हो तो उसमें अवश्य सफलता मिलेगी।

मई:- ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है कि यह मास भी हर प्रकार से शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी।

जून:- ग्रहों की दृष्टि तथा उनकी स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा होने पर अफसरों तथा सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से मेल जोल का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी होने पर आप इस मास में डट के काम में लगे रहिये, आशा से अधिक लाभ मिलेगा।

जुलाई:- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से 15 जुलाई तक यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुजरेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। पहले

15 दिन व्यतीत होने पर अकस्मात् लाभ के द्वार खुलेंगे। यदि आप व्यापार करते हैं तो हर काम में सफलता होगी।

अगस्त:- अगर आप नौकरी अथवा व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो इस मास में कोई ऐसी उलझन आ घरेगी जो आप की मानप्रतिष्ठा के लिए ठीक नहीं होगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में ज़रा सी दौड़धूप करने से सफलता आप के पक्ष में होगी।

सितम्बर:- यह मास आप के लिए हर प्रकार से शुभ फलदायक होगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, इस मास के सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होंगे, घर में प्रायः खाने पीने, खिलाने के प्रग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धुओं मित्रों, रिश्तेदारों के आने में वृद्धि होगी।

अक्टूबर:- इस मास की ग्रह स्थिति को विचार कर यह ज्ञात होता है कि इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिए, यदि आप गाड़ी आदि खुद चलाते हैं तो लम्बी यात्रा स्वयं वाहन न चलाये। उपाय के रूप में इस मास की मंगलवार को पीले चावल तहें बनाकर पक्षियों को डालें।

नवम्बर:- फलित गोचर के आधार से मालूम पड़ता है कि यह मास संघर्ष, दौड़धूप तथा मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। परन्तु धन लाभ अर्थात् आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। व्यापारी वर्ग तथा नौकरी पेशा वर्ग के लिए यह मास उत्तम रहेगा। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है। विद्यार्थियों को

चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

दिसम्बर:- इस मास में आप की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ तथा हर प्रकार की रुकावटों को दूर करने में शुक्र ग्रह सहायक रहेगा। इस मास में हर आरम्भ किये काम का परिणाम लाभदायक होगा। शुभ कामों पर खर्च करने की योजना बनेगी।

जनवरी:- यह मास सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आदर व मान में वृद्धि होगी, प्रायः हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी।

फरवरी:- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति आप के पक्ष में नहीं है। अतः आप को हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है। भौम की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से वह आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। मास के अन्त में यदि यात्रा का योग बने तो वह आप के लिए लाभदायक रहेगी।

मार्च:- यद्यपि इस मास के ग्रहों की स्थिति अच्छी है फिर भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। चन्द्रमा की अच्छी स्थिति में न होने से मानसिक अशान्ति के साथ साथ प्रायः हर कार्य में असफलता आदि का सूचक है। यदि आप नौकरी वर्ग से हैं तो दफ्तर का माहौल आप के प्रतिकूल ही होगा।

सर्वतोमुखी अभ्युदय के लिए नित्य प्रार्थना

सूर्योदय से पहले शय्या त्याग कर सर्वप्रथम अपने दाहिने हाथ को देख कर पढ़ें :

कराग्रे वसति लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती,

करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम् ।

स्नान आदि से निवृत्त होकर महा गायत्री यज्ञोपवीत) को अभिषेक देते हुए तीन बार पढ़ें :

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

यज्ञोपवीत को गले में फिर से धारण करते हुए पढ़ें :

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्,

आयुष्यम् अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम् अस्तु तेजः ॥

श्री गणेश जी का ध्यान करते हुए पढ़ें :

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्न वदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये । अभिप्रीतार्थ सिद्ध्यर्थ

पूजितो यसुरैरपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः ।

नव ग्रहों की शान्ति के लिए यह मन्त्र नौ बार पढ़ें :

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्त कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च, गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, कुर्वन्तु सर्वेमम सुप्रभातम् ॥

सुख व मंगल प्राप्ति मन्त्र पढ़ें :

सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सवार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते ।

सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मन्त्र पढ़ें :

सर्वाबाधा विनिर्मुक्ते, धनधान्य समन्वितः, मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयः ।

अपने गुरुदेव को स्मरण करते हुए पढ़ें:

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुरेव जगत्सर्व तस्मै श्री गुरुवे नमः । अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः । हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन, सर्वदेव स्वरूपाय तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्, शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ सिद्धये ॥

गुरुस्तुति

ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये ।
अभिप्रीतार्थं सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः ॥१॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति, द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।

एकं नित्यं विमलमऽचलं सर्वधीसाक्षिभूतं, भावातीतं त्रिगुणरहितं स तं नमामि ॥२॥

स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेदवृत्ति- ध्यायं ध्यायं पशुपतिमुमाकान्तमन्तर्निषणम् ।

पायं पायं सपदि परमानन्दपीयूषधारां, भूयो भूयो निजगुरुपदाम्भोजयुग्मं नमामि ॥३॥

गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥४॥

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥५॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशिलाकया, चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥६॥

श्लोकत्रयं पेठत्प्रातः गुरुपादाम्बुजं स्मरन् । त्रिवर्गफलभागत्र मृतौ मोक्षपदं व्रजेत् ॥

हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन । सर्वदेवस्वरूपाय तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥७॥

स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं यत्किञ्चित्सचराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥८॥

चिन्मयं व्यापितं सर्वं यत्किञ्चित्सचराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥९॥

सर्वश्रुतिशिरोरत्नविराजितपदाम्बुजः । वेदान्ताम्बुजसूर्यो यः तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१०॥

चैतन्यः शाश्वतः शान्तो व्योमातीतो निरञ्जनः । बिन्धुनादकलातीतः तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥११॥

ज्ञानर्शाक्तसमारूढः तत्त्वमालाविभूषितः । भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१२॥

अनेकजन्मसंप्राप्ततर्कबन्धविदाहिने । आत्मज्ञानप्रदानेन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१३॥

शोषणं भवसिन्धोश्च ज्ञापनं सारसम्पदः । गुरोः पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१४॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः । तत्त्वज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१५॥

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीसद्गुरुः । मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१६॥

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम् । गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१७॥

नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम् । शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये ॥१८॥

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्दविग्रहम् । यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते पुमान् ॥१९॥

नमोस्तु गुरुवे तस्मा इष्टदेवस्वरूपिणे । यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ॥२०॥

श्रीगुरुं ज्ञानसत्सिन्धुं दीनबन्धुं दयानिधिम् । देवीमन्त्रप्रदातारं ज्ञानानन्दं नमाम्यहम् ॥२१॥

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे । विद्यावतारसंसिद्धयै स्वीकृतानेकविग्रह ॥२२॥

नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे । सर्वाज्ञानतमोभेदभानवे चिद्धनाय ते ॥२३॥

स्वतन्त्राय दयाकुम्भविग्रहाय परात्मने । परतन्त्राय भक्तानं भव्यानां भव्यरूपिणे ॥२४॥

विवेकिनां विवेकाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम् । ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ॥२५॥

पुरस्तात्पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः । सञ्चिदानन्दरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥२६॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् । शास्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥२७॥

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ । तस्यैत कथिता ह्यर्थाः प्रकाश्यन्ते महात्मनः ॥२८॥

अहं देवो न चान्योस्मिब्रह्मैवाहं न शोकभाक् । सञ्चिदानन्दरूपोहं नित्यमुक्तस्वभाववन् ॥२९॥

संसार सागर मुत्तरणैकमन्त्रं । ब्रह्मादियोगिमुनिपूजितासिद्धिमन्त्रम् ।

दारिद्र्यदुःखभयरोगविनाशमन्त्रं, वन्दे महाभयहरं गुरुराजमन्त्रम् ॥३०॥

॥ इति गुरुस्तुतिः ॥





॥ श्री गणेश प्रार्थना ॥

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईशानन्दनम् । एकदन्त वक्रतुण्ड नागयज्ञ सूत्रकम् ॥

रक्तगात्र धूम्रनेत्र शुक्लवस्त्र मण्डितम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ॥
पाशपाणि चक्रपाणि मूषकादि रोहिणम् । अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्र कोटि निर्मलम् ॥

चित्र माल भक्तिजाल भालचन्द्र शोभितम् । कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ॥

भूतभव्य हव्यकव्य भृगु भार्गवार्चितम् । दिव्य वह्नि कालजाल लोकपाल वन्दितम् ॥

पूर्णब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ॥

विश्ववीर्य विश्व सूर्य विश्वकर्म निर्मलम् । विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम् ॥

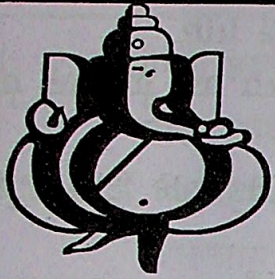
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितुं चतुर्युगम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ॥

ऋद्धि बुद्धि अष्ट सिद्धि नवनिधान दायकम् । यज्ञ कर्म सर्वधर्म सर्ववर्ण अर्चितम् ॥

भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सर्दारचितम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ॥

हर्ष रूप वर्ष रूप परुष रूप वन्दितम् । शोर्ष कर्ण रक्त वर्ण रक्त चंदन लोपितम् ॥

योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायिकम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ॥



आसय शरण करतम दया,

ॐ श्री गणेशाय नमः



आसय शरण करतम दया, ॐ श्री गणेशाय नमः । गणपथ गणेश्वर हे प्रभो, कलिराज राजन हुन्द वैभौ
 पजि लोल पादन तल नमः, ॐ श्री गणेशाय नमः । गुडनी च्यछु आधिकार, कलिकालकुयु च्य ताजदार
 पजि लोल पादन तल प्येमा, ॐ श्री गणेशाय नमः । मूषक च्य वाहन शूभवुन, त्रन लूकनय मेज फेरुवुन
 सहायक म्ये रोजतम हरदम, ॐ श्री गणेशाय नमः । यज्ञस जपस व्यवहारसुय, गुड छि सुराँन प्रथ कारसय
 कारस अत्रान छुकेँ च्य जमः ॐ श्री गणेशाय नमः । सुन्दर लम्बोधर एकदन्त, स्मरन च्यबतियन म्ये अन्द
 रति वेल सुन्दर छुस समः, ॐ श्री गणेशाय नमः । स्मरण यिचेंन यिम करान, भवसागरस अपोर तरान
 रट् सानि नावे चय नमा, ॐ श्री गणेशाय नमः । रमरन यि चानि भक्ति ज्ञन, पूरण गछन तमँसुन्द छुप्रना
 चरणोदकुक अमृत चमा, ॐ श्री गणेशाय नमः । जगतुक महेश्वर च्य पिता, सीता रूप सितधर्मच सत्ता
 माता च्य गौरी श्री वुमा, ॐ श्री गणेशाय नमः । बाह नाव सुन्दर शूभवन, स्वर्ग गस गछन तिम बोलवन

पूरण करुम पूरण तमहः, ॐ श्री गणेशाय नमः । आमुत भक्त च्य छुस शरण, प्योमुत खोरनतल छुय परण
 वर दिथ कास्तम च्य गमा, ॐ श्री गणेशाय नमः । सुबह प्यठ भक्त, छि लारान प्रेम पोश हथ छिय प्रारान
 छुयख च्य पूजि लागनुक तमा, ॐ श्री गणेशाय नमः । गणिशबल प्यठ आख चीलथअय
 अंग अंग सेंदरा मीलथय गोड़ बोज़ म्यन प्रार्थना

ॐ श्री गणेशाय नमः ।

ॐ श्री गणेशाय नमः ।

ॐ श्री गणेशाय नमः ।

ॐ श्री गणेशाय नमः ।



ॐ श्री गणेशाय नमः ।

ॐ श्री गणेशाय नमः ।

ॐ श्री गणेशाय नमः ।

ॐ श्री गणेशाय नमः ।



शारदा वंदना

नमामि त्वां शारदा देवीम्, महाभागाम् भगवतीम्, काश्मीर पुरवासिनीं, विद्या दायिनीम्
रक्षमाम् रक्षमाम्। नमामि त्वाम् ॥ॐ॥

नमामि त्वां शारदा देवीम्, पीतवस्त्र धारिणीम्, श्वेताम्बुज विहारिणीम्, चतुर्-भुज धारिणीम्
रक्षमाम् रक्षमाम्। नमामि त्वाम् ॥ॐ॥

नमामि त्वां शारदा देवीम्, शततंत्रीवीणावादिनीम्, मोक्ष दायिनीं, पापनाशिनीम्
रक्षमाम् रक्षमाम्। नमामि त्वाम् ॥ॐ॥

नमामि त्वां शारदा देवीं, वितस्ता रूपिनीम्, हिमाच्छादित गिरि शोभनीम्, कलशामृत धरायम्
रक्षमाम् रक्षमाम्। नमामि त्वाम् ॥ॐ॥

सरस्वति को ध्यान करे

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
 या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ॥
 या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
 सा मां पातु सरस्वति भगवती निःशेषजाडयापहा ॥
 शुक्लां ब्रह्माविचारसारपरमामाद्यां जगदव्यापिनीं,
 वीणा पुस्तकधारिणीमभयदां जाडयान्धकारापहाम् ॥
 हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां,
 वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥
 सरस्वती महाभागे विद्ये कमललोचने।
 विश्वरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि सरस्वति ॥



महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए पढ़ें:

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते। शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥ नमस्ते
गरुडारूढे कोलासुरभयंकरी । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥ सिद्धिबुद्धिप्रदे
देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि । मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥

माँ जगदम्बा या इष्ट देवी का ध्यान करते हुए पढ़ें



लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतै-योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम् ।

बालादित्य श्रेणी समान द्युति पुञ्जां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां, पादाम्भोज-ध्यान-पराणं पुरुषाणम् ।

ईशीम्-ईशाद् आर्धं हरां तां तनुमध्यां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां, नित्यं चित्ते निवृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम् ।

सत्य-ज्ञान-आनन्दमयीं तां तडित्-आभां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥
चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला लकभाराम् ।

इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित-पादाम्बुजयुग्मां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥
नाना-कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्यत स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका ।

कल्याणीं तां कल्पलताम्-अनतिभाजां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥
मुलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरञ्चं, सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलितांगीम् ।

स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥
आदि-क्षन्ताम्-अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं, भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम् ।

शब्द-ब्रह्मानन्दमयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥
यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्डं जगत्-अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर-अभूत- अक्षतमेव ।

भर्त्रा सार्धं तां स्फुटिकाद्रौ विहरन्तीं, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च ।

ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥
नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः, साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च ।

विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥
प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो, भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः ।

वाचां सिद्धिं सम्पतिम्-उच्चैः शिवभक्तिं, तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति ॥

परूहूतप्रिया कान्ता कामिनी पदमलोचना, प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ।
अघोर व्याधिनाशी च घोरदुःख निवारिणी, अष्टा दशभजा दुर्गा शारिका श्याम सुन्दरी ।
निर्गुणे निष्क्रिये नित्ये सच्चिदानन्द रूपिणि, नमोस्तुते महाराज्ञि पाहिमाम् शरणगतम् ।
ज्वालामुखी महाज्वाले ज्वाला पिंगललोचने, ज्वालातेजे महातेजे ज्वालामुखि नमोस्तुते ।

शारदे वरदे देवि मोक्षदात्रिसरस्वति, नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमोनमः ।

या देवी सर्व भूतेषु दया रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।

सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते ।



॥ इन्द्राक्षी स्तोत्रम् ॥



अस्य श्री इन्द्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर ऋषिः, अनुष्टुप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्री शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ-ध्यानम्

इन्द्राक्षी द्विभुजां देवीं पीत वस्त्राधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय प्रदाम्। सहस्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम् वदनां नित्यम् अप्सरो गणसेविताम्। श्री दुर्गा सौम्य वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रैलोक्य मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्। ॐ श्री ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्री प्री स्वाहा।

इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ।१।
 कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपः, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ।२।
 नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी काल रात्रि-स्तपस्विनी ।३।
 मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ।४।
 आनन्दा भद्रजा नन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।५।
 इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति परायणा, महिषासुर संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ।६।
 वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।७।
 आनन्दा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ।८।
 शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्थ शरीरिणी, एतैः नाम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।९।
 आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यसुख संपत्तिकारकम्, क्षय-पस्मार-कुष्ठादिताप ज्वर निवारणम् ।१०।

अपराधक्षमास्तोत्र

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदापि च न जाने स्तुतिमहो, न चाह्वानं ध्यानं तदापि च न जाने स्तुतिकथाः ।

न जाने मुद्रास्ते तदापि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् । १।

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया, विधेयाशक्यत्वातव चरणयोर्या च्युतिरभुत् ।

तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति । २।

पृथ्व्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विलतरलोऽहं तव सुतः ।

मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति । ३।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।

तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति । ४।

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।

इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता, निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् । ५।

श्वपाको जल्पाको भवति मुधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ।६।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च-न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ।८।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः, किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।

श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे, धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।

नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननी स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।

अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापधनी त्वत्समा न हि।

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ।१२।



अथ राज्ञीस्तोत्रम्

ॐ शीतांशुबालार्ककृशातुनेत्रां चतुर्भुजामेणत्वगासनस्थाम्। शंखाब्जशूलासिधरां सहेशीं राज्ञीं भजेऽहं
 तुहिनाद्रिरूपाम्। स्मृतैवान्तर्गता पुंसां हरन्ती सकलं मलम्। जयत्येषा महाराज्ञी भक्तानां
 क्षेमदायिनी।२। त्रिजगन्मोहिनीमडि मयूरीभूतसन्दुणे। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।३। शेषाशेषमुखैर्गुण्ये
 गुणिगुणगणप्रिये। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।४। सुरा सुर मुनी इन्द्राद्यैर्वन्दनीयपदाम्बुजे। नमोऽस्तु ते
 महाराज्ञि० ।५। चराचरजगत् सृष्टिस्थितिसंहतिकारिणि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।६।
 भक्तकल्पलतेऽ नल्पवा ड्माधुर्याजिताखिले। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।७। ब्रह्मा विष्णु
 महेशादिवन्दिते गिरिनन्दिनि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि ० ।८। भक्तानां भीमसंसारपारावारप्रतारिणि।
 नमोऽस्तु ते महाराज्ञि ० ।९। निर्गुणे निष्क्रिये नित्ये सच्चिदानन्दरूपिणि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि ०
 ।१०। राज्ञीस्तोत्रमिदं पुण्यं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठन्। असंशयं विशेषेण वशयेदखिलं जगत्।११। इति
 राज्ञीस्तोत्रम्।।

अथ शारिकास्तोत्रम् ।

बीजैः सप्तभिरुज्ज्वलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या
 सप्तलोकार्तिहत् । कश्मीरप्रववेशमध्यनगरीप्रद्युम्नपीठे स्थिता देवी सप्तकसंयुता भगवती
 श्रीशारिका पातु नः ।। जय भगवति विन्ध्यवासिनि श्मशानवासिनि कैलासवासिनि
 हुङ्कारिणि कालायनि कात्यायनि हिमगिरितनये कुमारमातः गोविन्दभगिनि
 शितिकण्ठकण्ठाभरणे अष्टादशभुजे भुजगवलय मण्डिते केयूरहाराभरणे जय खड्ग त्रिशूल
 डमरु मुद्गरपरशु शशिकला शरचाप वरा भय पाश पुस्तक कपाल खट्वाङ्ग गदा मुसल तोमर
 वरहस्ते कृपापरे प्रभूतविविधायुधे चण्डिके चण्डघण्टे किरातवेषे ब्रह्माणि रुद्राणि नारायणि
 ब्रह्मचारिणि वेदमातः गायत्रि सावित्रि सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि विश्वेश्वरि सर्वकर्त्रि
 समाधिविश्रान्तिमये चिन्मये चिन्तामणिस्वरूपे कैवल्ये कैवल्यस्वरूपे शिवे निराश्रये
 निरुपाधिमये ब्रह्मविष्णुमहेश्वरनमिते मोहिनि तोषणि भयङ्करनाशिनि दितिसुतप्रमथिनि काले

कालाग्रिशिखे कालरात्रे अजे नित्ये सिंहस्थे योगरते योगीश्वरनमिते
 भक्तजनवत्सले सुरप्रिये कारुण्ये दुर्गे दुर्जये शरण्ये कुरु मे जयम् ।। प्रद्युम्नशिखरासीनां
 मातृचक्रोपशोभिताम् । पीठेश्वरीं शिलारूपां शारिकां प्रणमाम्यहम् । अमा माऽवतु कामा च
 चार्वङ्गी टङ्कधारिणी । तारा च पार्वती चैव यक्षिणी शारिकाष्टमी ।

इति शारिकास्तोत्रम् ।।

अथ त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्

ॐ श्वेतपद्मासनारूढां शुद्धस्फटिकसन्निभाम् । ध्यात्वा वाग्देवतां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।
 १। सर्वलोकप्रियकरीं सर्वलोकेषु संस्थिताम् । सर्वैश्वर्यप्रदां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् । २।
 पद्मालयां पद्मपीठां पद्मासेवितपत्कजाम् । पद्मरागनिभां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् । ३।
 पञ्चबाण-धनुर्बाणन्याशाङ्कशधामिमाम् । पञ्चब्रह्ममयीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् । ४।
 हृत्पुण्डरीकनिलयां षडास्यजननीमिमाम् । षट्कोणेषु स्थितां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् । ५।

अष्टैश्वर्यमयाकारामष्टबाहुयुतायुधाम् । अष्टमूर्तिमयीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् । ६ ।
 नवमाणिक्यमुकुटां नवमाणिक्यसेविताम् । नवयौवनगां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् । ७ ।
 काञ्चीधाममनोरम्यां काञ्चीधामविभूषिताम् । काञ्चीपुरीश्वरीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् । ८ ।
 हरार्धभागनिलयामम्बाभिष्टार्थ- दायिनीम् । हरप्रियां निजां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् । ११ ।

त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम् ॥

अथ ज्वालास्तोत्रम् ।

ॐ नताः स्तुतिपराः सर्वे यस्या नित्यं दिवौकसः । तमो हत्वा शंकरस्य भूयात्सदाशिवा । १ ।
 श्रीसुन्दरीं जगद्धात्रीं ज्वालाव्याप्तदिगन्तराम् । सुरैः सिद्धैः स्तुतां भूपैः सुमुखीं नौम्यहं शिवाम् । २ ।
 दैत्यानां भटकोटिको टिमुकुटाटोपानधः कुर्वतीं विघ्नानां कटकान्यतीव कटुकान्यापाटयन्तीं स्फुटम् ।
 भक्तानामभयं वरं च दधतीं शान्तात्मनां सर्वदा षड्वक्रेण जितां क्रियाविरहतो ज्वालामुखीं
 नौम्यहम् । ३ । ब्रह्माणं मधुकैटभौ वधपरौ सन्त्रासयन्तौ परं नानारूपधरावतीव भयदौ स्थूलोन्नतौ

संयुगे। तौ हत्वा विनिवर्तितां कृतवतीं तन्मेदसा मेदिनीं सर्वेषां शुभदायिनीं भगवतीं ज्वालामुखीं
 नौम्यहम्।४। सैन्यानां महिषासुरस्य मृतिदां सिंहाधिरूढां च तां नाना काविशंष सौख्यजननी
 देहान्तरे संस्थिताम् बालामध्यमवृद्धरूपरमणीं श्रीसुन्दरीं वैष्णवीं स्त्रीरूपेण जगद्विमोहनकरीं
 ज्वालामुखीं नौम्यहम्।५। देवानां भयदायकौसुकठिनौ शुम्भो निशुम्भस्तथा नानाशस्त्रधरौ रिपू
 धृतिहरौ तौ चण्डमुण्डाकिंतौ। सङ्ग्रामे ऽप्यपराजितौ रिपू धृतिहरौ द्वौ रक्तबीजान्वितौ हत्वैवं
 सुबलां प्रसन्नवदनां ज्वालामुखीं नौम्यहम्।६। संसारार्णवतारिणीं रविशशिकोटिप्रभां सुप्रभां
 पापातंकनिवारिणी हरिहरब्रह्मादिभिः संस्तुताम्। दारिद्र्यस्य विनाशिनीं सुकृतिनां जाड्यं हरन्तीं
 भृशमज्ञानान्धमतेः कवित्वजननीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्।७। रत्नपञ्चकनामानं श्रीसुन्दर्याः स्तवं
 वरम्। अव्याकुलं यः पठति सोऽभीष्टां सिद्धिमाप्नुयात्।८। ज्वालामुखी महाज्वाले ज्वाला
 पिङ्गललोचने। ज्वालातेजी महातेजी ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते॥

इति ज्वालामुखीस्तोत्रम्॥





॥ ओ३म् नमः पराशक्तये ॥

आदिक्षान्त समस्तवर्णविभवा यामातृकारूपिणी, मंत्रवीर्य परामृतरसा स्वादात्सुख दायिनी।
भावव्रात समुद्रगर्भलहरी शब्दार्थतत्त्वव्यापिनी, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराज राजेश्वरी॥१॥
वाच्य वाचक सारपूर्ण विभवा देवी षडध्वाश्रया, श्री चक्रान्तरवहिनकोण निलयाया बिन्दुमात्रात्मिका
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरा परामृतमयी नित्यं जगत्तर्पिणी, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥२॥
पूर्णाहन्त्वविमर्श पावनकरी नित्यं मलक्षालिनी, भक्तानां भवभीति भञ्जनकरी हृत्पंकजे संस्थिता।
बाह्याभ्यन्तरचारिणी सुरस्तो हंसेनया सेविता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥३॥
उर्ध्वाधः स्थितनाडिवृन्दविभवे संजीविकामध्यमा, स्वात्मादर्शन तत्परैश्च सततं भक्तैः खलु प्राप्यते।

मूलाद् ब्रह्मबिलावधितडिदिव्या ब्रह्मनाडी स्मृता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥४॥

वर्णावर्णनिवर्ण भेद निबहातत्राप्यभेदात्मिका, वेदान्तागमतन्त्र सार महिमाषड् दर्शनोल्लंघिनी।

सर्वाचार विचार पालन परायानिर्गता चारका, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥५॥

ओं तत्सदितिनामभिर्निगदिता सर्वागमे योगिभिः, तत्प्राणान्त विचार्यभक्त निबहैः हीतमिव शश्वत्।

ऐन्द्र-धाम विहाय क्षीणकलुषैर्मोक्षाय या स्वीकृता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥६॥

सौरं ज्योतिरिदमपि परिमितं हनीतं तथा यत्पदात्, ओं मित्येतद्विमर्शनेन सततं सर्वमिदं स्वात्मान।

रक्तेस्तत्पद प्रेप्सुभिर्जुच मुनिभिः स्वस्थै सदास्वीकृतम्, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥७॥

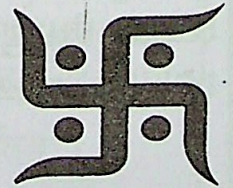
तैस्तैर्योगिवरैः सदा कवियशोनक्तं दिनं यत्पद-ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा प्राप्तं महत् निर्मलम्

मोक्षं भोगं ददाति या प्रभुदिता विद्याधरैर्वदिता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥८॥

इति श्रीराज राजेश्वर्याः स्तुतिः राजानक

विद्याधर विरचिता शुभायास्तु।

इति शिवम्

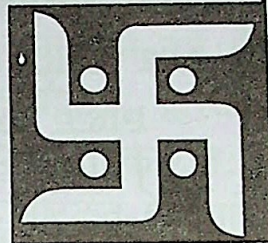


विष्णु स्तुति

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्। श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे॥ अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽराधितम्। इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे॥ विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये। वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः॥ कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे। अच्युतानन्त हे माध्वाधोक्षज, द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक॥ राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो, दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः। लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो-गस्त्य-सम्पूजितो-राघवः-पातु-माम्॥ धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां, केशिहा-कंसहत्-वंशिका-वादिकः। पूतना कोपकः सूरजा खेलनो, बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा॥ विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं, प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्। वन्यया मालया शोभितोरः स्थल, लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे॥ कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भाजमा-नानं, रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयोः। हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्ज्वलं, किङ्किणीं-अञ्जुलं-श्यामलं-तं-भजे॥ अक्षुत्स्याष्टकं-यः-पठेत्-इष्टदं, प्रेमतः-प्रत्यहं-पुरुषः-सस्पृहम्। वृत्ततः सुन्दरं कर्तुं विश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिर्जयायते सत्त्वरम्॥

॥ विष्णु प्रार्थना ॥

जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे, उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे ।
घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम अनुकम्पय दीनम् अनाथं कुरु भव सागरपारम् ।
घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥१॥ जय जय देव जया सुरसूदन जय केशव जय
विष्णो, जय लक्ष्मीमुख कमल मधुव्रत जयदशकन्धर जिष्णो । घोरं हर मम नरकरिपो
केशवकल्मषभारं ॥२॥ यद्यापि सकलम् अहं कलयामि हरे, नहि किम् अपि स सत्त्वम् । तत्
अपि न मुञ्चति माम इदम् अच्युत, पुत्रकलत्र ममत्वं । घोरंहर मम नरकरिपो केशव
कल्मषभारं ॥३॥ पुनर् अपि जननं पुनर् अपि मरणं, पुनर अपि गर्भ निवासम् । सोढुम् अलं
पुनर अस्मिन् माधव, माम् उद्धर निजदासम् । घोरंहर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥४॥
त्वं जननी जनकः प्रभुर अच्युत, त्वं सुहृत् कुलमित्रम् । त्वं शरणं शरणा गतवत्सल, त्वं भव
जलधि वहित्रं । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥५॥ जनक सुता पति चरण
परायण शंकर मुनिवर गीतं । धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम, वारय संसृति भीतिम् ।
घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥६॥



भागवान् शंकर का ध्यान करते हुए पढ़ें :

प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ।२। मृत्युञ्जय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात् ।२। कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रं हारम्। सदा रमन्तं हृदयारविन्दं, भवं भवानी सहितं नमामि ।३। हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ शिव शंकर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तु ते ।४। तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर, यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः। आधीनाम् अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् उपद्रवाणां दलनं महादेवम् उपास्महे ।६। आत्मा त्वं गिरिजा मतिः परिजनाः प्राणाः शरीरं गृह, पुजा ते विषयोपभोगरचना, निद्रा समाधिस्थितिः। संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत् यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम् ।७। नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मांग रागाय महेश्वराय । देवाधि देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।८। मातंग चरमाम्बर भूषणाय, समस्त गीर्वाण गणार्चिताय, त्रैलोकनाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।९। शिवा मुखाम्भोजविकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय, चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।१०। वशिष्ठ कुम्भोत् भव गौतमादि, मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय,

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।११। यज्ञ स्वरूपाय जठाधराय,
 पिनाक हस्ताय सनातनाय, नित्याय शुद्धाय निरंजनाय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।१२।
 वपुष्पादुर्भावात् अनुमितम् इदं जन्ममनि पुरा । पुरारे नैवाहं क्वचित् अपि भवन्तं
 प्रणतवान् नमन्मुक्तः सम्प्रत्यतनुर् अहम् अग्रेष्यनतिगान्, महेश क्षन्तव्यं तत् इदम् अपराध
 द्वयम् अपि ।१३। करचरणकृत वाक् कायजं कर्मजं वा, श्रवण नयनजं वा, मानसं वाऽ
 पराधम् । विदितम् अविदितं वा, सर्वम् एतत् क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।१४।

लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिः सुरार्चितं लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम् ।

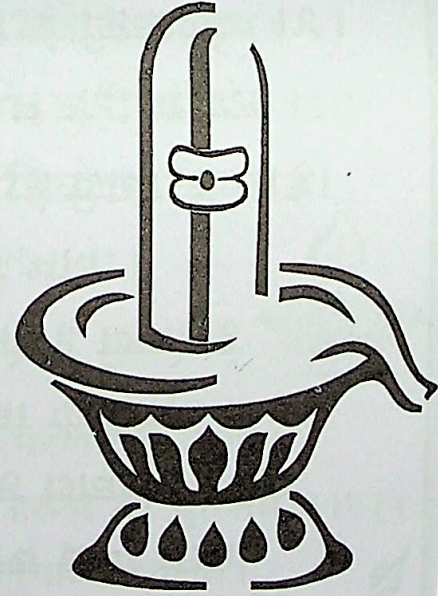
जन्मज- दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम्॥१॥

देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगम्, कामदहं करुणाकर-लिंगम् ॥

रावणदर्प-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिवलिंगम् ॥२॥

सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिंगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम्॥

सिद्ध-सुरासुर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥३॥
 कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति वेष्टित-शोभित-लिंगम् ॥
 दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥४॥
 कुकुम चंदन लिपितिंगं, पंकज हार सुशोभित लिंगम् ॥
 संचित पाप विनाशन लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥५॥
 देव गणार्चित सेवित लिंगम्, भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम् ॥
 दिनकर-कोटिप्रभाकर लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥६॥
 अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगम्, सर्व-समुद्भ-भव-कारण-लिंगम् ॥
 अष्ट दरिद्र विनाशित लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥७॥
 सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम् ॥
 पारत्परं-परमात्मक-लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥८॥





शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं



मनो बुद्धि अहंकार चित्तानि नाहं, नच श्रोत्र जिह्वे नच घ्राण नेत्रे ।
 नच व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।१।
 नच प्राण संज्ञो न वै पंचवायु, न वा सप्त धतुर्न वा पंचकोशः ।।
 न वाक् पाणिपादं न चोपस्थ पायुः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।२।
 नमे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ, मदो नैव मात्सर्य भावः ।
 न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।३।
 न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः ।
 अहं भोजनं नैव भोज्यं न भुक्ता, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।४।
 न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः, पिता नैव मे नैव माता च जन्म ।

न बन्धुर्न मित्रं गुरु नैव शिष्यः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ॥५॥

अहं निर्विकल्पी निराकार रूपो, लघुत्वात् च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।

न चा संगतं नैव मुक्ति र् न मेयः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ॥६॥

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं, शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

इति श्रीमत् शङ्कराचार्य विरचितं निर्वाणषट्क सम्पूर्णम्



शिव चामर स्तुति



ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली, कृत ताडन परिपीडन मरणागम समये।

उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ॥१॥

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते, पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते।

शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ॥२॥

भव भञ्जन सुर रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।

गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ॥३॥

शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये, कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।

द्विज क्षत्रिय वनिता शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ॥४॥

भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं, दयितात्मज ममताभर कलुषी कृत हृदयम्।

करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ॥५॥

शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम्,

शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम्

इति श्रीमत् अभिनव गुप्त विरचितं शिव चामर स्तुतिः सम्पूर्णम्

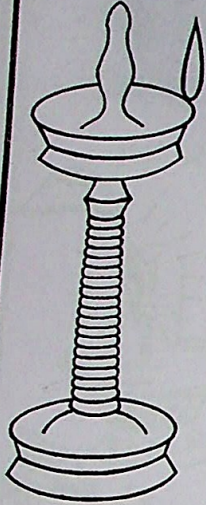


ॐ नमः शिवाय

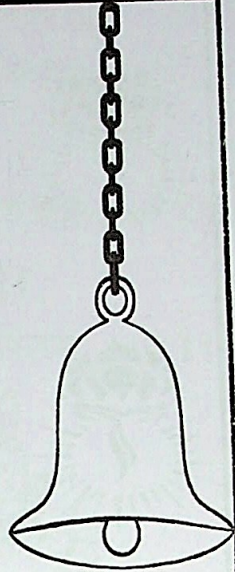
भैरवस्तुति

ॐ व्यापत-चराचर-भाव-विशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम् ।
 भैरव नाथम् अनाथ शरणयम्, तन्मय-चित्ततया-हृदि-वन्दे ॥१॥
 त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं, भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या ।
 त्वं च महेश सदैव ममात्मा, स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ॥२॥
 स्वात्मानि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति ।
 सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख-विमोह, त्रास-विधायिषु कर्म-गाणेषु ॥३॥
 अन्तक! मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि ।
 शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि ॥४॥
 इत्थम्-उपोढ-भवनमय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्रः ।
 मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै, नाथ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ॥५॥
 प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि-प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः ।
 भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यऽहं-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि ॥६॥





मानस-गोचरम्-एति, यदैव-क्लेश-दशा-तनु-ताप-विधात्री
 नाथ! तदैव मम-त्वत्-अभेद, स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ॥७॥
 शंकर! सत्यम्-इदं व्रत-दान-स्नान-तपो-भव-ताप विनाशि ।
 तावक शास्त्र परामृत- चिन्ता सिन्ध्यति चेतसि निर्वृति धारा ॥८॥
 नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित् इयं मम भैरवनाथ ।
 त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम् एकं, दुर्लभम् अन्यजनैः, समयज्ञम् ॥९॥
 वसुरसपौषे कृष्णदशम्यां, अभिनवगुप्त स्तवम् अकरोत् ।
 येन विभु भव मरु सन्तापं, शमयति झटिति जनस्य इमम् दयालुः ॥१०॥
 हरिरेव जगज्जगदेव हरिः, हरितोजगतो न हि भिन्नमणु ।
 इति यस्यमतिः पमार्थगति, स नरो भवसागरमुत्तरति ॥ ११॥
 आदावन्ते चिन्द्रस रूपं, मध्येचिद्रस बुदबुदरूपम् ।
 भातं भातं भा रूपं स्यात् नो, भातं चेतिव्रतरां न स्यात् ॥१२॥
 ॥ इति अभिनवगुप्त शिव स्तुति ॥



श्री रुद्राष्टकम्



नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं, विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।

अजं-निगुणं-निर्विकल्पं-निरीहं, चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्॥

निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं, गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।

करालं-महाकाल-कालं-कृपालं, गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्॥

तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं-गभीरं, मनो-भूत-कोटि-प्रभाश्री-शरीरम्।

स्फुरन्-मौलि-कल्लोलिनी-चारु-गङ्गा, लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा॥

चलत्-कुण्डलं-भुसुनेत्रं-विशाल-प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालम्।

मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं, प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथ-भजामि॥

प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं, अखण्डं-अजं-भानु-कोटि-प्रकाशम्।

त्रयः-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं, भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्॥



कलातीत-कल्याण-कल्यान्त-कारी, सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः ।

चिदानन्द-सन्दोह-मोहाप-हारी, प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः ॥

न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं, भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम् ।

न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं, प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं ॥

न जानामि-योगं-जपं-नैव-पूजां, नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम् ।

जरा-जन्म दुखौघ तातप्यमानं, प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो ॥

रुद्राष्टकं-इदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये ।

ये पठन्ति नरा-भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥



ॐ नमः शिवाय



शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मङ्गरागाय महेश्वराय ।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय । १ ।

मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय, नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय ।

मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय, तस्मै म काराय नमः शिवाय । २ ।

शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृन्द, सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय ।

श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय । ३ ।

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य, मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय ।

चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय । ४ ।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय ।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय । ५ ।

पञ्चाक्षरम्-इदि पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ ।

शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते ।।

शिव षडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं बिन्दुसंयुक्त नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।

कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः । १ ।

नमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः ।

नरा नमन्ति देवेश न काराय नमो नमः । २ ।

महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम् ।

महापापहरं देवं मकाराय नमो मः । ३ ।

शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम् ।

शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः । ४ ।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम् ।

वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः । ५ ।

यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः ।

यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः । ६ ।

षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ ।

शिव-लोकं-अवाप्नोति, शिवेन-सह-मोदते । ७ ।



अनुवाद :- आनन्द स्वामी प्राणनाथ भट्ट "गरीब"

अभिनव गुप्त कृत शिवस्तुतिः

ॐ व्याप्त-चराचर भाव-विशेष,
चिन्मयम्, एकं अनन्तम्-अनादिम् ।
भैर-व-नाथम्-अनाथ-शरण्यम्-
वन्मय-चित्तया-हृदि वन्दे ॥ (1)

अनुवाद:- कॅरिथ प्रक्रम शिवस छुय वश करान मन, वन्दान तस पान करान सोरुय बु अर्पण, येमिस गर्भस अन्दर सृष्टी छि रोज्ञान, छु बौड ज्ञानी अनन्त रूप पान ईशान, चे भैरवनाथु भौरव छीय चे पूजान, यिम्न छुनु कांह तिम्न नखि डखि चु रोज्ञान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान ॥

त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम् इदानी,
भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्तया ।
त्वं च महेश सदैव ममात्मा,
स्वातममयं मम तेन समस्तं ॥ (2)

अनुवाद:- यि छुय कुल कायनातस रूप चोनय, कोरुथ अनुग्रह मे गव आभास चोनय, जगत पनुनय सरूपा छुममे बासान, योहय अनुभव मे द्वह रात छालु मारान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान ॥

स्वातमनि-विश्वगते त्वयि नाथे,
तेन न संसृति -भीतेः कथास्ति ।
सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख विमोह,
त्रास विद्यायिषु कर्म गणेषु ॥ (3)

अनुवाद:- भयंकर द्वख तु मुह पैदा करान नाथ, फ़सेमुत्य बॅखुत्य चान्य जालस छि शिवनाथ, मगर सोरुय जगत चोनय स्वरूप छुय, यिम्न समसौर्य द्वखन छुख ना चटान चुय, तवय शिव लोलु वाल्यन भय चलान छुय, यि म्योनय रूप शिव-सँदुरस रलान छुय, दुयुत त्राँविथ कुनुय सम्भाव आसान, दोयिम छुनु कांह तुं त्येलि क्युथ भयि छु बासान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान ॥

अन्तक मा प्रति मा दृशम-एना,
क्रोध-कराल-तमां विदधीहि ।

शंकर-सवेत-चिन्तन-धीरो,

भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि ॥ (4)

अनुवाद:- हतो यमराजु क्रूधुच मो नजर कर, फ़ना यिनु करि नजर मो बन भयंकर, बु छुस दोह रात शिवस कुर्बान सपदान, करान तन-मन बु सेवा तस वन्दान प्राण, करान ध्यान भैरवी बल छुम मे वरदान, यमो चॉन्य कालु दृष्टी नो मे पोरान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान ॥

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित,

दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्रः ।

मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचैः नाथ,

नमोस्तु न जातु बिभेमि ॥ (5)

अनुवाद:- यि कुलहम बस जगत चोनुय स्वरूप छुम, न्यँदुर मुहची गँजुम अज्ञानुय चोलुम, सिर्यि ह्युव ज्ञानु प्रकाश व्वदय सपदुम, भूत-

पेशाच्च भय चोलुम मन शान्त सपदुम, अयाल यमराजु सुन्द कति खोचुनावान, बु बारम्बार प्रणाम पादन चे सोज्ञान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान ॥

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि,

प्रोक्षित-विशव-पदार्थ-सतत्वः ।

भाव-परामृत-निर्भरपूर्व,

त्वय्यहम-आत्मनि निर्वृतिम-एमि ॥ (6)

अनुवाद:- योहय ज्ञान येलि मे प्यव थनु शांत गँयि प्राण, चु रूदुख यड बँरिथ अमृत मे चावान, चु अवनिँशी अमर चोन रूप आसान, यि चोनुय कुल सोरूप अँन्दरी बु डेशान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान ॥

मानस-गोचरम्-एति-यदैव,

क्लेश-तनु-ताप-विधात्री ।

नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद,

स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ॥ (7)

अनुवाद:- शरीरुचि व्योञ्ज येलि मन काँपनावान, तमी विज्जि चोन अनुग्रह गाश हावान, गलान द्वख दौद्य मन छुम शांत सपदान, स्वखानन्द सिर्थि ह्युव ज्ञन गर्भु नेरान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान॥

शंकर ! सत्यम् इदं व्रत-दान,
स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि ।

ताबक-शास्त्र-परामृत-चिन्ता,

सिध्यति-चेतसि-निर्वृति-धारा॥ (8)

अनुवाद:- हतो शिवनाथ तिमन द्वख दूर सपदान, दरान वृत, तप, हवन बेयि छी करान दान, मगर यिम चॉन्य शिवलीला छि स्मरण, व्यतस्ता अमृतुच छख ग्रायि मारान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान॥

नृत्यति तायति हृष्यति गाढं,

संवित-इय मम भैरवनाथ ।

त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम एकं,

दुर्लभम-अन्यजैनः समयज्ञम॥ (9)

अनुवाद:- चु भैरवनाथ अनाथन हुन्द कुनुय नाथ, सुदृढ यज्ञि-वृत्त वज्ञान द्रह तु बेयि राथ, कैरिथ च्योनुय मे दर्शुन मन छु हरशान, वेंचुन हुन्ज पॅरियि छम वुछ डालु मारान, मोदुर मेछर बैरिथ वुछ लोलु इरफान, गछान हरशस यि क्युथ नाटुक छु सपदान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान॥

वसु-रस-पौषै-कृष्ण-दशम्यां,

अभिनव-गुप्तः स्तवम-इमम अकरोत् ।

येन विभु-भव-मरू संतापं,

शामयति-झटिति जनस्य दयालु॥ (10)

अनुवाद:- यि अभिनवगुप्त कोताह रुत तु बेयि जान, यि छुम ना लोलु वाल्यन प्यठ दयावान, गट पछ देंहम पोह सनु ६८ आसान, यि अभिनवगुप्त शिव ग्वन आव लेखान, करव चिन्तन-मनन शोद पॉठय करव ज्ञान, कठिन्यि-भवसरु पनुन शिव रोजि तारान, 'गरीबस' सार च्यतुक आकाश प्रज्ञलान, यि वन कुस लोलु कोस्तूर वर्गु बोलान ।



शिव आरती

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा, ओ३म् हर हर महादेव॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे, स्वामी पंचानन राजे।

हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजे, ओ३म् हर हर महादेव॥

दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे, स्वामी दस भुज अति सोहे।

तीनों रूप निखरत, त्रिभुवन-जन मोहे, ओ३म् हर हर महादेव॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, स्वामी मुण्डमाला धारी॥

त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी, ओ३म् हर हर महादेव॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाधाम्बर अंगे, स्वामी बाधाम्बर अंगे।

सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे, ओ३म् हर हर महादेव॥

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।

सुखकारी दुखहारी जग-पालन कारी, ओ३म् हर हर महादेव॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत अविवेका।

प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका, ओ३म् हर हर महादेव॥

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे, ओ३म् हर हर महादेव॥



शिव भजन



आधार जगतुक कुनैय छु मन्त्र शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय ।
 त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मकुट छुयै गंडिथ च्य दीवो ।
 चन्द्र अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय ॥
 च्य नील कंठो जटन छय गंगा च्य मोक्षदायक गुसोज्य नंगा ।
 अलक्ष अगोचर छयपन गुफाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय ॥
 बिहिथ छय गौरी च्य सूत्थ नालय वलिथ छुस सर्पन हुंदुय दुशालै ।
 सहस्र सूर्यि तीज च्य मंज जटाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय ॥

अथस च्य डाबर चू बीन वायान, कपाल माल त्रिशूल धारान।

भक्तयन अभय छुख दिवान यछाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय॥

रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज पिनाक चारथि।

बुदनि बू डंडवथ करय हा माये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय॥

भवाय दीवो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य जीवो।

च्य जीव पूजान छिय भावनाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय॥

संसार सुदरस म्य तार तारुम अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम।

बोलुस कुकर्मव कुवासनाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय॥

अनाथ बन्धो दयायि सागर संसारकी दुख म्य यिम छि तिम चठ।

जगतस दया कर च हथ्य ओमाये शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय॥

गायत्री महामन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

ओ३म् सबकी रक्षा करने वाला ।

भूःभुवः जो सब जगत के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयंभू है ।

स्वः जो नानाविध जगत् में व्यापक हो के सबका धारण करता है ।

तत् उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग,

सवितुः जो सब जगत का उत्पादक तथा सब ऐश्वर्य का दाता है ।

वरेण्यम् जो स्वीकार करने योग्य अति श्रेष्ठ,

भर्गो शुद्धस्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है ।

देवस्य जो सब सुखों को देने वाला तथा जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं।
 धीमहि धारण करें किस प्रयोजन के लिये कि,
 धियो बुद्धियों को,
 यो जो सविता देव परमात्मा,
 नः हमारी,

प्रचोदयात् प्रेरणा करें अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर अच्छे कामों में प्रवृत्त करें।

मानव को चाहिये कि सत् चित् आनन्दस्वरूप, नित्यज्ञानी, अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, व्यापक, कृपालु सारे जगत् के जनक और धारण करने वाले परमेश्वर की सदा गायत्री महामन्त्र से उपासना करें। जिस से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष (मनुष्य शरीर रूपी वृक्ष के चार फल) ईश्वर भक्ति एवं कृपा से सर्वथा मनुष्यों को प्राप्त हो। (यहीं गायत्री मन्त्र का संक्षिप्त अर्थ है)



गायत्री चालीसा

ॐ भूर्भवः स्वः ॐ युतजननी, गायत्री नितकलिमल दहनी ।

अक्षर चौबीस परम पुनिता, इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता ।

शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा, सत्य सनातन सुधा अनूपा ।

हंसारूढ सितम्बर धारी, स्वर्णकान्ति, शुचि गगन बिहारी ।

पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला, शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ।

ध्यान धरत पुलकित हियहोई, सुख उपजल दुख दुरमति खोई ।

कामधेनु तुम सुर तरु छाया, निराकर ही अद्भुत माया ।

तुम्हरी शरण गहै जो कोई, तरै सकल संकट सो सोई ।

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली, दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ।

तुम्हरी महिमा पार न पावै, जो शारद शत मुख गुन गावै ।
 चार वेद की मातु पुनीता, तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ।

महा मन्त्र जितने जग माही, कोऊ गायत्री सम नाहीं ।
 सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै, आलस्य पाप अविद्या नासै ।
 सृष्टि बीज जग जननि भवानी, कालरात्रि वरदा कल्याणी ।
 ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते, तुमसों पावें सुरता तेते ।

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे, जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे ।
 महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जै जै जै त्रिपदा भय हारी ।
 पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना, तुम सम अधिक न जग में आना ।
 तुमहि जानि कछू रहे न शेषा, तुमहिं पाय कछू रहै न कलेश ।

जानत तुमहिं तुमहिं है जाई, पारस परसि कुधातु सुहाई ।
 तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई, माता तुम सब ठौर समाई ।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेर, सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे ।
 सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक पोषक नाशक त्राता ।
 मातेश्वरी दया व्रतधारी, तुम सम तेर पालकी भारी ।
 जा कर कृपा तुम्हारी होई, ता पर कृपा करे सब कोई ।
 मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें, रोगी रोग रहित है जावें ।
 दारिद्र मिटै कटै सब पीरा, नासै दुख हर भव भीरा ।
 गृह क्लेश चित चिन्ता भारी, नासै गायत्री भय हारी ।
 सन्तति हीन सुसन्तति पावें, सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें ।
 भूत पिशाच सबै भय खावें, यम के दूत निकट नहीं आवें ।
 जो सधवा सुमिरै चितलाई, अछत सुहागे सदा सुखदाई ।
 घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी, विधवा रहें सत्य व्रत धारी ।
 जयति जयति जगदम्ब भवानी, तुम सम और दयालु न दानी ।

जो सद्गुरु से दीक्षा पावें, सो साधन को सफल बनावें ।
 सुमिरन करै सुरुचि बडभागी, लहैं मनोरथ गृही विरागी ।

अष्ट सिद्धि नव निधि की दाता, सब समर्थ गायत्री माता ।
 ऋषि मुनि तपस्वी योगी, आरत अर्थी चिन्तित भोगी ।

जो जो शरण तुम्हारी आवैं, सो सो निज वांछित फल पावैं ।
 बल विद्या शील सुभाऊ, धन वैभव यश तेज उछाहू ।

सकल बड़ें सुख नाना, जो यह पाठ करै धर ध्याना ।
 यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय,
 तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय ॥



देवी प्रार्थना

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः । ज्योत्स्नायै चेन्दुरुपिण्यै सुखायै सततं नमः ।

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः । नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ।

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै । ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ।

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः । नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या । भूतेषु संततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ।

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता । करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै, रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते । या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥



दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः,

श्रद्धा सत्तां कुलजन प्रभवस्य लज्जा,

त्वां त्वां नताः स्म परिपालय देवि ! विश्वम् ।

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौँ पवन-कुमार ।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हुनमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि- पुत्र पवन सुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।

कुमति निवार सुमति के संगी ॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा ।

कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥

हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।

काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥

संकर सुवन केसरी नन्दन ।

तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर ।

राज काज करिबे को आतुर ॥

प्रभु चरित्र सुनबि को रसिया ।

राम लखन सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।

बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
 रमचन्द्र के काज सँवारे ॥
 लाय सजीवन लखन जियाये ।
 श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥
 रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
 तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
 सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
 अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
 सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
 नारद सारद सहित अहीसा ॥
 जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
 कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
 तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।

राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
 तुम्हारो मंत्र बिभीषन माना ।
 लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
 जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
 लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
 प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
 जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
 दुर्गम काज जगत के जेते ।
 सुगम अनुग्रह तुम्हारे तेते ॥
 राम दुआरे तुम रखबारे ।
 होत न आज्ञा बिनु पैसार ॥
 सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
 तुम रच्छक काहु को डर ना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै।

तीनों लोक हाँक तें काँपै।।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै।

महाबीर जब नाम सुनावै।।

नासै रोग हरै सब पीरा।

जपत निरंतर हनुमत बीरा।।

संकट तें हनुमान छुड़ावै।

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

सब पर राम तपस्वी राजा।

तिन के काज सकल तुम साजा।।

और मनोरथ जो कोइ लावै।

सोइ अमित जीवन फल पावै।।

चारों जुग परताप तुम्हारा।

है परसिद्ध जगत उजियारा।।

साधु संत के तुम रखवारे।

असुर निकंदन राम दुलारे।।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।

अस बर दीन जानकी माता।।

राम रसायन तुम्हरे पासा।

सदा रहो रघुपति के दासा।।

तुम्हरे भजन राम को पावै।

जनम जनम के दुख बिसरावै।।

अंत काल रघुबर पुर जाई।

जहाँ जन्म हरि- भक्त कहाई।।

और देवता चित्त न धरई।

हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।

संकट कटै मिटै सब पीरा ।

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गैसाई ।

कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।

छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।

होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥

‘तुलसीदास’ सदा हरि चेरा ।

कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।

राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम- तपोवनादि-गमनं,

हत्वा मृगं कांचनं,

वैदेही- हरणं जटायु- मरणं

सुग्रीव सम्भाषणम् ॥

बाली निर्दलनं समुद्र तरणं

लंकापुरी- दाहनं,

पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-

हननं चैतत्- हि- रामायणम् ॥

श्री हनुमान आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
 दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
 जाके बल से गिरिवर काँपै,
 रोग-दोष जाके निकट न झाँकै।
 अंजनि पुत्र महा बलदाई,
 संतन के प्रभु सदा सहाई।
 दे बीरा रघुनाथ पठाये,
 लंका जारि सिया सुधि लाये।
 लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
 जात पवनसुत बार न लाई।
 लंका जारि असुर संहारे,
 सीयारामजी के काज सँवारे।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
 आनि सजीवन प्रान उबारे।
 पैठि पताल तोरि जमकारे,
 अहिरावन की भुजा उखारे।
 बायें भुजा असुर दल मारे,
 दहिने भुजा संतजन तारे।
 सुर पर मुनि आरती उतारें,
 जै जै जै हनुमान उचारें।
 कंचन धार कपूर लौ छाई,
 आरती करत अंजना माई।
 जो हनुमान जी की आरति गावै,
 बसि बैकुंठ परमपद पावै।
 लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई,
 'तुलसीदास' प्रभु कीरति गाई।

आरती को 'आरात्रिका' अथवा आरात्रिक और निराजन भी कहते हैं। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् पूजनं हरेः। सर्वे सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥ पूजा मन्त्रहीनं और क्रियाहीन होने पर भी आरती करलेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है। यथार्थ में आरती पूजन के अन्त में इष्टदेव की प्रसन्नता के हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है।



आरती गणेश जी



जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

एक दंत दयावंत, चार भुजा धांरी । मस्तक पर सन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥



अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया । बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥



जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा । लड्डुअन का भोग लगे, संत करे सेवा ॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥



आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।

नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं ॥

कंदर्ष अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं ।

पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमी जनक सुता वरम् ॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं ।

रघुनंद आनंदकंद कौशलचंद दशरथ-नंदनं ॥

सिर मुकुट कंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं ।

आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥

इति वदति 'तुलसीदास' शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।

मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं ॥



आरती ज्येष्ठा माता की

ओ३म् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता ।

तू ही कष्ट निवार, हे माँ सुख दाता ।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ।।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाकर, तुम दारिद्र हरो ।

सकल काम प्रदायिनी, दुःख माँ दूर करो ।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ।।

महा दैत्य संहारी, तू माँ दुर्गति हारी ।

महामोह हटा दो, ज्येष्ठेश्वर प्यारी ।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ।।

माता खप्पर धारी, मेरी विपदा सारी ।

दूर करो हे माता, प्रिय भक्तन प्यारी ।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ।।





अमृत कुंड विराजे, कमल हाथ में साजे ।

करे हित सभी का, निर्धन या राजे ॥ ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ॥

झूठी माया सारी, हम को लगती प्यारी ।

अविद्या दूर करो, हे पीताम्बर धारी ॥ ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ॥

भक्ति बढ़ाने वाली, कोई युक्ति करो ।

भयहारिणी माता तुम, भव भय सदा हरो ॥ ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ॥

हम अति दीन दुःखी माँ, तेरी आस खड़े ।

जाने न विद्या कोई, तेरी शरण पड़े ॥ ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ॥



ओ३म् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता ।

तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता ॥ ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ॥

ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ॥

ओ३म् जय ज्येष्ठा माता ॥



श्री लक्ष्मी जी की आरती

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।

तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु दाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता ॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तु ही जग माता, मैया तु ही जग माता ।

सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता ।

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता, मैया तु ही सुख-सम्पति दाता ।

जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता ॥

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता, मैया तु ही शुभदाता ।

कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता ॥

जिस घर में तुम रहती, ^{तुम्हें} सब सद्गुण आता, मैया सब सद्गुण आता ।

सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता ।

तुम बिन यज्ञ न होते, वरत न हो पाता, मैया वरत न हो पाता ।

खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता ॥



शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता, मैया क्षीरोदधि-जाता ।

रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता ॥



महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता, मैया जो कोई जन गाता ।

उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता ॥



श्री लक्ष्मी-वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।

हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥



आरती श्री गंगा जी

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता ।

जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता, ओ३म् जय गंगे माता ॥

चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता, मैया जल निर्मल आता ।

शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता, ओ३म् जय गंगे माता ॥

पुत्र सागर के तारे, सब जब को ज्ञाता, मैया सब जग को ज्ञाता ।

कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता, ओ३म् जय गंगे माता ॥

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता, मैया शरण जो तेरी आता ।

यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता, ओ३म् जय गंगे माता ॥

आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता, मैया जो नर नित गाता ।

सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता, ओ३म् जय गंगे माता ॥



नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम्

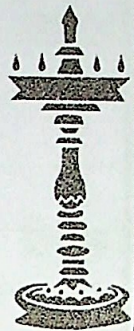
सूर्य	ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः, विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे रविः॥
चन्द्रमा	रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः, विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे विधुः॥
भौम	भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत् सदा, वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः॥
बुध	उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः, सूर्यप्रिय करो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः॥
बृहस्पति	देवमन्त्री विशालाक्षः, सदा लोकहिते रतः, अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः॥
शुक्र	दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः, प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः॥
शनि	सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः, मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥
राहु	महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः, अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखीः॥
केतु	अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्रशः, उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः॥

एक-श्लोकी- नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा- मुरारिः- त्रिपुरान्त- कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च, गुरुश्च शुक्रः शनि- राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
 भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे
 जो ध्यावे फल पावे दुखविनशे मन का
 सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का, ॐ जय जगदीश हरे
 मात पिता तुम मेरे शरण पडों किसकी
 तुम बिन और न दूजा आस करू जिसकी ॥ ॐ जय जगदीश हरे
 तुम-पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यमी
 पारबहा परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ॐ जय जगदीश हरे





तुम करूणा के सागर तुम पालन कर्ता
में सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता। ॐ जय जगदीश हरे
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति



किस विधि मिलों दयामय तुमको में कुमति। ॐ जय जगदीश हरे
दीन बन्धु दुख हर्ता रक्षक तुम मेरे

अपने चरण लगाओ द्वार पडा तेरे। ॐ जय जगदीश हरे
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा

श्रद्धा भक्ति बढाओ सन्तन की सेवा। ॐ जय जगदीश हरे
ॐ जय जगदीश हरें ।

ॐ जय जगदीश हरें।

ॐ जय जगदीश हरें।





‘बोड दरबार’

-डॉ. रोशन सराफ (रोशि रोशि)

ओंम नमो भगवते गोपीनाथाय, चानि पूजये वंदव मन तें प्राण,
बजि बारगाहे आमृत्य पज़ि श्रदाये, चानि पूजाये वंदव मन तें प्राण ॥
भक्त्यन आश चान्य, चान्यी, छख सथा, वथा असलुच्य हावतख काँह,
तार दितें भवसर पनुनि यछायें, चानि पूजाये ॥

केंचन रूगन शफा, केंचन दाद्यन दवा, केंचन खा गोंछ लोलु अमरयथ,

सूर मनकलि हुंद सारिनय बलरावे, चानि पूजाये ॥

डॉल्या ह्यथ यिवान लोलुच्य हतुबद्य, वद्य-वद्य बोजनावान हाल दिलकुय,

अशि सूत्य गौड दिवान न्यमल खावे-चानि पूजाये ॥

सदेंराह कठिन छुख-वोरू वोर करान, तुलान गतु ग्यूर आवलुन छुख,

नम रठतु पानय यथ भवसर नावे-चानि पूजाये ॥

मोल चुय मॉज्य चुय-चुय छुख भगवान, बखशान चु पापन तु शापन छुख,

अनुग्रह चोन वातान जायि जाये- चानि पूजाये ॥

व्यचारन शौंद्धि- वेकलस बौंद्धि, खौंद्धि दितु पथर प्येमुत्यन,

अथुरोट कर पनुन पनिने प्रजाये -चानि पूजाये ॥

चोन नाव सुबु शाम स्वखना पखना, जखना लोल सूत्य समरण चॉन्य,

रोशि-रोशि युथ खसि खुमार ग्रायि ग्राये-चानि पूजाये ॥



जन्म दिन पूजा

प्रातः काल स्नान करके नये अथवा स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पवित्र आसन इस प्रकार बिछायें कि बैठने पर आप का मुख पूर्व दिशा की ओर रहे। एक कम्बल (चादर) बिछायें जिस पर पूजा समग्री रखें। एक थाली में साफ चावल, नमक तथा दक्षिणा सजा कर रखें। नया यज्ञोपवीत (जनेऊ), सात गॉठ लगा हुआ नारीवन, अर्घ्य, पुष्प, धूप, तिलक (संभव हो तो केसर का) थोड़ा सा दूध और दही, स्वच्छ जल से भरा पानी का लोटा, एक दो कटोरियाँ आसन पर तैयार रखें। पवित्र या अंगूठी अथवा दर्भ के दो तिनके भी रखें। पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें, रत्नदीप और धूप जलायें। नया यज्ञोपवीत (जनेऊ) धोते हुए गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

तीन बार पढ़ें। फिर इसे गले में डालते हुए पढ़ें

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यं अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः, यज्ञोपवीतं असि यज्ञस्यत्वा उपवीतेन उपनह्यामि । इसके बाद पढ़ें

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व विघ्नोपशान्तये। अभिप्रेतार्थ सिद्ध्यर्थ पूजितो यः सुरैरपि सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः। गुरुब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः। गुरुरेव जगत् सर्वम् तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

पानी की छीटें (लवह) हृदय और मुख को छिड़कते हुए पढ़ें

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति। मा नः शंस्योर् अरूखुषो धूर्तिः प्राणङ्. मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। अनामिका उंगली में पवित्र या अंगूठी या दर्भ के दो तिनके या कोई फूल धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ्य और फूल लगाते हुए पढ़ें।

परामत्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घ्यो नमः पुष्पं नमः।

रत्नदीप और धूप को तिलक, अर्घ्य और पुष्प अर्पण करें। सूर्य भगवान का ध्यान करते हुए तिलक, अर्घ्य और फूल अर्पण करते हुए पढ़ें। नमो धर्म-निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय श्री भास्कराय नमो नमः। खाली रखी हुई थाली में नारीवन को रखें और उस पर कटोरी से जल की धारा डालते हुए पढ़ें।

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधारशक्त्यै धूपदीपसङ्.-कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

कटोरी में जल डालें और उसमें तिलक और पुष्प डालते हुए पढ़ें

सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तु वः, संसृष्टः तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणाः अस्तु

वः, संयावः प्रियास्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियस्तन्वो मम।

अब इस कटोरी में रखा हुआ जल नारीवन पर डालते हुए पढ़ें

अश्विनोः प्राणस्तो ते प्राणं दतां तेन जीव । बृहस्पते प्राणः सते प्राणं ददातु तेन जीव
जन्मोत्सव देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल के साथ दर्भ के दो तिनके या दो फूल हाथ में रखते हुए तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ॐ जन्मोत्सव देवतानां अर्चाम् अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।

हाथ में लिए हुए फूल या दर्भ आदि निर्माल्य में डालें। पुनः नारीवन के सामने दो पुष्प डालते हुए पढ़ें

सप्तचिर जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः

हाथ में चावल सहित दर्भ या फूल लें और फिर कन्धें से सिर्फ चावल फेंकते हुए पढ़ें

सप्तचिर जन्मोत्सव देवताभ्यः युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय दो फूल हाथ में पकड़ते हुए पढ़ें सहस्रशीर्षा
पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिम् विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत् दशांगुलम् जन्मोत्सव देवताः

आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय।

पहले से रखे हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में डालकर नारीवन पर फूल डालते हुए तीन बार पढ़ें

भगवन् पुण्डरीकाक्ष भक्तानुग्रह कारक अस्मात् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।

अपने दोनों कन्धों के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करें। फिर कटोरी में जल डालते हुए पढ़ें

पाद्यर्थम् उदकम् नमः शत्रो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोर अभिस्नवन्तु नः।

फूल, दूध, तिलक, दर्भ तथा जल कटोरी में डालकर नारीवन पर यह सब मिश्रण डालते हुए पढ़ें

अश्वत्थामने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं

नमः कटोरी में बचा हुआ मिश्रण निर्माल्य में डालें। दुबारा कटोरी में पानी डालते हुए पढ़ें

शत्रो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंयोर् अभिस्नवन्तु नः। दूध, दही, जल, घी, तिलक, चावल, और दर्भ कटोरी में डालें और यही मिश्रण नारीवन पर डालते हुये पढ़ें

अश्वत्थामन बलये व्यास हनुमते कृपाचार्य मार्काण्डेय परशुरामाय सप्तचिरजीविनः इदं वो अर्घ्यं

नमः केवल पानी डालते हुए पढ़ें प्रजापते जन्मोत्सव देवताभ्यः आचमनीयं नमः दूध, जल, अर्घ्य और पुष्प

आदि का मिश्रण डालते हुए पढ़ें तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् तत्

विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सव देवताभ्यः

स्नानं नमः। किसी अन्य कटोरी में नारीवन के लिए फूलों से आसन बनाते हुए पढ़ें

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मासनाय नमः शतदल पद्मासनाय नमः, सहस्रदल पद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुडासनाय, किं भूषणं ते कौस्तुभ भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम् अस्ति, देयं वागीश किं ते वचनीयम् अस्ति।। नारीवन को आसन पर बिठाते हुए पढ़ें
उत्तिष्ठ भगवान् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते। उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ त्रैलोकी मंगलं कुरु।।
नारीवन के सात गाठों को तिलक लगाते हुए पढ़ें अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

इन्ही सात नामों का उच्चारण करते हुए नारीवन पर अर्घ्य और पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः अर्घो नमः पुष्पं नमः
रत्नदीप और धूप नारीवन के इर्द-गिर्द घुमाते हुए (आलहनाव) पढ़ें
तेजसो शुक्रमसि ज्योतिरसि धामसि प्रियं देवानाम अनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्तवा देवताभ्यो
गृहणामि यज्ञेभ्यस्तवा यज्ञिभ्यो गृहणामि जन्मोत्सव देवताभ्यः रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः
नारीवन को नमस्कार करते हुए पढ़ें

जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे, उद्धर मामसुरेश विनाशिन् पतितोहं संसारे ।
 घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम अनुकम्पय दीनम् अनाथं कुरु भव
 सागरपारम्, घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥१॥ जय जय देव जया सुरसूदन जय
 केशव जय विष्णो, जय लक्ष्मीमुख कमल मधुव्रत जयदशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम
 नरकरिपो केशवकल्मषभारं ॥२॥ यद्यापि सकलम् अहं कलयामि हरे नहि किम् अपि स
 सत्वम् । तत् अपि न मुञ्चति माम इदम् अच्युत पुत्रकलत्र ममत्वं । घोरंहर मम नरकरिपो
 केशव कल्मषभारं ॥३॥ पुनर् अपि जननं पुनर् अपि मरणं पुनर अपि गर्भ निवासम् । सोढुम्
 अलं पुनर अस्मिन् माधव माम् उद्धर निजदासम् । घोरंहर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं
 ॥४॥ त्वं जननी जनकः प्रभुर अच्युत त्वं सुहृत् कुलमित्रम् । त्वं शरणं शरणा गतवत्सल त्वं
 जलधि वहित्रं । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥५॥ जनक सुता पति चरण
 परायण शंकर मुनिवर गीतं । धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम वारय संसृति भीतिम् । घोरं हर
 मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥६॥ भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय

सप्तजन्मोत्सव देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः

नारीवन पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

ध्येयं सदा परिभवधनम् अभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव विरञ्चि नुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल
भवाब्धिपोतं। वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्

नारीवन को नमस्कार करते हुए पढ़ें

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः कटोरी में
थोड़ा दूध, शहद, या खाण्ड रख कर अर्पण करते हुये पढ़ें

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्क ॐ नमो नैवेद्यं
निवेदयामि नमः। नारीवन पर दक्षिणा डालते हुये पढ़ें जनमोत्सव देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य
रजत निष्कर्ष ददानि। दक्षिणा अर्पण करते हुये पढ़ें एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु ॥

फूल चढ़ाते हुये पढ़ें ॐ तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूर्यः दिवीव चक्षुर-आततम्। तद्विप्रासो
विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्। अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग
चटू और पांच म्यचियों रखें, नैवेद्य के साथ ही मिसरी भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा ग्रन्थुन

पढ़ें (प्रेष्युन विजयेश्वर जन्त्री में अलग से लिखा है, वहीं से पढ़ें)। प्रेष्युन के बाद पढ़ें आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवैद्यस्यास्य भक्षणे। शरीरयात्रा सिद्धयर्थ भगवन क्षन्तुम् अर्हसि॥ नारीवन पर पुष्प चढाते हुए पढ़ें आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम् । पवित्र निकालकर दाईं कलाई में नारीवन बांधिए। चटू को बाहर कहीं साफ़ स्थान पर रखें। निर्माल्य को नदी या पेड़ के नीचे या किसी गमले में डाल कर नैवेद्य के साथ दही, मिश्री या चीनी दाईं हथेली में रखकर मुँह में डालते हुए पढ़ें मार्कार्डण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन, आयुर्-आरोग्य सिद्धयर्थ प्रसीद भगवन मुने। मार्कार्डण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरन्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम् ॥

शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

इति जन्मदिन पूजा विधि



प्रेष्युन



॥ अथ नैवेद्य मन्त्राः ॥

एक थाली में नैवेद्य तथा दूसरी थाली में चट्टू और उसकी सात म्यचियां या टुकड़े रखें। चट्टू को तिलक, अर्घ्य और फूल अर्पण करें। शुद्ध पानी अपने आप पर छिड़कें, दोनों हाथों से नैवेद्य ग्रहण करते हुये पढ़ें

अमृतेश मुद्रयाऽमृतीकृत्य अमृतमस्य अमृतायतां नैवेद्य। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा
सवितुः प्रसवेऽश्विनो बर्हिभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे॥ महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै
लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वरदेवताभ्यः
चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ-पुरुषाय
अग्निष्वातादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः। ॐ भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय,
भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीगणेशाय । क्लीं
कां कुमाराय भगवते हां हीं सः सूर्याय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै

चार्चयै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री
 महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै श्री व्रीढा भगवत्यै श्री वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै
 गंगा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरासुन्दर्यै
 सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरी देव्यै भवान्यै क्षेमंकरी भगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै
 इहराष्ट्राधिपतये अमुकभैरवाय इन्द्रदिभ्यो शलोकपालेभ्यः आदित्यादिभ्यो नवग्रहदेवताभ्यः
 ब्रह्मध्रुवाभ्यां अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय हरयै लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः पञ्च
 चत्वारिंशिंद्वास्तोषतियागदेवताभ्यः ब्राह्मयादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यः मातृभ्यः ललितादिभ्यः
 मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रा गणेश्वरदेवताभ्यः राकादेवता भ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनी वालीदेवताभ्यः
 यामीदेवताभ्यः रौद्रीदेवताभ्यः वारुणीदेवताभ्यः वार्हस्पत्य देवताभ्यः। ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भुवो
 देवताभ्यः ॐ स्वर्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवस्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयागदेवताभ्यः महागायत्र्यै
 सावित्र्यै हेरकादिभ्यः वटुकादिभ्यः उत्पन्नमतुं दिव्यं प्राक्रक्षी-रोदधिमन्थनात् अन्नामृतरूपेण नैवेद्यं
 प्रति गृह्यताम् ॥ अपने इष्ट देवता का ध्यान करते हुये पढ़ें : ॐ तत्सद् बृह्म अद्यतावात् तिथौ अद्य अमुक
 मासस्य, अमुक पक्षस्य, तिथौ अमुकायां, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप निरणार्थम् ॐ

नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। चटु को हाथ से स्पर्श करते हुए पढ़ें या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या
घौरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा, चटु को तिलक लगाते हुये पढ़ें आकाश
मातृभ्यः अन्नं नमः आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः। चटु की सात
म्यचियों बनाकर हर एक मिची के सात सपर्श करते हुये पढ़ें 1. भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन्
समर्पयामि नमः। 2. भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः। 3. भगवते विनायकाय अन्नं
समर्पयामि नमः। 4. ह्रीं ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः। 5. इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान् मिष्ठानं
क्षीरं समर्पयामि नमः। अंतिम दो म्यचियों को स्पर्श करे तथा अर्घ, फूल व पानी डालते हुये पढ़ें योस्मिन् निवसति
क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिंकरः तस्मै निवेदयाम्यद्यबलिं पानीय संयुतं क्षां क्षेत्राधिपतयेऽन्नं नमः,
राराष्ट्राधिपत येऽन्नं नमः सर्वा भयवरपदो मयि पुष्टिं पुष्टि पति र्दधातु । नमस्कार करते हुए पढ़ें
नमामि नारायण पादपंकजं, करोमि नारायणपूजनं सदा वदामि नारायण नामनिर्मलं स्मरामि
नारायण तत्त्वम् अव्ययम् । उभाम्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा उरसा नमस्कारं कारोमि
नमः। शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

श्राद्ध संकल्प विधि

‘श्रद्धया दीयते यस्मात् तस्मात् श्राद्धं निगद्यते’। अर्थात् जो वस्तु श्रद्धा से दी जाती है उसे ‘श्राद्ध’ कहते हैं। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण से मुक्ति पाने के लिए श्राद्ध आवश्यक है। श्राद्ध संकल्प के लिए पहले यह सामग्री इक्कठी कीजिए:

एक थाली में चावल (साफ किए हुए) नमक, फल तथा दक्षिणा सजा कर रखें। आसन इस तरह बिछायें कि आप का मुख पूर्व दिशा की ओर रहे। सामग्री से सजी थली आसन पर रखें, ताजा पानी का लोटा, थोड़ा सा तिल, धूप, अर्घ्य फूल और तिलक भी आसन पर रखें। जिस पितृ का श्राद्ध हो उसके फोटो पर फूल माला लगायें। पद्मआसन लगा कर पूर्व दिशा की तरफ मुँह करके बैठें, धूप जला कर रखें। यज्ञोपवीत को दाहिनी तरफ रखते हुए नमस्कार करें और पढ़ें

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व-विघ्नोपशान्तये॥

अभिप्रीतीर्थ-सिद्धयर्थ पूजितो यः सुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपत्ये नमः। गुरुब्रह्मा

गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः। गुरुरेव जगत् सर्वम् तस्मै श्री गुरुवे नमः॥ परम गुरुवे नमः

पानी की छीटें लवह मुहँ और पैरों को डालते हुए पढ़ें तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्योर

अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

पवित्र या अंगूठी अनामिका नामक उंगली में पहनकर अपने को मध्यमा उंगली से तिलक लगायें। थोड़ा सा अर्घ्य और फूल अपने

सिर पर डालें। आसन पर रखी हुई खाली थाली में थोड़ा तिलक, अक्षत, (चावल के साबूत दाने) और फूल डालें। सूर्य भगवान् का ध्यान करके थोड़ा सा तिलक अर्घ्य सूर्य की तरफ डालते हुए पढ़ें

नमो धर्मनिधनाय नमः

स्वकृत साक्षिणे, नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः हाथ में अर्घ्य रखकर एक कटोरी से पानी ऐसे डालें कि वह पानी उंगलियों की तरफ से थाली में गिरना चाहिए और साथ-साथ पढ़ें

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धु भ्रातापि न यत्र सुहृत्जनश्च न ज्ञायते

यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म दीपं शरणं प्रपद्ये ॐ तत् सत् ब्रह्मा अद्य तावत् तिथौ जो महीना है उसका नाम लें जैसे वैशाख मासस्य शुक्ल या कृष्ण जो भी पक्ष हो पक्षस्य जो भी तिथि हो जैसे प्रतिपदा अथवा द्वितीया आदि तिथौ जो भी वार हो जैसे रविवार अथवा सोमवार आदि वासरान्वितायां विष्णु प्रीत्यर्थं दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। यज्ञोपवीत को बाईं-भुजा में धारण करके तिल हाथ में रखकर पानी डालते हुए अंगूठे की ओर से थाली में गिरना चाहिए पढ़ें ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् ,,,, मासस्य ,,,, पक्षस्य ,,,, तिथौ यदि श्राद्ध तिथि देवा हो तो तिथि बोलकर अगली तिथि भी 'परत' के साथ पढ़ें वासरान्वितायां गोत्र

सहित नाम लें पितृ पिता का नाम लें मातृ माता का नाम लें पितामहाय दादा का नाम लें प्रपितामहाय पडदादा का
 नाम लें मातामहाय नाना का नाम लें प्रमातामहाय माता के दादा का नाम लें वृद्धप्रमातामह माता के पडदादा का
 नाम लें मातामह्यौ नानी का नाम लें प्रमातामह्यौ मां की दादी का नाम ले वृद्ध प्रमातामह्यौ मां की पडदादी का नाम
 लें समस्त माता पितृभ्यः द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमित्तं दीपः स्वधः धूपः स्वधः
 जिस पितृ का श्राद्ध हो उसका नाम गोत्र के साथ लेकर मुठठी में पानी रखकर थाली में रखे हुए चावल, नमक, फल, दक्षिणा
 आदि पर छिड़कते हुए पढ़ें ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत्,,,तिथौ अद्य,,,,मासस्य,,,,पक्षस्य ,,,
 तिथौ,,,,वासरा सांवत्सरिके श्राद्धे यदि पितृपक्ष हो तो पढ़ें आपरिपाके कन्यार्कगते श्राद्धे इदं अन्नं
 सलवणं सवस्त्रं फलमूलसहितं सदक्षिणां संकल्पयामि संकल्पयामि फिर दायें बाजू में यज्ञोपवीत रखकर
 पढ़ें नमो-ब्रह्मणे-नमो-अस्तु-अग्नये-नमः पृथिव्यै-नमः, औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये नमो
 विष्णवे बृहते कणोमि। इति एतासाम्-एव-देवतानां-सारिष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्
 आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥

पन्न कथा

एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में ऋषियों ने श्रीसूत जी से पूछा, हे मुनिश्रेष्ठ। कोई ऐसा व्रत अथवा उपाय बतलाइये जिससे संसार की सभी मानवजाति थोड़े से ही समय में किसी सरल उपाय से मनोवांछित फल तथा मानिसक शान्ति प्राप्त कर सके। सर्वशास्त्रज्ञाता श्री सूत जी बोले हे ऋषियो। आप ने मानवजाति के हित की बात पूछी अब मैं उस व्रत को आप लोगों में कहूँगा — अतः आप ध्यान से सुनिये — काशी नगरी में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह अति निर्धन होने के कारण भूख और प्यास से पीड़ित घूमता रहता था। पूर्वजन्म के किसी शुभ संस्कार से भगवान् आदि देव श्री गणेश जी का स्मरण प्रायः करता ही रहता था, उस ब्राह्मण को इस दुर्दशा से मुक्त करने के निमित्त सभी दुःखों तथा विघ्नों को दूर करने वाले श्री गणेश जी ने ब्राह्मण का रूप धारण कर उस के पास आकर आदर के साथ पूछा — हे ब्राह्मण देवता! आप ऐसी शौचनीय तथा दुःखी दशा में क्यों घूमते हैं, ब्राह्मण बोला मैं बहुत निर्धन हूँ, तथा मेरा

कोई पुत्र भी नहीं है जो मेरी कुछ सेवा करता, मेरा शरीर भी रोगी है तथा मेरी पत्नी भी शरीर के रोगों और धन के अभाव से दुःखी रहती है। हे दयालु, ब्राह्मण देवता! यदि आप इस कष्ट से हमें निकालने का कोई उपाय जानते हैं तो कृपा कर के मुझे बताइये। वृद्ध ब्राह्मण बोला — गणेश जी, जो ऋद्धि सिद्धि के स्वामी है तथा जो विघ्नहर्ता माना जाता है — उसी आदिदेव गणेश जी का व्रत धारण करने से आपको अवश्य मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। यह गणेश जी का व्रत जिसको “सिद्धि विनायक व्रत” कहते हैं भाद्रशुक्लपक्ष चतुर्थी को किया जाता है। यदि इस चतुर्थी के दिन रविवार या मंगलवार हो तो इस व्रत को महाचतुर्थी व्रत कहते हैं। यह व्रत “गणपति चतुर्थी” या विनायक चतुर्थी के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह भाद्रपक्ष मास गणेश जी द्वारा ऋद्धि सिद्धि बाँटने का मास है। अतः इस मास में शुक्लपक्ष में किसी शुभ दिन पर गणेशपूजन तथा मोदक आदि गणेश जी को अर्पण करने से भक्तों की हर एक मनोकामना सिद्ध होती है यह पर्व कश्मीरी पण्डित बड़े घूमधाम तथा श्रद्धा से मनाते हैं। महाराष्ट्र में भी यह त्यौहार मनाया जाता है। कश्मीर में इस व्रत को “पन्नदान व्रत” कहते हैं। काश्मीरी पण्डित इस शुभ दिन पर लडकी के हाथ से काता

हुआ कपास का धगा कलश के घडवे को बान्धते हैं। धागे को कश्मीर में “पन्न” कहते हैं, चूंकि इस गणेश पूजन में धागा (पन्न) का प्रयोग किया जाता है अतः इस पूजा को “पन्नदान व्रत” भी कहते हैं। हे ब्राह्मण देवता तुम भाद्रशुक्लपक्ष में विध्यनुसार तथा श्रद्धा से गणेश जी की पूजा कर के, अपनी शक्ति के अनुसार शुद्ध घी से पूडियाँ “सवासेर” आदि बनाकर भगवान् को अर्पण करने के पश्चात् आपका दारिद्र्य समाप्त होगा और मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। ब्राह्मण को सारे व्रत का विधान बतलाकर बूढ़े ब्राह्मण ने यह “पन्नदान व्रत” करने का दृढ़ संकल्प किया, चूंकि यह मास भाद्रमास का चल रहा था अतः मैंने शीघ्रातिशीघ्र यह व्रत मनाना है। इस भवाना से ब्राह्मण भिक्षा के लिये निकला, गणेश जी की कृपा से भिक्षा में उसको पर्याप्त धन मिला, उसने आने वाले शुभ मुहूर्त पर ही भाई-बन्धुओं तथा मित्रों को एकत्रित करके यह पन्नदान व्रत किया और हर वर्ष भाद्र शुक्लपक्ष में इस “पन्नदान व्रत” को करने की प्रतिज्ञा की। गणेश जी की कृपा से वह ब्राह्मण धनधान्य से सम्पन्न हुआ और उसकी सभी मनोकामनायें सिद्ध हुई सर्वशास्त्र ज्ञाता तपस्वी सूत जी कहते हैं जो मनुष्य इस “पन्नदान व्रत” को करेगा। गणेश

जी की कृपा से उसे धनधान्य की प्राप्ति होगी, निर्धन धनी होगा, बन्दी बन्धन से मुक्त हो जायेगा, सन्तानहीनों को सन्तान प्राप्ति होगी, रोगी निरोगी होंगे। विशेषता इस “पन्नदान व्रत” के करने से उलझनों में उलझे हुये गृहस्थियों की हर एक उलझन सुलझ जायेगी और हर एक मनोकामना सिद्ध होगी। पन्न कथा के अन्त में हाथ में ली हुई द्रमन फूल आदि कलश के घडवे पर डालते हुये पढ़ें : “उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कार करोमि नमः।” पूड़ी सवासेर आदि सामने सभी सदस्य प्रसाद की थालियों को स्पर्श करें : “अमृतेश मुद्रया अमृतीकृत्य अमृतम् अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनो ब्राह्मण्यं पूष्णो हस्ताभ्याम् आददे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वाद्वेताभ्यः प्रजापतये ब्राह्मणकलशदेवताभ्यः ब्रह्म विष्णु महेश्वर — देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु — पतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्ता दिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः। भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सहस्र नाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय। भवाय देवाय शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय देवाय भीमाय देवाय महादेवाय ईशानाय देवाय

ईश्वराय देवाय उमा — सहिताय शिवाय — पार्वता सहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्ण — पिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हे रम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभासिहताय श्रीमहागणेशाय। कलीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूर — वाहनाय सेनायि — अना श्वाय एका श्वाय, नीलाष्वाय प्रत्यक्ष देवाय परमार्थ साराय तेजोरूपाय प्रभासिहताय आदित्या। भगवत्यै आमयै कामायै वार्वग्यै टंकधारिण्यैतारायै पार्वत्यै भगवत्यै ज्वाला भगवत्यै व्रीडा — भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्य भगवत्यै गंगा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्ध — लक्ष्म्यै महात्रिपुर सुन्दर्यै सहस्रनाग्यै देव्यै भवान्यै अभयकरी — देव्यै क्षेमं करी भगवत्यै सर्व शुत्रु घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये आनन्देश्वर — भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्ति हस्ताय, यमाय दण्ड हस्ताय नैऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय गदा — हस्ताय ईशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्माहस्ताय विष्णावे चक्र हस्ताय अनन्तातिदभ्यः अष्टाभ्यः कुल नाग

देवताभ्यः अग्न्या दित्याभ्यां वरुण चन्द्रमोभ्यां कुमार भौमाभ्यां विष्णु बुधाभ्यां इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां सरस्वती शुक्राभ्यां प्रजापति शनैरचराभ्यां गणपति राहुभ्यां रूद्र — केतुभ्यां ब्रह्मा-ध्रुवाभ्यां अनन्ता — गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूमार्य ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिखादिभ्यः पंच चत्वा रिशन्त वास्तोष्पति याग देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो देवताभ्यः राका देवताभ्याः त्रिका देवताभ्याः सिनीवाली देवताभ्यः ब्राह्मस्पत्य देवताभ्यः ॐ भू देवताभ्याः ॐ भूवो देवताभ्यः ॐ स्व देवताभ्यः रौद्री देवताभ्यः ॐ भूर्भव स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्ड याग देवताभ्यः धूर्म्यः उपधर्म्यः महागात्र्यै सर — स्वत्यै हरे — कादिभ्यो वटुकादिभ्यः। उत्पन्नम् अमृतं दिव्यं प्राक् क्षीरो दधि मन्थनात् अन्नम् अमृत रूपेण नैवेद्यं प्रति गृह्यताम्। सामूहिक आरती “जय जगदीश” करें फिर से हाथ में फूल लेकर पढ़ें :-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भा भवेत्॥

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मांस मृतङ्गमय।

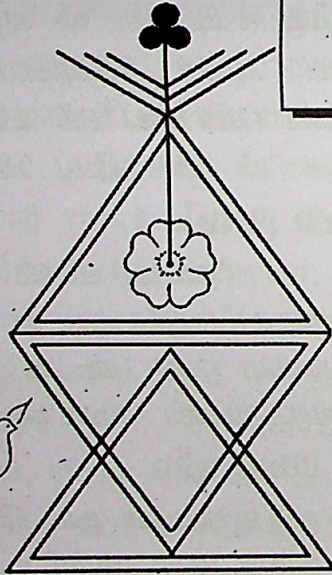
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥



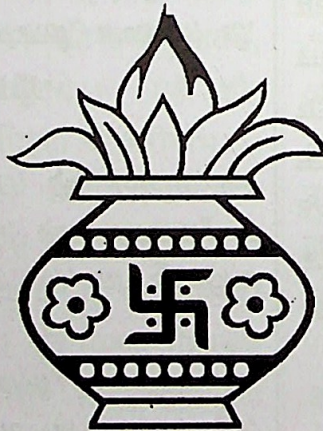
वटुक पूजा

(शिवरात्रि पूजा)

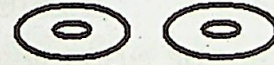
शिव महिम्नस्तोत्रम् सहित



कलुश



नट्ट



क्षेत्रपाल



चोंग



चिडू



डुल



प्रनीतपात्र



गडा



स्वन्य पतुल



रत्नदीप



वारि



ऋपि

कलश की सामग्री

चूना या चावल का आटा (मुटठी भर), गणेश, कुमार, लक्ष्मी, सरस्वती, विश्वकर्मा की तसवीरें या प्रतिमा, एक घड़ा जिस में ज़रूरत के मुताबिक कलश के अखरोट रहें, तिलक, फूल, अर्घ्य, धूप, पानी, प्रणीतपात्र के लिये थाली।

वटुक सामग्री

बरतनों की सामग्री: एक नोट (शिव रूप), चार डुलिजियाँ (गण), चार वारि (छोटी घड़ियाँ), एक नारीकचलू या खोसू, दो छोटी घड़ियाँ (सजवारि), एक रत्नदीप, एक दीपक, एक डुल (चिलमची)

पूजा की सामग्री

सजपुतुल, सिन्दूर, कर्पूर, धूप, अगरबत्ती, कण्ठगण, घी, रुई, कन्द, फूल, (ब्यल वथर), चावल अर्घ्य के लिए, रूप वर्क (चान्दीवर्क), अखरोट, नाबद, किशमिश, न्या यज्ञोपवीत, दूध, दही, जंग के लिए एक थाली में चावल,

नमक, सिक्का, एक अखरोट, नाबद, मधु, कण्ठघण, सुखे धान्य का घास, आसन बनाने के लिए आरियाँ लगभग १३, दर्भ, वुसर्घ बनाने के लिए रक्षा सूत्र (नाखिन) फूलों की मालायें, माचिस सर्षप।

कलश पूजा

कलश को फूलों से सजा कर उसपर तिलक से ॐकार बनाएँ और पढ़ें।

ॐकारो यस्य मूलं क्रम-पद-जठर-च्छन्द-विस्तीर्ण-शाखा, ऋक्पत्रं सामपुष्पं यजुर उचित फलः स्यात्-अथर्वःप्रतिष्ठा। यज्ञच्छाया सुशीतो द्विजगण-मधुपैः-गीयते यस्य नित्यं शक्तिः सन्ध्या-त्रिकालं दुरितभयहरः पातु नो वेदवक्षः॥ मुक्ता-विद्रुम-मुकटां तत्त्वात्मवर्णोत्तिकाम। गायत्रीं वरदाभयोडकुशकरां शूलं कपालं गुणं शङ्ख चक्रम आधार-बिन्द-युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥ आयातु वरदा देवी

त्र्यक्षरा ब्रह्मवादिनी। गायत्री च्छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने
 नमोस्तु ते॥ भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रं भद्रं वदेम शृणुयाम
 भद्रम्। तत्रो मित्रो वरुणो मामहन्ताम-अदितिः सिन्धुः
 पृथिवीर-उत-द्यौः। अभि नो देवीरवसा, महः शर्मणा
 नृपत्नीं :, अच्छित्रपत्राः सचन्ताम। इहेन्द्राणीमुपहवये,
 वारुणानीं स्वस्तये, अग्नायीं सोमपीतये॥ मही द्यौः
 पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम, पिपृतां नो भरीमभिः॥
 तयोर-इत घृतवत पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः, गन्धर्वस्य
 ध्रुवे पदे। स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी, यच्छाऽन
 शर्म सप्रथः॥ अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णु-
 विचक्रमे, पृथिव्याः सप्त-धामभिः॥ इंद विष्णु- विचक्रमे
 त्रेधा निदेधे पदम्। समूह्यस्य पांसुरे॥ त्रीणि पदा
 विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः, अतो धर्माणि धारयन्।
 विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पृशे, इन्द्रस्य युज्यः
 सखा। तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव

चक्षुर-आततम्॥ तत विप्रासो विपन्यवो जागृवांस
 समिन्धते विष्णोर्यत परमं पदम्॥ ॐ गायत्र्यै नमः ॐ
 भूर्भुवः-स्वः-तत-सवितु-र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो
 यो नः प्रचोदयात॥

क्षेत्रपालो(डुलिजियो) को अर्घ्य डालते हुए पढ़ें
 अश्वमेधे घोराणामार्षम्॥ ॐ द्रष्टे नमः उपद्रष्टे नमोऽनुद्रष्टे
 नमः ख्यात्रे नम उपख्यात्रे नमो, नुक्शास्त्रे नमः, श्रण्वते
 नमः उपश्रण्वते नमः, सते नमोऽसते नमो जाताय नमो
 जनिष्यमानाय नमो भूताय नमो भविष्यते नमः चक्षुषे नम
 श्रोत्राय नमो मनसे नमो वाचे नमो ब्रह्मणे नमः शान्ताय
 नमः तपसे नमः॥

कलश पर फूल चडाते हुए पढ़ें
 ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्म-वर्चस्वी जायताम-अस्मिन् राष्ट्रे
 राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायतां, दोग्धी धेनु वौढाऽ
 ऽनड्वान् आशुः सप्ति-जिष्णू-रथेष्ठः, पुरन्धि-योषा

सभेयो, युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे
नः पर्जन्यो वर्षतु फलवतीर्न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो
नः कल्पनाम ।।

अब विष्टर वाले प्रणीतपात्र में अर्घ्य, पुष्प, पानी, तिलक
तथा तीन फूल चढाते हुए निम्नलिखित तीन मंत्र पढ़ें

1. संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः ।
2. संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्ट प्राणो अस्तु वः ।
3. संख्यावः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः ।
4. आत्मा वो अस्तु सं प्रियः संप्रियास्तन्वो मम ।

(जीवाधान)

प्रणीतपात्र के विष्टर से कलश, क्षेत्र पालों को पानी
छिड़कते हुए पढ़ें

१. अश्विनो प्राणस्तौ ते प्राणं दतां तेन जीव ।
२. मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दतां तेन जीव ।

३. बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं दतांतु तेन जिव ।

कलश के पूर्व में अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें

ये देवाः पुरः संदोग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु
तेभ्यः स्वाहा । कलश के दिक्षण में अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें

यं देवा दक्षिणात् सदो यमनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते
नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा । कलश के पश्चिम में अर्घ्य फेकते
हुए पढ़ें

ये देवाः पश्चात् सदो मरुत नेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते
नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा ।

कलश के उत्तर दिशा की ओर अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें

ये देवा उतरात् सदो मित्रावरुण-नेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते
नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा । अपने आप को तिलक लगाते हुए
पढ़ें अध्वर्योयं यज्ञो अस्तु देवा ओषधीभ्यः पशुभ्यो मे
धनाय । विश्वस्मै भुताय ध्रुवो अस्तु देवाः स पिन्वव
घटवत-देवयज्ञ । अर्घ्य और फूल चढाते हुए पढ़ें

इहैवैधि मा पच्योष्ठाः पर्वता इवाविचाचलत। इन्द्र इवेह ध्रुव-तिष्ठेह जमुदारय। दो दर्भ के तिनके अपने आसन के रूप में रखते हुए पढ़ें इमम-इन्द्रो अदीधरत-ध्रुवं ध्रुवेण हविषा हविः। तस्मै सोमो अधिब्रवतस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः। कलश के सामने दो तिनक दर्भ के छोड़ते हुए पढ़ें ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं, जगत ध्रुवो राजा विशामसि। पृथ्वी माता को तिलक फूल तथा अर्घ्य लगाते हुए पढ़ें मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम। पिपृतां न भरीमभिः। आकाश की ओर अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें

बडित्था पर्वतानां क्षेत्रं बिभर्षि पृथिवि प्रया भूमिं प्रवत्वति महना जिनोषि महिनि। आटे या चूने से लिखे अष्टदल के उत्तर पश्चिम कोने (गणेश) पर पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें

निषुसीद गणपते गणोषुत्वामाहु-विप्रतमं कवीनाम। न ऋते

त्वत्क्रियते किंचारे महामर्कं मघवंश्चित्रमर्चं। अष्टदल के पश्चिम दक्षिण कोने पर पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें (कुमार जी)

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे। अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरा पश्यन्ति निहितमरतौ। अष्टदल के पूर्वोत्तर के कोने पर (लक्ष्मी) पर पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें

अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम। अष्टदल के उत्तर के कोने पर (सरस्वती) पर पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें इयं शुष्मेभि विसखा इवारुजत-सानुर्गिरीणान्त-र्विश्वभिर-ऊर्मिभिः। पारावतघ्नीम-अवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीम - आविवासेम धीतिभिः। अष्टदल के बीच में (लक्ष्मी) पर अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें कांस्यस्मितां हिरण्य प्राकाराम- आर्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां

तर्पयन्तीम । पद्मवर्णां ताम-इहोपहवये श्रियम् । पूर्व दक्षिण
कोने पर (विश्वकर्मा) पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए
पढ़ें

विश्वकर्मा विश्वदेवो विश्व जित विश्वदर्शितः । ते त्वा
धृतेस्य धारया श्रेष्ठाय समसूषत- बीच में रखें हुए कलश
(गडवे) में अर्घ्य, तिलक लगाते हुए पढ़ें ब्रह्मा देवानां
पदवीः कवीनाम् - ऋषिविप्राणां महिषो मृगानाम् । श्येनो
गृध्रणां स्वधितिः- वनानां सोमः पवित्रम्- अत्येति रेभन ।
प्रेतत-विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठः ।
यसयोरुषु त्रिषु विक्रमणेष्व-धिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा । यो
रुद्रो अग्नौ योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु । योरुद्रा
विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः ॥
अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवम् - ऋत्विजम् । होतारं
रत्नधातमम् ॥ इषे त्वोर्जे त्वा वायवः स्थो, पायवः स्थ देवो
वः सविता प्रार्पयत, श्रेष्ठतमाय कर्मणे ॥ अग्न आयाहि

वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ शन्नो
देवीर - अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंख्योरऽभि स्त्रवन्तु
नः ॥ आहं पितृन् सुविदत्रां अवित्सि न पातञ्च विक्रमणं च
विष्णोः ॥ बर्हिषदो ये सुधया सुतस्य भाजन्त पित्वस्त
इहागमिष्ठाः ॥ वषटते विष्णवास् आकृणोमि तन्मे जुषस्व
शिपिविष्ट हव्यम् । वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात
स्वस्तिभिः सदानः ॥ फाल्गुने शक्ति सहिताय चक्रिणे
नमः, क्रियासहिताय दामोदराय नमः । दुर्गायै त्रयम्बकाय
वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तदिभ्यः पितृगणदेवताभ्यो
नमः ॥ (प्रधान) रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूत-निवेशिनीम् ।
भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम ॥ संवेशिनीं
संयमनीं ग्रहनक्षत्रमालिनीम् । प्रपन्नोहं शिवां रात्रीं भेद्र
पारमशीमहि नमः । कालरात्र्यै नमः तालरात्र्यै नमः
राज्ञिरात्र्यै नमः शिवरात्र्यै नमः । यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य
ओषधीषु यो वनस्पतिषु । यो रुद्राय विश्वाभुवना विवेश तस्मै

रुद्राय नमो अस्तु देवाः। सभी क्षेत्रपालों (डुलिजियों) पर
 अर्घ्य, डालते हुए पढ़ें) क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव
 जयामसि गामश्र्वं पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे नमः
 हेरंकादिभ्यो नमः बटुकादिभ्यो नमः॥ यौ ते श्वानौ
 यमरक्षतारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ । ताभ्यामेनं
 परिदेहिराजं - स्वस्ति चास्मा अनमीवञ्च धीहि॥ यत्र वेत्थ
 वनस्पते देवानां गुह्या नामानि तत्र हव्यानि गन्तय॥ मुञ्चामि
 त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञात-यक्ष्माद उत राजयक्ष्मात। ग्राहि
 जग्राह यदि वैतदेनन्तस्या इन्द्राग्नी प्रमुक्तम एनम। ।
 आत्मनस्-तम्-इदं विवृहामि ते॥ तद्विष्णु परमं पदं सदा
 पश्यन्ति सूर्यः दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो
 जागृवासंः समिन्धते, विष्णोर्यत्परमं पदम्॥ कलश के
 समीप नैवेद्य रखकर निम्निलिखित (नैवेद्य) मन्त्र पढ़ें
 सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्वि
 नोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्यामादधे। महागणपतये कुमाराय

श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये
 ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः
 चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय॥ ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै
 त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः
 पितृगणयागदेवताभ्यः भगवते भवायदेवाय शर्वायदेवाय
 रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय
 महादेवाय ईशानायदेवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय॥
 अजैकपर्दिने अहिर्बुध्नयाय कृत्तिवाससे पिनाकभृते सिन्धवे
 बहुरूपाय हराय त्र्यम्बकाय त्रिनेत्राय वृषभ-वाहनाय शत-
 रुद्रेश्वराय मृत्युञ्जयभट्टारकाय। विनायकाय एकदन्ताय
 कृष्णपिङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय
 हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय
 वल्लभासहिताय महागणेशाय। क्लींकां कुमाराय षण्मुखाय
 मयूरवाहनाय सेनाधियतये कुमाराय। भगवत्यै अमायै
 कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै

सहस्रनाम्नयै देव्यै भवान्यै। विष्णुपञ्चयतनदेवताभ्यः
अभयङ्करीदेव्यै क्षेमङ्करीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इह
राष्ट्राधिपतये (अपने भैरव का नाम लें) अमुकभैरवाय
हेरकादिभ्यो वंदुकादिभ्यः (तिल, चावल, दूध, मुधु से
मिलाया, हुआ) तिलतण्डुलमात्रं दधिमधुमिश्रं ॐ नमो नैवेद्यं
निवेदयामि नमः॥

कलश पर पुष्प, अर्घ्य, चडाते हुए पढ़ें हिरण्यगर्भः
समवर्त-नागने भूतस्य जातः पतिर्-एक आसीत्। स दाधार
पृथिवीं द्याम्-उतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ यः
प्राणतो निमिषतश्च राजा पतिर्विश्वस्य जगतो बभूव। ईशेयो
अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ये
ओजदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।

यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
येन द्यौर्-उग्रा पृथिवी दृढा येन सुस्तम्भितं येन नाकम्॥ यो
अन्तरिक्षं विममे-वरीयः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ य इमे

द्यावा पृथिवी तस्तभाने आधारय द्रोघसी रेजमाने। यस्मिन्-
नधि वितताः सूर एति कस्मै देवाय हविषा विधेम। यस्येमे
विश्वे गिरयो महित्वा समुद्रं यम्य रसया सहाहुः।

दिशो यस्य प्रदिशः पञ्चदेवी कस्मै देवाय हविषा हविषा
विधेम। आपो ह यन्महती विश्वम्-आयुः- गर्भं दधाना
जनयन्तीर्-अग्निम्॥ ततो देवानां निरवर्त तासुर्-एकः
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ आ नः प्रजाञ्-जनयतु
प्रजापति धार्ता दधातु सुमनस्यमानः। संवत्सर
तत्क्रतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु॥
अर्चन्तस्वा हवामहे अर्चन्तः समिधीमहि, अग्नेर्-अर्चत
ऊतये अर्चत प्रार्चत प्रियमेधसो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत
पुरं न धृष्णाम्-अर्चत अर्चत॥

॥इति कलशस्थापनम्॥

वटक पूजा

परिवार में जिस सदस्य ने शिवरत्रि व्रत रखा होगा वह नए अथवा स्वच्छ वस्त्रों को धारण कर परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से सामग्री एकत्रित करते हुए भगवान् शंकर का ध्यान करें और 'ओ३म् नमः शिवाय' का उच्चारण करते रहें। अपनी-अपनी रीति के अनुसार वटक को सजा कर आसन (आरियों) पर रखें। यजमान नया यज्ञोपवीत धारण करें। परिवार के अन्य सदस्य भी नया यज्ञोपवीत धारण करें। यज्ञोपवीत धारण करते हुए 'जंग' भी रखें और गायत्री मन्त्र पढ़ें। थाली में अथवा भद्रपीठ पर सज्यतुल या पार्थिश्चर रख कर नारीकचलू या खोसू से पात्र में जल की धारा डालते हुए पढ़ें।

अस्य श्री आसन शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः।

पृथ्वी को तिलक लगा कर फूल चावल चढ़ाते हुए पढ़ें

प्रीं पृथिव्यै आधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः,
अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

हाथ जोड़ कर पढ़ें पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु च आसनम्। दर्भ के दो तिनके दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों में रख कर गणेश जी का ध्यान करते हुए पढ़ें शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये-सर्वविघ्नोपशान्तये नमः। अभिप्रतार्थ सिद्धयर्थ पूजितो यः सुरैर् अपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपते नमः। कर्पूरगौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेद्रं हारम्। सदा रमन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुदेव जगत्सर्व तस्मै श्री गुरुवे नमः। गुरुवे नमः। परम गुरुवे नमः। परमेश्वर गुरुवे नमः, परमाचार्याय नमः, आदि सिद्धेभ्यो नमः। दर्भ के दो तिनके पकड़ कर इस तरह अङ्गन्यास कीजिए-

हृदय को दोनों हाथों से छूते हुए पढ़ें

ॐ यो रुद्रो अग्नौ हृदयाय नमः सिर को स्पर्श करते हुए
पढ़ें यो अप्सु य औषधीषु शिरसे स्वाहा, चोटी को छूते हुए
पढ़ें यो वनस्पतिषु शिखायै वषट् कानों को छूते हुए पढ़ें यो
रुद्रो विश्वाभुवना विवेश कवचाय हुम्। आखों को छूते हुए
पढ़ें तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट् चुटकी मार कर प्राणायाम
करते हुए पढ़ें नमो अस्तु देवा अस्त्राय फट् चारों ओर
तिल फैकते हुए पढ़ें अपसर्पन्तु ते भूता ये भुवि संस्थिताः,
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया। प्राणायाम
करके हृदय और मुख को जल की छीटें देते हुए पढ़ें
तीर्थे स्नेयं तीर्थम् एव समानानां, भवति मानः शंस्यो
अरुरुषो धूर्तिः प्राण्ड् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली (पहले पर्व अर्थात् गण्ड) पर पवित्र
धारण करें और पढ़ें शतधारं वसूनां पवित्रम् असि
सहस्रधारम् अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण

बहुला भवन्ति। यजमान को तिलक लगान हुये (जंग भी
लगायें) पढ़ें मन्त्रार्थाः सफलता सन्तु पूर्णा मन्तु मनोऽर्था
शत्रुणां बुद्धि नाशो अस्तु मित्राणाम् उदयः तव आयुर्
आरोग्यम् ऐश्वर्यम् एतत् त्रितयम् अस्तु ते! जीव त्वं शगटः
शतम्। यजमान नारिवन को बांध कर अपनी मध्यमा
अंगुली से अपने आपको तिलक पुष्प लगाते हुये पढ़ें
परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच भूतात्मकाय विश्वात्मने
मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै समालभनं
गन्धो नमः। अर्घ्य नमः। पुष्पं नमः।

दीपक को तिलक लगाते पढ़ें स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतः
तिमरा अपहः, प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक अर्घ्य पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें वनस्पति रसो
दिव्यो गन्धाढ्यो गन्ध-उत्तमः, आहवानं सर्वदेवानां धूपोयं
प्रति गृह्यताम् परिकल्पितः। सूर्य देवता को निर्माल्य के
थाल में अर्घ्य चावल, फूल चढ़ाते हुये पढ़ें नमो धर्म

निधानाय, नमः स्वकृत साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष देवाय
भास्कराय नमो नमः। दर्भ सहित कटोरी से शिवलिंग
अथवा सज्जुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें यत्रास्ति माता
न पिता न बन्धुर् भ्रातापि नो यत्र सुहृत् जनश्च, न ज्ञायते
यत्र दिनं न रात्रिः तत्र आत्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने
नारायणाय आधार शक्त्यै धूप दीप संकल्पात् सिद्धिर्
अस्तु धूपो नमः, दीपो नमः।

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुण मासस्य
कृष्णापक्षस्य तिथौ द्वादश्यां (यदि द्वादश्यां दिवा हो) परतः
त्रयोदश्यां (जो श्री वार हो) वासरा नित्वायां महागणपतये
कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः
प्रजापतये ब्राह्मणे कलश देवताभ्यः ब्रह्म-विष्णु-महेश्वर
देवताभ्यः चतुर्वेदेष्वराय सानुचराय मासपतये नारायणाय
फाल्गुने शक्ति-साहिताय चक्रिणे क्रिया-साहिताय
गोविन्दाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरुणाय यज्ञ-पुरुषाय अग्नि

ष्वातादिभ्यः पितृगण देवताभ्यः भगवते भवाय देवाय
पार्वती सहिताय परमेश्वराय ह्रीं श्रीं देवीपुत्राय वटुकनाथाय
कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त
क्षेत्रपालेभ्यः धूपदीप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु धूपो नमः
दीपो नमः।

बायां यज्ञोपवीत रखकर तिल सहित पानी से पितरों को
जल देते हुये सज्जुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें (धारा
अंगूठे की तरफ से गिरनी चाहिए)

समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो
शिवरात्रिवृतनिमित्तं-धूपः स्वधा दीपः स्वधा
दाईं भुजा में यज्ञोपवीत धारण करके विष्टर अथवा दर्भ के
जल से पूर्ण खोसू या नारी कचलू में तिलक और तीन पुष्प
डालते हुये पढ़ें

सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तु वः संसृष्टा तन्वः
सन्तु वः संसृष्टः प्राणोऽस्तु वः। संख्या वः प्रियास्तन्वः

संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियाः तन्वोमम। इसी खोसू के जल से सज्युतलू अथवा शिवलिंग या पार्थिवेश्वर और सारे वटुक नाथ को जल की छीटें दर्भ के तिनकों अथवा विष्टर से देते हुये पढ़ें

अश्विनोः प्राणः तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रा वरुणयोः प्राणः तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः सते प्राणं ददात् तेन जीव। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः। गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥ अब पढ़ें

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ महापर्वणि द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां (जो भी वार हो) वासरान्वितायां, भगवतः भवस्य देवस्य, ईशानस्य देवस्य, महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य देवीपुत्र वटुक नाथस्य

कालरात्र्याः तालरात्र्याः शिवरात्र्याः समस्त शिवरात्रि देवतानां अर्चाम् अहं कारिष्ये ॐ कुरुष्व।

हाथ में पहले से पकड़े हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में छोड़कर थोड़ा तिल सर्षप और जव को लेकर कंधो पर से फेंकें, अब शंकर की मूर्ति के सामने दर्भ के दो तिनके (दर्भ के अभाव में दो फूल) आसन के रूप में डालते हुए पढ़ें ॐ विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वर श्वर आसनं दिव्यम् ईशान दास्यामि अहं परमेश्वर भगवतः भवस्य देवस्य महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य इदम् आसनं नमः।

चावल सहित दर्भ के दो तिनके अनामिका और मध्यमा अंगुलि पर अँगूठे से दबा कर यदि घंटी आपके पास हो बाएँ हाथ से बजाते हुए पढ़ें भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, पशुपतये देवाय रुद्राय देवाय भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय महादेवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवी पुत्र वटुक नाथाय कालरात्र्यै समस्त

शिवरात्रि देवताभ्यः युष्मान् पूजामि ॐ पूजय।

चावलों को कंधों पर से फेंक कर दर्भ के पहले से रखे हुए दो तिनकों को हाथ में रख कर नए चावल के दानों के सहित पकड़ कर पढ़ें

भगवन्तं भवं देवं, शर्वं देवं, रुद्रं देवं, पशुपतिं देवं, उग्रं देवं, भीमं देवं, ईशानं देवं, ईश्वरं देवं, महादेवं, पार्वतीसहितं परमेश्वरं देवीपुत्र वटुक नाथं कालरात्री तालरात्री शिवरात्री समस्त शिवरात्रि देवता आवाहयिष्यामि, ॐ आवाहय।।

भगवान् शंकर की मूर्ति पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

लिंगेऽद्य भक्त-दयया क्षणमात्रम् एकं स्थानं निधाय भव मत विहितां पुरारे। सर्वेश विश्वमय। हत् कमलादि रूढ पूजां गृहाण भगवन् भव मे अद्य तुष्टः। भूमेर् जलात् च पवनात् अनलात् हिमांशोर् उष्णार्चिषो हृदयतो गगनात् समेत्य, लिंगद्य सन्मणिमये मत् अनुग्रहार्थं भक्तयैक लभ्य। भगवन् कुरु सन्निधानम् भगवन् पार्वतीनाथ भक्तानुग्रह कारक

अस्मत् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।। दोनों हाथों में मुट्ठी भर फूल उठाकर तीन बार गायत्री पढ़ कर भगवान् शंकर पर चढ़ाते हुए पढ़ें इति आहूय तु गायत्रीं त्रिसम् उच्चार्य तत्त्ववित्, मनसा चिन्तितैर् द्रव्यै देवम् आत्मनि पुनर्यजेत्। पूजयेत्, तेजोरूपं ततः क्षिप्तवा प्रतिमायां पुनर्यजेत् दोनों कन्धों से जव फेंक कर प्राणायाम करें और खोसू में जल डालते हुए पढ़ें पाद्यार्थम् उदकं नमः, शन्नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंयोर् अभि स्रवन्तु नः। अब यही खोसू हाथ में लेकर पढ़ें

भगवन्तः पाद्यं पाद्यम् खोसू का जल भगवान् शंकर पर डालते हुए पढ़ें महादेव महेशान महानन्द परात् पर गृहाण पाद्यं मत् दत्तं पार्वती परमेश्वर। भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र वटुक नाथाय, कालरात्र्यै तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः पाद्यं नमः।। इस पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य पात्र में

डालकर खोसू में फिर से जल डालते हुए पढ़ें शन्नो देवीर्
अभीष्टय ापो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि स्रवन्तुनः
दर्भ, जल, दूध, घी, दही, चावल से बने अर्घ्य को जल में
डाल कर शंकर भगवान् पर अथवा ससज्युतलू पर डालते
हुए पढ़ें भगवन्तो अर्घ्यम् अर्घ्यम्। त्र्यम्बकेश सदाचार
विपदां प्रतिघातक अर्घ्यं गृहाण देवेश सम्पत् सर्वार्थ साधक।
भगवन् भवदेव पार्वती सहित परमेश्वर देवीपुत्र वटुक नाथ
कालरात्रि तालरात्रि राज्ञिरात्रि शिवरात्रि समस्त शिवरात्रि
देवताः इदं वोऽर्घ्यं नमः।

अब भगवान् शंकर को पंच दश स्नान इस प्रकार कीजिए,
जल, दूध, दही, शहद, घी, फूल, सर्षप इन सब को
मिलाकर शिवलिंग पर जल की धरा डालते हुए पढ़ें

1. असंख्याताः सहस्राणि ये रुदा अधिभूम्यां, तेषां सहस्र
योजनेव धन्वानि तन्मसि

2. योस्मिन् महति अर्णवे अन्तरिक्षे भवा अधि। तेषां सहस्र

योजनेव धन्वानि तन्मसि

3. ये नीलग्रीवाः शतिकण्ठा दिवं रुद्रा उपाश्रिता, तेषां
सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

4. ये नीलग्रीवा शिति कण्ठा शर्वा अधः क्षमा चरा तेषां
सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

5. ये वनेषु शिषिपिंजरा नीलग्रीवा विलोहिताः तेषां सहस्र
योजनेव धन्वानि तन्मसि

6. ये एतावन्तो वाभूयां सो वा दिशो रुद्रा वित्तिष्ठिरे तेषां
सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

ॐ यो रुद्रो अग्नौ यौ अप्सु य औषधीषु यो वनस्पतिषु। यो
रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।
भगवते भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय
परमेश्वराय पंचदश स्नानं परिकल्पयामि नमः।

देवता तथा पितरों के लिए चावल, दही, तिल और घी
सहित जल से तर्पण करते हुए पढ़ें ब्रह्मादया देवाः

तृप्यन्ताम् गले में यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें सनकादयः

ऋषयः तृप्यन्ताम्

यज्ञोपवीत बाएँ तरफ रख कर पढ़ें

अग्नि प्वात्ता दयः पितरः तृप्यन्ताम् तृप्यन्ताम् तृप्यन्ताम् ।

यज्ञोपवीत दायाँ रख कर पढ़ें ॐ नमो देवेभ्यः ।

यज्ञोपवीत गले में रख कर पढ़ें स्वाहा ऋषिभ्यः

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें स्वधापितृभ्यः,

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें आब्रह्मा स्तम्ब पर्यन्तं ब्रह्माण्डं

सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु ।

शंकर भगवान् या सञ्जुतलू पर फिर से स्नान के निमित्त

जलधारा डालते हुए पढ़ें

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकम् इव

बन्धनात् मृत्योर मुक्षीय मामृतात् । शिवरात्रि देवताभ्यः

मन्त्रगुडकं नमः ।

बाईं हथेली के मध्य में थोड़ा सा चावल सहित जल और

उसी हाथ की तर्जनी और अँगूठी में थोड़ा सा चावलों सहित जल लेकर उसी हाथ को देवताओं यानी वटुक राज के चारों ओर घुमाकर उस जल और चावलों को बाएँ कंधे पर से फेंकते पढ़ें (यानी आलथ निकालते हुए पढ़ें)

रक्षोहणं वाजिनम् आजिघर्मि मित्रं पृथिष्ठम् उपयामि शर्म ।

शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः सनो देवः सरिषः पातु

नक्तम् । शिवरात्रि देवताभ्यः आरात्रिकां परिकल्पयामि नमः ।

दाएँ अँगूठे तथा तर्जनी यानी अँगूठे की साथ वाली अंगुलि से सञ्जुतलू शिव मूर्ति का स्पर्श करके अपने नेत्रों से लगाते हुए पढ़ें ।

भवाय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय

परमेश्वराय नेत्र स्पर्शनं नमः ।

अब जहाँ शंकर की मूर्ति कौं बिठाना हो वहाँ फूलों से आसन सजाते हुए पढ़ें

आसनाय नमः वृषभासनाय नमः शतदल वृषभ आसनाय

पद्मासनाय नमः सहस्रदल पद्मासनाय नमः।

अब सोने के वर्कों और मालाओं से शंकर भगवान् तथा वटुक नाथ को सजाकर महिम्नापार तथा देवी के श्लोक पंचस्तवी आदि के श्लोक पढ़ते हुए फूल चढ़ाते जायें। भगवान् शंकर पर वस्त्र के रूप में फूल चढ़ाते हुए यह श्लोक पढ़ें कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदाऽभयदायक वस्त्रं गृहाण देवेश दिव्य वस्त्रोप शोभितम्। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः वस्त्रं परिकल्पयामि नमः।

यज्ञोपवीत के रूप में पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यम् अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीत् बलम् अस्तु तेजः। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः॥ शंकर की मूर्ति वटुक नाथ को तिलक, सज्युतलू को चन्दन तथा बाक़ी पात्रों को सिंदूर लगाते हुए पढ़ें

त्रिपुरान्तक देवेश पार्वती प्राण वल्लभ। गृहाण गन्धं काश्मीर चन्द्रचन्दन कल्पितम्। भगवते भवाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र वटुकनाथाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः अर्घो नमः पुष्पं नमः। (धूप आलनावुन)

महादेव मृढानीश जगत ईश निरंजन धूपं गृहाण देवेश सांज्यं गुग्गुल कल्पितम्। (रत्न दीप और काफ़ूर आलनावुन)

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः रत्नदीपं परिकल्पयामि नमः 'दर्भ हुड़' से चामर करते हुए आरती करें ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली, कृत ताडन परिपीडन मरणागम समये। उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्। अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते,

पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते। शिवया सह
ममचेतसि शशिशंखर निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे
हर दुरितम्। भव-भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्,
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन्। गिरिजावर
करुणाकर परमेश्वर भयहन, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे
हर दुरितम्। शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये,
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये। द्विज क्षत्रिय वनिता
शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर
दुरितम्। भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं,
दयितात्मज ममताभर कलुषी कृत हृदयम्। करु मां
निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर
मे हर दुरितम्। शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्,
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्॥

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुनमासस्य
कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां तिथौ समस्त

शिवरात्रि देवताभ्यः चामरं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढ़ाते हुए पढ़ें नवरत्नमयं दिव्यं मुक्ता जाल
विभूषितम् गृहाण छत्रं भगवान् शिव भद्रासन प्रद। समस्त
शिवरात्रि देवताभ्यः छत्रं परिकल्पयामि नमः। आईना
दिखाते हुए पढ़ें

एताभ्यः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः आदर्शं परिकल्पयामि
नमः फिर से वटुक नाथ आदि को फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

एताभ्यः समस्त शिरात्रि देवताभ्यः वासो नमः

नमस्कार करते हुए पढ़ें एतासां देवतानाम् अर्घ्यदानादि
अर्चन विधि सर्वः परिपूर्णः अस्तु।

दूध कन्द या नाभद आदि वटुक में डालते हुए पढ़ें
क्षीराज्य मधु सम्मिश्रं शुभ्रदध्ना समन्वितम्। षड् रसैश्च
समायुक्तं गृहाण अन्नं निवेदये। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः
मात्रा मधुपर्क चरुं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

फूलों की अंजलि चढ़ाते हुए पढ़ें

हर विश्वा खिलाधार निराधार निराश्रय पुष्पाँजलिम् इमं
शम्भो गृहाण वरदो भव। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः
पुष्पाँजलिम् समर्पयामि नमः। *मन से अर्थ परिक्रमा करते
हुए पढ़ें*

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या-दिकानि च।

तानि तानि प्रणश्यन्ति शिवस्यार्धं प्रदक्षिणात्

भगवान् शंकर पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मांग रागाय महेश्वराय।

देवधि देवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय ॐ नमः शिवाय।

मातङ्ग-चरमाम्बर-भूषणाय, समस्त-गीर्वाण-गणार्चिताय।

त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय ॐ नमः

शिवाय। शिवा-मुखाम्भोज-विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य

विनाशकाय। चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै शिकाराय ॐ

नमः शिवाय। वशिष्ठ-कुम्भोत्-भव गौतमादि-मुनीन्द्र-

वन्द्याय गिरीश्वराय।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय ॐ नमः
शिवाय। यज्ञ-स्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय
सनातनाय। नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय ॐ
नमः शिवाय।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते
विषय उपभोग रचना, निद्रा समाधि स्थितिः। संचारः
पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्त्रोत्राणिसर्वा गिरः। यत् यत् कर्म
करोमि तत् तत् अखिलं शम्भोः तव आराधनम्।

उभाभ्यां जानुभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं करोमि
नमः।

*चावल (जंग) आदि को (लव देते हुए) संकल्प करते हुए
पढ़ें*

अन्नं नमः अन्नं नमः आज्यं अन्नम् अद्य दिने अद्य यथा
संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु। अन्न हीनं विधि-हीनं द्रव्य-हीनं
यत् गतं तत्सर्वम् अछिद्र सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु

खोसू में दाएँ हाथ की अंगुलियों के ऊपर से जल डाल कर उसी जल से शंकर भगवान तथा वटुक नाथ आदि को जल आचमन के रूप में देते हुए पढ़ें

शं नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि स्रवन्तु नः, समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः अपोशानं नमः आचमनीयं नमः फिर से दायें हाथ की अंगुलियों के ऊपर से खोसू में जल डालकर उस में सिक्के के रूप में कुछ दक्षिणा भी डालें, वह दक्षिणा सभी वटुक नाथ आदि को अर्पण करते हुए पढ़ें

शंनो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि। फिर से कुछ सिक्के आदि अर्पण करते हुए पढ़ें एता देवताः सदक्षिणान् अनेन प्रीयन्तां प्रीतां सन्तु।

वटुक नाथ को फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

नाथं नाथं त्रिभुवन नाथं भूति सितं त्रिशूल धरं उपवीती कृतं भोगिनम् इन्दु कलाशेखरं वन्दे।

वैश्वदेव विधि

(अपनी रीति के अनुसार वैश्वदेव विधि की जिए) वटुक नाथ के सामने ही अग्नि जलाकर, उस अग्नि के दक्षिण पश्चिम कोण पर विष्टर (दर्भ) तिल और चावल पानी सहित एक कटोरी रखें (यह प्रणीत पात्र कहलाता है) इस प्रणीत पात्र में तीन बार फूल डालते हुए पढ़ें

1. संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः
2. संसृटा तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः
3. संख्यावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रिया स्तन्वो मम दर्भ के दो तिनके अग्नि में जलाकर दाएँ ओर फेंकते हुए पढ़ें निर्दग्धं रक्षो निर्दग्धा रातिर् अपाग्ने, अग्नि मामांद जहि निष्क्रव्या दं देवयजनं वह प्राणायाम करके अग्नि के दाएँ ओर रखें हुए प्रणीतापात्र में से नौ बार दर्भ से पानी

छिड़कते हुए पढ़ें

1. ऋतं त्वा सत्येन परिसमूह्यामि ।
2. सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि ।
3. ऋत सत्याभ्यां त्वा परिसमूह्यामि ।
4. ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि ।
5. सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि ।
6. ऋत सत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि ।
7. ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि ।
8. सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।
9. ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि ।

अग्नि के चारों ओर दर्भ के चार तिनके पूर्व, दक्षिण, उत्तर और पश्चिम से छोड़ते हुए पढ़ें यज्ञस्य सन्ततिर-असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि । अग्नि को तिलक फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

अग्नये शुकारूढाय स्वाहासहिताय त्रिनेत्राय तेजोरूपाय सभालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः घी सहित पकाए हुए अन्न या रोटी पर दर्भ के दो तिनके लगाते हुए पढ़ें वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वगतोग्रस्य अन्नस्य जुहोति पाकस्य घृतेन संलिप्य यजमानाय स्वस्ति अस्तु श्रुतम-अभिघार्य । इसी अन्न या रोटी (चोचवोर) से अग्नि में आहुतियाँ डालते हुए पढ़ें सोमय स्वाहा, मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, अनुमत्यै स्वाहा, ध्वान्वन्तरये स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, वासुदेवाय स्वाहा, सङ्र्षणाय स्वाहा, प्रद्युम्नाय स्वाहा, अनिरुद्धाय स्वाहा, सत्याय स्वाहा, पुरुषाय स्वाहा, अष्युताय स्वाहा, माधवाय स्वाहा, गोविन्दाय स्वाहा, सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नाराणाय स्वाहा । किसी थाली आदि में सिलोना, चावल आदि रख कर सभी परिवार के सदस्य उस थाली को हाथों से स्पर्श करते हुए प्रेष्युन पढ़ें

॥ अथ नैवेद्य मन्त्राः ॥

प्रेष्युन

दोनों हाथों से नैवेद्य ग्रहण करते हुए पढ़ें।

अमृतेश मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम-स्तु अमृतायतां नैवेद्यं
सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य-त्वा-सवितुः प्रसवेऽश्विनो-
र्बाहुभ्यां पूष्णो-हस्ताभ्याम्-आदधे, महागणपतये कुमाराय
श्रियै सेस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वादेवताभ्यः प्रजापतये
ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु-महेश्वर-देवताभ्यः
चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै
त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ-पुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः।
पितृगणदेवताभ्यः ॐ भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय
नारायणाय, भवाय देवाय पार्वतीसहिताय नारायणाय,
भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय
वल्लभासहिताय श्रीगणेशाय क्लीं कां कुमाराय भगवते ह्रां

ह्रीं सः सूर्याय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै
कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री
शारिका भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञी-भगवत्यै
श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीढा-भगवत्यै वैखरी-भगवत्यै
वितस्ता-भगवत्यै गंगा-भगवत्यै यमुना-भगवत्यै कालिका-
भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महात्रिपुरासुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै
भवान्यै अभयंकरी देव्यै भवान्यै क्षेमंकरी भगवत्यै सर्वशत्रु-
घातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये (जिस भैरव से आप के कुल
का संबंध है उसका नाम ले) भैरवाय इन्द्रादिभ्यो दशलोक
पालेभ्यः आदित्यादिभ्यो नवग्रह देवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यः
मातृभ्यः गौर्यादिभ्यः मातृभ्यः ललितादिभ्यः मातृभ्यः
बार्हस्पत्य देवताभ्यः। ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भुवो देवताभ्यः
ॐ स्वर्देवताभ्यः ॐ भूर भुवः स्वः देवताभ्यः अखण्ड
ब्रह्माण्डयागदेवताभ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै हेरकादिभ्यः
वटुकादिभ्यः उत्पन्नम् अमृतं दिव्यं प्राक् क्षीरो दधिमन्थनात्

अन्नं अमृतं रूपेण नैवेद्यं प्रति गृह्यताम्।

अपने इष्ट देवता का ध्यान करते हुए पढ़ें।

ॐ तत्सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य, कृष्ण पक्षस्य द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां तिथौ अमुकायां, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं शिरात्रि व्रत निमित्तम् ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

अग्नि के दाईं ओर पूर्व की ओर सिर वाले दर्भ बिछाकर उसी बिछाई हुई दर्भ पर दक्षिण पश्चिम कोण से पंक्ति में (लाईन) में साँप आकार में रोटी के तीन टुकड़े देवताओं को बलि देते हुए आगे लिखे छत्तीस नामों से रोटी के टुकड़े या अन्न डालते हुए पढ़ें

ताक्षाय नमः, उपतक्षाय नमः, अम्बा-नामासि नमस्ते, दुला-नामासि नमस्ते, नितंत्री नामासि नमस्ते, चुपनीका-नामासि नमस्ते, अभ्रयन्ती नामासि-नमस्ते, मेघयन्ती नामासि नमस्ते, वर्षयन्ती नामसि नमस्ते, नन्दिनि नमस्ते, सुभगे नमस्ते,

सुमङ्गल नमस्ते, भद्रं-करि नमस्ते, श्रियै हिरण्य केश्यै नमः, वनस्पतिभ्यो नमः, धर्माय नमः, अधर्माय नमः, मृत्यवे-नमः मरुत्भ्यो नमः, वरुणाय नमः, विष्णवे नमः, वैश्रवणाय-राज्ञे-नमः, भूतेभ्यो नमः, इन्द्राय नमः, इन्द्र-पुरुषेभ्यो नमः, सोमाय-नमः, सोम पुरुषेभ्यो नमः, वरुणाय नमः, वरुण पुरुषेभ्यो नमः, ब्रह्म-नमः, ब्रह्म पुरुषेभ्यो नमः ऊर्ध्व आकाशाय नमः, स्थण्डिले-दिवंचरेभ्यो भूतेभ्यो-नमः, नक्तं चरेभ्यो नमः, षट्-त्रिंशत् तक्षादिभ्यो अन्नं नमः।

पानी डालते हुए पढ़ें आचमनीयं नमः

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर दर्भ बिछाते हुए दर्भ पर तिल और जल से छींटे देते हुए पढ़ें

समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो भूपृष्ठे दर्भास्तरणे तिलोदकेन अवने-जनं स्वधा।

इसी बिछाई हुई दर्भ को अँगूठे से स्पर्श करते हुए पढ़ें

उशन्तस्त्वा हवामह उशन्तः समिधीमहि, उशन्न-उशत आवह
पितृन् हविषे अत्तवे।

तिल, पानी, दूध, दीप, धूप, अन्न, घी और शहद (यह
पितरों का अन्न) एक पात्र में रखें और पढ़ें
तिलास्तोयं तथा क्षीरं दीपधूपौ बलिस्तथा। मधु-सर्पिः
समायुक्तम् अष्टांगम् अन्न सम्भवम्।

बायाँ घुटना पृथ्वी पर रखकर पितरों का नाम उच्चारण
करते हुए पात्र में रखा हुआ यह अन्न दर्भ पर रखते हुए पढ़ें
देवताभ्यः पितृभ्यश्च महा योगिभ्य एवच। नमः स्वधा च
स्वाहा च नित्यम्-एव भवतु इह
ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य
कृष्णापक्षस्य तिथौ द्वादश्यां वासरान्वितायां
पितरों का नाम लेते हुए अन्न दर्भ पर डालते जाए,
पितामह एतत् ते अन्नं ये च त्वानु, प्रपितामह एतत् ते अन्नं ये
च त्वानु मात एतत् ते अन्नं याश्च त्वानु।

इसी तरह मृत स्त्रियों के नाम लेते हुए अन्न रखते जाएँ और
सभी मृत पितरों को अन्न डालकर जिन के नाम याद न हों
रोटी के टुकड़े अन्नादि हाथ में लेकर यह मंत्र पढ़ें
मातृपक्ष्यास्तु ये केचित् ये चान्ये पितृपक्षजाः गुरु श्वशुर
बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः, ये प्रतेभावम् आपन्ना ये चान्ये
श्राद्ध वर्जिताः अन्न दानेन ते सर्वे लभन्ताम् तृप्तिम् उत्तमाम्।
समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्योऽन्नं स्वधा।
अन्न का लेप साफ़ करके हाथ धोकर तिलक तथा फूल
चढ़ाते हुए पढ़ें समस्त माता पितृभ्यः समालभनं गन्धः
स्वधा, समस्त माता पितृभ्यः अर्घ्यः स्वधा, धूपः स्वधा।
तर्पण करते हुए पढ़ें
समस्त माता पितृभ्यः दीपः स्वधा, धूपः स्वधा।
भक्ष्य भोज्य रखते हुए पढ़ें
समस्तमाता पितृभ्यः भक्ष्य भोज्य फल मूल बलि नैवेद्यम्
आहारादि अन्नं स्वधा। तिल, पानी, शहद डालते हुए पढ़ें

समस्त माता पितृभ्यः तिल मधु मिश्रमुदक पात्रम् आचनीयं
जलं स्वधा तर्पण करते हुए पढ़ें

समस्त माता पितृभ्यः हिमपानं स्वधा क्षीरपानं स्वधा मधुपानं
स्वधा तिलोदकं स्वधा उदक तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतम्।

दायाँ यज्ञोपवीत रखते हुए पढ़ें

वसन्ताय नमः, ग्रीष्माय नमः, वर्षाभ्यो नमः, शरदे नमः,
हेमन्ताय नमः, शिशिराय नमः, षड् ऋतुभ्यो नमः।

अग्नि में अन्न की आहुति डालते हुए पढ़ें

अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। हाथ धोकर प्राणायाम करके

अग्नि को प्रणेतपात्र से पानी छिड़कते हुए पढ़ें

1. ऋतुं त्वा सत्येन विमुंचामि।

2. सत्यं त्वर्तेन विमुंचामि।

3. ऋत सत्याभ्यां त्वा विमुंचामि।

अग्नि के चारों तरफ़ छोड़ी हुई दर्भ उत्तर दिशा से उठाते हुए

पढ़ें

यज्ञस्य सन्ततिर असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि।

फूल हाथ में लेते हुए अग्नि देवता से आशीर्वाद मागते हुए
पढ़ें

धर्म देहि, धनं देही, पुत्रपौत्रान् च देहि मे, आयुर् आरोग्यम्
ऐश्वर्यम् देहि मे, हव्य वाहन तेजोसि तेज मयि देहि।

अग्नि की ज्योति हाथ से अपनी ओर लेते हुए पढ़ें

इत्यात्मानं देहि भगवन् सन्निधत्सु।

पृथ्वी पर थोड़ा सा अन्न फिर से डालते हुए पढ़ें

भगवन् यक्ष्म एतत्तेऽन्नं नमः, एतत् ते आचमनीयं नमः।

यज्ञोपवीत गले में रखते हुए पढ़ें

हन्त मनुष्यभ्यः, सनकादिभ्यः ऋषिभ्यः अन्नं नमः

आचमनीयं नमः

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर 'चटू' को हाथों से पकड़ कर
तिलक पुष्प लगाते हुए पढ़ें

या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा, खेचरी
भूचरी रामा तुष्टा भवतु मे सदा, आकाश मातृभ्यो अन्नं
नमः, समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

भगवान् शंकर का ध्यान मन में रख कर किसी पात्र में
थोड़ा सा अन्न रखते हुए पढ़ें

शिवरात्रि देवताभ्यः बलिं समर्पयामि नमः

अब जो दर्भ पर अपने अन्न कण रखे है उनके पास ही

पृथ्वी पर और प्राणियों को अन्न डालते हुए पढ़ें (गोग्रास)

सौर भेय्याः स्वर्ग हिताः पवित्रा पुण्यराशयः प्रति गृहणन्तु
मे ग्रासं गावः त्रैलोक्य मातरः। गोभ्योऽन्नं नमः, ऐन्द्र वारुण

वायव्या याम्या नैऋति काश्च ये वायसाः प्रति गृहणन्तु इमं

पिण्डं मयोद्धतम्, काकेभ्यः अन्नं नमः, श्वानौ द्वौ शाव

शवलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ, ताभ्यां पिण्डं प्रदस्यामि

स्याताम् एतौ अहिंसकौ श्वभ्यः श्वानकेभ्यः अन्नं नमः

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें

रौरवाधीन सत्त्वानां प्रेत द्वार निवासिनाम्, अर्थिनां
याचमानानाम् अक्षय्यम् उपतिष्ठतु।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें

शुनां च पतितानां च श्वपचां पाप रोगिणाम्। वातसानां
क्रिमीणां च शनकैर् निक्षिपेत् भुवि, देवा मनुष्याः पशवो
वयांसि सिद्धाः सयक्षोरग दैत्यसंघाः, प्रेता पिशाचाः तरवः

समस्ता ये चान्नम् इच्छन्ति मया प्रदत्तम्। पिपीलिकाः कीट

पतंग काद्या बुभुक्षिताः कर्मणि बद्धाः, प्रयान्तु ते तृप्तिम् इंद

मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु। येषां न माता न पिता

न बन्धुर नैवान्न सिद्धिर् न तथान्नम् अस्ति तत् तृप्तयेऽन्नं भुवि

दत्तम् एतत् ते यान्तु तृप्तिं मुदिता भवन्तु, भूतानि सर्वाणि

तथाननम् एतत् अयं चरिष्णुर न ततोऽन्यत् अस्ति तस्मात् अहं

भूत निकाय भूतम् अन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम्। चतुर्दशो

भूतगणो य एष तत्र स्थिता येऽखिल भूत संघाः, तृप्त्यर्थम्

अन्नं हि मया विसृष्टं, तेषाम् इंद ते मुदिता भवन्तु, इत्युच्चार्य

नरो दद्यात् अन्नं श्रद्धा समन्वितः, भुवि भूतोप काराय गृही
सर्वाश्रयो यतः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर अँगूठे की तरफ से अन्न सलोना
डालते हुए पढ़ें

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च, वैवस्वताय कालाय
सर्वप्राणहराय च, औदुम्बराय नीलाय ब्रह्माय परमेष्ठिने,
वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः, पाशहस्त कृतान्ताय
प्रेताधिपतये नमः, श्रीयमराज धर्मराज चित्रगुप्त तृप्तयेऽस्तु।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर 'पवित्र' निकाल कर ऋषि डुलिजी
को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्र पालों (डुलिजियों) में अन्न
सलोना डालते हुए पढ़ें

ये विश्व भाविन भूता ये च तेषु अनुयायिनः, आहरन्तु बलिं
तुष्टाः प्रयच्छन्तु शिवं मम। योऽस्मिन् निवसति क्षेत्रे
क्षेत्रपाल सकिंकरः, तस्मै निवेदयामि अद्य बलिं पानीय
संयुतम्। क्षां क्षेत्राधिपतये बलिं नमः, रां राष्ट्राधिपतये बलिं

नमः, सर्वे अभय वरप्रदा मह्यं पुष्टिं पुष्टिपतयो ददातु ॥

इस के बाद अपनी रीति के अनुसार ऋषि डुलिजी में वैष्णव
भोजन ही डालें बायाँ यज्ञोपवीत रखकर अन्न कणों पर
फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

1. आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गमोक्षौ सुखानि च,
प्रयच्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः

2. एष पिण्डो मया दत्तः तव हस्ते जनार्दन,
गयायां पितरूपेण स्वयं एवोपगृहताम्

3. आत्मनश्चार्थं लाभाय क्षेमाय विजयाय च,
शत्रूणां बुद्धिं नाशाय पितृन् उद्धरणाय च

4. पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशम् एकं गयाशिला,
यत्र तत्र स्मरेत् नित्यं पितृणां दत्तम् अक्षयम्।

॥ इति वैश्वदेव विधि ॥

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर देवताओं का विसर्जन दर्भ के दो
तिनके चावल सहित हाथ में रखकर इस तरह करें

ॐ भूः पुरुषं विसर्जयामि नमः, ॐ भुवः पुरुषं विसर्जयामि नमः, स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः
प्रचोदयात् ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य
फाल्गुणमासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां वारान्वितायां भवस्य
देवस्य उग्रस्य देवस्य भीमस्य देवस्य कालरात्र्यः तालरात्र्यः
शिवरात्र्यः समस्त शिवरात्रि देवतानाम् पूजनमऽच्छिद्रं
सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु। चावल सहित जल से तर्पण
करते हुए पढ़ें

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदक तर्पण नमः आज्ञा मे
दीयतां नाथ नैवेद्यस्य अस्य भक्षणे, शरीर यत्र सिद्धयर्थं
भगवन् क्षन्तुम् अर्हसि आपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।
शब्द ब्रह्मये स्वच्छे देवि त्रिपुर सुन्दरि, यथा शक्तिं जपं
पूजां गृहाण परमेश्वरि। दर्शनात् पाप शमनी, जपात् मृत्यु
विनाशिनी, पूजिता दुःख दौर्भाग्य हरा त्रिपुर सुन्दरी।

आहवानं नैव जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।

प्रणाम करते हुए पढ़ें

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं
करोमि नमः। तर्पण करते हुए पढ़ें

नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः
औषधीभ्यः, नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे,
बृहते कृणोमि इति एतासाम् एव देवतानां सामीप्यं सारिष्टतां
सायुज्यं सलोकतां आप्नोति य एवम् एव विद्वान् स्वाध्यायम्
अधीते।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शिव महिम्नस्तोत्रम्

संधि-विच्छेद कृत
श्री योगेश्वर हाली
अगले पृष्ठ से

अथ श्री शिव महिम्नः स्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परम् अविदुषः यदि असदृशी,
स्तुतिः ब्रह्मा आदीनाम् अपि तत् अवसन्नाः त्वयि गिरः ।
अथ अवाच्यः सर्वः स्वमति परिणाम अवधि गृणन्,
मम अपि एषः स्तोत्रे हर! निर् अपवादः परिकरः ॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ् मनसयोः
अतत् व्यावृत्त्या यं चकितम् अभिधत्ते श्रुतिः अपि ।
सः कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः,
पदे तु अर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥

मधु स्फीता वाचः परमं अमृतं निर्मित वतः
तव ब्रह्मन्! किं वाक् अपि सुर गुरोः विस्मय पदम् ।
मम तु एताम् वाणीं गुण-कथन-पुण्येन भवतः
पुनामि इति अर्थे अस्मिन् पुरमधन! बुद्धिः व्यवसिता ॥३॥

तव ऐश्वर्यं यत् तत् जगत् उदय रक्षा प्रलय कृत्,
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण भिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानाम् अस्मिन् वरद! रमणीयाम् अरमणीम्,
विहन्तुं वि-आक्रोशीम् विदधते इह एके जडधियः ॥४॥

किं ईहः किं कायः स खलु किं उपायः त्रिभुवनम् ।
किं आधारः धाता सृजति किं उपादान इति च ।
अतर्क्य ऐश्वर्ये त्वयि अनवसर दुःस्थः हत धियः,
कुतर्कः अयं कांश्चित् मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

अजन्मानः लोकाः किम् अवयव वन्तः अपि जगताम्,
अधिष्ठातारं किं भव-विधिः अनादृत्य भवति ।
अनीशः वा कुर्यात् भुवन-जनने कः परिकरम्,
यतः मन्दाः त्वाम् प्रति अमर वर! संशेरते इमे ॥६॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपति मतं वैष्णवं इति,
 प्रभिन्ने प्रस्थाने परं इदम् अदः पथ्यं इति च।
 रुचीनां वैचित्र्यात् ऋजु कुटिल नाना पथ जुषाम्,
 नृणाम् एकः गम्यः त्वं असि पयसाम् अर्णव इव ॥७॥

महा उक्षः खटु अङ्गं परशुः अजिनं भस्म फणिनः,
 कपालं च इति इयत् तव वरद! तन्त्र उपकरणम्।
 सुराः तां ताम् ऋद्धिं दधति तु भवत्-भू-प्रणिहिताम्,
 न हि स्व-आत्मा-आरामं विषय-मृग-तृष्णा भ्रमयति ॥८॥

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलम् अपरः तु अध्रुवम् इदम्,
 परः ध्रौव्य-अध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये।
 समस्ते अपि एतस्मिन् पुरमथन! तैः विस्मित इव,
 स्तुवन् जिहेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

तव ऐश्वर्यं यत्नात् यत् उपरि विरिंचिः हरिः अधः,
परिच्छेत्तुं यातौ अनलम् अनल-स्कन्ध-वपुषः ।
ततो भक्ति-श्रद्धा-भर-गुरु-गृणद्भ्यां गिरिश! यत्,
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किम् अनुवृत्तिः न फलति ॥१०॥

अयत्नात् आसाद्य त्रिभुवनम्-अवैर-व्यतिकरम्,
दश-आस्यः यत् बाहून अभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरः पद्म-श्रेणी रचित चरण-अम्भोरुह बलेः,
स्थिरायाः त्वत् भक्तेः त्रिपुर-हर! विस्फूर्जितम् इदम् ॥११॥

अमुष्य त्वत् सेवा सम् अधिगत सारं भुज-वनं,
बलात् कैलासे अपि त्वत् अधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पाताले अपि अलस चलित अङ्गुष्ठ शिरसि,
प्रतिष्ठा त्वयि आसीत् ध्रुवम् उपचितः मुह्यति खलः ॥१२॥

यत् ऋद्धिं सुत्राम्णः वरद! परम उच्चैः अपि सतीम्,
 अधः चक्रे बाणः परिजनविधेय त्रिभुवनः।
 न तत् चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वत् चरणयोः,
 न कस्य अपि उन्नत्यै भवति शिरसः त्वयि अवनतिः॥१३॥

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षय चकित देव असुर कृपा-
 विधेयस्य आसीत् यः त्रिनयन! विषं संहतवतः।
 स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियं अहो,
 विकारः अपि श्लाघ्यः भुवन भय भंग व्यसनिनः॥१४॥

असिद्ध अर्थाः न एव क्वचित् अपि स-देव-असुर-नरे,
 निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनः यस्य विशिखाः।
 स पश्यन् ईश! त्वाम् इतर-सुर-साधारणं अभूत्,
 स्मरः स्मर्तव्य आत्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः॥१५॥

मही पाद आघातात् व्रजति सहसा संशय-पदम्,
 पदं विषणोः भ्राम्यत् भुज-परिघ-रुग्ण-ग्रह-गणम् ।
 महुः द्यौः दौस्थ्यं याति अनिभृत-जटा-ताड़ित-तटा,
 जगत्-रक्षायै त्वं नटसि ननु वामा एव विभुता ॥१६॥

वियत्-व्यापी-तारा-गण-गुणित-फेन उद्गम रुचिः,
 प्रवाहः वाराम् यः पृषतलधु दृष्टः शिरसि ते ।
 जगत् द्वीप आकारं जलधि-वलयं तेन कृतम्,
 इति अनेन एव उन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

रथः क्षोणी यन्ता शत धृतिः अगन्द्रो धनुः अथो
 रथ-अङ्गो चन्द्र-अर्को रथ चरण-पाणिः शरः इति ।
 दिधक्षोः ते कः अयं त्रिपुर तृणम् आडम्बर विधि,
 विधेयैः क्रीडन्त्यः न खलु पर-तन्त्रा प्रभु-धियः ॥१८॥

हरिः ते साहस्रं कमल-बलिम् आधाय पदयोः
 यत् एक ऊने तस्मिन् निजम् उदहरत् नेत्र कमलम् ।
 गतः भक्ति उद्रेकः परिणतिम् असौ चक्र-वपुषा,
 त्रयाणाम् रक्षायै त्रिपुर-हर! जागर्ति जगताम् ॥१६॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत त्वं असि फल-योगे क्रतुमताम्,
 क्व कर्म प्रध्वस्तम् फलति पुरुष आराधनम् ऋते ।
 अतः त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फल-दान प्रतिभुवं,
 श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ-परिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

क्रिया-दक्षः दक्षः क्रतु-पतिः अधीशः तनु भृताम्-
 ऋषीणाम् आर्त्विज्यं शरणद! सदस्याः सुरगणाः ।
 क्रतु-भ्रंशः त्वत्तः क्रतु-फल-विधान-व्यसनिनो,
 ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा-विधुरम् अभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

प्रजा-नाथं नाथ! प्रसभम् अभिकं स्वां दुहितरं,
गतं रोहित् भूतां रिरमयिषुम् ऋष्यस्य वपुषा ।
धनुः पाणेः यातं दिवम् अपि सपत्रा कृतम् अमुम्,
त्रसन्तं ते अद्य अपि त्यजति न मृग व्याध रभसः ॥२२॥

अपूर्वं लावण्यम् विवसन तनोः ते विमृशताम्,
मुनीनां दाराणां समजनि सकोप व्यतिकरः ।
यतः भग्ने गुह्ये सकृत् अपि सपर्या विदधताम्,
ध्रुवं मोक्षः अश्लीलं किम् अपि पुरुषार्थं प्रसविते ॥२३॥

वं लावण्या आशँसा धृत धनुषम् अह्नाय तृणवत्,
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन! पुष्प आयुधम् अपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यम निरत देह अर्ध घटनात्,
अवैति त्वां अब्धा बत वरद मुग्धाः युवतयः ॥२४॥

श्मशानेषु आक्रीडा स्मरहर! पिशाचाः सहचराः
 चिता भस्म आलेपः स्रक् अपि नृकरोटी परिकरः।
 अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नाम एवम् अखिलम्
 तथा अपि स्मर्तृणां वरद! परमं मङ्गलं असि॥२५॥

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधम् अवधाय आत्त-मरुतः
 प्रहृष्यत् रोमाणः प्रमद सलिल उत्सङ्गित दृशः।
 यत् आलोक्य आह्लादं हृद इव निमज्ज्य अमृतमये
 दधति अन्तः तत्त्वं किम् अपि यमिनः तत् किल भवान्॥२६॥
 त्वम् अर्कः त्वम् सोमः त्वम् असि पवनः त्वं हुतवहः
 त्वम् आपः त्वम् व्योम त्वमु धरणिः आत्मा त्वं इति च।
 परिच्छिन्नाम् एवं त्वयि परिणताः बिभ्रति गिरम्,
 न विद्मः तत्तत्त्वं वयं इह तु यत् त्वं न भवसि॥२७॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीः त्रिभुवनम् अथो त्रीन् अपि सुरान्
 अकार आद्यैः वर्णैः त्रिभिः अभिदधत् तीर्ण-विकृति ।
 तुरीयं ते धाम ध्वनिभिः अवरुन्धानम् अणुभिः,
 समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद! गृणाति ओम् इति पदम् ॥२८॥

भवः शर्वः रुद्रः पशुपतिः अथ उग्रः सह महान्
 तथा भीम ईशानौ इति यत् अभिधान-अष्टकम् इदम् ।
 अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव! श्रुतिः अपि,
 प्रियाय अस्मै धाम्ने प्रणिहित नमस्योऽस्मि भवते ॥२९॥

वपुः प्रादुर्भावात् अनुमितं, इदम् जन्मनि पुरा,
 पुरारे! नैव अहं क्वचित् अपि भवन्तम् प्रणतवान् ।
 नमन् मुक्तः सम्प्रति अतनुः अहम् अग्रे अपि अनतिमान्,
 महा ईश! क्षन्तव्यं तत् इदम् अपराध द्वयं अपि ॥३०॥

नमो नेदिष्ठाय प्रिय-दव! दविष्ठाय च नमो,
 नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर! महिष्ठाय च नमः।
 नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन! यविष्ठाय च नमो,
 नमः सर्वस्मै ते तत् इदम् अति सर्वाय च नमः॥३१॥

बहुल रजसे विश्व-उत्पतौ भवाय नमो नमः,
 प्रबल तमसे तत् संहारे हराय नमो नमः।
 जन सुखकृते संत्त्व उद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः,
 प्रमहसि पदे निःत्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥३२॥.

कृश-परिणति चेतः क्लेश वश्यं क्व च इदम्,
 क्व च तव गुण सीमा उल्लङ्घनी शाश्वत् ऋद्धिः।
 इति चकितम् अमन्दी कृत्य मां भक्तिः आधात्,
 वरद! चरणयोः ते वाक्यं पुष्प उपहारम्॥३३॥

असित गिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे,
 सुर-तरु-वर-शाखा लेखनी पत्रम् उर्वी ।
 लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालम्,
 तद् अपि तव गुणानाम् ईश! पारं न याति ॥३४॥

असुर-सुर-मुनि-इन्द्रैः अर्चितस्य इन्दु मौलेः
 ग्रथित-गुण महिम्नः निर्गुणस्य ईश्वरस्य ।
 सकल-गण-वरिष्ठः पुष्पदन्त अभिधानः,
 रुचिरम् अलघुवृत्तैः स्तोत्रम् एतत् चकार ॥३५॥

अहः अहः अनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रम् एतत्,
 पठति परम भक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
 स भवति शिवलोके रुद्र तुल्यः तथा अत्र,
 प्रचुरतर धन आयुः पुत्रवान् कीर्तिमान् च ॥३६॥

महेशात् न अपरः देवः महिम्नः न अपरा स्तुतिः ।

अघोरात् न अपरः मन्त्रः न अस्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३७॥

दीक्षा दानं तपः तीर्थं ज्ञानं याग आदिकाः क्रियाः ।

महिम्नः स्तव पाठस्य कलां न अर्हन्ति षोडशीम् ॥३८॥

कुसुम दशन नामा सर्व गन्धर्व राजः, ॥३९॥

शिशु शशिधर मौलेः देवदेवस्य दासः ।

स खलु निज महिम्नः भ्रष्ट एव अस्य रोषात्,

स्तवनम् इदम् अकार्षीत् दिव्य-दिव्यं महिम्नः ॥४०॥

सुर-वर-मुनि पूज्यं स्वर्ग-मोक्ष-एक हेतुम्, ॥४१॥

पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिः न अन्य चेताः ।

व्रजति शिव समीपं किन्नरैः स्तूयमानः,

स्तवनम् इदम् अमोघं पुष्पदन्त-प्रणीतम् ॥४२॥

आसमाप्तं इदम् स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्व-भाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवम् ईश्वर वर्णनम् ॥४१॥
इति एषा वाङ्मयी पूजा श्रीमत् शंकरं पादयोः ।
अर्पिता तेन देव-ईशः प्रीयतां मे सदाशिव ॥४२॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर !
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥४३॥
एक कालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेत् नरः ।
सर्व-पाप-विनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४४॥

श्री पुष्पदन्त मुख-पंकज निर्गतेन,
स्तोत्रेण किल्बिष-हरेण हर-प्रियेण ।
कण्ठ स्थितेन पठितेन समाहितेन,
सुप्रीणितो भवति भूतपतिः महेशः ॥४५॥



विष्णु पूजन विधि:

(हर एक पूजा में उपयोगी, धूपदीप)

कटोरी से थाली अथवा किसी पात्र में जल की धारा डालते हुये पढ़ें:-

अस्य श्री आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः॥

पृथिवीमाता को तिलक पुष्प चावल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

प्रीं पृथिव्यै आधार-शक्त्यै समालम्भनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः,

दोनों हाथ जोड़कर पढ़ें - पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वंच धारय मां देवि पवित्रं कुरु-चासनम्॥

दर्भ के दो तिनके दोनों उंगुलियों में रख कर गणेश जी का ध्यान करके नमस्कार करते हुये पढ़ें:-

शुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्व विघ्नोप शान्तये। अभि प्रीतार्थं सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर् अपि सर्व विघ्न छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः॥

गुरुः ब्रह्मा, गुरुः विष्णु, गुरुः साक्षात् महेश्वरः। गुरुर् एवं जगत सर्व तस्मै श्री गुरवे नमः, परम गुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आदि सिद्धिम्यो नमः।

अंगन्यास

गायत्री मन्त्र का न्यास करने के लिये दो दर्भ के तिनके दोनों अनामिका उंगुलियों में पीछ की ओर मुड़ कर रखिये, फिर दोनों हाथों की अंगुलियों से नाभि को स्पर्श करते हुये पढ़ें:-

ॐ “अ” नाभौ, “३” हृदि (हृदय को) “म” शिरसि (सिरको) ॐ भूः” पादयोः (पांवों को) ॐ भुवः” हृदि (हृदय को) ॐ स्वः शिरसि (सिर को) “ॐ भूः” अंगुष्ठाभ्यां नमः (अंगूठों को) “ॐ भुवः” तर्जनीभ्यां नमः

(तर्जनी को) "ॐ स्वः" मध्यमाभ्यां नमः (मध्यमा को) "ॐ महः अनामिकाभ्यां नमः (अनामिका को) "ॐ जनः" कनिष्ठिकाभ्यां नमः (कनिष्ठा को) "ॐ तपः सत्यं" करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हथेलियों को) "ॐ भूः पादयोः" (दोनों पांवों को) "ॐ भुवः जान्वोः" (दोनों गुठनों को) "ॐ स्वः गुह्ये" (गुह्यास्थान को) "ॐ महः नाभौ" (नाभि को) "ॐ जनः हृदि" (हृदय को) "ॐ तपः कण्ठे" (कण्ठ को) "ॐ संत्य शिरसि" (शिर को) "ॐ भूः हृदयाय नमः" (हृदय को) "ॐ भुवः शिरसि स्वहा" (शिर को) "ॐ स्वः शिखायै वषट्" (चोटी का) "ॐ महः कवचाय हुम्" (वस्त्रों को) "ॐ जनः नेत्राभ्यां वौषट्" (नेत्रों को) "ॐ तपः सत्यम् अस्त्राय फट्" (चुटकी मार कर) आगे

भी ऊपर की भांति अंगुष्ठ आदि को स्पर्श करते हुये पढ़े:-

"ॐ तत् सवितुर अंगुष्ठाभ्यां नमः, वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः, भर्गो देवस्य मध्यमाभ्यां नमः धीमहि अनामिकाभ्यां नमः, धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः प्रचोदयात् करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः, ॐ तत् पादयोः सवितुर जान्वोः वरेण्यं कट्याम भर्गो नाभौ देवस्य हृदये धमहि कण्ठे धियो नासिकायां यः चक्षुषोः नः ललाटे प्रचोदयात् शिरसि ॐ तत सवितुर हृदयाय नमः वरेण्यं शिरसे स्वाहा भर्गो देवस्य शिखायै वषट् धीमहि कवचाय हुं, धियो योनः नेत्राभ्यां वौषट् प्रयोदयात् अस्त्राय फट्, ॐ आपः स्तनयो (स्तनो को) ज्योतिः नेत्रयोः रसो मुखे अमृतं ललाटे (माथे को) ब्रह्म भूर् भुवः स्वरोम् (शिरसि)।

अंगन्यास समाप्त

चारों और तिल फेंकते हुये पढ़ें :- अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भुवि-संस्थिताः, ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नशन्तु शिवाज्ञया। प्राणायाम करके हृदय को जलसे छिड़कते हुये पढ़ें :- तीर्थे स्नेयं तीर्थम् एव, समाननां भवति, मानः शंसो अरुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। अनामिका अंगुली में पवित्र धारण करते हुये पढ़ें :- वसोः पवित्रम् असि शतधारं वसूनां पवित्रम् असि, सहस्र धारम्, अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्योषेण बहुला भवन्तीः। यजमान को तिलक लगाते हुये पढ़ें:- मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः, शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु, मित्राणाम् उदयस्तव, आयुर आरोग्यम् ऐश्वर्यम् एतत् त्रितयम् अस्तु ते, जीव त्वं शरदः शतम्। अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें :- परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच भूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्र नाथाय, आत्मने नारायणाय

आधार शक्त्यै, समालम्भनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः। दीप को तिलक पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :- स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत स्तिमि रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः। धूप को तिलक पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :- वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत् तमः आधारः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः। सूर्य भगवान को तिलक पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :- नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः। कटोरी से थाली में जल की धारा डालते हुये पढ़ें :- यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृत् जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म दीपं शरणं प्रपद्ये आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै, दीप द्रूप संकल्पात् सिद्धिर अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। अपसव्येन॥ बायाँ यज्ञोपवीत रख कर कटोरी से थाली में तिल सहित जल की धारा डालते हुये पढ़ें :- नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो, नमो धर्माय विष्णवे।

नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः। मास, पक्ष, तिथि, वार का नाम लेकर तर्पण करें, तर्पण करते समय यदि माता पिता जीवित हूँ तो उनका नाम न लेकर पढ़ें :- पित्रे पितामहाय प्रपितामहाय, मात्रे पितामह्यै प्रपितामह्यै। मातामहाय प्रमातामहाय वृद्ध प्रमाता महाय। मातामह्ये प्रमाता मह्यै वृद्ध प्रमातामह्यै। समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो दीपः स्वधा, धूपः स्वधा।

प्रत्येक पूजा में काम आने वाला
(दीप धूप समाप्त)

यक्षामावसी पूजा

(क्षयचिमावस)

गोलाकार किसी पत्थर (काजवठ) को कुबेर जी के रूप में पूजा के स्थान पर सामने रखकर 1 से 3 पर से दीप धूप पढ़ कर जीवादान के लिये विष्टर अथवा दर्भ सहित कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढ़ें :-

संवः सृजामि हृदयं संपृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टा स्तन्वः सन्तु वः। संसृष्टः प्राणो अस्तु वः। संयावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु सं प्रियः संप्रिया स्तन्वो मम॥ इसी पानी से कुबेर जी की मूर्ति पर जल छिड़कते हुये पढ़ें :- अश्विनोः प्राणस्तौ ते

प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव।। चावल सहित दर्भ के दो कांड हाथ में लेकर तीन बार पढ़ें :- यक्षणीशाय विद्महे गदाहस्ताय धीमहि तन्नो कुवेरः प्रचोदयात्। फिर से पढ़ें ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मास पक्ष तिथि पार का नाम लेकर पढ़ें :- भगवतः कुवैरस्य त्र्यम्बक सरवस्य यक्षेशस्य धनाधिपतस्य अर्चा अहंकरिष्ये ॐ पूजय। चावल कन्धों से फेंक कर दर्भ के दो काण्ड हाथ में ही रख कर पढ़ें :- भगवन्तं कुबेरं त्र्यम्बकसखं यक्षेशस्य धनाधिपम् आवाह यिष्यामि ॐ आवाहय।। चावल कन्धों से फेंक कर दर्भ निर्माल्य में डालें और पढ़ें :- पाद्यार्थम् उदकं नमः। शन्नो देवीर्

अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये, शं योर् अभि सवन्तु नः। इस मन्त्र से खोसू या कटोरी में जल डाल कर उसी पानी से कुबेर जी को छिड़कते हुये पढ़ें :- भगवते कुवेराय त्र्यम्बक सखाय यक्षेश्वराय धनाधिपताय पाद्यं नमः। पाद्य का बचा हुआ जल निर्माल्य में डाल कर फिर से अर्घ्य के लिये इसी कटोरी में शन्नो देवीर् अभीष्टय ... ऊपर लिखे मन्त्र से जल डाल कर कुबेर जी को दर्भ से छिड़कते हुये पढ़ें भगवन् कुवेर त्र्यम्बकसस्य यक्षेश्वर धनाधिप इदं वोऽर्घ्यं नमः। कटोरी में आचमन के लिये फिर से जल डाल कर कुबेर जी को अर्पण करते हुये पढ़ें :- कुवेराय त्र्यम्बकसखाय यक्षेश्वराय धनाधिपाय इदं आचमनीयं नमः, खासू अथवा कटोरी में जल डालते हुये पढ़ें :- अन्नं नमः अन्नं नमः, आज्यं आज्यम् अद्यदिने अद्य यथा

संकल्पातज् सिद्धिर् अस्तु। अंजील धारण करते हुये पढ़ें अन्नहीनं क्रिया हीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं यत् गतं तत् सर्वम् अच्छिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु। एवम् अस्तु। कटोरी में दायें हाथ की अंगुलियाँ से जल डाल कर उसी जल से कुबेर जी को आचमन अर्पण करें यानी थोड़ा सा जल डालें। कटोरी में चावल जल दीक्षिणा डालते हुयें पढ़ें :- एता देवताः सदक्षिणन्नेन प्रयन्तां प्रीताः सन्तु।

अब खिचड़ी का प्रेष्युन वियेश्वर जन्त्री से पढ़कर चुटू आदि रख कर दीपः स्वधा धूपः स्वधा तक पढ़कर दो दर्भकाण्ड हाथ में लेकर कुबेर जी को विसर्जन करते हुये तीन बार पढ़ें यक्षेशाय विद्महे गदाहस्ताय धीमहि तन्न कुबेरः प्रचोदयात्। यह पढ़कर फिर से पढ़ें :- ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य

तावत् तिथौ अद्य मासस्य यक्षेशस्य तिथौ वासरा न्वितायां भगवत कुबेरस्य त्र्यम्बक सरवस्य यक्षेश्वरस्य धनाधिपस्य आत्मनो वांगमनः कायोपार्जित पाप निवार नार्थ कुबेर पूजनम् अच्छिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु। फिर से कुबेर जी को अर्घ्य पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :- आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर। नमस्कार करते हुये पढ़ें :- उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः।

हाथ जोड़ के फिर से प्रार्थना करें :- ॐ धनाध्यक्षाय देवाय नर यानोपवेशिने। नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

शंकुप्रतिष्ठा

(बुनियाद मकान) पूजा
(कन दिनेच पूजा)

पूजा सामग्री सात तीर्थों नदियों तालाब आदि का जल लगभग एक किलू वजन (सात धातु) सोना, चांदी, तांगा, लोहा, पीतल, कांसी, ज़सद आदि (सात अनाज) यानी सतसोस्, गेहूँ, मक्की, जव, माष, मूँग, चना, मटर आदि (सात औषधियाँ) सोंठ, हलदी, बनफशा, गुलाब पत्र, ग्यवथीर, कलव्युठ आदि जो कुछ सुलभ हो वही लायें हमारी लिखी हुई चीजें ही ज़रूरी नहीं, परन्तु संख्या में सात होने आवश्यक है। (पाँच मिटियाँ) काश्मीर में चक्रेश्वर,

क्षीरभवानी काश्मीर से बाहिर होने पर प्रसिद्ध स्थानों हरिद्वार, मथुरा आदि, चुराहे की मिट्टी जहाँ चार रास्ते मिलते हैं, स्यकट्रेट अथवा किसी राजभवन की, गौशाला की, कुलमिलाकर मिट्टी एक पाव तक होनी चाहिये। फूल पाँच प्रकार के होने चाहिये, काला फूल नहीं होना चाहिये, इलाची, दारचीनी, लोंग, काली मिर्च ये सभी वस्तुयें एक एक तोला होनी चाहिये। सुफारी काठ पाँच अदद, सुफारी, चिकनी 5 अदद पाँच पत्थर चोरस (चार कोने वाली) 5 अदद चार प्रतिमायें ताँबि के पत्र पर बनाई हूँ। एक एक ताँबि का पत्र चार चार ऊंगुल चोरस होना चाहिये जिन पर अलग अलग खुदी हुई मूर्तियाँ होनी चाहिये। वह मूर्तियाँ पाँच हैं वृषभ, घोड़ा, हाथी, मनुष्य। इन चार प्रतिमाओं के इलावा चांदी की तार का साँप होना चाहिये जिसका वजन लगभग एक तोला होना

चाहिये। पाँच मिट्टी की वारियाँ। रत्नदीप के लिये पाँच दीपक चोंग धूप, कण्ठगण, तिल, सिन्दूर, नारीवन, लाय, दूध, दही, सर्षप, सर्वौषधि, घी, फूल, चावल, नाबद, किशमिश। रत्नदीप के लिये रूई, माचस। जंग के लिये चावल, नमक, अखरोट, थोड़ा सा चूना। प्रसाद के लिये सत्यदेव रोठ आदि होना चाहिये। तहर आदि भी बनायें। कण्ठगण आदि जलाने के लिये थोड़े से कोयले, बिछाने के लिये आसन आदि।

यदि आप ने नींव मुहूर्त से पहले ही खोदी होगी, तो चार कोनों पर और बीच में खोदी हुई नींव से नीचे गहरे छोटे इतने गढ़े बनायें जिन में आप की लाई हुई वारियाँ समा सकें, यदि नींव खोदा न हो तो चारकोणों पर तथा बीच में इतने गहरे गढ़े बनाये

जहाँ पूजा करते समय पूजा करनेवाला बैठ सके और जहाँ आप वारियाँ दबाकर रखेंगे। वहाँ से नींव खोदते समय वे वारियाँ निकल न जायें (गढ़े सोच समझा कर बनायें) मासान्त, पंचक, भौमवार के दिन नींव न खोदे बाकी विशेष मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है, (परन्तु पंचक कन् पूजा के लिए निषेद नहीं है)।

मुहूर्त के दिन मुहूर्त से कुछ समय पहले सभी परिवार तथा सम्बन्धी प्रतिष्ठा यानी 'कँन्' के स्थान पर पहुँच कर जब तक सारी सामग्री इकट्ठी हो जाये, मुहूर्त के समय तक सभी मिल जुलकर ऊँचे ऊँचे स्वर में उच्चरण करें 'सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते। अथवा ॐ श्रीमत नारायण नारायण ॐ, ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च, नमः

शिवाय च शिवतराय अथवा हरे राम हरे राम राम
राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे
हरे। सभी समग्री जल मिट्टी औषधियाँ आदि बांट
कर वारियों में डाले, सभी वारियों पर सिन्दूर से
लिखें “श्रीः” वारियों को फूल की मालाओं से
सजायें पाँचो पत्थरो पर सिन्दूर से “श्रीः” लिखें।
रत्नदीप धूप जला कर रखें। यह सारा काम समाप्त
करके (उत्तर पूर्व) कोण यानी ईशानी कोण पर
आसन छियें, खूँटियाँ और पत्थर पाँच गढ़ों पर
पहुँचा के रखें, पाँचों वारियाँ जो औषधियों जल से
भरी होगी एक बड़ी थाली या पहरात में रखें उन
वारियों के ऊपर क्रमशः बैल, घोड़ा, मनुष्य हाथी
तथा साँप की मूर्ति रखें और पूजा आरम्भ कीजिये।
पहले दीप धूप पूजा करें दीपो नमः धूपो नमः तक

पढ़कर :- ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य
मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरान्वितायां (मास तिथि वार
का नाम लेकर पढ़ें):- महागणपते, कुमाराय श्रियै
सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे, द्वार देवताभ्यः ब्रह्मणे
वास्तोष्पति देवताभ्यः ध्रुवाय हरये, लक्ष्म्यै कूर्माय,
वृषभाय, अश्वाय, नराय गजाय अनन्ताय शंकु प्रतिष्ठा
निमित्तं दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु दीपो नमः धूपो
नमः। जीवादान के लिये विष्टर अथवा दर्भकांड
सहित कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये
पढ़ें :- संवः सृजामि हृदयं, संसृष्ट मनो अस्तुवः।
संसृष्टा तन्वः सन्तु-वः संसृष्टः प्राणः अस्तु वः। संयावः
प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानिवः। आत्मा वो अस्तु
संप्रियः, संप्रिय स्तन्वो मम॥ यही जल क्रमशः पाँच
वारियों की प्रतिमाओं पर जो क्रमशः रखी हैं वृषभ,

घोड़ा, मनुष्य, हाथी, सांप पर डालते हुये पढ़ें :-
 अश्विनोः, प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तं तेन जीव, मित्रा
 वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः
 प्राणः स ते प्राणं ददातुं तेन जीव। जीवादानं
 परिकल्पयामि नमः। चावल सहित दर्भ के दो
 काण्ड हाथ में लेकर पढ़ें गायत्र्यै नमः, ॐ
 भूभुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि
 धियो यो नः प्रचोदयात्, ॐ तत् सत् ब्रह्म
 अद्यतावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वारा
 न्वितायां ध्रुवस्य हरेः, लक्ष्म्याः कूर्मस्य अश्वस्य
 नरस्य गजस्य अनन्तस्य आत्मनो वांगमनः
 कायोपार्जित पापनिवाराणार्थं शुभ फल प्राप्त्यर्थं
 शंकु प्रतिष्ठा पूजनं शिला प्रतिष्ठा पूजनम् अहं
 करिष्ये ॐ कुरुष्व। चावल को कन्धों से फेंक कर
 दोनों दर्भकांड निर्माल्य में डालकर फिर से दो

दर्भकांड आसन के रूप में डालते हुये पढ़ें :- ध्रुवस्य
 हरेः लक्ष्म्याः कूर्मस्य वृषभस्य अश्वस्य नरस्य गजस्य
 अनन्तस्य आसनम् नमः। चावल और दर्भ के दो कांड
 हाथ में पकड़कर ध्रुवं हरिं लक्ष्मीं कूर्मं वृषभं अश्वं नरं
 गजं अनन्तं आवाहयिष्यामि ॐ आवा-हय। दोनों कन्धों
 से चावल फेंक कर प्राणायाम करके कटोरी में जल
 डालते हुये पढ़ें :- पाद्यार्थम् उदकं नमः शन्नो देवीर्
 अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शयोर अभि सवन्तु नः।
 इसी जल में लाय तिलक सर्वौषधि दर्भ जल डाल
 कर दर्भ से अथवा फूल से पांचों मूर्तियों को छिड़कते
 हुये पढ़ें :- ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै कूर्भाय वृषभाय अश्वास
 नराय गजाय अनन्ताय पाद्यं नमः। पाद्य का बाकी बचा
 हुआ जल निर्माल्य में डालकर फिर से अर्घ्य के लिये

जल डालते हुये पढ़ें :- शन्नो देवी अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर अभि सवन्तु नः। इसी जल में दूध, दर्भ, घी, दही, चावल, जव, सर्षप डालते हुये पढ़ें :- ध्रुव हरे लक्ष्मि कूर्म वृषभ अश्व नर गज अनन्त इदं वोऽर्घ्यं नमः। पाँचो प्रतिमाओं पर फिर से जल डालते हुये पढ़ें :- उदत्यं जात वेदसं देवं वहन्ति केतवः दृश्ये विश्वाय सूर्य स्नानं परिकल्पयामि नमः। यहाँ तक आप पांच प्रतिमाओं की पूजा एक ही स्थान पर इकट्ठे करें यहाँ से अब अपने अपने स्थान गढ़े पर जाकर पूजा करें अब पहले वृषभ की प्रतिमा वाली वारी उठाकर पूर्व ईशान कोण पर गढ़ें में रखी हुई पत्थर के ऊपर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :- आसनाय नमः

पद्मासनाय नमः शतदल पद्मासनाय नमः। गढ़े में पहले से रखी हुई पत्थर पर वारी सहित प्रतिमा रखें और अपने दायें हाथ की तरफ गढ़े में पहले से रखी हुई खूँटी किसी पत्थर से गाढ़ें खूँटी (शंकू) दबाते हुये पढ़ें :- ध्रुवा द्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमा ध्रुवं विश्वं इदं सर्वं ध्रुवो राजा विश्वाम् असि। अब प्रतिमा वारी खूँटी तथा पत्थर पर तिलक अर्घ फूल लगाते हुये पढ़ें :- ध्रुवाय लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा शिलायै समालभनं गन्धो नमः, अर्घोनमः, पुष्पं नमः। वारी प्रतिमा खूँटी की नारीवन बांधते हुये पढ़ें :- ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा शिलायै वासो नमः, नमस्कार करते हुये पढ़ें :- ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा शिलायै नमस्कारं करोमि नमः एतासां देवतानां अर्घ्य दाना धर्चन विधिः सर्वः

परिपूर्णोऽस्तु जल प्रतिमा आदि पर डालते हुये पढ़ें
 अन्नं नमः, अन्नं नमः, आज्यं आज्यं अन्नं अद्यदिने
 अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर अस्तु। अंजलि धारण
 करते हुये पढ़ें :- अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं
 द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं यत् गतं तत् सर्वम् अछिद्रं
 सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु। खोसू में दायें हाथ की
 ऊँगलियों पर से जल डालकर उसी जल से वृषभ
 की मूर्ति पर आचमन के रूप में थोड़ा सा जल
 डालते हुये पढ़ें :- शंनो देवीर् अभीष्टये आपो
 भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तुनः ध्रुवाय हरये
 लक्ष्म्यै वृषभाय शंकु प्रतिष्ठा शिलायै आचमनीयं
 नमः, फिर से खोसू में अर्घ जल दक्षिणा डालते
 हुये पढ़ें :- शंनो देवरी अभीष्टये आपो भवन्तु
 पीतये शंयोर् अभि स्रवन्तुनः ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै

वृषभाय शंकु प्रतिष्ठा शिलायै तिल हिरण्य रजत
 निष्कर्णं ददानि। फिर से कुछ दक्षिणा डालते हुये पढ़ें
 :- एता देवताः सदक्षिणा न्नेन प्रीयन्तां सन्तु। नैवेद्य
 किशमिश नाबद आदि अर्पण करते हुये पढ़ें :- ॐ
 तत् सत् ब्रह्म मासस्य पक्षस्य तिथौ वारन्वितायां ध्रुवाय
 हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा शिलायै ॐ नमो
 नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सर्वमंगल मंगल्ये शिवे
 सर्वार्थसाधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु
 ते। इस मन्त्र का बार-बार उच्चारण करते हुये वारी
 को प्रतिमा सहित उठा कर जो बड़े गढ़ें में छोटा सा
 गढ़ा खोदा है उस में रख कर उस के ऊपर पूजा
 किया हुआ पत्थर रखें प्रणाम करते हुये फूल चढ़ाते
 हुये पढ़ें :- ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति
 सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततं, तत् विप्रासो विपन्यवो

जागृवांसः समिन्धते, विष्णो र्यत्परमं पदम्। सभी खड़े होकर फूल हाथ में लेते हुये पढ़ें :- सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरमयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित् दुःखभाक् भवेत्।

अग्निकोण : पूर्व दक्षिण कोण पर वारी सहित घोड़े की प्रतिमा लायें पूर्वदक्षिणकोण के गढ़े में पत्थर पर फूल बिछा कर ऊपर दर्ज किये हुये ईशान कोण (पूर्व उत्तर) की पूजा की भांति सब पूजा करें केवल वृषभाय के बदले अश्वाय पढ़ें।

नैऋतिकोण : दक्षिण पश्चिम कोण पर मनुष्य वाली वारी रखकर उसकी पूजा ऊपर लिखी पूजा की भांति कीजिये केवल वृषभय के बदले (नराय) पढ़ें।

वायुकोण : पश्चिम उत्तर कोण पर हाथी की मूर्ति वाली वारी रखकर उसकी पूजा ऊपर लिखी पूजा की भांति करें, केवल वृषभाया के बदले गजाय पढ़ें।

बीचवाले गढ़े में : साँपन मूर्ति वाली वारी की पूजा ऊपर लिखि विधि से कीजिये वृषभाय के बदले अनन्ताय पढ़ें। बीच वाले गढ़े की पूजा समाप्त करके सभी परिवार वाले एकत्रित होकर सामूहिक रूप में पढ़ें : ॐ श्रीमत् नारायण नारायण नारायण ॐ। हरे राम हरे राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। अब तहर आदि का प्रेष्युन विजयेश्वर जन्त्री से पढ़ें। अन्त में सामूहिक आरती करें। आरती के पश्चात् प्रसाद बाँटें।

गृह प्रवेश पूजा

नये मकान में दाखिल होना

प्रवेश के लिये सामग्री - गौमाता श्री भगवद्गीता महालक्ष्मी का अथवा इष्टदेवी का फोटु, लाल झाँडियाँ जिस में कील दबाने के लिये छोटी छोटी लकड़ी लगी हो, पानी से भरा हुआ घड़ा, दूध का घड़ा अथवा बालटी, असली घी का डिबा, चावल की बोरी अथवा बड़ी चिलमची चावल से भरी हुई, धान्य की थाली, सतसोस सात अजनास (गेहूँ, मक्की, मूँग, चन्ना, माष, राजमाष, मटर आदि) हर अनाज एक एक पाव इकट्ठे थाली में रखें, भिन्न भिन्न प्रकार के फूलों से भरी टोकरियाँ, आग सहित

अंगीठी जिस में कण्ठगण और तिल पहले से ही जलता हो, रत्नदीप, जलता हुआ धूप, शंख, घर के किसी बुजुर्ग अथवा गुरु का फोटू, ऊखल, शुप, छुरी, झाड़ू आदि यानि घर में काम आने वाली वस्तुयें, पूजा के लिये सिन्दूर, केसर, नारीवन, तिल, लाय, जव, किशमिश, शहद, बरफी, जंग के लिये चावल, नमक अखरोट आदि।

जिस दिन प्रवेश करना हो उस दिन मुहूर्त समय से पहले सारी ऊपर लिखी सामग्री नये मकान के आंगन में चटाई आदि बिछा कर इकट्ठी करें - मकान के चारों ओर विशेषतया जिस दरवाजे से प्रवेश करना हो उस द्वार की दोनों दीवारों पर चूने से क्रूल बनावें, दरवाजे के ऊपर तीन झाँडियाँ लगाये, बाकी तीन तरफ से भी चूने का क्रूल झाँडियाँ कील से दबायें, फूलों नारीवन तथा सिन्दूर

के तिलक से दरवाजे को पहले से ही सजा कर रखें। दरवाजे पर सिन्दूर से लिखें “श्रीः ॐ” यह सब कुछ पूर करके पूजा आरम्भ करें। पूजा से पहले गोमाता को प्रवेश दरवाजे के सामने सहन में बांधकर रखें, खाने के लिए कुछ चारा डालें ताकि वह पूजा के समय शांत रूप से टिकी रहे। गोमाता को तिलक लगा कर फूल की माता अर्पण करके चारों पाँव के नीचे थोड़ा सा तिलक (ऋग्वेदाय, सामवेदाय, अथर्ववेदाय) इन नामों से लगायें। इन्हीं नामों से अर्घ फूल, दक्षिणा तथा नैवेद्य किशमिश डाल कर प्रणाम करें। हाथ जोड़ कर पढ़ें :- “न केवलानां पयसां प्रसूति अवेहि मां कामदुघां प्रसन्ना।” गोमाता को कमरों के अन्दर प्रवेश करवाने की आवश्यकता नहीं ऐसा न हो वह उसके मकान में

प्रवेश करते समय कोई अड़चन पैदा हो - भूसा गुड़ आदि खिला कर प्रवेश के पश्चात् गाय को खुला छोड़कर आदर से बाहर निकाले।

प्रवेश पूजा विधि

जिस दरवाजे सये प्रवेश करना हो उस दरवाजे की ओर मुख करके आसन बिछा कर दीप धूप जला कर पूजा आरम्भ करें - पूजा आरम्भ करने से पहले नया यज्ञोपवीत धारण करें - यज्ञोपवीत धारण के समय लड़की से जंग लानी चाहिये यज्ञोपवीत धारण करते हुये पढ़ें और शंक बजवाये :- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापते र्यत् सहजं पुर स्तात् आयुष्यम् अग्रयं प्रतिमुंच शुभं यज्ञोपवीतं बलम् अस्तु तेजः। ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य (मांस पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पढ़ें :- महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार देवताम्यः धर्माय, अधर्माय, देहिल्यै,

खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः दीपधूप संकल्पात् सिद्धिर अस्तु दीपोनमः धूपोनमः। दूध, घी, शहद, जव, पानी, तिल मिलाकर देवताओं ऋषियों और पितरों का तर्पण दरवाजे के निचले भाग पर करते हुये पढ़ें :- ॐ भूः तृप्यतां, ॐ भुवः तृप्यतां, ॐ स्वः तृप्यताम्, ॐ भू-भुवःस्वः तृप्यताम् ब्रह्मा तृप्यतां रुद्रः तृप्यतां, ईश्वरः तृप्यतां, सदा-शिवः तृप्यतां, पृथिवी तृप्यतां, आपः तृप्यतां, तेजः तृप्यतां, वायुः तृप्यतां आकाशः तृप्यतां, वह्निं तर्पयामि, सूर्यम् तर्पयामि, वरुणं तर्पयामि, वायुं तर्पयामि, यमं तर्पयामि, कुबेरं तर्पयामि, सूर्यादिग्रहान् तर्पयामि, देवर्षीन् तर्पयामि, राजर्षीन् तर्पयामि, पितृर्षिन् तर्पयामि, धर्मं तर्पयामि, अर्थं तर्पयामि, कामं तर्पयामि, मोक्षं तर्पयामि, सर्वदेवताः तर्पयामि। गले में यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें :- कण्ठोपवीत स्वाहा ऋषिभ्यः बायाँ

यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें :- अपसव्येन स्वधापितृभ्यः दायाँ यज्ञोपवीत करके पढ़ें :- सव्येन आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु - एवम अस्तु जीवादान के लिये विष्टिर सहित खोसू अथवा कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढ़ें :- सं वः सृजामि हृदमं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टा स्तन्वः सन्तुवः संसृष्टः प्राणो अस्तुवः। संयावः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियस्तन्वो मम। दरवाजे के चारों ओर दर्भ अथवा विष्टर से - छिड़कते हुये पढ़ें :- अश्विनो, प्रणस्तौ ते प्राणं तेन जीवा। मित्रावरुणायेः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः स-ते प्राणं ददातु तेन जीव। धर्माय, अधर्माय, देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामिनमः। चावल सहित दर्भ के दो कांड हाथ में लेकर तीन बार पढ़ें :- ॐ गं तत् पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती,

प्रचोदयात् - ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वारान्वितायां धर्मस्य अधर्मस्य देहल्याः खिंखिन्याः मेरु प्रकार देवतानां द्वार पूजनं अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व। चावलों को कन्धो से फेंक कर दर्भकाण्ड निर्माल्य में डालकर दो-दो दर्भ काण्ड आसन के रूप में डालते हुये पढ़ें। दरवाजे के दायें ओर धर्मस्य बायें ओर अधर्मस्य नीचे की ओर देहल्याः ऊपर की ओर रिवं खिन्याः मेरुप्रकार देव तानां इदं आसनं नमः, दायें हाथ से दर्भकाण्ड चावल सहित पकड़ते हुये पढ़ें :- धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः युष्मान् पूजयामि ॐ पूजया। चावल फेंक कर केवल दो दर्भ हाथ में रख कर पढ़ें :- धर्म अधर्म देहिलं, खिंखनिं, मेरु-प्रकार देवताः आवाहय-ध्यामि ॐ आवाहय। दरवाजे के ऊपर की ओर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :- आवाहयम्यहं

देवं गणेशं सुर-पूजितं, सदैव विघ्न हर्तारं सर्वकाम फलप्रदम्। दोनों कन्धों से जव चावल फेंक कर प्राणायाम करके कटोरी में जल डालते हुये पढ़ें :- पाद्यार्थम् उदकं नमः, शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि सवन्तु नः, इसी जल में तिलक सर्वौषधि आदि डालकर विष्टर से दरवाजे को छिड़कते हुये पढ़ें :- धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः पाद्यं नमः, पाद्य - के बाकी बचे पानी को निर्माल्य में डालकर अर्घ्य के लिये कटोरी में पानी डालते हुये पढ़ें :- शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि सवन्तु नः, इसी कटोरी के पानी में दूध घी दही डालते हुये विष्टर से दरवाजे को छिड़कते हुये पढ़ें :- धर्म अधर्म देहिलि खिंखिनि, मेरु प्रकार देवता इदं वोऽर्घ्यं नमः, दायें बायें तथा ऊपर क्रमशः तिलक लगाते हुये पढ़ें :- धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिं खिन्यै मेरुप्रकार देवताभ्यः समालभनं

गन्धो नमः, दायें बायें और ऊपर नीचे फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :- धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु-प्रकार देवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः। नमस्कार करते हुये पढ़ें :- एतासां देवतानां अर्घ्य दानाद्यर्चन विधि सर्वः परिपूर्णः अस्तु। चावल की थाली को जल से छिड़कते हुये पढ़ :- अन्नं नमः, अन्नं नमः, आज्यं आज्यं अन्नं अद्य दिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर अस्तु। अंजलि धारण करते हुये पढ़ें :- अन्न हीनं क्रियाहीनं द्रव्य हीनं, मन्त्र हीनं यत् गतं तत् सर्वं अछिन्दं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु। खोसू में दायें हाथ की ऊँगलियों के ऊपर से जल डालकर उसी जल से दरवाजे पर आचमन के रूप में थोड़ा सा जल डालते हुये पढ़ें :- शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः धर्माय अधर्माय देहिल्यै

खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः आचमनीयं नमः। फिर से शन्नो देवीर् अभीष्टये यही मन्त्र पढ़कर कटोरी में नया अर्घ जल तथा दक्षिणा डालते हुये पढ़ें :- धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्णं ददानि। कुछ और दक्षिणा डालते हुये पढ़ें :- एता देवताः सदक्षिणा ब्रूते प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु। नैवेद्य के रूप में किशमिश आदि अर्पण करते हुये पढ़ें :- धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। अच्छिद्र न करें। तर्पण करते हुये तीन बार पढ़ें :- नमो ब्रह्मणे, नमो अस्तु अग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधीभ्यः नमो वाचे, नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि, इति एतासाम् एव देवतानां साष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम् अप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायम् अधीते॥३॥ नमस्कार करते हुये पढ़ें :- मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यत् गतम्। तत्सर्वं क्षभ्यतां

देव कृपया परमेश्वर। यत् अक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं च
यत् गतम्, त्वया तत् क्षसम्यतां देव कृपया पुरुषोत्तम।
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा
च नमस्कारं करोमि नमः।

ऊपर लिखी विधि के अनुसार दरवाजे की पूजा
करके “सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये
त्र्यम्बके गोरि नमोस्तु ते”, इस मन्त्र का उच्चारण
करते हुये पहले से ही नियत किये हुये कमरे में जहां
साफदरी मसनन्द आदि बिछा हुआ हो। घर के सभी
सदस्य भाई बन्धु मित्रादि अपने अपने हाथ में उठाई हुई
सामग्री, भगवत् गीता, पानी का घड़ा, दूध, फल,
चावल आदि विशेषतया इष्ट देवी, गुरु आदि का फोटू
हाथ में लेकर प्रवेश करें। कमरे में किसी उच्च स्थान
अथवा कुर्सी आदि पर सजा के रखें। उस के सामने
सभी सामग्री रत्नदीप आदि तरतीब से रखें। झाड़ू,

चक्की एक ओर कोणे में रखें, घर के सभी सदस्य खड़े रहे
- यजमान को चाहिये महालक्ष्मी देवी अथवा गुरु आदि के
फोटू की तिलक लगा कर फूल की मालायें अर्पण करें -
ॐ जय जगदीश से सामूहिक आरती करें, नाबद किशमिश
- बरफी आदि नैवेद्य के रूप में इष्ट देवी को अर्पण कीजिये
- उसी प्रसाद में से सभी को थोड़ा थोड़ा प्रसाद भांट कर
सभी परिवार के व्यक्तियों को तिलक लगाकर नारीवन
बांधे। यह कार्यक्रम समाप्त करके रसोई में जाकर
अन्नपूर्णाभगवती का ध्यान करके नमस्कार करते हुये पढ़ें :-
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे, ज्ञान वैराग्य सम्पूर्णे
अन्न-पूणे नमोस्तु ते। गैस या चूल्हे के ऊपर के भाग पर
सिन्दूर से “श्रीः” लिखें अर्घ फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :-
अन्नपूर्णाभगवत्यै समालभनं गन्धो अर्घो नमः पुष्पं नमः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

रोठ तहर आदि में असली घी डाला हुआ थालियों में भर कर इष्टदेवी अथवा महालक्ष्मी के सामने लायें और विजयेश्वर जन्त्री से प्रेष्युन पढ़ें :- चुटू मकान के छत पर रखें। प्रसाद सभी में बाँटिये - यजमान तथा यजमान पत्नी को पूजा की समाप्ति तक व्रत रखना चाहिये -

आप इन बातों का व्रत लीजिये - “यज्ञ देवपूजा संगतिकरण दाने षु” - वह इन नियम है,

- (1) देव पूजन घर में नित्य भगवत् नाम की कीर्तन।
- (2) परिवार के सदस्यों में सच्चा संगठन।
- (3) यथाशक्ति दान

जिस घर में इन तीन नियमों का पालन होगा, वहाँ विष्णु भगवान् लक्ष्मी सहित निवास करता है।

०००

दीपमाला पूजा विधि

दीपधूप समाप्त करके विष्टर अथवा दर्भ सहित कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढ़ें :- सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टा स्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः। सं यावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः। आत्मावो अस्तु सं प्रियः सं प्रियास्तन्वो मम। किसी पात्र में रूपये 11 या 21 रख कर उन को कटोरी के जल से छिडकते हुये पढ़ें :- अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव, श्रीमहालक्ष्म्यै - जीवादानं परिकल्पयामिः नमः। चावल सहित दो दर्भ काण्ड हाथ में लेते हुये तीन बार पढ़ें श्रियै, विद्महे,

कमलवासिन्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥३॥
 तत् सत् ब्रह्म आद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य
 तिथौ वारान्वितायां श्री महालक्ष्म्याः अर्चा अहं
 किरिष्ये ॐ कुरुष्व आसन के रूप में दो पुष्प
 अथवा दर्भ डालते हुये पढ़ें :- श्रीमहालक्ष्म्याः
 इदम् आसनं नमः चावल सहित दो दर्भ अथवा
 फूल हाथ में पकड़ते हुये पढ़ें :- श्री महालक्ष्म्यै
 युष्मान् पूजयामि ॐ पूजया चावल कन्धों से फेंक
 कर केवल दर्भ हाथ में रखकर पढ़ें :- ॐ
 सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम्
 सर्वदेवमयीम् ईशां देवीम् आवाहया म्यहम्।
 श्रीमहालक्ष्मीं आवाहयिष्यामि ॐ आवाहया चावल
 कन्धों से फेंक कर दर्भ निर्माल्य में डाल कर पढ़ें
 पाद्यार्थम् उदकं नमः शन्नोदेवीर् अभीष्टये आपो

भवन्तु पीतये शंयोर् अभी स्रवन्तु नः। इसी जल में लाय
 केसर, सर्वौषधि दर्भ डालकर रूपयो पर पानी की
 धारा डालते हुये पढ़ें :- गंगादि तीर्थ सम्भूतं गन्ध
 पुष्पादि सं युतम् पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोस्तुते
 श्रीमहालक्ष्म्यै पाद्यं नमः। पाद्य से बचा हुआ जल
 निर्माल्य में डालकर फिर से अर्घ्य के लिये कटोरी में
 जल डालते हुये पढ़ें :- शन्नो देवीर् अभीष्टये - आपो
 भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः। इसी कटोरी में दूध
 दर्भ घी चावल सर्षप डालकर रूपयों पर जलधारा
 डालते हुये पढ़ें :- अष्ट गन्ध समायुक्तं स्वर्णपात्र
 प्रपूरितम् अर्घ्यं गृहाण मत् दत्तं महालक्ष्म्यै नमोस्तुते
 महालक्ष्म्यै इदं वो अर्घ्यं नमः। शुद्ध जल आचमन के
 रूप में डालते हुये पढ़ें :- श्री महालक्ष्म्यै आचमनीयं

नमः, लाय केसर आदि से मिला हुआ जल महालक्ष्मी पर डालते हुये पढ़ें :- पंचामृत समायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभम् गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भक्तत्सले महालक्ष्म्यै अष्टंग स्नानं परिकल्पयामि नमः, रूपों को साफ करके आसन पर बिठाते हुये पढ़ें :- आसनाय नमः कमलसनाय नमः शतदलवद्मसनाय नमः, सहस्रल पद्मासनाय नमः तिलक लगाते हुये पढ़ें :- कुं कुं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम् अखण्ड काम सौभाग्यं कुंकुमं प्रतिखताम्। गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीं ईवरीं सर्वभूतानां ताम् इहोपह्वये श्रियम् महालक्ष्म्यै समालभनं गन्धो नमः। बही खाता, पेटी, दवात, कलम को भी तिलक लगायें, दरवाजे के ऊपर सिन्दूर से “श्रीः” बही

खाते दवात कलम आदि पर भी फूल अर्घ चढ़ाते हुये पढ़ें :- नमोस्तु ते महामाये श्री पीठ सुर पूजिते शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मि नमोस्तुते श्री महालक्ष्म्यै अर्घो नमः पुष्पं नमः। धूप कर्पूर रत्नदीप घुमाते हुये पढ़ें :- तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य कार्तिक मासस्य कृष्ण पक्षस्य चतुर्दश्यां (अथवा) अमावस्यां वार का नाम लेकर श्री महालक्ष्म्यै धूपं कर्पूर रत्नदीपनं परिकल्पयामि नमः। अब चामर करते हुये ‘लीलारब्ध’ सभी श्लोक तथा ‘ॐ जय जगदीश’ आरती पढ़ें :- श्री महालक्ष्म्यै चामरं परिकल्पयामि नमः तर्पण करते हुये पढ़ें :- एताभ्यः देवताभ्यः दीपधूप संकल्पात् सिद्धिर अस्तु दीपो नमः धूपो नमः वस्त्र चढ़ाते हुये नमस्कार करते हुये पढ़ें :- श्री महालक्ष्म्यै वासनमः एतासां देवतानां अर्घ्यदानाद्यर्चनविधिः सर्वः परिपूर्णः

अस्तु॥ नमस्कार करते हुये पढ़ें :- उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा अष्टांगं नमस्कारं करोमि नमः। तर्पण करके अंजलिधारण करते हुये पढ़ें :- अन्नं अन्नं नमः आज्यं आज्यं अन्नं, अद्यदिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु अन्न हीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं यत गतं तत् सर्वम् अछिद्रम् अस्तु सम्पूर्ण अस्तु। कटोरी में जल डालते हुये पढ़ें शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः रूपयो पर यही जल डालते हुये पढ़ें :- एता देवताः सदक्षिणाग्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु नैवेद्य की पूरिया बर्फी आदि थाली में रख कर विजयेश्वर जन्त्री से सारा प्रेष्युन पढ़ कर फिर से पढ़ें :- तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत तिथौ अद्य कार्तिक मास्य कृष्ण पक्षस्य

अमावस्यां वारान्वितायां श्रीमहालक्ष्म्यै दीपमाला महोत्सवः देवताभ्यः मिष्टान्नं पक्वान्नं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः चुटू आदि को भी तिलक पुष्प आदि डालकर दो दर्भ (फूल) हाथ में लेकर तीन बार पढ़ें :- श्रियै विद्महे कमलवान्वितायां दीपमाला महोत्सव देवतानां श्रीमहालक्ष्म्याः पूजनं अछिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु नमस्कार करते हुये पढ़ें :- आह्वानं नैवजानामि नैवजानामि पूजनं, पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि - उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः तर्पणं करतु हुये पढ़ें :- नमो ब्रह्मणे नमो अस्तु अग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधीभ्यः नमो इति एतासाम् एव देवतानां सार्ष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यं आप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायम् अधीते ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

بھو روپ گرہ

श्रीदेव्युवाच

श्री दियु औवाचे

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु समयोल्लङ्घनेषु च।

महाभयेषु घोरेषु तीव्रोपद्रवभूमिषु॥३॥

(३) प्रालिश, चे ते शु, सरोये शु, सम यो लङ्घने शु, चे
महाभये शु, गहोरये शु, तिहरये, द्रो, भूमि शु

छिद्रस्थानेषु सर्वेषु सदुपायं वद प्रभो।

येनायासेन रहितो निर्दोषश्च भवेन्नरः॥४॥

(४) चहदरस्थाने शु, सरोये शु, सेत औपायिम, द्रो प्रभु
ये ना, यासे ने, रहतो, नरोधु, भुतो, नरो

नमः स्वच्छन्दभैरवाय

ओम नमो, सोचहंद भैरावै

ब्रह्मादिकारणातीत स्वशक्त्यानन्दनिभरम्।

नमामि परमेशानं स्वच्छन्दं वीरनायकम्॥१॥

(१) ब्रह्मा, कारना, ती तम, सोशक्त्या, नन्द, नरो
नमो, प्रमे शानं, सोचहंद, वीर, नालक

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।

पप्रच्छ प्रणता देवी भैरवं विगतामयम्॥

(२) कैलास, शिखरा, सी नम, दी, दम, गलत, कुरوم
प्र प्रच्छ, प्रणता, दी, भैरवं, विगतामय

शतजाप्येन शुद्ध्यन्ति महापातकिनोऽपि ये।

तदर्थं पातकं हन्ति तत्पादेनोपपातकम्॥८॥

(۸) شته جا پے یہ نہ، شودھیہ نئی، مہا پاتہ کہ نو پی یے
تت اردھم، پاتہ کم، ہن تی، تت پادے، نو پے پاتہ کم
کاییکं वाचकं चैव मानसं स्पर्शदोषजम्।

प्रमादादिच्छया बापि सकृज्जाप्येन शुद्ध्यति॥९॥

(۹) کاکیم، واچہ کم، چئو، مانہ سم، سپرش، دو شتم
پرماوات، یکھ یا، واپی، سہ کرت، جاییہ نہ، شو دھیتی
यागारम्भे च यागान्ते पठितव्यं प्रयत्नतः।

नित्ये नैमित्तिके काम्ये परस्याप्यात्मनोऽपि वा॥१०॥

(۱۰) یا گار بھے، چہ، یا گانتے، پٹھ تویم، پرتینہ تاه
ننتے، نیمتکے، کامیے، پرسیا، پیا تمنوی، واہ

निश्छिद्रकरणं प्रोक्तं स्वभावपरिपूरणम्।

द्रव्यहीने मन्त्रहीने यज्ञयोगविवर्जिते॥११॥

श्रीभैरव उवाच

श्री भैरव उवाच

शृणु देवि परं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम्।

सर्वपापप्रशमनं सर्वदुखनिवारणम्॥

(۵) شرنو، دیوی، پر م، گوہیم، رہیم، پر مات بھوتم
سرو، پایہ، پر شتمہ نم، سرو، دوکھ، نورانم

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु तीव्रेष्वपि विमोचनम्।

सर्वछिद्रापहरणं सर्वार्तिविनिवारकम्॥६॥

(۶) پرائشچے تیتے شو، سرویے شو، تہ بریشوپی، وموچتم
سرو، چھدراپہ ہرتم، سروارتی، وئی وارتم

समयोल्लङ्घने घोरे जपादेव विमोचनम्।

भोगमोक्षप्रदं देवि सर्वसिद्धिफलप्रदम्॥७॥

(۷) سم یو لنکنے، گھورے، جیات یے و، وموچہ نم
بھوگ، موکھ پردم، دیے وی، سرو سدھی پھلہ پردم

परमाध्यायनं देवि भैरवस्य प्रकीर्तितम्।

प्रीणनं सर्वदेवानां सर्वसौभाग्यवर्धनम्॥१५॥

(۱۵) پرما، پیایہ نم، دیوی، بھیروسے، پر کر تہ تم

پری نہ نم، سرو، دیوانام، سرو، سوبھاگیہ، وردھنم

स्तवराजमिमं पुण्यं शृण्वष्वाविहिता प्रिये॥१६॥

(۱۶) ستہ وراجیم، یہ مم، پونیم، شرنوشا، وہی تا، پر یے

अस्य श्रीबहुरूप भट्टारकस्तोत्रस्य, वार्म देव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः

श्रीबहुरूपभट्टारको देवता, आत्मनो वाङ्मनः

कायोपार्जितपापनिवारणार्थं चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

اسے شری، بہو، روپہ، بٹارک، ستوترسے، شری وامہ

دیورشی، انوشٹوپ چھندہ، شری بہو روپ، بٹارکو، دیوتا

آتمنو، وانگہ مناہ، کایو پارجتہ، پایہ، نوارنارھنم، پوتر،

ورگہ، سدھرتھے پاٹھے، ونیہ یوگا

अघोरमन्त्रेण न्यासं कृत्वा प्राणायामः।

اکھور منترینہ نیا سم کرتہ دا، پرانا یا مم

(۱۱) لشچھدر، گرنم، پروکتم، سوبھاؤ، پر پورنم

درویہ، ہی نے، منتر، ہی نے، یکیہ یوگ، ورجتے

भक्तिश्रद्धाविरहिते शुद्धिशून्ये विशेषतः।

मनोविक्षेपदोषे च चिलोपे पशुवी-क्षते॥१२॥

(۱۲) بھکتی، شردھا، ورتے، شودھی، شوینی، وشے شہ تاہ

منو دکھیہ پی، دوشیہ چہ، دلوپے، پٹو، دکھیہ تی

विधिहीने प्रमादे च जपव्यं सर्वकर्मसु।

नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरा स्तुतिः॥१३॥

(۱۳) ودھی، ہی نے، پرماوے چہ، جب تہ ویم، سرو، کرمسو

ناتاہ، پرترو، منتر، ناتاہ، پرترا، ستوتی

नातः परतरा काचित्सम्यक्प्रत्यङ्गिरा प्रिये।

इयं समयविद्यानां राजराजेश्वरीश्वरि॥१४॥

(۱۴) ناتاہ، پرترا، کاچت، سمیک، پرتکرا، پر یے

لی یم، سمیہ، ویدیا نام، راجہ، راجیشوری، شوری

अथ ध्यानम् अत्ह दह्यान्म

ओम् अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च

सर्वतः शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः॥१०८॥

”ओम्, अगहोरये भियो, अत्ह, गहोरये भियो, गहोर गहोर तरे भिश्चे

सरोताह, शर्द, सरोये भियो, न्मस ते, रूदुर, रुपी भियाह”

ओं नमः परमाकाशशायिने परमात्मने।

शिवाय परसंशान्तनिरानन्दपदाय ते॥१॥

(१) ओम्, न्माह, परमाकाश, शलिये ने, परमात्मने

शुवाये, परस्म शान्ते, नरानन्द, पदाये, ते

अवाच्यायाप्रमेयाय प्रमात्रे विश्वहेतवे।

महासामान्यरूपाय सत्तामत्रैकरूपिणे॥२॥

(२) ओचाया, परमे याये, परमात्रे, विश्वहेतवे

म्हा, सामान्य, रुपीये, स्ता, मात्रिके, रुपी ने

वामे खेटकपाशशार्ङ्ग विलस हण्डं च वीणाण्टिके।

बिभ्राणं ध्वजमुद्गरौ स्वनिभदे व्यङ्कं कुठारं करे॥१॥

दक्षेस्यङ्कुशकन्दलेषुडमरू न्वज्जत्रिशूलाभयान्।

रुद्रस्थं शरवक्त्रमिन्दुधवलं स्वच्छन्दनाथं स्तुमः॥२॥

वामे, क्खिये म्के, पशे, शारङ्गे, वलस हण्डं, च, वीणाण्टिके

बिभ्रान्म, वज्जे, मुद्गरौ, सुवनिभदे, व्यङ्कं, कुठारं, करे

दक्खिये, सिङ्कुशे, कन्दले, शु, डमरू, वज्ज, त्रिशूला, भयान

रूदुर, स्तुम्, शर, वक्त्रं, म्, इन्दु, धवलं, स्वच्छन्द, नाथं, स्तुमः

ॐ बहुरूपाय विद्महे कोटराक्षाय धीमहि तन्नोऽघोरः प्रचोदयात्॥३॥

तिन् बार पुरहे: ”ओम् भू रुपीये, वमिये, कुठारकियाये, व्ही म्ही,

त्नो, अगहोराह, परचोदियात्”

- (۶) تھرت، پرسر، وکیوبھ، وِسْرشٹا، کھلہ، جن تہ ویے
نمو، مایا، سُوْر وپائے، ستھانہ ویے، پریشٹھنے
غورسंसारसंभोगदायिने स्थितिकारिणे।
कलादिक्षितिपर्यन्तपालिने विभवे नमः॥७॥
- (۷) گھور، سنسار، سمبھوگ دایئے، ستھتہ کار نے
کلا، و، کھیتی، پر نیتہ پالنے، وِ بھ وے، نماہ
रेहणाय महामोहध्वान्तविध्वंसहैतवे।
हृदयाम्भोजसंकोचभेदिने शिवभानवे॥८॥
- (۸) رہہ نائے، مہا موہہ، دھوانتہ، وِ دھونہ، پیے تہ وے
ہر دیا مہوجہ، سنکوچہ، بھیدنی، شو بھانہ وے
भोगमोक्षफलप्राप्तिहेतुयोगविधायिने।
नमः परमनिर्वाणदायिने चन्द्रमौलये॥९॥
- (۹) بھوگ، موکھ، پھلہ، پراپتی، پیے تُو، یوگ، وِ دھالیہ نے
نماہ، پر مہ، زروانہ، دایئے، چندر، مولہ لے

घोषादिदशधाशब्दबीजभूताय शम्भवे।

नमः शान्तोग्रघोरादिमन्त्रसन्दर्भगर्भिणे॥३॥

(۳) گھوشاؤ، دَ شہ دا، شبد، پنج، بھوتاہ، شمبھو وے
نماہ، شانٹوگر، گھوراؤ، منتر، سندربھہ، گر بھینی

रेवतीसङ्गविस्रम्भसमाश्लेषविलासिने।

नमः समरसास्वादपरानन्दोपभोगिने॥४॥

(۴) ریے دتی، سنگہ، وِسْر ممبھ، سماشیلشہ، ولاسی نے
نماہ سمہ، رسا سواد، پرانندوپہ، بھوگہ نے

भौगपाणे नमस्तुभ्यं योगीशैः पूजितात्मने।

द्वयनिर्दलनोद्योगसमुल्लासितमूर्तये॥५॥

(۵) بھوگہ پانے، نمسن تو بھیم، یوگی شیے، پوجتا تمنے
دویہ، زردانو، ویوگ، سمو لا ستہ، مورتہ یئے

थरत्प्रसरविक्षोभविसृष्टाखिलजन्तवे।

नमो मायास्वरूपाय स्थाणवे परमेष्ठिने॥६॥

(۱۳) رمہ نائے، رتی شانگہ، واہنے، چتر، کرمہ نے

نماہ، شیلہ، سوتا، بھر ترے، وشوکر ترے، مہاتمنے

نم: پارپرتیष्ठाय सर्वान्तपदगाय ते।

نم: समस्ततत्ताध्वव्यापिने चित्स्वरूपिणे॥۱۸॥

(۱۴) نماہ، پار، پر تشٹھایہ، سُر وائنتہ، پدگایہ، تے

نماہ، سمتہ، تتوادھو، ویاپنے، چت، سورو، پنے

रेवद्वराय रूद्राय नमस्ते रूपरूपिणे।

परापरपरिस्पन्दमन्दिराय नमो नमः॥१५॥

(۱۵) ریے وت، ورائے، رُدرائے، نمستے، رُوپہ، رُوپنے

پراپر، پرسپند، مندرائے، نمو نماہ

भरिताखिलविश्वाय योगिगम्याय योगिने।

नमः सर्वेश्वरेशाय महाहंसाय शम्भवे॥१६॥

(۱۶) بھرتا، کھلہ، وشوائے، یوگہ، گمیاے، یوگنے

نماہ، سرویشور یے شائے، مہاہنسائے، شیمھوئے

घोषाय सर्वमन्त्राणां सर्ववाङ्मयमूर्तये।

नमः सर्वाय शर्वाय सर्वपाशापहारिणे॥१०॥

(۱۰) گھوشائے، سرومنترانام، سرو، وانگھئیے، مورتیے

نماہ، سروائے، شروائے، سروپاشایہ، ہارنے

खणाय खान्ताय नमस्ते रावराविणे।

नित्याय सुप्रबुद्धाय सर्वान्तरतमाय ते॥११॥

(۱۱) رَوَنائے، رَوانتائے، نمستے، راو، راوِنے

نیتائے، سو پر بُودھائے، سروانتر تمائے، تے

घोषाय परमान्दान्तश्चराय खचराय ते।

नमो वाक्पतये तुभ्यं भवाय भवभेदिने॥१२॥

(۱۲) گھوشائے، پرمانداننتہ، چرائے، کھجرائے، تے

نمو، واک پتے، تُو بھیم، بھووائے، بھو، بھئیے وِنے

रमणाय रतीशाङ्गदाहिने चित्रकर्मणे।

नमः शैलसुताभर्त्रे विश्वकर्त्रे महात्मने॥१३॥

(۲۰) تن، مہیے شائے، تتوارتھ، دیے ونے، بھو، بھید نے
مہا بھیرو، ناتھائے، بھگتی، گمیاے، تے، نماہ

शक्तिगर्भप्रबोधाय शरण्यायाशरीरिणे।

शान्तिपुष्ट्यादिसाध्यार्थसाधकाय नमोऽस्तु ते॥ २१॥

(۲۱) شکھتی، گر بھ، پر بودھائے، شر نیایا، شری رنے
شانتی، پوشٹیاو، سادھیارتھ، سادھکائے، نموستو تے

रवत्कुण्डलिनीगर्भप्रबोधप्राप्तशक्तये।

उत्स्फोटनापटुप्रौढपरमाक्षरमूर्तये॥ २२॥

(۲۲) روت، کنڈل نی، گر بھ، پر بودھ، پراپت، شکھتیئے
اوت، سفوٹنا، پٹو، پروڈھ، پرماکھیر، مورتیئے

समस्तव्यस्तसंग्रस्तरश्मिजालोदरात्मने।

नमस्तुभ्यं महामीनरूपिणे विश्वगर्भिणे॥ २३॥

(۲۳) سمست، ویست، سم گرسٹ، رشی جالو، درا تمنے
نمس، تو بھیم، مہامینے، روپی نے، وشو گر بھنے

चर्च्याय चर्चनीयाय चर्चकाय चरायते।

रवीन्दुसन्धिसंस्थाय महाचक्रेश ते नमः॥ १७॥

(۱۷) چرچائے، چرچہ فی یائے، چرچکائے، چرائے تے

روندو، سندھی، سنستھائے، مہاچکرشیہ، تے، نماہ

सर्वानुस्यूतरूपाय सर्वाच्छादकशक्तये।

सर्वभक्षाय शर्वाय नमस्ते सर्ववेदिने॥ १८॥

(۱۸) سروانو، سیوتہ، روپائے، سرواچھاو کہ، شکھتیئے

سرویکھشایہ، شروائے، نمستے، سروویے ونے

रम्याय बल्लभाकान्तदेहार्थाय वियोगिने।

नमः प्रयन्नदुष्प्रापसौभाग्यफलदायिने॥ १९॥

(۱۹) رمیائے، ولبھا، کرانتہ، دیے ہار، دھائے، ویوگنے

نماہ، پزپنہ، دوشپراپ، سو بھاگیہ، پھلہ داسینے

तन्महेशाय तत्त्वार्थवेदिने भवभेदिने।

महाभैरवनाथाय भक्तिगम्याय ते नमः॥ २०॥

(۲۷) مہا، موہہ، ملا کرانتہ، جیو، ورگاؤ، بودھی نے

مہیئے، شورائے، جگہ تام، نماہ، کارن بندھ دے

ستہنومولننکسکسمرتیہے विश्वमूर्तये।

नमस्तेऽस्तु महादेवनाम्ने परस्वधात्मने॥२८॥

(۲۸) سیئے نون، مولنہ، دکھیئے کہ، سمرتہ ئے، وشومورتیئے

نمستہ ستو، مہادیونا میئے، پر بوداھا تمنے

रुद्राविणे महावीर्यरुसुवंशविनाशिने।

रुद्राय द्राविताशेषबन्धनाय नमोऽस्तुते॥२९॥

(۲۹) روگ، دراوئے، مہادیریہ، روڑو، ولس، وناشہ نے

رودرائے، دراوٹا، شے شہ، بندھنائے، نموستوتے

द्रवत्पररसास्वादचर्वणोद्युक्तशक्तये।

नमस्त्रिदशपूज्याय सर्वकारणहेतवे॥३०॥

(۳۰) دروت، پر، رسا، سواد، چرونو، دیوتہ، شکھتیئے

نمستہ، تر دوش پوجیائے، سردکارن، ہیئے تہ دے

रेवारणिसुमुद्भूतवह्निज्वालावभासिने।

घनीभूतविकल्पात्मविश्वबन्धविलापिने॥२४॥

(۲۴) ریے دا، رنی، سُموت بھوت، وئی، جوالا و بھاسنی

گھنی، بھوت، وکپاتمہ، وشو، بندھ، واپنی

भोगिनीस्यन्दनारूढिप्रौढिमालब्धगर्विणे।

नमस्ते सर्वभक्ष्याय परमामृतलाभिने॥२५॥

(۲۵) بھوگی نی، سیندنا، رُوڈھ، پُرُوڈھ، مالبدھ، گرونے

نمستہ، سرو بکھشیائے، پر مامرتہ، لایھنے

नफकोटिसमावेशभरिता खिलसृष्टये।

नमः शक्तिशरीराय कोटिद्वितयसङ्गिने॥२६॥

(۲۶) نفہ، کوٹی، سماویے شہ، بھرتا کھلہ، سر شٹیئے

نماہ، شکھتی، شری رائے، کوٹی، دوتیئی، سنگھنی

महामोहमलाकान्तजीववर्गावबोधिने।

महेश्वराय जगतां नमः कारणबन्धवे॥२७॥

(۳۳) اٹو نام، مَوکھیتے، گھور، گھور سنسار، دایلی نے

گھور اتی گھور، مَوڈھانام، ترسکر ترے، نمو، نماہ

इत्येवं स्तोत्रराजेशं महाभैरवभाषितम्।

यौगिनीनां परं सारं न दद्याद्यस्य कस्यचित्॥१॥

(۱) یتی دم، ستوتر، راجیے شم، مہا بھیرو، بھاشتم

یوگنی، نام، پرَم، سارم، دویات، یس کسی چت

अदीक्षते शठे कूरे निःसत्ये शुचिवर्जिते।

नास्तिके च खले मूर्खे प्रमत्ते विप्लुतेलसे॥२॥

(۲) ادی کہتے، شٹھے، گُرورے، نہ ستیے، شوپی، ورجتے

ناستکے، چہ، کھلے، مَورکھے، پر مہ تے، وپ لوتے لہ سے

गुरुशास्त्रसदाचारदूषके कलहप्रिये।

निन्दके चुम्बके क्षूदेऽसमयज्ञे च दांभिके॥३॥

(۳) گوروشاستر، سد اچار، دوشہ کے، کلبہ، پریے

نند کے، چمبھو کے، کھیو درے، سمیہ یکیہ، چہ، وانہ کے

रूपातीत नमस्तुभ्यं नमस्ते बहुरूपिणे।

त्र्यम्बकाय त्रिधामान्तश्चारिणे चात्रचक्षुषे॥३१॥

(۳۱) رُوپاتی تہ، نمس تو بھیم، نمستے، بھو رُوپی نے

ترمبھ کائے، تر دھامانتہ، چار نے، چہ تر چکھشو شے

पेशलोपायलभ्याय भक्तिभाजां महात्मनाम्।

दुर्लभाय मलाकान्तचेतसा तु नमो नमः॥३२॥

(۳۲) پیش، لو پایہ، لبھیائے، بھکتی بھاجام، مہاتمنام

دور لبھیائے، ملا کرانتہ، چے تہ سام، تو، نمو نماہ

भवप्रदाय दुष्टानां भवाय भवभेदिने।

भव्यानां तनमयानां तु सर्वदाय नमो नमः॥३३॥

(۳۳) بھو پروائے، دوشٹا نام، بھوائے، بھو بھیے وئے

بھویانام، تن میانام، تو، سرودائے، نمو نماہ

अणूनां मुक्तये घोरघोरसंसारदायिने।

घोरातिघोरमूढानां तिरस्कर्त्रे नमो नमः॥३४॥

(۷) نشن تی، سرویے پھٹس، تو تر ساسہ، پر بھاتا
کھیچری، بوٹو چری، چپو، ڈاکنی، شاکنی، تھتا

ये चान्ये बहुधा भूता दुष्टसत्त्वा भयानका।

व्याधिदौर्भिक्षदौर्भाग्यमारिमोहविषादयः॥८॥

(۸) یے، چانئے، بہوڈھا، بھوتا، دوشٹہ، ستوا، بھیانہ کاہ

ویاڈھی، دور، بکھیہ، دور بھاگیہ، ماری موہہ و شا دیاہ

गजव्याधाश्च ये घोरा पलायन्ते दिशो दश।

सर्वे दुष्टाः प्रणश्यन्ति चेत्याज्ञा पारमेश्वरी॥९॥

(۹) گجہ دیا گراشچہ، یے گھورا، پلاین تے و شو، دشہ

سرویے، دوشٹا، پر نہ، شینتی، چے تیا گیا پر میثوری

इति श्रीललितस्वच्छन्दे

बहुरूपगर्भस्तोत्रराजः संपूर्णः।

یتی، شر لیلہ تہ، سوچندے

پہو روپ، گر بھٹس تو تر، راجا سمپورناہ

दाक्षिण्यरहिते पापे धर्महीने च गर्विते।

भक्तियुक्ते प्रदातव्य न देयं परदीक्षिते॥४॥

(۴) دا کھنیہ، رہیہ تے، پاپے، دھرم نہ، ہی نے، چہ، گرو تے

بھکتی، یو کہ تے، پر داتہ دیم، نہ، دی ایم، پردی کھتے

पशूनां सन्निधौ देवि नोच्चार्य सर्वथा क्वचित्।

अस्य वैस्मृतिमात्रेण विघ्ना नश्यन्त्यनेकशः॥५॥

(۵) پشوناں، سہ دھو، دیوی، لوچچاریم، سروتھا، کوچت

اسی، ویئے، سمرتی، باترینہ، وگھنا، نشن تی، نے کشاہ

गुह्यका यातुधानाश्च वेताला राक्षसादयः।

डाकिन्यश्च पिशाचाश्च कूरसत्त्वाश्च पूतनाः॥६॥

(۶) گوہیکا، یا تو وانا ستچہ، دیے تالا، راکھسا دیاہ

ڈاکہ، نشچہ، پشا پشچہ، گردا، ستوا شچہ، پوتاناہ

नश्यन्ति सर्वे पठितस्तोत्रस्यास्य प्रभावतः।

खेचरी भूचरी चैव डाकिनी शाकिनी तथा॥७॥

دُرگا شَرنا گتہ ستوتی : دُرگا شَرणागति स्तुति:

अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥३॥

اناتھ سے، دی نہ سستی، ترشنا توڑ سے
بھ یار تہ سی، بھی تہ سی، بدھ سی، جن توہ
توم، ایے کا، گتر دیوی، نِستار کرتی
نمستے، جگت تارنی، تراہی، دُور گے

अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥४॥

ارنیے، رنے، دارو نے، شتر و، مدھیے
نہ تے، ساگرے، پرانترے، راجے، گے ہے
توم، ایے کا، گتر، دیوی، نِستار، نوکا
نمستے جگت تارنی، تراہی دُور گے

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्व पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥१॥

نمستے، شرینے، شوے سانو کمپے
نمستے جگت ویاپہ کے، دِشورُو پے
نمستے، جگت دندیہ، پاوارِ وندے
نمستے جگت تارنے، تراہی دُور گے

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥२॥

نمستے جگت چنتیہ مانہ، سو رُو پے
نمستے، مہایوگہ نی، گیانہ رُو پے
نمستے نمستے سدانند رُو پے
نمستے جگت، تارنی، تراہی دُور گے

توم ایے کا، سدا رادھتا، ستیہ وادی
 نیہ نے کا کھ لا، کر ودھنا، کرودھ، نشٹھا
 پڈا، پنکلا، توم، سوشمنا، چہ ناڑی
 نمستے جگت تارنی، تراہی دُور گے

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सदा सर्वसिद्धि प्रदात्रि स्वरूपे।
 विभूतिः सतां कालरात्रिः सती त्वम्, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥१॥

نمودیوی، دُور گے، شوے، بھی مہ نادے
 سدا، سرو، سدھی، پرداتری، سُو روپے
 وبھوتی، سہ تام، کالہ راتری، ستی، توم
 نمستے جگت تارنی، تراہی دُور گے

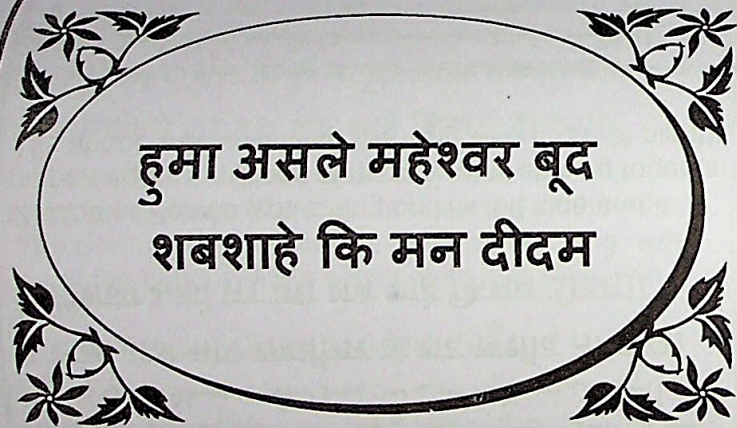


अपारे महा दुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
 त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥५॥
 آپارے، مہا، دُوسترے، تینتہ، گھورے
 دپت، ساگرے، مہ جہ تام ویے ہہ بھاجام
 توم ایک، گتر دیوی، نِستار، ہیے تُو
 نمستے جگت تارنی، تراہی دُور گے

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला समुत्खण्डिताखण्डलाशेषशत्रोः।
 त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजम् नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥६॥

مس، چنڈ کے، چنڈ، دُور ونڈ لی لا
 مُموت، کھنڈتا، کھنڈ لا، شے شہ، شترو
 توم، ایک، گتر دیوی، نِستار، بی جم
 نمستے جگت تارنی، تراہی دُور گے

त्वमका सदाराधिता सत्यवादिन्यनेकाखिला क्रोधना क्रोधनिष्ठा।
 इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥७॥



हुमा असले महेश्वर बूद शबशाहे कि मन दीदम

Following is the glorification of Lord Shiva written by Ali Mardan Khan who was a Kurdish and served as Governor of Kashmir twice during Mughal Rule. Owing to his experiences during his 1st term in Kashmir, he became a transformed person. It is said during his 2nd term he had become very spiritual and Lord Shiva gave him Darshan. And this glorification in Persian is a description of that Divine Vision.

English & Hindi Translation: Pt. Rajinder Nath Bhat

हुमा असले महेश्वर बूद शबशाहे कि मन दीदम
गज़नफर चर्म दर बरबूद शबशाहे कि मन दीदम
ज़ि भसमश जाम-ए-बर तन जुनारश मार बर गर्दन
रवानश गंग बर सर बूद शबशाहे कि मन दीदम
सेह चशमश बर जबीन दारद ज़ि मेहरो माह रोशन तर
सेह कारण दस्त बस्तह बूद शबशाहे कि मन दीदम
ब दशतश आब-ए-कोसर व बेख नाकूसि नीलोफर
हिलालश ताज बरसर बूद शबशाहे कि मन दीदम
उमा अज़ सोइ-तप-बिन्गर ज़ि सद खुर्शीद ताबान तर
सवारश कुलबे-ए-नर बूद शबशाहे कि मन दीदम
अजब सन्यास-ए-दीदम नमो नारायणा गुफतम
ब खाके पाय बोसीदम शबशाहे कि मन दीदम
निगाहे बर मने मिस्कीन नमूद अज़ चशिम ताबान तर
मकानश लामकान तर बूद शबशाहे कि मन दीदम
मनम मर्दान अली खानम गुलामे शाहि शाहानम
अजब इसरार मे बीनम शबशाहे कि मन दीदम

۱. ہما اسلے مہیشور بہود شب شاہ کمن دیدم
!! غضن فر چرم در بر بہود شب شاہ کمن دیدم

۱. ہما असले महेश्वर बूध शब शाहे किमन दीदम!

गज़न्फर चर्म दर भर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

1. The King who I saw at night was actually Lord Maheshwara! The lower part of His body was covered with a tiger skin, the King who I saw at night!!

۲. اما از سوه چپ بنگر زے سد خورشید تابان تر
!! مکان اسلا مکان تر بہود شب شاہ کمن دیدم

۲. उमा अज सोए चपबींगर जे सद खुर्शीद ताबांतर!

मकांशला मकां तर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

2. Mother Parvati was sitting on His left side and it appeared as if millions of moons were shining together! His abode was unlimited, the King who I saw at night!!

۳. سم چشمس بر جبین خستر زے مہرو ماہ روشن تر
!! بلالش تاج بر سر بہود شب شاہ کمن دیدم

۳. से चशमश भर जबीं खुस्तर जे मेहरो माह रोशन तर!

हिलालश तज भर सर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

3. He was looking very handsome with three eyes as if many Suns and Moons were shining! He was wearing a Crescent instead of a Crown, the King who I saw at night!

۴. اکسو نیلوفر بہ دستش ابے کونسر نیزون
!! سواری کل بہے نربر سر بہود شب شاہ کمن دیدم

۴. ब दस्तश आबे कौंसर नेजो नाकौसो नीलोफर!

सवारे कल्बेइनर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

4. He held in His hands a Trident, a Conch-shell & a Lotus flower! He was riding a Bull, the King who I saw at night!

۵. زے بسمش جامے بر تن جنارش مار در گردن
!! اروانش گنگ بر سر سر بہود شب شاہ کمن دیدم

۵. जे बस्मश जामये बरतन जुनारश मार दर गर्दन!

रवानश गंग भर सर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

5. His body was smeared with ash and was wearing a Snake on His neck instead of a Sacred Thread! Ganga was flowing from His hair-locks, the King who I saw at night!!

۶ چرس گنجا و بنگ بریا دتورا اخ در امبا
!!چلم با سافے تر سر بہود شب شاہ کمن دیدم

۶. चरस, गांजा व भंग बिर्या धतूरा आख दर अम्बा!

चिलम बासाफिये तर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

6. Cannabis (Charas, Ganja & Bhang) was kept in powdered form; Hemp (Datura) was heaped on the other side! The Earthen Pipe, which He used for smoking, was covered at the bottom with a velvet cloth, the King who I saw at night!!

۷ کدرو خداوندی حیاتو موت تقدیرو کذا
!!بہ فرمایش مسخر سر بہود شب شاہ کمن دیدم

۷. हयातो मौत तकदीरो कज़ा कद्रों खुदावंदी!

ब फ़रमाइश मस्सखर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

7. Life, Death, Fate, whole Manifestation was under His control and He is the Supreme, the King who I saw at night!!

۸ ابا پرسیدم خدا بستی کنا بستی چرا مستی
!!سروشتم گیت شنکر سر بہود شب شاہ کمن دیدم

۸. ब पुर्सीदम खुदा हस्ती किना हस्ती चिरा मस्ती!

सरोषम गुप्त शंकर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

8. I asked Him if He was any energy of God, if not then what was this ecstatic personality all about!
A voice, which came from the sky, identified Him as Lord Shankar, the King who I saw at night!!

۹ اجب سنیا سے دیدم نمو ناراینم گپتم
!!با خاکے پیے پیے بوسیدم سر بہود شب شاہ کمن دیدم

۹. अजब संयासये दीदम नमो नारायणा गुप्तम!

ब खाके पाए बोसीदम शब शाहे किमन दीदम!!

9. I had the Divine Vision of a strange renounced Person who I offered my prostrated obeisances!

I applied the dust of the place, where He had placed His feet, on my forehead, the King who I saw at night!!

۱۰ ای خاتم حمید بنم مردم مسلمانم ال
!!خدایا بنده پرور سر بہود شب شاہ کمن دیدم

۱۰. मनम मर्दे मुसल्मानम अली खानम हमीदानम!

खुदाए बंदा परवर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

10. I told Him that I was a Muslim person known by the name Ali Khan!

He was Himself the Lord Who takes care of all the living entities, the King who I saw at night!!
All Glories to Lord Shiva!

राशि व नक्षत्र पर आधारित नाम अक्षर

मेष | एरीज़ अ, ल, इ

नक्षत्र पर आधारित चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ

वृषभ | टौरस ब, व, उ

नक्षत्र पर आधारित ई, उ, ऐ, ओ, वा, वी, वू, वे, वो

मिथुन | जेमिनाइ क, छ, घ

नक्षत्र पर आधारित कि, की, कू, ध, ड, छ, के, को, हा

कर्क | कैंसर ड, ह

नक्षत्र पर आधारित ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

सिंह | लियो म, ट

नक्षत्र पर आधारित मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

कन्या | वर्गो प, ठ, ण

नक्षत्र पर आधारित टो, पा, पी, पू, श, ण, ठ, पे, पो

तुला | लिब्रा र, त

नक्षत्र पर आधारित रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

वृश्चिक | स्कॉर्पिओ न, य

नक्षत्र पर आधारित तो, ना, नी, नू, ने, नो, य, यु, यी

धनु | सैजिटेरीयस भ, ध, फ, ढ

नक्षत्र पर आधारितये, यो, भा, भी, भू, ध, फा, ढा, भे

मकर | कैप्रीकॉर्न ख, ज

नक्षत्र पर आधारित भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

कुम्भ | एक्वेरियस ग, श, ष

नक्षत्र पर आधारित गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

मीन | पाइसीज़ द, च, झ, थ

नक्षत्र पर आधारित दी, दू, जा, झा, था, दे, दो, चा, ची

Female Child Names with Meaning (अर्थ)

Aahaana (आहना)	'rise' or 'dawn' or 'sunrise'
Aaloka (आलोका)	'lustrous'
Aamani (आमनि)	'spring'
Aanchal (आंचल)	To give 'shelter'
Aaravi (आरवि)	'peace', 'serenity'
Aashi (आशी)	'blessing', 'laughter' and 'happiness'
Aayushi (अयुशि)	'long life' or 'blessing'
Adriti (आद्रिति)	This is a name for Goddess Durga.
Advika (आद्विका)	The meaning is 'one of a kind', 'unique'.
Aisha (आयशा)	'love', 'life', 'prosperity'
Asin (आसिन)	Someone with beauty or grace
Aysha (आयशा)	'prosperous', living well, 'love'
Bani (बानी)	Name for Goddess Saraswati, 'maiden', 'Earth'
Bhakti (भक्ति)	'prayer' or 'devotion'

Bhaumi (बाहुमी)	Another name for Goddess Sita, made from earth.
Chaitali (चैताली)	Blessed with a good memory
Chanakshi (चानाक्षी)	Clever
Charul (चारुल)	This is another name for 'beautiful', 'stunning', 'gorgeous'.
Cherika (चेरिका)	'The Moon'
Chetal (चेतल)	one who is full of life and abundance, with vitality
Daivi (दैवी)	someone who is 'pious', 'devout'
Darshini (दर्शिनि)	'beautiful', 'blessed' or another name for goddess Durga
Dhara (धारा)	rain, 'one who sustains', Mother Earth, Gold
Dhruvi (ड्रुवि)	'Firm' or 'Assertive' or 'Strict'
Dhwani (द्वनि)	'voice'
Dijul (दीजुल)	'Innocent'
Edha (ईढा)	'wealth', 'prosperity', 'strength'
Ekta (एकता)	to agree or 'unity'

Elika (एलीका)	Cardamom	Harshini (हर्शिनि)	'happy', 'cheerful'
Enakshi (एनाक्षी)	Dear eyed, Doe-eyed	Hashree (हश्री)	'Joyful'
Eniya (ईनीया)	'principled', 'honest'	Hemali (हेमाली)	'Ice', 'Golden Skin'
Esha (ईशा)	desirable, attractive, pretty	Henna (हिना)	fragrant' or 'mehendi'
Eswaria (इसवरीया)	The name is dedicated to Goddess Parvati or wife of Lord Shiva.	Hir (हीर)	'Powerful'
Falguni (फाल्गुनी)	One born in the months of February-March	Hruti (रुति)	'love'
Freya (फ्रेया)	'goddess of love', noble woman, deeply loved	Idaya (ईदया)	an alternative name for Goddess Parvati, 'heart'
Gamini (गामिनी)	someone who is 'quiet' or 'silent'	Idika (ईदिका)	Goddess Parvati, 'perception'
Gargi (गार्गी)	'scholarly' or a 'thinker'	Ihita (ईहिता)	Alternative name for Goddess Durga, 'fighter'
Garima (गरिमा)	someone who radiates 'warmth'	Ira (ईरा)	'being present' or 'still'
Geshna (गेष्ना)	'Singer'	Iyla (इयल)	'moonlight', 'rays of the moon'
Gitali (गिताली)	appreciates 'music' or someone who loves songs	Janki (जानकी)	The daughter of King Janaka or Goddess Sita
Griva (ग्रीवा)	Girl who have beautiful singing neck	Jasoda (जसोदा)	mother of Lord Krishna
Harshika (हर्षिका)	'joyful', 'laughter' or 'fun-loving'	Jemisha (जैमिषा)	'Queen of Night'
		Jhanvi (झानवी)	The river Ganga in Hinduism

Juhi (जूही)	'A Flower'
Jyestha (ज्येष्ठा)	'Eldest Daughter'
Kajal (काजल)	'kohl' or 'eyeliner'
Kalini (कालीनी)	'flower', 'flourishing' or the river Yamuna
Karishma (करिश्मा)	'phenomenon'
Kashika (काशिका)	'the one who shines'
Kavya (काव्या)	'Poetry', poetry in motion, 'learning', 'foresight', 'sentiment'
Kshama (क्षमा)	'to forgive'
Laranya (लारण्य)	'with grace'
Lata (लता)	'creeper'
Latika (लतिका)	'small vine' or 'vermillion dot'
Leena (लीना)	someone with magnificence or Goddess Laksmi
Mahi (माही)	'creation'
Mahika (महीका)	'dew drops'
Mayra (मायरा)	'deeply admired'

Mayukhi (मयूखी)	'peahen'
Menaha (मीनहा)	'cosmic beauty'
Mira (मीरा)	'delightful'
Mishka (मिशका)	'gift of adoration'
Navya (नव्य)	'youthful'
Nimisha (निमिषा)	'minute', 'twinkling of an eye'
Nisha (निशा)	'night'
Nitya (नित्या)	'for eternity'
Niva (निवा)	One of the 1000 names of river Narmada, 'The Sun'
Oja (ओजा)	'vitality' or full of life
Ojasvi (ओजस्वी)	'heroic', 'valour'
Omaja (ओमजा)	A result of 'Spiritual Unity'
Omkareshwari (ओमकारेश्वरी)	'Goddess Parvati'
Omysha (ओमीशा)	'Smile', 'Goddess of birth & death'
Paakhi (पाखी)	'bird'

Pari (परी)	'angel', 'otherworldly'	Tiya (तीया)	'bird'
Pavati (पावती)	'clear water'	Trayi (त्रयी)	'intelligent', 'smart'
Priya (प्रिया)	'adored' or 'cherished'	Trisha (ट्रिशा)	'honourable', 'valorous'
Ranhita (रंहिता)	'fast' or 'swift'	Tuhi (तूही)	'sweet song of a bird'
Ria (रिया)	'jewel' or Goddess Lakshmi	Udaya (उदया)	'dawn' or 'rise' or 'sunrise'
Rishima (रिशिमा)	'rays of the moon'	Udisha (उदिशा)	'ray of early morning'
Roop (रूप)	'attractive'	Uditi (उदीती)	'growth', 'ascension'
Ryka (रयका)	'born from a wish'	Umangi (उमंगी)	'happiness', 'bliss'
Saanvi (सान्वी)	Another name for Goddess Lakshmi	Uma (उमा)	'Uma' name of Devi
Saanya (सान्या)	'unparalleled'	Unnathi (उन्नति)	'progress', 'growth' or 'wealth' or 'epitome'
Sadhika (साधिका)	'go-getter', Goddess Durga	Vaani (वाणी)	This is a great option for your little one as it means 'speech'
Taani (तानी)	'Encouragement'	Vaishvi (वैष्णवी)	Alternative to Goddess Parvati
Tanuja (तनुजा)	'A Daughter'	Vakula (वाकुला)	flower, cleverness, patience, attentive
Tashu (ताशु)	'Horse'	Wamika (वामीका)	An alternative to Goddess Durga
Tejal (तेज़ल)	'Lustrous', 'Energetic'	Yamini (यामिनी)	'night time'
Tejasvi (तेजस्वी)	'Lustrous'		

Male Child**Names with Meaning (अर्थ)**

Aadarsh (आदर्श)	'principle', 'belief', 'excellence'
Aadavan (आधावन)	The sun
Aadhish (आधीश)	'wise', someone with wisdom, 'intelligence',
Aadi (आदि)	'adores', 'perfect', 'beginning', no one will be equal to him
Aarav (आरव)	'soulful music', 'peaceful'
Advik (एडविक)	'inimitable', 'unparalleled'
Ahaan (अहान)	'early morning', 'dawn'
Akarsh (आकर्ष)	'striking'
Arnav (अर्नव)	'Oceanic'
Ayush (आयुष)	'life', 'life personified'
Bahul (बहुल)	'star', 'bright'
Baladhi (बालधि)	Someone with deep insight
Balan (बालन)	'young', 'youthful'
Banshi (बंशी)	'flute'

Bhavan (भवन)	'brilliant' 'creator', an alternate name for Krishna
Bhavik (भाविक)	'worthy', 'happy'
Bhavin (भाविन)	winner, someone who is 'alive', life
Bhavish (भवीश)	Future
Chahan (चाहन)	Meaning of this is 'super'
Chaital (चैताल)	Meaning of this name is 'consciousness'
Chaitan (चैतान)	'consciousness', 'perception', 'life', 'vitality'
Chakor (चकोर)	A bird enamored of the Moon
Chakshu (चक्षु)	'eye'
Chandan (चंदन)	'Moon'
Charit (चरित)	'story', 'verse', 'history'
Chinmay (चिन्मय)	Full of knowledge, wisdom, intelligence, supreme consciousness
Chirag (चिराग)	'light', 'lamp', 'brilliance'
Daanish (दानीश)	Clever, wise, full of intelligence
Dabeet (दबीत)	Warrior

Dahak (दहक)	'powerful', 'fierce'	Eshan (ईशान)	Another name for God Shiva
Daivat (दैवत)	Someone who is 'lucky', 'divine'	Faiyaz (फैयाज)	'leader', 'judge', 'artistic'
Daksh (दक्ष)	'Capable', 'Son of Brahma'	Falgun (फाल्गुन)	'Arjun'
Danavarsh (दानवर्ष)	Generous, giving, 'rain of wealth'	Fanish (फाणिश)	Another name for Lord Shiva
Darahaas (धराहास)	Someone with a great smile	Fravash (फ्रावश)	'protector'
Deepak (दीपक)	'bright', 'radiance', 'brilliance', 'lamp'	Hansh (हंश)	'omnipotent' like god
Dev (देव)	'king', 'god', 'light'	Hari (हरी)	'Joy', 'Excitement'
Dhairya (धैर्य)	'Patience'	Harikiran (हरीकिरण)	'light of God'
Dhruv (ध्रुव)	'faithful', 'star' 'firm'	Hemang (हेमांग)	One with shining body
Divit (दिवित)	'immortal'	Hemanshu (हेमांशु)	'The Moon'
Divyansh (दिव्यांश)	Someone who is divine, full of light	Herish (हेरिश)	Lord Shiva, Lord Krishna, The person who feels that what he is doing is God's wish
Ekadanta (एकदंत)	Another name for Lord Ganesha	Hetav (हेतव)	Gives Love
Ekaksh (एकाक्ष)	This one means 'one-eyed' or Lord Shiva	Himesh (हिमेश)	King of 'Snow'
Ekalavya (एकलव्य)	This name means 'a devout student', 'keen observer'	Himmat (हिम्मत)	'might', 'strength'
Ekant (एकांत)	'Solitary'	Hrithik (ह्रतिक)	From the heart

Indrajit (इंद्रजीत)	Someone who has conquered Lord Indra
Jagesh (जागेश)	Someone who has conquered the world
Jai (जय)	'triumphant' or 'winning'
Jayesh (जयेश)	Someone who is a victor, winner
Kalash (कलश)	'blessed pot'
Kalhan (कलहन)	name of first Historian of World
Kalpit (कल्पित)	'creative', 'artistic', 'with imagination'
Kiaan (कीआन)	'big-hearted', 'generous'
Lakshay (लक्ष्य)	Someone with focus, direction, sharpness
Lakshit (लक्षित)	'nonviolent'
Lehan (लेहन)	One who refuses
Likhit (लिखित)	'Written'
Lohith (लोहित)	'Red', 'Made of Copper', 'Mars'
Lokesh (लोकेश)	'King of World'
Maahir (माहिर)	Someone who is skilled

Maanav (मानव)	'to be human', 'compassionate'
Mitul (मितुल)	'moderate', 'well balanced'
Mohit (मोहित)	Ensnarled by beauty, 'Attracted'
Neerav (नीरव)	'discreet', 'soft'
Nishith (निशीथ)	'sharp', 'witty', 'well prepared', 'midnight'
Ohas (ओहस)	someone who is 'appreciated'
Ojas (ओजस)	someone with a lot of energy
Omarjeet (ओमरजीत)	Lord of Om
Onish (ओनीश)	Lord of mind
Paarth (पार्थ)	Prince or Son of Arjuna
Palash (पलाश)	'A Flowery Tree'
Palvit (पल्वित)	'Lord Vishnu'
Panav (पनव)	'Prince'
Panshul (पांशुल)	'fragrant', 'sweet smelling'
Paras (पारस)	The mystical stone that is believed to convert base metals to gold

Parav (पर्व)	An alternate name for a 'sage' or 'ancient one'	Taha (ताहा)	'pure' or 'skilful'
Piyush (पीयूष)	'Milk'	Tanay (तनय)	'dear', 'beloved'
Pranay (प्रणय)	'amorousness' or 'love'	Tushar (तुषार)	'mist', water droplets or snow
Priyansh (प्रियांश)	'love', 'affection'	Uchit (उचित)	It is a masculine name also known as 'proper' or 'appropriate'
Rachit (रचित)	'discoverer', 'invention'	Udarsh (ऊर्दश)	'overflowing'
Reyansh (रेयंश)	Ray of light, or Vishnu or brightness	Uday (उदय)	A warrior who rises first, rising, sunrise, appearance
Rohak (रोधक)	'Rising'	Uthkarsh (उत्कर्ष)	'excellence' or 'perfection'
Rohan (रोहन)	'rising'	Vaasu (वासु)	It is 'wealth' in Hinduism
Rohit (रोहित)	'Red', 'The Sun'	Vaayu (वायु)	Breeze, wind or heavenly
Rudra (रुद्रा)	'Fearsome', 'Name of Lord Shiva'	Vachan (वचन)	This name is interpreted as declaration, promise, speech
Saaket (साकेत)	Someone with the same intent, another name for Lord Krishna	Vagesh (वागीश)	Someone who is the god of speech
Sahil (साहिल)	'guide', 'seashore', 'bank'	Vaibhav (वैभव)	'majestic', 'ethical' or on the right path
Shlok (श्लोक)	'verse', 'hymn', 'chant'	Vihaan (विहान)	An alternative for 'morning' in Hindi
Shray (श्रय)	'Credit'	Vivaan (विवान)	Another name for the god Krishna
Taarush (तारुष)	conqueror or someone who is victorious		

धर्म शास्त्र के विषय में आवश्यक जानकारी

१. पंचक - धनिष्ट नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त तक के पांच नक्षत्रों (धनिष्ट, शतभिषक, पूभाद्रपद, उभाद्रपद, रेवती) वाली तिथियाँ पंचक कहलाता है। पंचक में दाहसंस्कार, छलुन, दक्षिण दिशा की ओर यात्रा पर जाना, मिट्टी, तेल, मिट्टी के बरतन, लकड़ी काटनी अथवा घर लानी, मसमुचरून इत्यादि निषेध हैं। शेष सभी कामों के लिये पंचक शुभ माना जाता है। विवाह, यज्ञोपवीत जैसे शुभ कार्य पंचक में किये जा सकते हैं, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है।

२. करपंचक - हस्त, चित्र, स्वात, विशाख, अनुराधा यह पांच नक्षत्र वाली तिथियाँ करपंचक कहलाते हैं। यह पांच नक्षत्र प्रायः हर काम के लिए उत्तम माने जाते हैं।

३. त्र्यहः - जब किसी तिथि का क्षय (रावन) होता है तो उसको त्र्यहः कहते हैं। त्र्यहः अर्थात् तिथि के दिन यदि आपका या घर के किसी सदस्य का जन्म दिन हो तो जन्मदिन पहली तिथि को ही मनाए, मान लो सप्तमी तिथि का क्षय होता है और आपका जन्मदिन सप्तमी को आता है तो इस स्थिति में आपको जन्म दिन षष्ठी को मानाना चाहिए (अर्थात् एक दिन पूर्व)। व्रत तथा श्राद्ध आदि भी पहली तिथि पर करने चाहिये।

४. त्रिस्पृक - जिस दिन अधिक तिथि हो अर्थात् एक ही तिथि दो दिन तक हो तो त्रिस्पृक या अधिक दिन

कहलाता है। अगर इस दिन आपके घर के किसी सदस्य का जन्मदिन हो तो वह दूसरी तिथि को मनाए किन्तु श्राद्ध अथवा पितृकार्य पहली तिथि को सम्पन्न करना चाहिए।

५. अशौच - अशौच दो प्रकार का होता है- सूतक तथा मृतक। जन्म का अशौच सूतक कहलाता है, अपने परिवार में नव शिशु के जन्म होने पर प्रायः तीन दिन का अशौच रहता है। तथा सगोत्र में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर दस रात्रि का अशौच माना गया है। यदि किसी अविवाहित कन्या की मृत्यु हो तो अशौच तीन दिन का होता है तथा विवाहित लडकी को माता-पिता के मृत्यु का संदेश मिलने के दिन से ही तीन दिन का अशौच होता है।

दो अशौच एक साथ होने का निर्णय - अशौच (मृतक) के दिनों में ही यदि दूसरा मरने का अशौच पड़े अथवा जन्म के अशौच में ही दूसरे के जन्म का अशौच पड़े तो पहले अशौच के समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है। ऐसे ही यदि मरने के अशौच पर जन्म का अशौच पड़े तो ऐसी स्थिति में मरने का अशौच समाप्त होने पर दोनों अशौचों की शुद्धि होती है। यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पड़े, ऐसी स्थिति में मरने का अशौच समाप्त होने पर जन्म का अशौच भी समाप्त हो जाता है। यदि दसवें दिन पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो ऐसी स्थिति में पहला अशौच समाप्त होने के पश्चात भी दो दिन के लिये दूसरा अशौच रहता है। यदि ग्यारवें दिन को सूर्योदय से पहले मरने का अशौच फिर से पड़े तो दूसरा अशौच तीन दिन के लिये रहता है। माता यदि पहले अन्तर्ध्यान हुई हो तथा उन्ही अशौच के दिनों में पिता की मृत्यु हो जाये तो पिता के अशौच

की समाप्ति पर ही दोनों अशौचों की शुद्धि होती है। इसी प्रकार यदि पिता की मृत्यु पहले हो जाए और उसके अशौच में ही माता की मृत्यु हो जाये तो ऐसी स्थिति में पिता का अशौच समाप्त होने पर भी माता का अशौच दो दिन अधिक रहता है।

जननाशौच - मरणाशौच

अपने परिवार में नव शिशु के जन्म होने पर प्रायः तीन दिन तथा सहगोत्र में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर दस रात्रि का अशौच माना गया है। अशौचावस्था में देवकार्य पितृकार्य, वदोध्ययन (वेदों का अध्ययन) गुरुजनों का अभिवादन आदि करना निषेध माना गया है। यहां तक कि देव मन्दिर में प्रवेश तथा पूजन आदि करना भी वर्जित है। स्त्रियों के लिये प्रायः मास में एकबार विशेष अवस्था आती है जिसमें वह रजस्वला हो जाती है। इसमें तीन रात्रि तक उनकी आशौचावस्था रहती है।

६. अस्थि संचय - दसवें दिन तक अस्थि संचय आवश्यक करना चाहिए इसके लिये, पंचक, त्र्यहः, त्रिस्पृक, मंगल, गुरु, शनि तथा रविवार निषेध है।

७. अस्थि विसर्जन - मृत्यु के पश्चात दस दिन के अनन्तर ही गंगा में अस्थियां प्रवाहित करें यदि ऐसा सम्भव न हो तो एक वर्ष तक किसी भी शुभ दिन पर प्रवाहित करें। दान्त निकलने से पहले जिस बच्चे की मृत्यु हो उसको पृथ्वी पर गड्ढा खोद कर पृथ्वी में अर्पण करें। यदि किसी बच्चे का दान्त निकलने के बाद देहान्त हो जाए तो उसका दाह संस्कार करें किन्तु उसका दसवाँ, ग्यारहवाँ, तथा बारहवाँ दिन न करें।

८. छलुन - दसवें दिन तक छलुन आवश्यक होता है, लड़कियों को दसवें दिन तक छलुन का कार्य अवश्य

करना चाहिये अन्यथा वे ग्यारहवें तथा बारहवें दिन की 'क्रिया' में सम्मिलित नहीं हो सकती हैं। छलुन के लिये शुभवार का होना आवश्यक है। शुभवार सोमवार, बुधवार, शुक्रवार है। परन्तु गुरुवार छलुन कार्य के लिये निषेध है। इसी प्रकार छलुन का कार्य पंचक, त्र्यहः, त्रिस्पृक में करना निषेध है।

९. श्राद्ध देखने की विधि - जिस दिन तिथि के साथ 'प्र' लिखा हो उस दिन का श्राद्ध अपने दिन ही आता है, यदि तिथि के साथ 'दि' लिखा हो तो उस दिन का श्राद्ध पहले ही दिन आता है उदाहरण के लिए मानलो यदि अष्टमी तिथि से त्रयोदशी तिथि तक सब तिथियों के साथ 'प्र' लिखा हो और चतुर्दशी तिथि के साथ 'दि' लिखा हो तो चतुर्दशी का श्राद्ध अपने ही दिन आयेगा।

१०. कुम्भ तर्पण विधि - बायां यज्ञोपवीत रखकर थाली में एक छोटा सा ताम्बे का लोटा (कुम्भ घडवह) खाली रखें बायें हाथ से पानी का लोटा लेकर दायें हाथ पर पानी की धारा आहिस्ता- आहिस्ता डालें ताकि पानी की धारा दायें अंगूठे की तरफ से ताम्बे की घडवी में पड़े तथा इस मन्त्र का उच्चारण करें,.....कुम्भो वनिष्ठो जनिता शचभि यस्मिन् अग्रे, योन्यां गर्भे अन्तः प्लाशभिर्व्यक्ता शतधारा उत्सोदुहेन कुम्भी स्वधा पितृभ्यः तत्सत् ब्रह्म, अद्यतावत् तिथौ, अमुकमासस्य, अमुक पक्षस्य, अमुक तिथौ, अमुक वासरे (महीने, पक्ष, तिथि तथा वार का नाम लेकर) परलोकेक्षुत पिपासा निवारनार्थं सोदकुम्भ दान सहिते नित्य कुम्भे एतत् ते तिलोदकं एतत् ते उदक तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतं (दाया यज्ञोपवीत रखकर पानी की धारा डालते जाये तथा इस मन्त्र का उच्चारण करते

जायें) नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः। यदि स्त्री ने तर्पण करना हो तो वह मस लतुर का प्रयोग यज्ञोपवीत के बदले में कर सकती है।

११. तर्पण विधि - तर्पण करते समय पहले महीना, पक्ष, तिथि और वार का उच्चारण करें, उसके पश्चात पित्रों का नाम लें। यदि तिथि 'दि' हो तो दो तिथिया पढ़ी जाती हैं जैसे पंचम्यां परता षष्ठ्यां, यदि पंचमी 'प्र' हो तो केवल पंचम्यां तिथि ही पढ़ें। पित्रों के नाम के साथ अपने गोत्र का नाम लेना आवश्यक है। नाना, नानी आदि को उनके ही गोत्र का नाम लेकर तर्पण करें। तत्सत् ब्रह्म, अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य, अमुक पक्षस्य, अमुक तिथौ, अमुक वासरे (महीना, पक्ष, तिथि, नाम लेकर) जैसे अद्य श्रावण मासस्य कृष्ण पक्षे पंचम्यां परता षष्ठ्यां सोमवासरं नितायां पित्रे कृष्ण दराय कापिष्ठल मानव पिता महाये, राम दराय कापिष्ठल मानव प्रपितामहाये ग्वाशदराय कापिष्ठल मानव, मात्रे गुणवती देव्यै, कापिष्ठल मानव्यै, पितामह्यै अमरावती देव्यै कापिष्ठलमानव्यै, प्रपितामह्यै वनमाली देव्यै कापिष्ठल मानव्यै।

नोट - यदि माता पिता जीवित हैं तो उनका नाम तर्पण में न लें।

१२. भीष्म पितामह के लिये तर्पण विधि - (तिथि माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी)

हाथ में काला तिल लेकर बाया यज्ञोपवीत रखकर दक्षिण की ओर मुख करके इस निम्न लिखि मन्त्र से तर्पण करें
वैयाघ्रपद गोत्राय सांकृत्य प्रवराय च, गंगा पुत्राय भीष्माय सर्वदा ब्रह्मचारिणे।

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः, आभिरद्भिभवान्नोतु पुत्र पौत्रोचितां क्रियाम् ।।

अब दाया यज्ञोपवीत रखकर भीष्म पितामह को अर्घ्य दें।

१३. षडमोस - किसी पितर या मृतक का अर्धवार्षिक श्राद्ध निश्चित करने के लिए निश्चित तिथि का मध्याह्न देखा जाता है। जैसे मानलो त्रयोदशी निश्चित तिथि है अतः द्वादशी को षडमोस (अर्धवार्षिक) तथा त्रयोदशी को मासिक श्राद्ध (मासवार) होगा। जन्त्री में हर एक तिथि का मध्याह्न दिया गया है। परन्तु किन्हीं वजहों से यदि षडमोस की क्रिया नहीं हो पाए तो वार्षिक श्राद्ध से पहले किसी भी निश्चित मासिक तिथि (मासवार) पर षडमोस (अर्धवार्षिक श्राद्ध) की क्रिया सम्पन्न कर सकते हैं।

१४. वार्षिक श्राद्ध - वार्षिक श्राद्ध (वहरवॉर) निश्चित तिथि का दिवा 'दि' प्रविठ 'प्र' (श्राद्धवत्) देखकर ही मालूम होगा। मानलो त्रयोदशी निश्चित तिथि है तो द्वादशी को मासवार तथा त्रयोदशी को वार्षिक श्राद्ध होगा। जन्त्री में प्रत्येक तिथि का 'दि' और 'प्र' दिया गया है। परन्तु किन्हीं वजहों से यदि वार्षिक श्राद्ध (यानि वहरवॉर) की क्रिया नहीं हो पाए तो, यदि शुक्ल पक्ष में पितर या मृतक का देहान्त हुआ हो तो आने वाली किसी भी शुक्ल पक्ष की द्वादशी को वार्षिक श्राद्ध (वहरवॉर) संपन्न करें, ओर यदि पितर या मृतक का देहान्त कृष्ण पक्ष में हुआ हो तो किसी भी कृष्ण पक्ष की अमावसी को वार्षिक श्राद्ध (यानि वहरवॉर) सम्पन्न करें।

१५. दीपदान के विषय में - दीपदान (तीलक्षुन) षडमोस या मासवार पर देने का प्रचल्लन जो कुछ समय

357

से आरम्भ हुआ है, गलत है। काश्मीर के किसी भी पौराणिक ग्रन्थ में इस का कही भी वर्णन नहीं है जो इस की आज्ञा देता हो कि षड़मोस या मासवार पर दीपदान देना चाहिये, केवल कार्तिक पूर्णिमा व तील अष्टमी दीपदान के स्वयं सिद्ध मुहूर्त हैं। इन दिनों के बिना आप कृपया दीपदान देने के लिए दीपदान मुहूर्त का चयन अवश्य करें।

१६ दिवगोण - दिवगोण संपन्न करके यदि अशौच पडे तो अशौच का दोष नहीं होता है। विवाह तथा यज्ञोपवीत का दिवगोण अधिक से अधिक सात दिन पहले भी करने की विधि है। यदि यज्ञोपवीत संस्कार रचाने का संकल्प किया हो और सूतक (होंछ) पडे तो कुष्माण्ड आदि से आहुति देकर दोष का निवारण किया जा सकता है, परन्तु मृतक के लिये यह नियम लागू नहीं होगा। याद रहे देवगोण के लिए कोई मुहूर्त, नक्षत्र, तथा तिथि आदि देखने की कोई आवश्यकता नहीं है, परन्तु दिवगोण के दिन यदि भौमवार या शनिवार हो तो देवगोण का आरम्भ सूर्य उदय से पहले ही करें।

१७. यज्ञोपवीत धारण का अधिकार:- यज्ञोपवीत संस्कार के अनुपालन में शुचिता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है। स्त्री के शरीर का निर्माण इसतरह से हुआ है कि उसे मास में कुछ दिन अपवित्र दशा में रहने के लिये बाध्य होती है। पुरुष के समान स्त्री ब्रह्मचर्य धर्म का पालन (रजस्वला होने पर) करने योग्य नहीं रहती है। इसी प्रकार मन्त्रों के उच्चारण की अशुद्धता भी स्त्री तथा द्विजेतरों में रहती है। फिर भी मनुस्मृति में स्त्रियों का विवाह संस्कार ही उनके यज्ञोपवीत संस्कार के समान है।

वैवाहिको विधि स्त्रीणां, संस्कारो वैदिकः स्मृतः॥ (मनु स्मृति २/३७)

ज्ञातक मिलाप विधि

यह तो सर्वविदित है कि ज्योतिष शास्त्र भविष्य का सूचक है, अतः विवाह के पूर्व वर-कन्या की जन्मपत्रियों अर्थात् ज्ञातुक मिलाने का आशय केवल परम्परा का निर्वाह ही नहीं अपितु भावी दम्पति के स्वभाव, गुण, प्रेम, और आचार-व्यवहार के सम्बन्ध को ज्ञात करना है।

ज्योतिष में लग्न को 'शरीर' और चन्द्रमा को 'मन' माना गया है। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। इस लिए आचार्यों ने जन्मराशि से मिलाप विधि का ज्ञान करना बताया है। इस के अतिरिक्त यह भी बताया गया है कि गुण अर्थात् बल मिलान द्वारा वर और कन्या के स्वास्थ्य, विद्या, आर्थिक स्थिति तथा प्रजनन शक्ति का ज्ञान करना चाहिए। इस गुण-मिलान-पद्धति में निम्न आठ बातें होती हैं -

- | | | | |
|----------------|-------------------------|-------------------------|-------------|
| 1. वर्ण | 2. वश्य | 3. तारा | 4. योनी |
| 5. ग्रह मैत्री | 6. गण मैत्री (जाति दोष) | 7. भूकूट (राशि मित्रता) | 8. नाडी दोष |

काश्मीरी लोकाचार को ध्यान में रखते हुए हम ग्रह मित्रता, जाति दोष, राशि मित्रता, नाडी दोष के अतिरिक्त मंगल दोष को भी प्राथमिकता देते हैं। उपर्युक्त बातों के बल (गुण) इस तरह देखे जाते हैं :

वर्ण का 1 गुण, वश्य के 2, तारा के 3, योनि के 4, ग्रह मित्रता के 5, जाति मित्रता के 6, राशि मित्रता के 7 तथा नाडी दोष के 8 गुण होते हैं। इस प्रकार कुल 36 गुण होते हैं। इस तरह से वर और वधू के मिलान में कम से कम 18 गुण मिलने पर ही विवाह सम्बन्ध तय किया जाता है। परन्तु नाडी और राशि मित्रता के गुण अवश्य मिलने चाहिए, जिन के बिना 18 गुणों में विवाह मंगलकारी नहीं माना जाता है।

12 राशियों के नाम : मेष, वृष, मिथुन, कर्कट, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन

9 ग्रहों के नाम : सूर्य, चन्द्रमा, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु

27 नक्षत्रों के नाम : अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, तिष्या, अश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुणी, उत्तरफाल्गुणी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठ, शतिभिषक, पूर्वभाद्रपदा, उत्तरभाद्रपदा, रेवती ।

ग्रह मैत्री

ग्रह मित्रता तथा राशि मित्रता (भकुट)-- ये दोनों काश्मीर प्रदेश में षष्ठाष्टक, नवपंचक, द्विद्वादशी के नाम से भी जाने जाते हैं। वर और कन्या की राशियों के स्वामियों की मित्रता ग्रह मित्रता कहलाता है। जैसे वर की राशि सिंह तथा वधू की राशि वृष हो, सिंह राशि का स्वामी सूर्य तथा वृष राशि का स्वामी शुक्र है, ग्रहों के शत्रु-मित्रता चक्र में सूर्य और शुक्र शत्रु बताये गये हैं।

राशियों के स्वामी देखने का चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्वामी	भौम	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु

ग्रहों की शत्रु-मित्रता का चक्र

कन्या के राशि स्वामी	ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
	मित्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	बुध	बुध	बुध
		भौम	बुध	चन्द्र	राहु	चन्द्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र
		बृहस्पति	--	बृहस्पति	शुक्र	भौम	राहु	राहु	शनि
	शत्रु	शुक्र	राहु	बुध	चन्द्र	बुध	सूर्य	सूर्य	सूर्य
		शनि	--	राहु	--	शुक्र	चन्द्र	चन्द्र	चन्द्र
		राहु	--	--	--	--	--	भौम	भौम
	सम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	भौम	राहु	भौम	बृहस्पति	बृहस्पति
		--	शुक्र	शनि	बृहस्पति	शनि	बृहस्पति	--	--
		--	शनि	--	शनि	--	--	--	--

जाति दोष (गण मैत्री)

जाति दोष जानने के लिए लड़के अथवा लड़की के नक्षत्रों का पता होना आवश्यक है। देव जाति, मनुष्य जाति

तथा राक्षस जाति, इन तीन जातियों में 27 नक्षत्रों को बाट कर उस नक्षत्र की जाति का अध्ययन किया सकता है।

जाति दोष देखने की विधि:- अनुराधा नक्षत्र होने पर उस जातक का सम्बन्ध देव जाति से होगा, ऐसे ही मघा नक्षत्र होने से उस जातक की जाति राक्षस जाति होगी। पाठकों को समृण रहे कि वर और वधू की एक ही जाति का होना शुभ फल का ही सूचक है, परन्तु यदि लड़की की राक्षस जाति और लड़का मनुष्य जाति से सम्बन्ध रखता हो तो विशेष हानिकारक है।

जाति देखने का चक्र

देव	अनुराध, मृग, श्रवण, पुनर्वसु, रेवती, स्वात, हस्त, तिष्या, अश्विन
मनुष्य	पूषा, पूषा, पूषा, उभा, उफा, उषा, राहि, भर, आर्द्रा
राक्षस	मघा, अश्ले, धनि, कृति, ज्येष्ठ, मूल, शत, चित्रा, विशाखा

देव जाति + राक्षस जाति	मध्यम	मनुष्य जाति + देव जाति	शुभ
राक्षस जाति + देव जाति	मध्यम	देव जाति + मनुष्य जाति	शुभ
राक्षस जाति + मनुष्य जाति	अशुभ	मनुष्य जाति + राक्षस जाति	अशुभ

राशि मित्रता (भकूट)

कन्या की जन्म राशि से वर की जन्म राशि तक गिना चाहिए तथा इसी प्रकार वर की जन्म राशि से कन्या की जन्म राशि तक भी गिना चाहिए। यदि गिनने पर छठी और आठवीं हो तो षष्ठाष्टक, नवमी और पाँचवीं हो तो नवपंचक तथा दूसरी और बारहवीं हो तो द्विद्वादशी कहलाती है। उदाहरण के लिए मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ षष्ठाष्टक, ऐसे ही मिथुन और मकर की षष्ठाष्टक होती है। यदि वर और वधू के मिलान पर मित्रषष्ठाष्टक, मित्रनवपंचक या मित्रद्विद्वादशी हो तो वह शुभ फलदायक ही होती है।

राशि कूट चक्र

मित्र षष्ठाष्टक	मेष + वृश्चिक	मिथुन + मकर	सिंह + मीन	तुला + वृष	धनु + कर्क	कुम्भ + कन्या
शत्रु षष्ठाष्टक	वृष + धनु	कर्क + कुम्भ	कन्या + मेष	वृश्चिक + मिथुन	मकर + सिंह	मीन + तुला
मित्रनवपंचक	मेष + सिंह	मिथुन + तुला	सिंह + धनु	तुला + कुम्भ	धनु + मेष	कुम्भ + मिथुन
शत्रुनवपंचक	वृष + कन्या	कर्क + वृश्चिक	कन्या + मकर	वृश्चिक + मीन	मकर + वृष	मीन + कर्क
मित्रद्विद्वादशी	मेष + मीन	मिथुन + वृष	सिंह + कर्क	तुला + कन्या	धनु + वृश्चिक	कुम्भ + मकर
शत्रुद्विद्वादशी	मेष + वृष	कर्क + मिथुन	सिंह + कन्या	तुला + वृश्चिक	धनु + मकर	कुम्भ + मीन

नाडी दोष

नीचे दिये गये नाडी चक्र से आप वर और वधू की नाडी का ज्ञान रख सकते हैं। यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो आद्य नाडी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाडी की पंक्ति में हो तो मध्य नाडी दोष कहलाता है तथा यदि दोनों वर वधू का नक्षत्र अन्त्य नाडी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाडी दोष कहलाता है। इन तीन में से मध्य नाडी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है। पाठकगण नोट करें कि यदि नाडी दोष होने पर एक नक्षत्र हो परन्तु वह नक्षत्र भिन्न भिन्न पादों पर हों तो नाडी दोष नहीं होता है। उदाहरण के लिए यदि वर और वधू दोनों का नक्षत्र कृतिका हो तो अन्त्य नाडी दोष होता है परन्तु यदि वर के नक्षत्र का पाद दो तथा वधू के नक्षत्र का पाद तीन हो तो नाडी दोष नहीं माना जाता है।

नाडी देखने का चक्र

अद्य नाडी	आश्विन	आर्द्रा	पुनर्वसु	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूल	शतभि	पूभा
मध्य नाडी	भरण	मृगशिर	तिष्या	पूर्वा	चित्रा	अनुराधा	पूर्वा	धनिष्ठ	उभा
अन्त्य नाडी	कृतिका	रोहिणी	अश्ले	मघा	स्वात	विशाख	उषा	श्रवण	रेव

नाडी दोष अपवाद

1. कुल सताईस नक्षत्रों में से रोहिणी, मृगशिर, तिष्या, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपद, श्रवण, आर्द्रा, ज्येष्ठ, रेवती नक्षत्रों पर कई आचार्यों ने अपने ग्रंथों में यह सपष्ट रूप से वर्णन किया है कि मिलान में उपर्युक्त आठ नक्षत्र नाडी दोष से मुक्त हैं।
2. यदि वर या वधू में से एक की राशि **कन्या** और दूसरे की **मिथुन**, एक की **धनु** और दूसरे की **मीन** तथा एक की **तुला** तथा दूसरे की **वृष** हो तो नाडी दोष नहीं होता।
3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग अलग हो तो नाडी दोष नहीं होता।
4. नाडी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाडी दोष नहीं होता है।
5. वर और वधू के राशि स्वामीयों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो तो जाति दोष, षष्ठाष्टक अर्थात् ग्रह मित्रता दोष नहीं होता।



भौम दोष का फल एवं अपवाद

विवाह योग्य लडके व लडकी की जन्मकुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाडी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात कुण्डली में मंगल एवं मंगलीक दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। जन्म कुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12 वें घर में मंगल का होना मंगल दोष कहलाता है। मंगली दोष वैवाहिक जीवन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है, विवाह में विघ्न, विलम्ब, व्यवधान, विवाहोपरान्त दम्पति में से किसी एक अथवा दोनों को शारीरिक, मानसिक अथवा आर्थिक कष्ट, पारस्परिक मन मुटाव, आरोप-प्रत्यारोप तथा विवाह विच्छेद आदि। फिर भी मंगलदोष से भयभीत या आतंकित नहीं होना चाहिये क्योंकि हमारे आचार्यों तथा ऋषियों के महूर्तग्रन्थों में निम्नलिखित अनेक परिहार वाक्य मिलते हैं जिन से मंगलदोष निरस्त या भंग हो जाता है।

भौम दोष का अपवाद

१. कुज दोषवती देया कुजदोषवते किल ।

नास्ति दोष न चानिष्टं दम्पत्योः ॥

सुखवर्धनम् ।

मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलदोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वरवधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है ।

२. सप्तमे यदा सौरिर्लग्ने वापि चतुर्थके ।

अष्टमे द्वादशे चैव तदा भौमो न दोषकृत ॥

यदि वर की कुण्डली में एक में पूर्वोक्त प्रकार से मंगल हो दूसरी में सप्तम, लग्न, चतुर्थ, अष्टम्, द्वादश, इन भावों में शनि हो तो परस्पर भौम का दोष नहीं रहता ।

३ . शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत् ।

तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाश कृत ॥ (फलित संग्रह)

यदि लड़की की कुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12 वें भाव में मंगल हो और लड़के की कुण्डली में उपर्युक्त भावों में शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि पापग्रह स्थित हों तो भौम दोष भंग हो जाता है, इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर उपर्युक्त भावों में कोई पापग्रह होने से भी भौम दोष नहीं रहता ।

8.

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।

घूने मृगे कार्किचाष्टौ भौमदोषा न विद्यते ॥ (मुहूर्त पारिजात)

लडके अथवा लडकी की कुण्डली में लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो, मकर का सातवें, कर्कट का आठवें एवं धनु राशि का मंगल 12 वें में हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

9.

सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षितः

तदातु सर्वसौख्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत ॥

यदि सातवाँ मंगल हो उसपर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

10.

राशि मैत्रम् यदा याति गणैक्य वा यदा भवेत् ।

अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते ॥ (मुहूर्त दीपक)

यदि वर कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशि मैत्री हो, गुणैक्य 27 गुण या इस से अधिक मिलान हो तो मंगलदोष नहीं होता है।

11.

उक्त स्थानेषु चन्द्राच्च गणयेत् पापखेचरान ।

पापाधिके वरे श्रेष्ठ विवाहं प्रवदेद् बुधः ॥

लग्न तथा चन्द्रमा से उक्त स्थानों (1, 4, 7, 8, 12) में पाप ग्रहों की संख्या गिनें, यदि कन्या से वर की पापसंख्या अधिक होतो विवाह सम्बन्ध श्रेष्ठ समझना चाहिए।

भौम दोष की शान्ति के लिये प्रमुख उपाय -

मंगलवार का व्रत रखें। दिन में नमक के बिना तरल भोज्य पदार्थ (चाय, काफी, दूध, लस्सी, फलों के रस) लें। सायंकाल थाली में रोली से त्रिकोण बनाएँ तथा पंचोपचार (लाल चंदन, लाल पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य) से पूजन करें। तत्पश्चात् सूर्यास्त से पूर्व ही गेहूँ की रोटी, घी, गुड ग्रहण करें।

मंगल दोष अधिक प्रबल हो तो मंगल चंडिका स्तोत्र का 108 दिन तक नित्यप्रति 21 बार जप करें। प्रातः काल पूर्वाभिमुख होकर बैठें व पंचमुखी दीप प्रज्वलित करके अपने इष्ट तथा मंगल ग्रह का पंचोपचार से करें, फिर निम्नलिखित जप करें -

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके। हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके॥

हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके। शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके॥

मंगले मंगलाहं च सर्वमंगलमंगले। सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये॥



जातक मिलाने की सारिणी

जातक मिलान का सारणी																			
लडकी	लडका	चित्रा	तुला	विशा	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	रेवत									
		स्वात	विशा	अनुरा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा	उषा	श्रवण	धनि	धनि	शत	पूषा	पूषा	उषा	रेवत			
मेष	अश्वि	23	27	22	19	25	15	20	25	23	25	26	21	21	15	16	15	24	26
	भर	15	28	21	19	18	20	20	18	26	28	26	10	10	20	24	23	17	26
	कृति	28	14	19	17	20	26	25	19	12	14	14	25	25	26	18	18	20	13
वृष	कृति	22	09	21	22	25	30	22	15	07	12	11	25	29	30	23	20	22	13
	रोहि	18	15	08	15	30	24	14	20	11	16	18	19	25	24	29	26	27	19
	मृग	11	25	17	24	22	25	15	11	17	22	26	12	18	26	28	25	18	27
मिथुन	मृग	13	27	20	13	13	14	23	19	25	20	24	10	12	21	23	24	17	26
	आर्द्रा	20	27	20	14	19	05	15	28	27	22	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुन	20	27	21	15	21	06	14	27	27	22	23	17	19	13	16	18	27	26
कर्क	पुन	19	27	21	19	25	11	08	21	21	26	27	21	12	06	10	16	25	25
	तिष्या	11	25	21	19	17	21	18	13	21	26	23	11	04	13	18	26	18	26
	अश्ले	26	12	17	16	19	26	29	23	08	13	13	26	17	18	11	18	20	12
सिंह	मघा	24	11	16	25	25	32	24	19	09	04	05	18	24	25	18	18	19	12
	पूषा	10	25	18	24	23	25	20	17	24	19	19	06	11	19	24	24	17	25
	उषा	18	27	18	25	31	17	09	25	25	20	20	12	18	11	16	16	27	25
कन्या	उषा	17	26	17	18	26	12	14	30	30	24	24	24	17	10	15	17	28	26
	हस्त	20	27	19	20	26	14	15	27	29	23	24	20	19	11	14	16	26	26
	चित्रा	19	19	33	27	1	28	27	13	21	16	17	16	16	24	17	19	10	19

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा	स्वात	विशा	विशा	अनुरा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा	उषा	उषा	श्रवण	धनि	धनि	शत	पूषा	पूषा	उषा	रेवत
तुला	चित्रा	28	27	34	23	07	21	27	13	21	24	25	23	18	26	19	12	03	12
	स्वात	28	28	20	10	20	17	23	27	19	23	23	28	21	22	32	19	19	11
	विशा	34	19	28	18	18	22	28	21	13	16	16	30	26	26	30	14	13	04
वृश्चिक	विशा	27	07	15	28	27	32	28	22	08	11	11	25	24	26	20	29	18	10
	अनुरा	07	21	16	28	28	31	16	14	22	25	26	12	11	20	25	24	18	26
	ज्येष्ठ	20	15	19	32	30	28	14	17	17	20	20	25	26	19	10	10	20	20
धनु	मूल	26	21	26	23	17	16	28	28	26	14	15	21	29	22	15	17	15	26
	पूषा	12	27	20	17	16	18	27	28	34	22	27	06	15	24	29	29	23	31
	उषा	20	19	12	09	24	18	25	35	28	18	15	14	23	24	29	30	31	23
मकर	उषा	23	22	15	12	17	27	15	24	17	28	27	26	16	17	30	30	21	23
	श्रवण	24	22	15	12	27	21	14	23	15	26	28	27	17	18	21	29	30	24
	धनि	26	24	29	26	12	26	21	07	15	26	27	28	17	23	18	25	15	23
कुम्भ	धनि	18	20	25	25	11	25	30	16	25	17	18	18	28	33	28	17	07	14
	शत	26	21	21	27	20	18	25	25	25	17	18	24	23	28	19	08	21	16
	पूषा	19	26	20	21	27	11	15	30	30	23	29	18	27	29	28	16	22	20
मीन	पूषा	11	19	13	19	25	10	14	29	29	29	23	25	16	07	15	28	33	31
	उषा	02	19	12	18	25	27	24	22	30	30	30	15	06	15	21	33	28	33
	रेव	12	10	04	11	26	21	26	29	21	24	22	23	14	16	18	30	33	28

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		आश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	अश्ले	मघा	पूर्वा	उषा	उषा	हस्त	चित्रा
मेष	अश्वि	28	33	28	18	24	23	26	17	18	23	31	27	20	24	15	11	11	13
	भर	33	28	29	18	27	15	18	26	26	31	24	25	26	24	24	19	19	06
	कृति	27	28	29	18	10	17	20	20	20	25	27	23	16	19	20	15	15	19
वृष	कृति	19	19	19	28	19	27	17	23	24	21	23	19	19	22	22	20	21	23
	रोहि	24	24	11	20	28	36	27	23	22	26	27	13	11	25	27	26	26	19
	मृग	24	15	19	27	35	29	19	24	23	26	19	21	20	16	25	23	19	12
मिथुन	मृग	27	18	23	19	26	20	28	33	31	20	11	15	24	21	29	31	34	20
	आर्द्रा	19	27	22	19	25	26	34	28	25	12	21	13	22	28	21	25	25	27
	पुन	19	26	22	19	22	23	32	24	28	14	21	16	22	26	20	24	25	27
कर्क	पुन	22	29	25	21	24	25	18	10	13	28	34	29	17	21	15	17	18	20
	तिष्या	30	21	27	23	25	18	11	19	24	34	28	29	19	21	24	26	26	12
	अश्ले	25	23	22	19	12	21	13	12	15	29	29	28	15	22	18	21	20	26
सिंह	मघा	19	19	16	17	11	18	21	21	20	17	19	16	28	30	27	15	15	20
	पूर्वा	25	24	19	20	24	16	19	27	26	23	17	17	30	28	34	24	21	06
	उषा	19	27	22	23	27	22	29	22	22	17	26	20	27	34	28	18	17	15
कन्या	उषा	11	21	16	21	26	24	32	22	24	18	28	21	16	23	17	28	27	25
	हस्त	11	19	16	21	24	31	32	19	24	18	27	22	16	21	15	26	28	28
	चित्रा	13	05	19	23	27	11	19	26	25	20	122	26	22	07	14	25	27	28

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	अश्ले	मघा	पूर्वा	उषा	उषा	हस्त	चित्रा
तुला	चित्रा	22	14	28	23	19	11	12	20	25	19	11	25	25	11	18	18	26	20
	स्वात	28	3	18	13	17	27	27	26	34	28	28	13	14	26	26	26	28	27
	विशा	21	22	20	15	09	17	19	20	20	21	21	17	17	19	18	18	19	26
वृश्चिक	विशा	17	23	15	20	14	22	11	13	13	18	18	15	25	23	22	17	18	26
	अनुरा	24	15	19	24	28	21	10	15	20	25	17	20	25	21	29	24	25	11
	ज्येष्ठ	10	18	23	29	23	30	12	02	04	10	20	25	31	24	16	11	11	24
धनु	मूल	12	19	25	20	13	13	21	14	12	08	18	23	24	24	20	13	13	26
	पूर्वा	33	19	18	13	19	11	19	27	27	23	15	24	26	17	25	29	27	12
	उषा	33	26	12	06	10	17	25	26	27	23	23	09	09	24	25	29	29	20
मकर	उषा	27	29	15	12	16	23	19	25	22	28	28	14	05	20	21	24	24	16
	श्रवण	28	27	15	12	17	26	23	20	22	28	28	14	06	19	20	23	24	17
	धनि	20	11	26	31	19	11	08	16	15	21	13	27	19	05	11	16	17	15
कुम्भ	धनि	20	11	25	30	26	18	11	18	17	12	04	18	25	11	19	18	25	17
	शत	15	21	31	31	25	27	20	12	12	07	13	19	26	20	12	11	14	25
	पूर्वा	18	25	20	24	30	30	24	17	17	12	20	12	19	25	17	16	21	18
मीन	पूर्वा	15	21	25	19	26	26	24	18	18	17	25	18	17	23	15	16	16	18
	उषा	24	16	9	21	26	18	17	25	27	26	19	20	18	15	26	27	26	09
	रेव	25	26	11	13	17	26	25	24	25	25	26	13	12	23	23	24	25	19

यः सर्वात्माखिलजनविभुर्देवदेवोमहेशः,
 स्वातन्त्र्यस्थो ध्रुवपदगतोनिश्चलात्मा वरेण्यः।
 विश्वोत्तीरणोभव भयहरः स्वेच्छया विश्वपूर्ण,
 स्तं श्रीरामं त्रिभुवनगुरुं स्वात्मरूप नमामि॥



मैं तीनों भुवनों, भव, अभव, अतिभव के गुरु सब जड चेतना में व्याप्त होकर
 क्रीडनशील सद्गुरु श्री राम को मेरा अपना ही स्वरूप हूँ नमस्कार करता हूँ,
 कैसे हैं वह राम? उत्तर जो सभी जड चेतना को सत्ता देने वाले, सभी जीवों में
 व्यापक, देवों के भी देवता, महान् ऐश्वर्य युक्त, स्वतंत्र पद पर स्थित अविनाशी तथा अटल स्वभाव वाले तथा उत्तम
 हैं, जगत से परे हैं और भक्तों के जन्ममरण का भय दूर करते हैं, ऐसा होते हुए भी विश्वमय भी हैं।

(महामहेश्वराचार्य श्री राम जी)

सप्तर्षि 4930, विक्रमी 1911, ईस्वी 18
 दिसम्बर 1854, पौष कृष्ण द्वादशी (जयन्ती)

त्रिक आश्रम, त्रलोकपुरा गोलगुजराल, जम्मू।

सं. 4990, वि. 1971, ई. 14.01.1915,
 माघ कृष्ण चतुर्दशी (अन्तर्ध्यान दिवस)

**मार्तण्ड (काश्मीर) निवासी
पण्डित कृपाराम दत्त
प्रयाण दिवस व बलिदान दिवस**

**पण्डित कृपाराम दत्त
बलिदान दिवस
21 दिसम्बर**

**पण्डित कृपाराम दत्त
आनन्दपुर साहिब
प्रयाण दिवस
26 अक्टूबर**

- औरंगज़ेब के अत्याचारों से मुक्ति प्राप्ति के लिए 26 अक्टूबर सन् 1675 ई. में मार्तण्ड (काश्मीर) निवासी पण्डित कृपाराम दत्त 500 काश्मीरी पण्डितों का फरियादी जत्था लेकर नौवें गुरु श्री गुरुत्तेगबहादुर जी के पास चकेनानकी (आनन्दपुर साहिब) गये थे।
- 21 दिसम्बर श्री गुरु गोविन्द सिंह जी की रक्षा में चंकोर साहिब में शहीद चालीस खालिसा वीरों में पण्डित कृपाराम दत्त काश्मीर निवासी भी थे।

Kashmiri Pandit Welfare Society Haridwar

**Head Office: Geeta Bahwan, Muthi, Jammu
Mob: 9419241094, 9419812812, 6005743607**

In Haridwar Kashmiri Pandit Dharamshala is situated near booking office Mata Mansa Devi ropeway near Raj Mata Hotel. It is 01 Km from railway station and is in main market. All facilities such as lodging & boarding are available at minimum rates. Kashmiri Pandit Purohit is also available at any time.

For further queries you may contact
☎ 6005743607, 9906274400,

Vijayeshwer Jantrie available at

1. Gupta Stationery Mart, City Chowk
2. Teen Bhai Stationery Store, Pacca Danga
3. Thaploo General Store, Janipur
4. Maha Lakshmi General Store, Anand Nagar, Bhoori
5. Ram & Sham Departmental Store, Subash Nagar
6. R. K. General Store, Saraswati Vihar, Bhoori
7. Bhat general store, main Chowk Janipura
8. Durga Printing Press, Old Janipur
9. Mahesh Traders, Opp. Fire Brigade, Roop Nagar
10. Bindroo Gen. Store, Opp. Tope Quarters
11. Sharma Stationery Store, Rehari
12. Shiv Shakti General Store, Janipur
13. Shiv Shankar Gen Store Lower Roopnagar
14. Sharma Stationery Store, Bhoori, Anand Nagar
15. R.S Traders, Anand Nagar, Borhi
16. Koul Provisional Store, Gole pully
17. Kamla Medicos, Basant Palace, Bantlab
18. Kar Stationery Store, Ragubir Palace, Bantlab
19. Ashoka Traders, Bantalab
20. Pandita General Store, Near Sukhi Nehar, Bantalab
21. Wanchoo Gen. Store, Koth Nathera, Barnia
22. Bhat General Store, Shankar Vihar, Gangyal
23. Jain Traders, Subash Nagar
24. Public Gen. Store, Muthi, Near Sh. Kumar Ji Ashram
26. Panun Shop, Opp. Durga Nagar Lane No. 1
27. Sawhney Gen. Store, Sector 1 Durga Nagar
28. Bushan Lal Koul, Durga Nagar
29. Bitoo General Store, Durga Nagar
30. Sathie News Agency, Durga Nagar
31. M.K Communication, Bantalab
32. V.V General Store, Muthi Village
33. Pamposh General Store, Muthi
34. **KASHMIR HAAT, I.N.A**
New Delhi, Cell No : 9968296302, 9911107617
35. Chuni Lal Suresh Kumar, Kanak Mandi
36. Kangan General Store, Udhewalla, Borhi.
37. Chinar Shoppe, Ganga Shopping Complex
Sector 29, Noida. Mob :9810825715
38. Sharda Traders, B-102, Jain Colony,
Bawala, Delhi-39 Mob:9891107733/99
39. Raina Store, Shalimar Garden, GBD, 9990471035
40. Cashmere, Crafts & Spices, H755, D4, Palm Ext
Sector 7, Dwarika, New Delhi, Mob 9315535428
41. Bhagawaan Gopinath Ji Ashram, S.No14/2
Nande Balewadi Road, Pune. Mob 9373312403
42. Shudh Enterprise, #38, 1st Floor, Andhree Road,
Shanti Nagar, (Near Axis Bank) Bangalore-560027
43. Koshur Vaan, B2-507 Waghohi Pune, Mob 7057912139

The day of Celebration & Rejoicing! 3rd July

1. Our Bab Bhagavaan took birth on this day in the year 1898 at Bana Mohalla, Srinagar.
2. On this day Swami Vivekananda came to their house, apparently having a premonition that a great soul was going to be born.
3. The Government of India issued a special Rs. 3 commemorative ticket on this day in the year 1998 on the occasion of the centenary celebrations of our Bhagavaan Ji's Birthday.
4. In the same year on this day was announced the formation of Jagat Guru Bhagavaan Gopinath Ji Charitable, Cultural and Research Foundation, which was formally inaugurated in the following year 1999.
5. On the same day in 1999 Shri. Bhagavaan Gopinath Ji appeared on the Kargil war front and directed the army personnel to launch counter offensive that enabled them to regain control of strategic mountain peaks.
6. On this auspicious day in the year 2000 was started a quarterly journal of the Foundation by the name "PRAKASH Bhagavaan Gopinath Ji" containing articles and devotional poems in English, Hindi, Kashmiri Urdu and Sanskrit.

This Day is auspicious for us all His devotees and needs to be celebrated year after year with love, devotion and Service.

Jagat Guru Bhagavaan Gopinath Ji Charitable, Cultural and Research Foundation (Regd.)

1/B, Dayalsar Road (Near Mother Opticals) Bank of Baroda Lane, Metro West, Uttam Nagar, Pillar No. 691,
New Delhi-110059

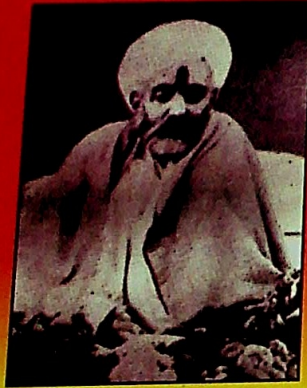
Website: www.bhagavaangopinathji.com

email: jagatguru1999@yahoo.com

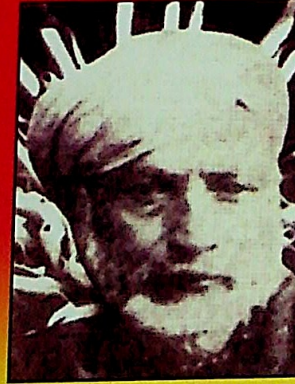
काश्मीर के सिद्ध पुरुष एवं महान् विभूतियां



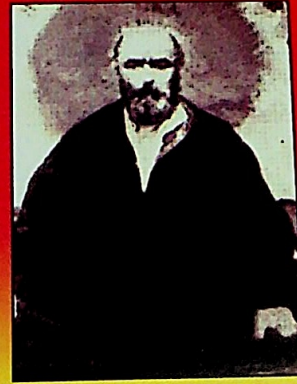
पण्डित कृष्णजू राजदान



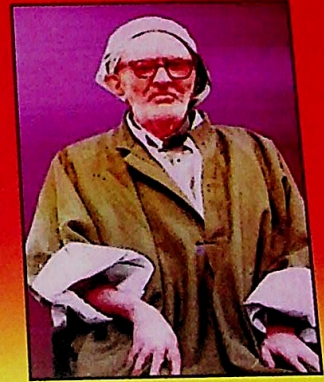
शैवाचार्य स्वामी रामजी



पण्डित केशव भट्ट ज्योतिषी



स्वामी विद्याधर जी



स्वामी सर्वानन्द जी गौतमनाग



श्री काशीनाथ हण्ड

स्वामी पञ्चनाथ हण्ड भौव (वाई जी)

The day of Celebration & Rejoicing! 3rd July

1. Our Bab Bhagavaan took birth on this day in the year 1898 at Bana Mohalla, Srinagar.
2. On this day Swami Vivekananda came to their house, apparently having a premonition that a great soul was going to be born.
3. The Government of India issued a special Rs. 3 commemorative ticket on this day in the year 1998 on the occasion of the centenary celebrations of our Bhagavaan Ji's Birthday.
4. In the same year on this day was announced the formation of Jagat Guru Bhagavaan Gopinath Ji Charitable, Cultural and Research Foundation, which was formally inaugurated in the following year 1999.
5. On the same day in 1999 Shri. Bhagavaan Gopinath Ji appeared on the Kargil war front and directed the army personnel to launch counter offensive that enabled them to regain control of strategic mountain peaks.
6. On this auspicious day in the year 2000 was started a quarterly journal of the Foundation by the name "PRAKASH Bhagavaan Gopinath Ji" containing articles and devotional poems in English, Hindi, Kashmiri Urdu and Sanskrit.

This Day is auspicious for us all His devotees and needs to be celebrated year after year with love, devotion and Service.

Jagat Guru Bhagavaan Gopinath Ji Charitable, Cultural and Research Foundation (Regd.)

1/B, Dayalsar Road (Near Mother Opticals) Bank of Baroda Lane, Metro West, Uttam Nagar, Pillar No. 691,
New Delhi-110059

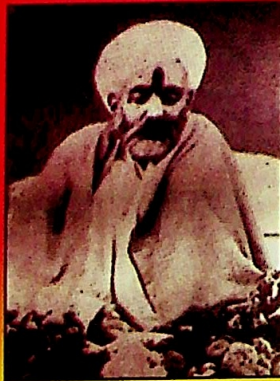
Website: www.bhagavaangopinathji.com

email: jagatguru1999@yahoo.com

काश्मीर के सिद्ध पुरुष एवं महान् विभूतियां



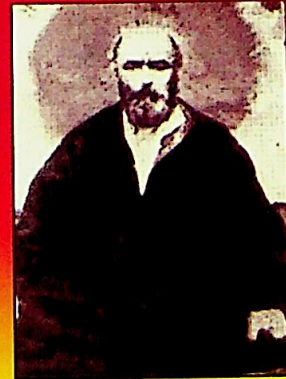
पण्डित कृष्णजु राजदान



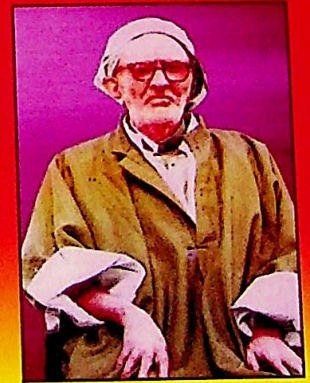
शैवाचार्य स्वामी रामजी



पण्डित केशव भट्ट ज्योतिषी



स्वामी विद्याधर जी



स्वामी सर्वानन्द जी गौतमनाथ



स्वामी महादेव काक जी



पण्डित रघुनाथजी कुकिलू 'भाईगाश'



स्वामी मोतीलालजी ब्रह्मचारी 'लाला जी'



श्री काशीनाथ हण्डू



स्वामी प्राणनाथ बट्ट गरीब (बाई जी)

भारत सारं तत्रापि च हिमालयम्, तत् मध्ये च काश्मीरं तत्रापि च विजयेश्वरम् ॥



स्व. ज्यो. आप्ताभ शर्मा

प्रवर्तक, विजयेश्वर जन्त्री

स्व. ज्यो. काशीनाथ शर्मा

कार्यालय संस्थापक

॥ ओम् ॥

COMPUTERISED

डॉ. मनमोहन ज्योतिषी

पूर्व सहायक



विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.)

कार्यालय : बोडडी पट्टा, चुंगी (समीप मैदाडोर स्टेशन)

जन्मसू-180002 दूरभाष 0191-2555064

निवास : विजयेश्वर भवन, अजीत कालोनी, गोल गुजयाल,

जन्मसू-180002 दूरभाष 0191-2552625

Email : vijayeshwer@yahoo.com

Editor :

Vijayeshwar Jantrie
Sh. Puneet Jyotshi

S/o. Dr. Man Mohan Jyotshi
Mobile : 94191-46712